A
Descriptive Catalogue of Manuscripts

IN THE

Bhattarkiya Granth Bhandar
NAGAUR

By
Dr P. C Jain

Centre for Jain Studies
UNIVERSITY OF RAJASTHAN, J A I P U R
1 9 8 1

Foreword

Dr P. C. Jain is already known to the Jain scholars through the publication of his first Volume of the Five-volume project on the Descriptive Catalogue of the Manuscripts collected in the Bhattarakiya Granth Bhandar, Nagaur. This collection is rich numerically as well as qualitatively. It contains 30,000 manuscripts in Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Rajasthani, Hindi, Marathi and Gujarati languages. Some of these manuscripts belong to the 12th Century A. D. Others not so old belong to the succeeding centuries including the 19th. History of Indian literature will not be complete without taking notice of innumerable manuscripts which are still uncatalogued and hidden from the scholars' view. Rajasthan is specially rich in Jain manuscripts as this state has always been a citadel of Jainism for the long past. The manuscripts of Nagaur Bhandar relate to various subjects including the Agamas, Ayurveda, Subhasitas, tales, poems, dictionarries, **Carita**-literature, rhetorics, prosody, astrology, astronomy, logic, drama, music, Puranas, Tantra, Yoga, grammar, **vratas**, **Stotras**, **Mahatmya** etc. Some of these manuscripts are illustrated with beautiful paintings. In fact, the vast literature produced in medieval India reveals the nature and form of intellectual and creative activity and spiritual movement of the Indians. Much of what is contained in the **stotras, vratas, Mahatmyas** and the kindred literature manifests the living religion and culture of India gleaned through these works This Bhandara has old manuscripts of known and published works Such as the Samavasara of Acharya Kundakunda and more importantly it has some manuscripts, say about 150, which are not known to the scholarly world In my trips abroad in recent years I found a growing interest in the rich treasure of the manuscripts which India possesses and which are still lying uncared for in the different Bhandaras. Jainas did not have a sectarian outlook in developing collections of the manuscripts. The catholic outlook of this community and its Saints has been mainly responsible in organising a broad-based collection of the manuscripts. While Jainism in its origin patronised the Prakrit, it

remains an historical fact that it extended full support to Sanskrit considered by some to be the language of the Brahmins and the Brahmanical or Vedic culture. Some of the great works were not only written in Sanskrit by the Jainas, many others were preserved and commented upon by them Mallinatha who commented upon the works of Kalidasa and Bharavi is the shining example of this catholic tradition and patronage of the Sanskrit language and literature by the Jainas.

I need not commend this volume to the scholars, I should however be permitted to state very briefly some facts. This volume contains entries of 2,000 manuscripts Each manuscript is serially numbered and is followed by the necessary details of the title, author, commentator, if any, number of folios, script, language, probable date, beginning and end of the work and remarks wherever necessary. Various appendices will be found useful by the researchers, more particularly the appendix giving the list of rare manuscripts

After publication of the five volumes of this project, the Centre would promote cataloguing of the manuscripts in other Bhandaras in Rajasthan The complete project is quite ambitious as it also aims at the publication of important manuscripts found in the Jain Bhandaras in Rajasthan How long will it take for us is a matter of guess for me too But I believe and trust the words of Bhavabhuti "कालो ह्ययं निरवधि"

Dated 14-6-81

R. C. Dwivedi
Dean, faculty of Arts &
Director, Centre for Jain Studies,
University of Rajasthan, Jaipur

विषय-सूची

प्रस्तावना

ग्रन्थों के लिखने की परम्परा का विकास

प्राचीन काल में लेखनकला का प्रचलन नहीं था। लोगो की स्मृति इतनी तीव्र थी कि उन्हे कभी इसकी आवश्यकता ही नहीं पडी। शिक्षा पीढी दर पीढी मौखिक रूप से ही दी जाती थी। शिक्षा की यह परम्परा केवल जैनों तक ही सीमित नही थी अपितु जैनेतर समाज मे भी यही परम्परा प्रचलित थी।

यही कारण है कि समस्त वैदिक वाड्मय प्रारम्भ से ही मौखिक रूप से ही चला आ रहा था। विद्यार्थियों की स्मरणशक्ति इतनी तीव्र थी कि वे उच्चारण तक मे बिना अशुद्धि किये पूरी वैदिक ऋचाओं को स्मरण कर लेते थे। इसी परम्परा के कारण वेदों को श्रुति भी कहा गया है।

जैन मान्यता है कि तीर्थंकरो द्वारा प्रतिपादित उपदेश मौखिक रूप से ही दिये गये थे। यद्यपि प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने हजारो लाखो वर्ष पूर्व ब्राह्मी लिपि का आविष्कार कर दिया था। लेकिन महावीर तक मौखिक परम्परा ही चलती रही।

भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् जब समूचे आगम साहित्य को मौखिक रूप से स्मरण नही किया जा सका तो आगम साहित्य को लिपिबद्ध करके सुरक्षित रखने के लिये विभिन्न नगरो मे सभायें आयोजित की जाती रही। दिगम्बर सम्प्रदाय के अनुसार भूतबली पुष्पदन्त ने अवशिष्ट आगम साहित्य को लिपिबद्ध किया। जब कि श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार अंतिम वाचना देवर्द्धिगणि क्षमाक्षमण की अध्यक्षता मे वीर निर्वाण सम्वत् ९८० मे वल्लभी मे समस्त आगमो को लिपिबद्ध किया गया। उसके बाद ग्रन्थो को लिपिबद्ध करने की परम्परा मे अधिकाधिक विकास हुआ। इसके पूर्व भी कथंचित् आगम लिखाने का उल्लेख सम्राट् खारवेल के उल्लेख मे पाया जाता है। अनुयोग-द्वार सूत्र मे पुस्तक पत्रारूढ श्रुत को द्रव्य-श्रुत माना है।[1]

वल्लभी वाचना के पश्चात् तो मौखिक ज्ञान को लिपिबद्ध करने की होड सी लग गयी। यही नही, नये-नये ग्रन्थो का निर्माण किया जाने लगा। ग्रन्थो को लिखने, लिखवाने पढने एवं सुनने मे महान् पुण्य की प्राप्ति मानी जाने लगी।

श्रुतज्ञान की अभिवृद्धि मे जैनाचार्यों, भट्टारको, मुनियो एवं श्रावको ने सविशेष योगदान दिया। हरिभद्र सूरि ने "योग-दृष्टि समुच्चय" मे "लेखना पूजना दान" द्वारा पुस्तक, लेखन को योगभूमिका का अंग बतलाया है। "वद्धमान कहा" मे पुस्तकलेखन के महत्व को इस प्रकार बतलाया है—

---

१ — "से किं तं जाणयसरीर–भवीयसरीरवइरित्त ? दव्वसुय पत्तयपोत्थयलिहि।" पत्र–३४–१

एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ ।
जो णरु णारि एहु मणि भावइ, पुणह श्रहिउ पुण्यफल व पावइ ॥

इसी तरह "उपदेश-तरगिणी" मे ग्रन्थो के लिखने, लिखवाने, सुनने एव रक्षा करने को निर्वाण का कारण बतलाया है—

ये लेखयन्ति जिनशासनं पुस्तकानि, व्याख्यानयन्ति च पठन्ति च पाठयन्ति ।
श्रवणन्ति रक्षणविधौ च समाद्रयन्ते, ते देव मर्त्यशिवशर्म नरा लभन्ते ॥

कुछ समय पश्चात् तो ग्रन्थो के अन्त मे लिखी हुई प्रशस्तियो मे पुस्तक-लेखन के महत्त्व का वर्णन किया जाने लगा—

ये लेखयन्ति सकल सुधियोऽनुयोग शब्दानुशासनमशेषमलकृतीश्च ।
छन्दासि शास्त्रमपर च परोपकारसम्पादनैकनिपुणा पुरुषोत्तमास्ते ।।९४।।

किं किं तैर्न न किं विवपित दान-प्रदत्त न किं ।
के वाऽऽपन्ननिवारिता तनुमता मोहार्णवे मज्जताम् ।।९५।।

नो पुण्य किमुपार्जित किमु यशस्तार न विस्तारित ।
सत्कल्याणकलापकारणमिद यै शासन लेखितम् ।।

इस प्रकार हस्तलिखित ग्रन्थो की पुष्पिकाओ तथा कुमारपाल प्रबन्ध, वस्तुपाल चरित्र, प्रभावक चरित्र, सुकृतसागर महाकाव्य, उपदेश तरगिणी, कर्मचन्द आदि अनेको रास एव ऐतिहासिक चरित्रो मे समृद्ध श्रावको द्वारा लाखो करोडो के सद्व्यय से ज्ञान-कोश लिखवाने तथा प्रचारित करने के विशुद्ध उल्लेख पाये जाते है। शिलालेखो की भाति ही ग्रन्थ-लेखन-पुष्पिकाओ का बडा भारी ऐतिहासिक महत्त्व है। जैन राजाओ, मन्त्रियो एव धनाढ्य श्रावको के सत्कार्यों की विरुदावली में लिखी हुई प्रशस्तिया भी किसी खण्ड काव्य से कम महत्त्वपूर्ण नही है। गुर्जरेश्वर सिद्धराज, जयसिह और कुमारपालदेव ने बहुत बडे परिमाण मे शास्त्रो की ताडपत्रीय प्रतिया स्वर्णाक्षरी व सचित्रादि तक लिखवायी थी। यह परम्परा न केवल जैन नरपति श्रावक-वर्ग मे ही थी अपितु श्री जिनचन्द्र सूरि का अकबर द्वारा "युग-प्रधान" पद देने पर बीकानेर के महाराजा रायसिह, कु वर दलपतसिह आदि द्वारा भी सस्याबद्ध प्रतिया लिखवाकर भेट करने के उल्लेख मिलते हैं। एव इन ग्रन्थो की प्रशस्तियो मे बीकानेर, खम्भात आदि के ज्ञान-भण्डारो मे ग्रन्थ स्थापित करने के विशद वर्णन पाये जाते है।

जैन श्रावको ने अपने गुरुओ के उपदेश मे बडे-बडे शास्त्र-भण्डार स्थापित किये है। भगवती सूत्र श्रवण करने समय गौतम-स्वामी के ३६ हजार प्रश्नो पर स्वर्ण मुद्राये चढाने का पेथडसाह, सोनी सग्रामसिह आदि का एव ३६ हजार मोती चढाने का वर्णन मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र के चरित्र मे भी पाया जाता है। उन मोतियो के बने हुए चार-चार सौ वर्ष प्राचीन चन्दवा पुठिया आदि आज भी बीकानेर के बडे उपाश्रय मे विद्यमान हैं। जिनचन्द्र सूरि के उपदेश से जैसलमेर, पाटण, खम्भात, जालौर, नागौर आदि स्थानो मे शास्त्र भण्डार स्थापित होने का वर्णन उपाध्याय समयसुन्दर गणि कृत "कल्पलता" ग्रन्थ मे भी पाया जाता है। धरणा-

शाह मण्डन, धनराज और पेथडशाह, पर्वत कान्हा, थारुशाह आदि ने ज्ञान-भण्डार स्थापित करने मे अपनी-अपनी लक्ष्मी को मुक्त हस्त से व्यय किया था। थारुशाह का भण्डार आज भी जैसलमेर मे विद्यमान है। जैन ज्ञान-भण्डारों मे बिना किसी धार्मिक भेद-भाव के ग्रन्थ सग्रहीत किये जाने लगे। यही कारण है कि कितने ही जैनेतर ग्रन्थो की पाण्डुलिपिया तो केवल जैन-ग्रन्थागारो मे ही उपलब्ध होती हैं।

राजस्थान के जैन मन्दिरों में उपलब्ध एव प्रतिष्ठापित ग्रन्थ सग्रहालय भारतीय संस्कृति एवं विशेषत: जैन-साहित्य एव सस्कृति के प्रमुख केन्द्र हैं। राजस्थान मे ऐसे ग्रन्थ भण्डारों की सख्या सैकडों में हैं और उनमे सग्रहीत पाण्डुलिपियो की सख्या तो लाखो मे है। राजस्थान के इन भण्डारो मे पाँच लाख से भी अधिक ग्रन्थो का सग्रह उपलब्ध होता है। ये शास्त्र भण्डार प्रत्येक गाव एव नगर मे जहाँ भी मन्दिर हैं, स्थापित है, और भारतीय वाङ्मय को सुरक्षित रखने का दायित्व लिये हुए है। ऐसे स्थानों में जयपुर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा, बून्दी, भरतपुर, अजमेर आदि नगरो के नाम विशेषत उल्लेखनीय हैं। वास्तव मे इन ज्ञान-भण्डारो ने साहित्य की सैकडो अमूल्य निधियो को नष्ट होने मे बचा लिया। अकेले जैसलमेर के ज्ञान-भण्डार को देखकर कर्नल टॉड, डा० व्यूहलर, डा० जैकोबी जैसे पाश्चात्य विद्वान् एव भण्डारकर, दलाल जैसे भारतीय विद्वान् आश्चर्य चकित रह गये थे, और उन्हे ऐसा अनुभव होने लगा था कि मानो उनकी वर्षों की साधना पूरी हो गयी हो। मेरा मानना है कि यदि उक्त विद्वानो को उस समय नागौर, अजमेर एव जयपुर के ग्रन्थ-भण्डारो को भी देखने का सौभाग्य मिल जाता तो सम्भवत उनकी साहित्यिक धरोहर को देखकर नॉच उठने और फिर न जाने जैनाचार्यों की साहित्यिक सेवाओ पर कितनी श्रद्धाजलिया अर्पित करते। स्वय लेखक को राजस्थान के पचासो ग्रन्थ-भण्डारो को देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। वास्तव मे मुस्लिम युग मे धर्मान्ध शासको द्वारा इन शास्त्र-भण्डारो का विनाश नही किया होता अथवा हमारी स्वय की लापरवाही से सैकडो, हजारो ग्रन्थ चूहो, दीमको एव सीलन मे नष्ट नही हुए होते तो पता नही आज कितनी अधिक सख्या मे इन भण्डारो मे पाण्डुलिपिया होती। फिर भी जो कुछ आज अवशिष्ट है वही हमारे अतीत पर पर्याप्त प्रकाश डालती है, और उसी पर हम गर्व कर सकते है।

लेखन सामग्री का उपयोग

प्राचीनकाल मे पुस्तके किस प्रकार लिखी जाती थी? और लिखने के लिए किन-किन साधनो का उपयोग होता था? इन्ही सब बातो पर विचार करने से पूर्व, ग्रन्थ किस-किस प्रकार के होते थे? यह जानकारी देना अधिक उपयुक्त होगा।

जैसे आजकल पुस्तको के बारे मे रॉयल, सुपर रॉयल, डेमी, क्राउन आदि अग्रेजी शब्दो का प्रयोग किया जाता है, उसी तरह प्राचीनकाल मे अमुक आकार और प्रकार मे लिखी जाने वाली पुस्तकों के लिए कुछ विशिष्ट शब्द प्रयुक्त होते थे। इस बारे मे जैन-भाष्यकार, चूर्णिकार और टीकाकार जो जानकारी देते है वह जानने योग्य है—

प्राचीनकाल मे विविध आकार-प्रकार की पुस्तकें होने के उल्लेख दशवैकालिक सूत्र की हरिभद्रीय टीका[1], निशीथ चूर्णि[2], बृहत्कल्प सूत्र वृत्ति[3] आदि में पाये जाते हैं। इनके अनुसार पुस्तको के पाँच प्रकार थे—[4]

गण्डी, कच्छपी, मुष्टि, संपुट तथा छेदपाटी। इनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

१. **गण्डी पुस्तक**—जो पुस्तक चौड़ाई और मोटाई मे समान हो किन्तु विविध लम्बाई वाली ताड़पत्रीय पुस्तक को गण्डी पुस्तक कहते हैं। गण्डि शब्द का अर्थ कतली होता है, अर्थात् जो पुस्तक गण्डिका अर्थात् कतली जैसी हो, गण्डी-पुस्तक कही जाती है। आजकल जो छोटी-मोटी ताड़पत्रीय पुस्तक मिलती है उसको, एवं इसी पद्धति मे लिखे कागज के ग्रन्थों को भी गण्डी-पुस्तक कहा जाता है।

२. **कच्छपी पुस्तक**—जो पुस्तक दोनो तरफ के छोरो मे पतली हो तथा मध्य मे कछुए की भाति मोटी हो, उसे कच्छपी पुस्तक कहते हैं। इस प्रकार की पुस्तकें इस समय देखने में नही आ रही हैं।

१—"गण्डी कच्छवि मुट्ठि, सपुडफलए तहा छिवाडी य। एय पुत्थयपणय, वक्खाणमिणं भवे तस्स॥ बाहल्ल–पुहत्तेहिं, गण्डीपुत्थो उ तुल्लगो दीहो। कच्छवि अते तणुओ, मज्झे पिहुलो मुणेयव्वो॥

चउरंगुलदीहो वा, वट्टागिइ मुट्ठिपुत्थगो अहवा। चउरगुलदीहो च्चिय, चउ रसो होइ विन्नेओ॥

सपुडगो दुगमाई, फलगा वोच्छ छिवाडिमेत्ताहे। तणुपत्त्सियरुवो, होइ छिवाडी बुहा बेंति॥

दीहो वा हस्सो वा, जो पिहुलो होइ अप्पबाहल्लो। त मुणियसमयसारा छिवाडिपोत्थ भणतीह॥"

—दशकालिक हरिभद्रीय टीका, पत्र २५।

२—पोत्थगपणग–दीहो बाहल्लपुहत्तेण तुल्ला चउरसो गडीपोत्थगो। अतेसु तणुओ मज्झे पिहुलो अप्पबाहल्लो कच्छभी। चउरगुलो दीहो वा वृत्ताकृति मुट्ठिपोत्थगो, अहवा चउरगुलदीहो चउरसो मुट्ठीपोत्थगो। दुमादिफलगा सपुडग। दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पबाहल्लो छिवाडी, अहवा तणुपत्तेहिं उस्सितो छिवाडी।

—निशीथचूर्णी।

३—गडी कच्छवि मुट्ठि, छिवाडी सपुडग पोत्थगा पच।

४—गण्डीपुस्तकः कच्छपी पुस्तकः मुष्टिपुस्तकः सम्पुटफलकः छेदपाटी पुस्तकश्चेति पंच पुस्तकाः।

—बृ. क. सू. उ. ३।

३. **मुष्टि पुस्तक**—जो पुस्तक चार अंगुल लम्बी हो और गोल हो उसको मुष्टि पुस्तक कहते हैं। अथवा जो चार अंगुल की चारों तरफ से चोखण्ड हो, तो भी मुष्टि पुस्तक कही जाती है। छोटी-मोटी टिप्पणाकाकार में लिखी जाने वाली पुस्तको का इसमें समावेश होता है। दूसरे प्रकार में वर्तमान की छोटी-मोटी डायरियों का या हाथ पोथी जैसी लिखित गुटकाओ का समावेश होता है।

४. **संपुटफलक**—लकडी की पट्टियों पर लिखी हुई पुस्तकों का नाम संपुट-फलक होता है। यन्त्र, जम्बू-द्वीप, अढाई-द्वीप, लोकनालिका, समवशरण आदि की चित्रावली जो लकडी की पट्टिकाओ पर लिखी हो तो सपुट–फलक मे समाविष्ट होती हैं। अथवा लकडी की पाट्टी पर लिखी पुस्तक को सम्पुट-पुस्तक कहते हैं।

५. **छेदपाटी**—कम पन्नो वाली पुस्तक को छेदपाटी पुस्तक कहते हैं, जो लम्बाई मे कितनी ही हो किन्तु मोटाई मे थोडी हो तो छेदपाटी कहलाती हैं।

उपर्युक्त सभी प्रकार की पुस्तके सातवी शती तक के लिखित प्रमाणो के आधार पर बताई गयी हैं। इस प्रकार की पुस्तकें आज एक भी उपलब्ध नही है।

उपलब्ध एक हजार वर्ष के ग्रन्थों में प्रयुक्त लेखन सामग्री

पुस्तक लेखन के प्रारम्भकाल के बाद का लेखनकला का वास्तविक इतिहास अधेरे मे डूबा हुआ होने से प्राचीन उल्लेखो के आधार पर उसके ऊपर जितना प्रकाश डाला जा सकता है उतना प्रयत्न किया गया है। अब उसके बाद वर्तमान में उपलब्ध विक्रम की ११वी शती से २०वी शती तक की लेखन-कला के साधन और उनके विकास के सम्बन्ध में कुछ प्रकाश यहां डाला जा रहा है—

लिप्यासन—राजप्रश्नीय सूत्र मे "लिप्यासन"–लिपि + आसन=लिप्यासन का अर्थ मषीभाजन रूप में लिया है। पर हम यहाँ लिपि के आसन अथवा पात्र, तरीके के साधन मे, ताडपत्र, वस्त्र, कागज, लकडी की पट्टिया, भोजपत्र, ताम्रपत्र, रौप्यपत्र, सुवर्णपत्र, पत्थर आदि का समावेश कर सकते हैं।

गुजरात, मारवाड, मेवाड, कच्छ दक्षिण आदि प्रान्तों में वर्तमान में जो जैन-ज्ञान भण्डार हैं उन सबको देखने से स्पष्ट समझा जा सकता है कि पुस्तकें मुख्य रूप से विक्रम की तेरहवीं सदी के पहले ताडपत्र और कपडे दोनों पर ही लिखी जाती थीं। लेकिन इन दोनो में भी ताड़पत्र का विशेष प्रचार था। लेकिन बाद में कागज का आविष्कार हो जाने से कागज पर ही ग्रन्थ लिखे जाने लगे, और इस प्रकार धीरे-धीरे ताडपत्र का युग क्रमशः लुप्त होता गया।

कपडे पर पुस्तकें क्वचित् पत्राकार के रूप में लिखी जाती थी।[1] इसका उपयोग टिप्पणी के लिखने के लिये तथा चित्र, पट, मन्त्र, यन्त्र, लिखने के लिए ही विशेष प्रमाण में हुआ करता था। कपडे पर लिखे ग्रन्थों मे धर्म-विधि-प्रकरण वृत्ति, कच्छूलीरास[2] और त्रिषष्टि-शलाका-पुरुष चरित्र की प्रतिया पत्राकार के रूप में पायी जाती हैं। जो २५"×५" की लम्बाई और चौडाई की हैं। परन्तु लोकनालिका, अढाईद्वीप, जम्बूद्वीप, नवपद, ह्रीकार, घण्टाकर्ण, पचतीर्थीपट आदि के चित्रवस्त्र पट पर प्रचुर परिमाण मे पाये जाते हैं। पन्द्रहवी शताब्दी तक के प्राचीन कई पचतीर्थीपट भी पाए गये हैं।

भोजपत्र का उपयोग बौद्ध एव वैदिक लोगों ने ही पुस्तके लिखने में किया है। अद्यावधि एक भी जैन ग्रन्थ प्राचीन भोजपत्र पर लिखा हुआ नही मिला है। सिर्फ १८वी एव १९वीं सदी से ही यतियो ने मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि के लिखने में इसका उपयोग किया है। किन्तु वह भी थोडे परिमाण मे।

मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि के लेखन के लिए कास्यपत्र,[3] ताम्रपत्र, रौप्यपत्र, स्वर्ण-

---

१. (क) "एकदा प्रातर्गुरुन् सर्वसाधूश्च वन्दित्वा लेखकशालाविलोकनाय गतः। लेखका. कागदपत्राणि लिखन्तो दृष्टाः। ततः गुरुपार्श्वे पृच्छा। गुरुभिरुचे—श्री चौलुक्यदेव! सम्प्रति श्रीताडपत्राणा त्रुटिरस्ति ज्ञानकोशे, अत कागदपत्रेषु ग्रन्थलेखनमिति॥" कुमारपाल प्रबन्ध पृष्ठ ९६।

(ख) श्री वस्तुपालमन्त्रिणा सौवर्णमषीमयाक्षरा एकासिद्धान्त प्रतिर्लेखिता। अपरास्तु श्रीताडकागदपत्रेपु मषीवर्णाञ्चिता' ६ प्रतय। एव सप्तकोटिद्रव्य-व्ययेन सप्त सरस्वतीकोशाः लेखिताः॥" उ० त० पृष्ठ १४२

२. सवत् १४०८ वर्षे चीबाग्रामे श्री नरचन्द्रसूरीणा शिष्येण श्री रत्नप्रभसूरीणा बाधवेन पंडित गुणभद्रेण कच्छूली श्रीपार्श्वनाथगोष्ठिक लीबाभार्या सौरी तत्पुत्र श्रावक जमा डूगर तद्भगिनी श्राविका वीभीतिल्ही प्रभृत्येषा साहाय्येन प्रभुश्री श्री प्रभसूरिविरचित धर्मविधिप्रकरण श्री उदयसिंहसूरि विरचिता वृत्ति श्रीधर्मविधिग्रन्थस्य कार्तिक-वदिदशमी दिने गुरुवारे दिवसपाश्चात्यघटिकाद्वये स्वपितृमात्रोः श्रेयसे श्रीधर्मविधि ग्रन्थमलिखत्॥ उदकानलचौरेभ्यो मूषकेभ्यस्तथैव च। कष्टेन लिखित शास्त्र यत्नेन परिपालयेत्॥छ॥

३ कांस्यपत्र, ताम्रपत्र, रौप्यपत्र, अने सुवर्णपत्रमा तेमना केटलीकवार पंचधातुना मिश्रितपत्रमा लखाग्रेना ऋषिमण्डल, घण्टाकर्ण घोसहियो यत्र, वीसो यत्र वगेरे मत्र-यत्रादि जैनमन्दिरोमां घणे ठेकाणे होय छ। जैन पुस्तको लखवा माटे ' १
देखिये—भारतीय जैन श्रमण सस्कृति अने लेखन कला पृष्ठ—२७
वसुदेवहिण्डी प्रथम खडमा ताम्रपत्र ऊपर पुस्तक लखवानो उल्लेख छेः
इयरेण तवपत्तेसु तणुगेसु रायलक्खण रएऊण तिहलास्सेण सिम्मेऊण तवभायणे पोत्थओ पक्खित्तो, निक्खित्तो नयरबाहिं दुव्वाबेदमज्झे। पत्र १८९

पत्र, पंचधातु आदि का अधिकांश उपयोग मन्त्र और यन्त्र लेखन मे हुआ है। लेकिन जैन-पुस्तकों के लेखन में प्रयोग किया हो ऐसा देखने मे नहीं आया है। राजाओ के दानपत्र ताम्रपत्रों पर लिखे जाते थे। जैन शैली मे नवपद यन्त्र, विंशतिस्थानक यन्त्र, घण्टाकर्ण, ऋषिमण्डल आदि विविध प्रकार के यन्त्र, आज भी ताम्रपत्र पर लिखे जाते हैं और वे मन्दिरो मे रखे जाते हैं। ताम्रपत्र पर लेखन का उल्लेख वसुदेवहिण्डी जैसे प्राचीन ग्रन्थो में भी पाया जाता है।

बौद्धों ने हाथी दांत, तथा उसके दांतो से बने हुए पत्रो का ग्रन्थ लेखन में उपयोग किया है। पर जैनों ने पुस्तकों के साधन जैसे आकडी, कांबी, ग्रन्थी, दाबडा, कुदडी आदि के वास्ते हाथी दांत का उपयोग किया है पर ग्रन्थलेखन मे नही। इसी प्रकार रेशमी कपडा तथा चमडा की पाटली अथवा पट्टी चढाए हो और उसके ऊपर ग्रन्थो के नाम वगैरह लिखे हो, पर स्वतन्त्र रूप से ग्रथ लेखन में उसका उपयोग नही किया है। वृक्षों की छाल आदि का उपयोग जैनेतर ग्रथो मे हुआ है। अगुरुछाल पर सवत् १७७० मे लिखी हुई ब्रह्मवैवर्तपुराण की प्रति बडौदा के ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में उपलब्ध हुई है।[1] जैन ग्रथो मे ऐसे उपादानो का उपयोग नही हुआ है। उपर्युक्त सभी साधनों पर सक्षिप्त मे आगे प्रकाश डाला जा रहा है।

ताडपत्र—ये ताड वृक्ष के पत्ते है। इस पेड का संस्कृत नाम तल अथवा ताल है, और गुजराती में इसको ताड कहते है ताड वृक्ष दो प्रकार के होते हैं—(१) खरताड और (२) श्रीताड। गुजरात की भूमि पर जो ताड देखने मे आता है वह खरताड है। इसके पत्र मोटे, लम्बे और चौडाई मे छोटे होते है। ये पत्र झटका लगते ही टूट जाते है। अत. इनका उपयोग ग्रथ लेखन मे नही होता है। श्रीताड के पेड मद्रास, ब्रह्मादिदेशो मे विशेष प्रमाण मे पाए जाते हैं। उनके पत्र मुलायम, ३७"×३" से भी ज्यादा लम्बे मोटे तथा कोमल होते है। इनके सडने का, और नमाने मे भी एकाएक टूटने का भय नही रहता हे। पुस्तक लिखने मे इन्ही ताडपत्रो का प्रयोग किया जाता था।

कागज—कागज के लिए प्राचीन सस्कृत ग्रथो मे कागद या कद्‌गल शब्द का प्रयोग हुआ है। जैसे आजकल अलग-अलग प्रान्तों मे छोटा-मोटा भाडा-पतला, अच्छा-बुरा आदि अनेक जाति के कागज बनते हैं। उसी तरह पुराने जमाने से लेकर आज तक देश के प्रत्येक विभाग मे काश्मीर, दिल्ली, पटना, सागानेर, कानपुर, खम्भात, अहमदाबाद, कागजीपुरा (दौलताबाद के पास) आदि अनेक स्थानो में अपनी खपत और आवश्यकतानुसार कागज तैयार होता था। विविध जाति के कागजो मे विशेषतः काश्मीर का काश्मीरी कागज, कानपुर का कानपुरी कागज, अहमदाबाद का अहमदाबादी और सांगानेर का सागानेरी कागज सर्वोत्तम होते थे। प्राचीन ज्ञान-भण्डारो मे प्राप्त कागज आज के कागज के अनुसार ही लगते है। आजकल तैयार होने वाला मिल का कागज तो प्राचीन कागज की तुलना मे कम टिकाऊ है।

कागज के पन्ने काटना—कागज बडे-बडे आकार के तैयार होते थे। उसमे से अपनी आवश्यकता के माप का पन्ना काटने के लिए उस समय आज की भाति पेपर-कटर मशीन नही

१. भारतीय जैन श्रमण सस्कृति अने लेखन कला पृष्ठ-२८।

और प्राकृत ओलि और गुजराती ओल शब्द से बना है। लकडी के फलक या गत्ते के मजबूत पुठे पर छेद कर मजबूत सीधी डोरी छोटे-बडे अक्षरो के चौडे-सकड़े अन्तरालानुसार दोनों ओर कसकर बांध दी जाती है और उस पर रग-रोगन लगाकर तैयार किये फाटिये पर कागज को रख कर अगुलियो द्वारा तान कर लकीर चिह्नित कर ली जाती है। तथा ताडपत्रीय पुस्तको पर छोटी सी बिन्दु सीधी लकीर आने के लिए कर दी जाती थी।

स्याही पुस्तक लेखन मे अनेक प्रकार की स्याहियो का प्रयोग दृष्टिगत होता है। परन्तु सामान्य रूप से लेखन के लिए काली स्याही ही सार्वत्रिक रूप मे काम मे लाई गई है। सोने-चांदी की स्याही से भी पुस्तके लिखी जाती थी, पर सोना-चादी के महार्घ्यता के कारण उसका उपयोग अत्यल्प परिमाण मे ही विशिष्ट शास्त्र लेखन मे श्रीमन्तो द्वारा होता था। लाल रग का प्रयोग बीच-बीच मे प्रकरण समाप्ति व हासिए की रेखा मे तथा चित्रादि के आलेखन मे प्रयोग होता था।

भारत मे हस्तलेखो की स्याही का रंग बहुत पक्का बनाया जाता था। यही कारण है कि ऐसी पक्की स्याही से लिखे ग्रथो के लेखन मे चमक अब तक बनी हुई है। विविध प्रकार की स्याही बनाने के नुस्के विविध ग्रयों मे दिये हुए है। भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला मे जो नुस्खे दिये हुए हैं वे इस प्रकार है—

प्रथम प्रकार—

"सहवर-भृ ग-त्रिफलाः, कासीम लोहमेव नीली च
समकज्जल-बोलयुता, भवति मषी ताडपत्राणाम् ॥

व्याख्या—"सहवरेति काटासेहरीओ (धमासो) भृगेति भागुरओ। त्रिफला प्रसिद्धैव। कासीममिति कसीसम्, येन काष्ठादि रज्यते। लोहमिति लोहचूर्णम्। नीलीति गलीनिष्पादको वृक्ष तद्रसाः। रस विना सर्वेषामुत्कल्य क्वाथः क्रियते, स च रसोऽपि। समवर्तितकज्जल-बोलयोर्मध्ये निक्षिप्यते, ततस्ताडपत्रमषी भवतीति ॥'

अर्थात्—धमासा, जलभागरा का रस, त्रिफला, कसीस, लोहचूर्ण को उबाल कर, क्वाथ बनाकर इसके बराबर परिमाण मे गली के रस को मिलाकर, काजल व बीजाबोल मिलाने मे स्याही बन जाती है। इसका उपयोग ताडपत्र पर लिखने के लिए होता है।

दूसरा प्रकार—

कज्जल पा (पो) इण बोल, भूमिलया पारदस्स लेम च।
उसिणजलेण विघसिया, वडिया काऊण कुट्टिज्जा ॥१॥
तत्तजलेण व पुणओ घोलिज्जती दंढ मसी होई।
तेण विलिहिया पत्ता, वच्चह रयणीइ दिवसु व्व ॥२॥

अर्थात्—काजल, पोयण, बीजाबोल, भूमिल्ला, जलभांगरा और पारे को उबलते हुए पानी मे मिलाकर, ताम्बे की कडाई मे सात दिन तक घोटकर एक रस करले। फिर

उसकी बडियां बनालें और उन्हें कूट कर रखें और फिर जब आवश्यक हो उसे गरम पानी मे खूब मसल लें स्याही तैयार हो जाती है ।[1]

तीसरा प्रकार—

"कोरडए वि सरावे, अंगुलिया कोरडम्मि कज्जलए ।
मद्दह सरावलग्ग, जाव चिय चि (क्क) ग मुअइ ॥३॥
पिचुमदगु दलेस, खायरगुंद व बीयजलमिस्सं ।
भिज्जवि तोएण दढ, मद्दह जा त जल सुसई ॥४॥
इति ताडपत्रमस्याम्नाय: ॥"

अर्थात्—नये काजल को मिट्टी के कोरे सिकोरे मे अगुली से इतना मलें कि उसका चिकनापन छूट जाये । फिर उसे नीम या खेर के गोद के साथ बीआजल के मिश्रण मे भिगोकर खूब घोटे जब तक कि पानी सूख न जावे, फिर बडिया बनाले ।

चौथा प्रकार—

निर्यासात् पिचुमन्दजाद् द्विगुणितो बोलस्ततः कज्जल,
मजात तिलतैलतो हुतवहे तीव्रातपे मर्दितम् ।
पात्रे शूल्वमये तथा शन (?) जलैर्लाक्षारसैर्भावितः ।
सद्भल्लातक-भृ गराजरसयुक् सम्यग् रसोऽय मषी ॥१॥

अर्थात्—नीम का गोद, उससे दूगना बीजाबोल, उससे दूगने काजल को गोमूत्र के साथ घोटकर ताम्रपात्र मे गरम करें । सूखने पर थोडा-थोडा पानी देते रहे, फिर इसमे शोधा हुआ भिलावा तथा भागरे का रस डाले, उत्तम स्याही बन जावेगी ।

पांचवा प्रकार—

ब्रह्मदेश, कर्नाटक आदि देशो मे ताडपत्र पर लोहे की सूई से कोर कर लिखा जाता है । उन अक्षरो मे काला रग लाने के लिए नारियल की टोपसी या बादाम के छिलको को जलाकर, तेल मे मिलाकर, कुरेदे हुए अक्षरो पर काले चूर्ण को पोतकर, कपडे से साफ कर देते हैं। इससे चूर्ण अक्षरो मे भरा रह जाता है, और अक्षर स्पष्ट पढने मे आ जाते है। उपर्युक्त सभी प्रकार, ताडपत्र पर लिखने की स्याही के हैं ।

---

१. श्लोक मे तो यह नही बताया गया है कि उक्त मिश्रण को कितनी देर घोंटना चाहिये । परन्तु जयपुर मे कुछ परिवार स्याही वाले ही कहलाते है । त्रिपोलिया के बाहर उनकी प्रसिद्ध दूकान थी । वहाँ एक कारखाने के रूप मे स्याही बनाने का कार्य चलता था । महाराजा के पोथीखाने मे भी "सरबराकार" स्याही तैयार किया करते थे । इन लोगों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि स्याही की घुटाई कम से कम आठ पहर होनी चाहिए । मात्रा अधिक होने पर अधिक समय तक घोटना चाहिए ।
—गोपालनारायण बहुरा

इसी प्रकार कागज और कपडे पर लिखने की स्याही के बनाने की भी कई विधिया हैं:—

पहली विधि—

जितना काजल उतना बोल, तेथी दूणा गुंद भकोल ।
जो रस भागरा नो पडे, तो अक्षरे-अक्षरे दीवा बले ॥

दूसरी विधि—

मष्यर्धं क्षिप सद्गुन्द गुन्दार्धं बोलमेव च,
लाक्षाबीयारसेनोच्चैर्मर्दयेत् ताम्रभाजने ॥१॥

अर्थात्—काजल मे आधा गोद, गोद से आधा बीजाबोल, लाक्षारस तथा बीग्रारस के साथ ताम्रपात्र मे रगडने से काली स्याही तैयार होती है ।

तीसरी विधि—

बीआ बोल अनइल लक्खा रस, कज्जल वज्जल (?) नइ अबारस ।
"भोजराज" मिसी नियाद्, पान ओ फाटई मसी बनि जाई ॥

चौथी विधि—

लाख टाक बीस मेल, स्वाग टाक पाच मेल ।
नीर टांक दो सौ लेई हाडी मे चढाइये ॥
ज्यो लो आग दीजे त्यो लो और खार सब लीजे ।
लोदर खार बाल-बाल पीस के रखाइये ॥
मीठा तेल दीय जल, काजल सो ले उतार ।
नीकी विधि पिछानी के ऐसे ही बनाइए ॥
चाइक चतुर नर लिखके अनूप ग्रन्थ ।
बांच बाच बाच रीझ-रीझ मौज पाइए ॥

पांचवीं विधि—

स्याही पक्की करने की विधि—लाख चोखी अथवा चौपडी ६ पैसे भर लेकर तीन सेर पानी मे डाले, २ पैसा भर सुवागा डाले, ३ पैसा भर लोध डालें, फिर उसको गरम करे और जब पानी तीन पाव रह जावे तब उतार लें । बाद मे काजल १ पैसा भर डाल कर घोट-घोंट कर सुखा ले । आवश्यकतानुसार इसमे से लेकर शीतल जल मे भिगो दें । तो पक्की स्याही तैयार हो जाती है ।

छठी विधि—

काजल ६ टाक, बीजाबोल १२ टांक, बेर का गोंद ३६ टाक, अफीम १/२ टांक, अलता पोथी ३ टाक, फिटकडी कच्ची १/२ टांक, नीम के घोटे से ताम्बे के बरतन में सात दिन तक घोटे ।

उपर्युक्त नुस्खे मुनि श्री पुण्यविजय जी ने यहाँ वहाँ से लेकर दिये हैं। उनका अभिमत है कि पहली विधि से बनी स्याही सर्वश्रेष्ठ है। अन्य स्याही पक्की तो है पर कागज-कपड़े को क्षति पहुँचाती है। लकड़ी की पट्टी पर लिखने के लिए सब ठीक हैं।[1]

सुनहरी एवं रूपहली स्याही--

सोना और चांदी की स्याही बनाने के लिए वर्क को खरल मे डालकर धोक के गूंद के स्वच्छ जल के साथ खूब घोंटते जाना चाहिए। बारीक हो जाने पर मिश्री का पानी डालकर हिलाना चाहिए। स्वर्ण चूर्ण नीचे बैठ जाने पर पानी को धीरे-धीरे निकाल देना चाहिए। इस प्रकार तीन-चार धुलाई पर गूंद निकल जायेगा और सुनहरी या रूपहली स्याही तैयार हो जावेगी।

लाल स्याही--

हिंगुल को खरल मे मिश्री के पानी के साथ खूब घोटकर ऊपर आने हुए पीलास लिए हुए पानी को निकाल दें। इस तरह दस पन्द्रह बार करने से पीलास बाहर निकल जावेगा और शुद्ध लाल रंग रह जावेगा। फिर उसे मिश्री और गूंद के पानी के साथ घोंट-कर एक रस कर लें, फिर सुखा कर, बडीया बना लें और आवश्यकतानुसार पानी में घोल कर स्याही बनाले।

लेखक—

"लेखक" शब्द लेखन-क्रिया के कर्त्ता के लिए प्रयुक्त होता है। लेखक के पर्याय-वाची शब्द जो भारतीय परम्परा मे मिलते है वे हैं[2]—लिपिकार या लिबिकार या दिपिकार। इस शब्द का प्रयोग चतुर्थ शती ई०पू० से हुआ मिलता है। अशोक के अभिलेखों में भी इसका कई बार उल्लेख हुआ है। इनमे यह दो अर्थों मे आया है—प्रथम तो लेखक, दूसरा शिलाओ पर लेख उत्कीर्ण करने वाला व्यक्ति। संस्कृत कोषो मे इसे लेखक का ही पर्यायवाची माना गया है। जैसे अमरकोश मे—

"लिपिकारोऽक्षरचणो क्षरऽचु-चुश्च लेखके"।

मत्स्यपुराण में लेखक के निम्न गुण बताये गये हैं—

लेखक के गुण—

सर्वदेशाक्षरभिज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः।
लेखकः कथितो राज्ञः सर्वाधिकरणेषु वै॥

---

१. इसी बात को स्पष्ट करते हुए मुनि जी ने बताया है कि जिस स्याही मे लाख, कत्था और लोध पडा हो तो वह स्याही कपड़े और कागज पर लिखने के काम की नही होती है। इससे कपड़े एवं कागज तम्बाकू के पत्ते जैसे हो जाते हैं।
—भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला पृष्ठ ४२

२. पाण्डे, आर० बी०, इण्डियन पालायोग्राफी पृष्ठ ६०।

शीर्षोपितान् सुसंपूर्णान् शुभश्रेणिगतान् समान् ॥
अक्षरान् वै लिखेद्यस्तु लेखकः स वरः स्मृतः ॥
उपायवाक्यकुशलः सर्वशास्त्रविशारदः ।
बह्वर्थवक्ता चाल्पेन लेखकः स्यान्नृपोत्तम ॥
वाचाभिप्रायः तत्वज्ञो देशकालविभागवित् ।
अनाहार्यो नृपे भक्तो लेखकः स्यान्नृपोत्तम ॥

अध्याय, १८९

गरुड–पुराण मे लेखक के निम्न गुण बताये गये है—

मेधावी वाक्पटुः प्राज्ञ सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
सर्वशास्त्रसमालोकी ह्यर्षे साधु सः लेखक. ॥

ऊपर के श्लोको मे लेखक के जिन गुणो का उल्लेख किया गया है, उनमे सबसे महत्त्वपूर्ण है "सर्वदेशक्षराभिज्ञः"–समस्त देशो के अक्षरो का ज्ञान लेखक को अवश्य होना चाहिये। साथ ही "सर्वशास्त्रसमालोकी"—समस्त शास्त्रो मे लेखक की समान गति होनी चाहिए।

ऊपर उद्धृत पौराणिक श्लोको मे जिस लेखक की गुणावली प्रस्तुत की गई है, वह वस्तुतः राज-लेखक की है। उसका स्थान और महत्त्व लिपिया या लिपिकार के जैसा माना जा सकता है। हिन्दी मे लेखक मूल रचनाकार को भी कहते है। लिपिकार को भी विशेषार्थक रूप मे लेखक कहते हैं।

मन्दिरो, सरस्वती तथा ज्ञान-भण्डारो मे लेखक-शालाओ के उल्लेख मिलते है। "कुमारपाल प्रबन्ध" में इसका उल्लेख इस प्रकार आया है—"एकदा प्रातर्गुरून् सर्वसाधूश्च वन्दित्वा लेखकशाला विलोकनाय गत । लेखका कागदपत्राणि लिखन्तो दृष्टा ।[1] जैनधर्म मे पुस्तक लेखन को महत्त्वपूर्ण और पवित्र कार्य माना है। आचार्य हरिभद्रसूरि ने "योग-दृष्टि-समुच्चय" मे लेखना पूजना दान" मे श्रावक के नित्य कृत्यो मे पुस्तक लेखन का भी विधान किया है। जैन ग्रन्थो से यह भी विदित होता है कि ग्रन्थ रचना के लिए विद्वान लेखक को विद्वान शिष्य और श्रमण विविध सूचनाये देने मे सहायता किया करते थे।[2] ऐसी भी प्रथा थी कि ग्रन्थ

---

१. कुमारपाल प्रबन्ध पृष्ठ ९६।

२ (क) "अणहिल्लवाडयपुरे, रइय सिज्जमसाभिगो चरिय ।
साहज्जेण पडियजिण चन्द्रगणिस्स सीसस्स ॥"

— भगवति वृत्ति अभयदेवीयाः

(ख) साहेज्ज मव्वेहिं कय ··· ·· ··· समित्थ संघम्मि ।
नयकित्तिबुहेण पुण, विसेसओ सोहणाईहिं ।"

—अरिष्टनेमिचरित्र रत्नप्रभीय

रचनाकार अपने विषय के मान्य शास्त्रवेत्ता और आचार्य के पास अपनी रचना संशोधनार्थ भेजा करते थे। उनसे पुष्टि पाने के बाद ही रचनाओं की प्रतियां कराई जाती थीं। ग्रन्थ लेखन या लेखक का कार्य पहले ब्राह्मणों के हाथों मे रहा, बाद में "कायस्थों" के हाथो मे चला गया। "कायस्थ" लेखकों का व्यवसायी वर्ग था। विज्ञानेश्वर ने याज्ञवल्क्य स्मृति (१/३३६) की टीका में मूल पाठ मे आये कायस्थ शब्द का अर्थ लेखक ही किया है–"कायस्थगणका लेखकाश्च"। इसमे सन्देह नही कि कायस्थ वर्ग व्यवसायिक लेखको का वर्ग होता था। यही आगे चलकर जाति के रूप मे परिणत हो गया। कायस्थो का लेखन बहुत सुन्दर होता था। डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने निम्न दस प्रकार के लिपिकार बताये है —

(१) जैन/श्रावक या मुनि

(२) साधु

(३) गृहस्थ

(४) पढाने वाला (चाहे कोई हो)

(५) कामदार (राजघराने के लिपिक)

(६) दफ्तरी

(७) व्यक्ति विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

(८) अवसर विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

(९) सग्रह के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो मकता है।

(१०) धर्म विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

लेखक की साधन सामग्री—

लेखक को लेखन कार्य के लिए अनेक प्रकार की सामग्री की आवश्यकता रहती थी। एक श्लोक मे "क" अक्षर वाली १७ वस्तुओं की सूची मिलती है[१]—(१) कुंपी (दवात), (२) काजल (स्याही), (३) केश सिंह के बाल या रेशम), (४) कुश (दर्भ), (५) कम्बल, ६) कांबी, (७) कलम, (८) कृपाणिका (छुरी), (९) कतरनी (कैंची), (१०) काष्ठ पट्टिका, (११) कागज, (१२) कीकी (आंखे), (१३) कोठडी (कमरा), (१४) कलमदान, (१५) क्रमण-पैर, (१६) कटिकमर और (१७) ककड़।

लेखक की निर्दोषता—

जिस प्रकार ग्रन्थकार अपनी रचना मे हुई स्खलना के लिए क्षमाप्रार्थी बनता है वैसे ही लेखक अपनी परिस्थिति और निर्दोषता प्रकट करने वाले श्लोक लिखता है—

---

१. भारतीय जैन श्रमण सस्कृति अने लेखन कला,—पृष्ठ ५५

अदृष्टदोषान्मतिविभ्रमाद्वा, यदर्थहीनं लिखितं मयाऽत्र ।
तत् सर्वमार्यै. परिशोधनीय, कोपं न कुर्यात् खलु लेखकस्य ।।

यादृश पुस्तके दृष्ट, तादृश लिखित मया ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा, मम दोषो न दीयते ।।

भग्नपृष्ठिकटिग्रीवा, वक्रदृष्टिरधोमुखम् ।
कष्टेन लिखित शास्त्र, यत्नेन परिपालयेत् ।।

बद्धमुष्टिकटिग्रीवा, मद दृष्टिरधोमुखम् ।
कष्टेन लिखित शास्त्र, यत्नेन परिपालयेत ।।

लघु दीर्घ पदहीरा. वजरगहीरग लखागा हुई ।
अजारणपरगइ मूढपणइ पडत हुई ते सुधकरी भरगज्यो ।। इत्यादि ।

ग्रन्थसुरक्षा के लिए शास्त्रभण्डारों की स्थापना—

ग्रन्थों की सुरक्षा के सम्बन्ध मे ओझाजी[1] ने यह टिप्पणी दी है कि ताडपत्र, भोजपत्र या कागज या ऐसे ही अन्य लिप्यासन यदि बहुत नीचे या बहुत भीतर दाब कर रखे जाएं तो दीर्घ-जीवी हो सकते हैं। पर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ऐसे दबे हुए ग्रन्थ भी ई० सन् की पहली दूसरी शताब्दी से पूर्व के प्राप्त नही होते ।

इसका एक कारण तो भारत पर विदेशी आक्रमणो का चक्र हो सकता है। ऐसे कितने ही आक्रमणकारी भारत मे आये जिन्होने मन्दिरो, मठो, विहारो, पुस्तकालयो, नगरों, बाजारो को नष्ट और ध्वस्त किया। अपने यहाँ भी कुछ राजे महाराजे ऐसे हुए हैं जिन्होने ऐसे ही कृत्य किए। अजयपाल के सम्बन्ध मे टॉड ने लिखा है कि—इसके शासन मे सबमे पहला कार्य यह हुआ कि उसने अपने राज्य के सब मन्दिरो को, वे आस्तिको के हो या नास्तिको के, जैनो के हो या ब्राह्मणो के नष्ट करवा दिया।[2] इसी मे आगे लिखा है कि समधर्मानुयायियो के मतभेदो और वैमनस्यो के कारण भी लाखो ग्रन्थो की क्षति पहुँची है। उदाहरणार्थ तपागच्छ और खत्तरगच्छ के जैन धर्म के भेदो के आपसी कलह के कारण ही पुराने ग्रन्थो का नाश अधिक हुआ है और मुसलमानो द्वारा कम ।[3]

अत इन परिस्थितियो के कारण शास्त्रो की सुरक्षा के लिए ग्रन्थागारो या पोथीखानों या शास्त्र भण्डारो को भी ऐसे रूप मे बनाने की समस्या आई, कि किसी आक्रमणकारी को आक्रमण करने का लालच ही न हो पाए। इसलिए ये भण्डार तहखानो मे रखे गये ।[4]

---

१. भारतीय प्राचीन लिपिमाला, पृष्ठ १४४-४५
२ टॉड, जेम्स–पश्चिम भारत की यात्रा, पृष्ठ २०२
३. वही, पृष्ठ २८८
४. वही, पृष्ठ २४६

डा. कासलीवाल ने बताया कि अत्यधिक असुरक्षा के कारण ग्रन्थ भण्डारों को सामान्य पहुँच से बाहर के स्थानों पर स्थापित किया गया। जैसलमेर मे प्रसिद्ध जैन भण्डार इसलिए बनाया गया कि ऊपर रेगिस्तान मे आक्रमण की कम सम्भावना थी। साथ ही मन्दिर में भू-गर्भस्थ कक्ष बनाए जाते थे, और आक्रमण के समय ग्रन्थों को इन तहखानो में पहुँचा दिया जाता था। सागानेर, आमेर, नागौर, मौजमाबाद, अजमेर, फतेहपुर, दूनी मालपुरा तथा कितने ही अन्य मन्दिरों में आज भी भू-गर्भित कक्ष है। जिनमे ग्रन्थ ही नही मूर्तियां भी रखी जाती हैं।

इन उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि ग्रन्थो की रक्षा की दृष्टि से ही पुस्तकालयो के स्थान चुने जाते थे। और उन स्थानों में सुरक्षित कक्ष भी उनके लिए बनवाये जाते थे। साथ ही उनका उपर का रूप भी ऐसा बनाया जाता था कि आक्रमणकारी का ध्यान उस पर न जा पाये।

ग्रन्थों का रख रखाव—

ग्रन्थो की सुरक्षा, के एव सग्रह की दृष्टि से जैन समाज ने सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होने प्रत्येक पाण्डुलिपि के दोनो ओर कलात्मक पुट्ठे लगाये। कभी-कभी ऐसे पुट्ठो की सख्या एक से अधिक भी होती थी। ये पुट्ठे कागज के ही नही किंतु लकडी के भी होते थे। ग्रथ को दोनों पुट्ठो के बीच मे रखने के पश्चात् ग्रन्थ को वेष्टन मे बाधा जाता था। "रक्षेत् शिथिलबधनात्" का मन्त्र इन्हे खूब याद था। वेष्टन मे लपेटने के पश्चात् उस पर डोरी (फीता) से कसकर बाधा जाता था। जिससे हवा, सीलन एव दीमक से उसे सुरक्षित रखा जा सके। आज से २०० वर्ष पूर्व तक ऐसे वेष्टनो को मोटे कपडे के बोरो मे रख दिया जाता था और उसको डोरी से बांध दिया जाता था। आमेर शास्त्र भण्डार मे पहिले सारे ग्रन्थ इसी तरह रखे जाते थे। इससे ग्रन्थो को सुरक्षित रखने मे पर्याप्त सहायता मिली। ताडपत्र अथवा कागज पर लिखे हुए ग्रन्थो के बीच मे एक धागा पिरोया हुआ होता था, जिसे ग्रन्थि कहा जाता था। कालान्तर मे ग्रन्थि से बाधने के कारण ही शास्त्रों को ग्रन्थ के नाम से जाना जाने लगा। इसके पश्चात् ग्रन्थो को तलघर मे रखा जाता था तथा चूहो, दीमको एवं सीलन से उनकी पूर्ण सुरक्षा की जाती थी।

सचित्र ग्रन्थो की सुरक्षा के विशेष उपाय किये जाते थे। प्रत्येक चित्र के ऊपर एक बारीक लाल कपडा रखा जाता था। जिससे कि चित्र का रग खराब न हो सके। साथ ही ग्रन्थ के शेष भाग पर भी चित्र का कोई असर नही हो। ग्रन्थो की सुरक्षा के लिए निम्न पद्य ग्रन्थो के अन्त मे लिखा रहता था—

"जलाद् रक्षेत् स्थलाद् रक्षेत्, रक्षेत् शिथिलबन्धनात्
मूर्खहस्ते न दातव्या, एवं वदति पुस्तिका"

"अग्ने रक्षेत्, जलाद् रक्षेत् मूषकेभ्यो विशेषत ।
कष्टेन लिखित शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत् ॥
उदकानिलचौरेभ्यो, मूषकेभ्यो हुताशनात् ।
कष्टेन लिखित शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत् ॥"

स्याही का भी पूरा ध्यान रखा जाता था । इसलिए ग्रन्थो के लिए स्याही को पूरी तरह से तैयार किया जाता था । जिससे न तो वह स्याही फैल सके और न एक पत्र दूसरे पत्र मे चिपक सके ।

ग्रन्थो के लिए कागज भी विशेष प्रकार का बना हुआ होता था । प्राचीन काल में सागानेर मे इस प्रकार के कागज के बनाने की व्यवस्था थी । जयपुर के शास्त्र भण्डारो मे १४वी शताब्दी तक के लिखे हुए ग्रन्थ उपलब्ध होते है । उनकी न तो स्याही ही बिगडी है और न कागज मे ही कोई विशेष असर आया है ।

इस प्रकार ग्रन्थो के लिखने एव उनके रख रखाव मे पूर्ण सतर्कता के कारण सैकडो वर्ष पुरानी पाण्डुलिपियाँ आज भी दर्शनीय बनी हुई है । और उनका कुछ भी नही बिगडा है ।

राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डार—

सम्पूर्ण देश मे ग्रन्थो का अपूर्व सग्रह मिलता है । उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व मे पश्चिम तक सभी प्रान्तो में हस्तलिखित ग्रन्थो के भण्डार स्थापित हैं । इनमे सरकारी क्षत्रो मे पूना का भण्डारकर-ओरियटल इन्स्टीट्यूट, तजोर की सरस्वती महल लायब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मैनस्क्रपट्स लायब्रेरी, कलकत्ता की बगाल एशियाटिक सोसायटी आदि के नाम विशेष रूप मे उल्लेखनीय है । सामाजिक क्षेत्र मे अहमदाबाद का एल० डी० इन्स्टीट्यूट, जैन सिद्धान्त भवन-आरा, पन्नालाल ऐलक दि० जैन सरस्वती भवन उज्जैन, झालरापाटन; जैन शास्त्र भण्डार कारजा, लिम्बीडी–सूरत, आगरा, दिल्ली आदि के नाम भी लिये जा सकते हैं । इस प्रकार सारे देश मे इन शास्त्र भण्डारो की स्थापना की हुई है ।

हस्तलिखित ग्रन्थो के सग्रह की दृष्टि से राजस्थान का स्थान सर्वोपरि है । मुस्लिम शासनकाल मे यहां के राजा महाराजाओ ने अपने-अपने निजी सग्रहालयो में हजारो ग्रन्थो का सग्रह किया, और उन्हे मुसलमानो के आक्रमण से अथवा दीमक एव सीलन से नष्ट होने मे बचाया । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान सरकार ने जोधपुर मे जिस प्राच्यविद्या शोध प्रतिष्ठान की स्थापना की है, उसमे एक लाख से अधिक ग्रन्थो का सग्रह हो चुका है । जो एक अत्यधिक सराहनीय कार्य है । इसी तरह जयपुर, बीकानेर, अलवर जैसे कुछ भूतपूर्व शासको के निजी सग्रहो मे भी हस्तलिखित ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण सग्रह है, जिसमे सस्कृत ग्रन्थो की सर्वाधिक सख्या है । लेकिन इन सबके अतिरिक्त राजस्थान मे जैन ग्रन्थ भण्डारो की सख्या सर्वाधिक है । डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, जिन्होने राजस्थान के ग्रन्थ

भण्डारों की सूचीकरण का कार्य किया है, के अनुसार उनमे संग्रहित ग्रन्थों की सख्या चार लाख से कम नहीं है ।

राजस्थान में जैन समाज पूर्ण शान्तिप्रिय एव प्रभावक समाज रहा है । इस प्रदेश की अधिकांश रियासतों—जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेर, उदयपुर, कोटा, बूंदी, डूंगरपुर, अलवर, भरतपुर, झालावाड, सिरोही आदि मे जैनों की घनी आबादी रही है। यही नही शताब्दियो तक जैनो का इन स्टेट्स की शासन व्यवस्था मे पूर्ण प्रभुत्व रहा है तथा वे शासन के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित रहे है । इसी कारण साहित्य संग्रह के अतिरिक्त उन्होने हजारो जैन मन्दिर भी बनवाये । जिनमे आबू, जैसलमेर, जयपुर, सांगानेर, भरतपुर, बीकानेर, सोजत, रणकपुर, मोजमाबाद, केशोरायपाटन, कोटा, बून्दी, लाडनू आदि के मन्दिर आज भी पुरातत्त्व एव कला की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं ।

ग्रथो की सुरक्षा एवं सग्रह की दृष्टि से राजस्थान के जैनाचार्यों, मुनियो, यतियो, सन्तो एवं विद्वानों का प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है । इन्होने अपनी कृतियो द्वारा जनता में देश-भक्ति, नैतिकता, एवं सास्कृतिक जागरूकता का प्रचार एव प्रसार किया। उन्होने नागौर, बीकानेर, अजमेर, जैसलमेर, जयपुर आदि कितने ही नगरो में ग्रंथ-भण्डारों के रूप में साहित्यिक दुर्ग स्थापित किये । जहां भारतीय साहित्य एवं सस्कृति की सुरक्षा एव उसके विकास के उपाय सोचे गये तथा सारे प्रदेश मे ग्रथो की प्रतिलिपियां करवाने, उनके पठन-पाठन का प्रचार करने का कार्य व्यवस्थित रूप से किया गया, और राजनैतिक उथल-पुथल एव सामाजिक झगडों से इन शास्त्र भण्डारो को दूर रखा गया । इन शास्त्र भण्डारों ने राजस्थान के इतिहास के कितने ही महत्त्वपूर्ण तथ्यो को सजोया और उन्हे सदा ही नष्ट होने से बचाया । ये ग्रथ सग्रहालय छोटे-छोटे गांवो मे लेकर बडे-बडे नगरो तक मे स्थापित किये हुए हैं। जयपुर, नागौर, बीकानेर, अजमेर, जैसलमेर, बुन्दी जैसे नगरों मे एक से अधिक ग्रथ सग्रहालय हैं । अकेले जयपुर नगर मे ऐसे ३० ग्रथ-भण्डार हैं । जिन सभी मे हस्तलिखित पाण्डुलिपियो का अच्छा सग्रह है । इनमे सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी भाषा के हजारो ग्रंथो की पाण्डुलिपिया सुरक्षित हैं । यहां किसी एक विषय पर अथवा एक ही भाषा की पाण्डुलिपिया सग्रहित नही है अपितु धर्म, दर्शन, पुराण, कथा, काव्य एव चरित के अतिरिक्त इतिहास ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद, सगीत जैसे लौकिक विषयो पर भी अच्छी से अच्छी कृतियो की पाण्डलिपियां उपलब्ध होती हैं । इसलिये ये प्राचीन साहित्य, इतिहास, एव सस्कृति के अध्ययन करने के लिए प्रामाणिक केन्द्र हैं।

राजस्थान के इन ग्रथ-भण्डारो मे ताडपत्र की पाण्डुलिपियो की दृष्टि से जैसलमेर का बृहद् ज्ञान-भण्डार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है किन्तु कागज पर लिखी पाण्डुलिपियों की दृष्टि से नागौर, बीकानेर, जयपुर एव अजमेर के शास्त्र-भण्डार उल्लेखनीय है । अकेले नागौर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार में १५००० हस्तलिखित ग्रंथ एवं २००० गुटको का सग्रह है । गुटको मे सग्रहित ग्रथो की सख्या की जावे तो वह भी १०,००० से कम नही होगी। इसी

तरह जयपुर मे ३० से भी अधिक संग्रहालय हैं जिनमें आमेर शास्त्र भण्डार, दिगम्बर जैन बडा मन्दिर ग्रथ भण्डार, तेरहपन्थियो का शास्त्र भण्डार, पाटोदियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि ये नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन भण्डारो मे अपभ्रंश एव हिन्दी के ग्रंथों की पाण्डुलिपियो का अच्छा सग्रह है। इन शास्त्र भण्डारो मे जैन विद्वानों द्वारा लिखित ग्रथो के अतिरिक्त जैनेतर विद्वानो द्वारा निबद्ध ग्रथो की भी प्राचीनतम एव महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का सग्रह मिलता है।

ग्रथ भण्डारो मे सग्रहित पाण्डुलिपियो के अन्त मे प्रशस्तियां दी हुई है। जो इतिहास की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। ये प्रशस्तिया ११वी शताब्दी मे लेकर १९वी शताब्दी तक की हैं। वैसे प्रशस्तिया दो प्रकार की होती हैं—एक स्वय लेखक द्वारा लिखी हुई तथा दूसरी लिपिकारो द्वारा लिखी हुई होती हैं। ये दोनो ही प्रामाणिक होती हैं और इनकी प्रामाणिकता मे कभी शका नही की जा सकती। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इन ग्रथकारो एव लिपिकारो ने इतिहास का महत्त्व बहुत पहले ही समझ लिया था इसलिए ग्रथ लिखवाने वाले श्रावको का, उनकी गुरु परम्पराओ तथा तत्कालीन सम्राट् अथवा शासक के नामोल्लेख के साथ-साथ उनके नगर का भी उल्लेख किया करते थे। राजस्थान के इन जैन भण्डारो मे सग्रहित प्रतियो के मुख्य केन्द्र है—अजमेर, जैसलमेर, नागौर, चम्पावती, डूगरपुर, बासवाडा, चित्तौड, उदयपुर, आमेर, बून्दी, बीकानेर आदि। इसलिए इनके शासकों एवं राजस्थान के नगरो एव कस्बो के नाम खूब मिलते है, जिनके आधार पर यहाँ के ग्राम और नगरो के इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश डाला जा सकता है।

अभी तक जैसलमेर भण्डार के अलावा अन्य किसी भी भण्डार का विस्तृत अध्ययन नही किया गया है। जिन्होने अभी तक सर्वेक्षण किया है उनमे विदेशियो मे व्यूहलर, पीटर्सन, तथा भारतीय विद्वानो मे श्रीधर, भण्डारकर, हीरालाल, हसराज, हसविजय, सी०डी० दलाल आदि ने केवल जैसलमेर भण्डार का ही सर्वेक्षण का कार्य किया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान साहित्यानुसधान के कार्य मे काफी आगे बढा है। राजस्थान सरकार ने जोधपुर मे "राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान" के नाम से एक शोध केन्द्र स्थापित किया है। इसकी मुख्य प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो को सग्रहित व प्रकाशित करने की है। इस केन्द्र की बीकानेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा, चित्तौडगढ आदि स्थानो पर शाखा भी है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त सस्थाओ मे साहित्य सस्थान उदयपुर, भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान बीकानेर, राजस्थानी शोध सस्थान चौपासनी आदि मुख्य है। स्वतन्त्र रूप से हस्तलिखित ग्रथो के सरक्षण का कार्य करने वाली सस्थाओ मे महावीर भवन जयपुर, अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, विनय चन्द्र ज्ञान-भण्डार लाल भवन, जयपुर, खतर गच्छीय ज्ञान भण्डार-जयपुर आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारो के सूची-पत्रो के प्रकाशन की दिशा में भी थोड़ा बहुत कार्य अवश्य हुआ है, पर वह पर्याप्त नही है। बीकानेर की अनूप सस्कृत लायब्रेरी व उदयपुर

के सरस्वती भवन के हस्तलिखित ग्रन्थों के सूची-पत्र प्रकाशित हुए हैं। साहित्य संस्थान उदयपुर की ओर से हस्तलिखित ग्रन्थो के सात भाग प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर व जयपुर के हस्तलिखित ग्रन्थो के भी ७ भाग प्रकाशित हुए हैं। राजस्थानी शोध सस्थान चौपासनी के हस्तलिखित ग्रंथों के भी कुछ भाग प्रकाशित हुए हैं। महावीर भवन जयपुर ने भी इस दिशा में अनुकरणीय कार्य किया है। वहां से डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल एव प० अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ के तैयार किए हुए राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की ग्रन्थ सूचियो के पांच भाग प्रकाशित हो चुके हैं। विनयचन्द्र ज्ञान भाण्डार में उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थों के एकभाग का प्रकाशन हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ द्वारा भट्टारकीय ग्रन्थ भण्डार नागौर के हस्तलिखित ग्रन्थो का प्रथम भाग सामने आ रहा है। यदि राजस्थान के सभी भण्डारो की व्यवस्थित सूचिया प्रकाशित होकर सामने आ जाये तो साहित्य-जगत् एव शोधकर्ताओ के लिए बडी हितकारी सिद्ध हो सकती हैं।

ग्रन्थ सूचियों की अनुसंधान एवं इतिहास लेखन में उपयोगिता

साहित्यिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक अनुसधानो मे ग्रन्थ सूचियो का विशेष महत्त्व होता है। एक प्रकार से ये ग्रथ सूचियाँ शोध कार्य मे आधार-भित्ति का कार्य करती है। भारतीय साहित्य की परम्परा बडी समृद्ध और वैविध्यपूर्ण रही है। छापेखाने के आविष्कार के पूर्व यहां का साहित्य कट-परम्परा से लेखन परम्परा मे अवतरित होकर सुरक्षित रहा। विदेशी आक्रमणकारियो ने यहां की सांस्कृतिक परम्पराओ को नष्ट करने के लक्ष्य से साहित्य और कला को भी अपना लक्ष्य बनाया। राजघरानो मे सरक्षित बहुतसा साहित्य नष्ट कर दिया गया। राजघरानो मे निवर्तमान साहित्य उस विशाल साहित्य का अल्पाश ही है। व्यक्तिगत सग्रहालय किसी न किसी रूप मे थोडे बहुत सुरक्षित अवश्य रहे हैं, पर उनके महत्त्व को ठीक प्रकार से न समझने के कारण बहुत सी महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपिया देश से बाहर चली गई है। स्वतन्त्रता के बाद भी यह क्रम जारी है। इस सास्कृतिक निधि की सुरक्षा का प्रश्न राष्ट्रीय स्तर पर हल किया जाना चाहिए।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थो की दृष्टि से राजस्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रदेश है। रेगिस्तानी इलाका होने के कारण विदेशी आक्रमणकारियों से यह थोडा बहुत बचा रहा। इस प्रदेश में जैनो की सख्या अधिक होने के कारण भी भारतीय साहित्य का बहुत बडा भाग जैन मन्दिरो और उपाश्रयों के माध्यम से सुरक्षित रहा। जैन श्रावको मे शास्त्र-वाचन और स्वाध्याय की विशेष परम्परा होने के कारण उन्होने महत्त्वपूर्ण ग्रंथो की प्रतिलिपियाँ करवा कर उनकी प्रतियाँ मन्दिरो, उपाश्रयो एव व्यक्तिगत सग्रहालयो मे सुरक्षित रखी। ग्रथो की सुरक्षा एवं सग्रह की दृष्टि से जैनाचार्यों, साधुओ, यतियो एव श्रावको का प्रयास विशेष उल्लेखनीय है। प्राचीन ग्रथो की सुरक्षा एव नये ग्रंथो के सग्रह मे जितना ध्यान जैन समाज ने दिया है उतना अन्य समाज नही दे सका। ग्रंथो की सुरक्षा मे उन्होने अपना पूर्ण

जीवन लगा दिया और किसी भी विपत्ति अथवा सकट के समय ग्रंथों की सुरक्षा को प्रमुख स्थान दिया।

यहाँ एक बात और विशेष ध्यान देने की है और वह यह है कि जैनाचार्यों एव श्रावको ने अपने शास्त्र-भण्डारों में ग्रथो की सुरक्षा एवं सग्रह करने मे जरा भी भेदभाव नहीं रखा। जिस प्रकार उन्होंने जैन-ग्रन्थो की सुरक्षा एवं उनका सकलन किया उसी प्रकार जैनेतर ग्रन्थो की सुरक्षा एवं सकलन पर भी विशेष जोर दिया।

राजस्थान के इन जैन-भण्डारो में संग्रहीत ग्रन्थो का अभी तक मूल्यांकन नही हो सका है। विद्या के एवं शोध के अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर इन भण्डारो मे सग्रहीत ग्रन्थो के आधार पर कार्य किया जा सकता है। आयुर्वेद, छन्द, ज्योतिष, अलकार, नाटक, भूगोल, इतिहास, सामाजिक शास्त्र, न्याय व्यवस्था, यात्रा, व्यापार तथा प्राकृतिक सम्पदा आदि विभिन्न विषयो पर इन भण्डारो मे सग्रहीत ग्रन्थों के आधार पर शोध कार्य किया जा सकता है। जिसमे कितने ही नये तथ्यो की जानकारी मिल सकती है। भाषा-विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समीक्षा ग्रन्थों पर कार्य करने के लिए भी इनमे प्रचुर सामग्री सग्रहीत है। देश मे विभिन्न बादशाहो एवं राजाओ के शासन काल मे विभिन्न वस्तुओ की क्या-क्या कीमते थी ? तथा भुखमरी, अकाल जैसे आर्थिक रोचक विषयो पर भी इनमे पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है। ऐसे कितने ही पत्रों का सग्रह मिलेगा जिनमे मा बाप ने भुखमरी के कारण अपने लडको को बहुत कम मूल्य मे बेच दिया था। इन सब के अतिरिक्त भण्डारो मे सग्रहीत ग्रन्थो मे एव उनकी प्रशस्तियो के आधार पर देश के सैकडों हजारो नगरो एवं ग्रामो के इतिहास पर, उनमे सम्पन्न विभिन्न समारोहो पर, वहाँ के निवासियो पर प्रचुर सामग्री का सकलन किया जा सकता है।

नागौर का ऐतिहासिक परिचय, ग्रन्थ भण्डार की स्थापना एवं विकास

वर्तमान मे नागौर राजस्थान प्रदेश का एक प्रान्त है जो इसके मध्य मे स्थित है। पहिले यह जोधपुर राज्य का प्रमुख भाग था। नागौर जिले का प्रमुख नगर है तथा यहाँ की भूमि अर्द्ध रेगिस्तानी है।

रामायण कालीन अनुश्रुति के अनुसार पहिले यहाँ पर समुद्र था। लेकिन रामचन्द्रजी ने अग्निबाण चलाकर उस समुद्र को सुखा दिया। महाभारत के अनुसार इस प्रदेश का नाम कुरु-जांगल था। मौर्यवश का शासन भी इस क्षेत्र पर रहा। विक्रम की दूसरी शताब्दी से पाँचवी शती तक नागौर का अधिकाश क्षेत्र नागवशी राजाओ के अधीन रहा। उसी समय से नागौर, नाग पट्टन, अहिपुर, भुजगपुर अहिछत्रपुर आदि विभिन्न नामो से समय-समय पर जाना जाता रहा। बाद मे कुछ समय के लिए इस प्रदेश पर गौड राजपूतो का शासन रहा। बाद में गौड राजपूत कुचामन, नावा, मारोठ की ओर चले गये, इसलिए यह पूरा प्रदेश गौडवाटी के नाम से जाना जाने लगा।

विक्रम की ७वी शताब्दी मे यहाँ पर चौहानो का शासन हुआ। चौहानो की

राजधानी शाकम्भरी (साम्भर) थी। इनके शासन काल मे यह क्षेत्र सपादलक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यही कारण है कि आज भी स्थानीय लोग इसे सवालक्ष कहते हैं।

इसी बीच कुछ समय के लिये यह नगर प्रतिहारो के अधीन आ गया। जयसिंह सूरि के धर्मोपदेश की प्रशस्ति मे मिहिरभोज प्रतिहार का उल्लेख मिलता है। जयसिंह सूरि ने नागौर मे ६१५ वि. सं. में इस ग्रन्थ की रचना की थी।[1]

अणहिलपुर पाटन (गुजरात) के शासक सिद्धराज जयसिंह ने १२वी शताब्दी में इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। जो भीमदेव के समय तक बना रहा। महाराजा कुमारपाल के गुरु प्रसिद्ध जैनाचार्य कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्र सूरि का पट्टाभिषेक सवत् ११६६ की वैशाख सुदी ३ को यहीं पर हुआ था।

इसके बाद यह नगर तथा क्षेत्र वापिस चौहानों के अधिकार मे चला गया। प्राचीन समय से ही यहाँ पर छोटा गढ बना हुआ था जिसके खण्डहर आज भी उपलब्ध होते हैं। चौहानो ने अपने मध्य मे होने के कारण तथा लाहौर से अजमेर जाने के रास्ते मे पडने के कारण यहाँ पर दूर्ग बनाना आवश्यक समझा क्योकि उस समय तक महमूद गजनवी के कई बार आक्रमण हो चुके थे। इसलिए नगर मे विशाल दुर्ग का निर्माण वि० स० १२११ में पृथ्वीराज तृतीय के पिता सोमेश्वर के शासनकाल मे प्रारम्भ हुआ। जिसका शिलालेख दरवाजे पर आज भी सुरक्षित है।

सन् १२९३ में पृथ्वीराज चौहान (तृतीय) की हार के बाद यहाँ पर दिल्ली के सुल्तानो का अधिकार हो गया। उसी समय यहाँ पर प्रसिद्ध मुस्लिम सत तारकीन हुआ जो अजमेर वाले ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का शिष्य था। इसकी दरगाह परकोटे के बाहर गिनाणी-तालाब के पीछे की तरफ बनी हुई है। इसके लिए उर्स के अवसर पर अजमेर के मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह से चादर कब्र पर ओढाने के लिए आती है। इसी समय से नागौर मुस्लिम धर्म का भी केन्द्र बन गया।

एक शिलालेख के अनुसार सन् १३९३ मे इस क्षेत्र पर देहली के शासक फीरोज-शाह तुगलक का शासन था। फिरोजशाह के शासन मे ही दिगम्बर जैन भट्टारक सम्प्रदाय के द्वारा सवत् १३९० पोष सुदी १५ को दिल्ली मे वस्त्र धारण करने की प्रथा का श्रीगणेश हुआ। उसके पूर्व वे सब नग्न रहते थे। इन भट्टारको का मुस्लिम शासको (बादशाहो) पर अच्छा प्रभाव था। इसलिये उन्हे विहार एव धर्म प्रचार की पूरी सुविधा थी। यही नही मुस्लिम बादशाहो ने इनकी सुरक्षा के लिए समय-समय पर कितने ही फरमान निकाले थे। उसी समय से दिल्ली गादी के भट्टारक नागौर आते रहे और सम्वत् १५७२ में नागौर में एक स्वतन्त्ररूप में भट्टारक गादी की स्थापना की।

सन् १४०० ई के बाद नागौर की स्वतन्त्र रियासत स्थापित हुई। जिसका[2] फिरोजखान प्रथम सुल्तान था। जो गुजरात के राजवश[3] से सम्बन्धित था। जिसका प्रथम

१. Jainism in Rajasthan by Dr. K.C Jain Page, 153.
२. History of Gujarat, page 68.
३. Epigraphika Indomuslimica 1923–24 and 26.

शिलालेख १४१८ A.D. का मिलता है। सुल्तान फिरोजखान के समय मेवाड़ के महाराजा मोकल ने नागौर पर आक्रमण किया तथा डीडवाना तक के प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। मोकल के लौटने पर शम्सखा के पुत्र मुजाहिदखा ने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। शम्सखा ने शम्स तालाब बनवाया। शम्स तालाब के किनारे अपने गुरु की दरगाह तथा मस्जिद बनवाई। इसी दरगाह के प्रागण में ही शम्सखा तथा उनके वशजों की कब्रें बनी हुई हैं। इस तालाब के चारो ओर परकोटा बना हुआ है।

महाराजा कुम्भा ने भी एक बार नागौर पर आक्रमण किया था। जिसका शिलालेख गोठ मागलोद के माताजी के मन्दिर में लगा हुआ है। महाराजा कुम्भा ने राज्य को वापस पुराने सुल्तान को ही सौप दिया। इसी वंश में मुजाहिद खा, फिरोज खा, जफरखां, नागौरीखा आदि सुल्तान हुए। ये सुल्तान मुस्लिम होते हुये भी हिन्दू तथा जैनधर्म के विरोधी नहीं थे। इनके राज्यकाल मे दिगम्बर जैन भट्टारक तथा साधुओ का विहार निर्बोध गति के साथ होता था। उस समय जैनधर्म के बहुत से ग्रन्थो की रचनाए एवं लिपि करने का कार्य सम्पन्न हुआ। तत्कालीन प्रसिद्ध भट्टारक जिनचन्द्र संवत् १५०७ से १५७१ का भी यहाँ आगमन हुआ था। जिनके द्वारा सवत् १५४८ मे प्रतिष्ठित सैंकडो मूर्तिया सम्पूर्ण देश के बडे-बडे जैन मन्दिरो मे उपलब्ध होती हैं। प० मेधावी ने नागौर मे ही रहकर सवत् १५४१ मे धर्मसग्रह श्रावकाचार की रचना की थी।[1] इसमें फिरोजखान की न्यायप्रियता, वीरता और उदारता की प्रशसा की है।[2] मेधावी भट्टारक जिनचन्द्र के शिष्य थे। इस ग्रन्थ की प्रतियां भारत के सभी जैन ग्रन्थ भण्डारो मे प्राय पाई जाती है। इसी वश के नवाब नागौरीखां के दीवान परबतशाह पाटनी हुए थे। जिनका शिलालेख श्री दिगम्बर जैन बीस पन्थी मन्दिर मे लगा हुआ है। इन परबतशाह पाटनी ने एक वेदी बनवाई तथा उसकी प्रतिष्ठा बडी धूम-धाम से कराई थी। ऐसा शिलालेख मे लिखा है। चूने की पुताई हो जाने से पूरा लेख पढने में नही आता है।

सुल्तानों के शासन के पतन के पश्चात् नागौर पर मुगल सम्राट् अकबर का अधिकार हो गया। स्वयं अकबर भी नागौर आया था। उसने गिनाणी तालाब के किनारे दो मीनारो वाली मस्जिद बनवाई। जो आज भी अकबरी मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे अकबर के समय का फारसी भाषा का शिलालेख लगा हुआ है।

जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंह के दो पुत्र थे–बडे अमरसिंह तथा छोटे जसवन्तसिंह। अमरसिंह बडे अक्खड, निर्भीक और वीर थे। जोधपुर के सरदार अमरसिंह से नाराज हो गये। शाहजहाँ ने इनकी वीरता पर खुश होकर नागौर का प्रदेश इनको जागीर मे दे दिया।

---

१. राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारो की सूची, भाग प्रथम, पृष्ठ ७६

२ सपादलक्षे विषयेति सुन्दरे, श्रियापुर नागपुर समस्तिनस्त्।
फेरोजखानो नृपतिः प्रयाति यन्नयेन शौर्येण रिपून्निहन्ति च ॥

अमरसिंह के पश्चात् शाहजहाँ ने इन्दरसिंह को नागौर का राजा बना दिया। इन्दरसिंह ने शहर मे अपने रहने के लिए एक सुन्दर महल बनवाया। जिसका उल्लेख महल के दरवाजे पर लेख मे मिलता है।

सैकडो वर्षों तक मुस्लिम शासन में रहने के कारण कई धर्मान्ध शासकों ने यहाँ के हिन्दू एवं जैन मन्दिरो को खूब ध्वस्त किया। मन्दिरों को मस्जिदों में परिवर्तित किया गया। फिर भी नागौर जैन सस्कृति का एक प्रमुख नगर माना जाता रहा। सिद्धसेनसूरि (१२वी शताब्दी) ने इसका प्रमुख तीर्थ के रूप में उल्लेख किया है। जैनाचार्य हेमचन्द्रसूरि के पट्टाभिषेक के समय यहाँ के धनद नाम के श्रेष्ठि ने अपनी अपार सम्पत्ति का उपयोग किया था। १३वीं शताब्दी मे पेथडशाह ने यहाँ एक जैन मन्दिर का निर्माण कराया था। तपागच्छ की एक शाखा नागपुरीय का उद्गम भी इसी नगर से माना जाता है। १५वी १६वी शताब्दी मे यहाँ कितनी ही श्वेताम्बर मूर्तियो की प्रतिष्ठा हुई। उपदेशगच्छ के कक्कसूरि ने ही यहाँ शीतलनाथ के मन्दिर की प्रतिष्ठा कराई थी।

शास्त्र भण्डार की स्थापना एव विकास—

सम्वत् १५८१, श्रावण शुक्ला पचमी को भट्टारक रत्नकीर्ति ने यहाँ भट्टारकीय गादी के साथ ही एक वृहद् ज्ञान भण्डार की स्थापना की। जिनचन्द्र के शिष्य भट्टारक रत्नकीर्ति के पश्चात् यहाँ एक के बाद दूसरे भट्टारक होते रहे। इन भट्टारको के कारण ही नागौर मे जैनधर्म एव साहित्य का अच्छा प्रचार प्रसार होता रहा। नागौर का यह ग्रन्थ भण्डार सारे राजस्थान में विशाल एव समृद्ध है। पाण्डुलिपियो का ऐसा विशाल सग्रह राजस्थान मे कही नही मिलता। यहाँ करीब १५ हजार पाण्डुलिपियो का सग्रह है जिनमे करीब दो हजार से अधिक गुटके हैं। यदि गुटको मे सग्रहीत ग्रन्थो की सख्या की जावे तो इनकी सख्या भी १०,००० से कम नही होगी। भण्डार मे मुख्यत प्राकृत, अपभ्रश सस्कृत, हिन्दी एव राजस्थानी भाषा मे निबद्ध कृतियाँ सर्वाधिक सख्या मे है। अधिकाश पाण्डुलिपिया १४वी शताब्दी से १६वी शताब्दी तक की हैं। जिनसे पता चलता है कि गत १५० वर्षों से यहाँ ग्रन्थ सग्रह की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इससे पूर्व यहाँ ग्रन्थ लेखन का कार्य पूर्ण वेग से होता था। सम्पूर्ण भारत वर्ष के शस्त्रागारो मे सैकडो ऐसे ग्रन्थ है जिनकी पाण्डुलिपियाँ नागौर मे हुई थीं। प्राकृत भाषा के ग्रथो मे आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार की यहाँ सन् १३०३ की पाण्डुलिपि है, इसी तरह मूलाचार की १३३८ की पाण्डुलिपि उपलब्ध होती है। कुछ अन्येतर अनुपलब्ध ग्रन्थो मे वरांग-चरित (तेजपाल) वसुधर चरिउ (श्री भूषण), सम्यक्त्व कौमुदी (हरिसिंह), णेमिणाह चरिउ (दामोदर), जगरूपविलास

१ Dr. P. C. Jain, JAIN GRANTH BHANDARS IN JAIPUR AND NAGAUR P, 118.

(जगरूप कवि), कृपण पच्चीसी (कल्ह), सरस्वती-लक्ष्मी सवाद (श्री भूषण), क्रियाकोश (सुखदेव) आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

भट्टारक परम्परा—

नागौर की परम्परा में निम्न भट्टारक हुए[१]—

(१) भट्टारक रत्नकीर्ति— सवत् १५८१
(२) भट्टारक भुवनकीर्ति— सवत् १५८६
(३) भट्टारक धर्मकीर्ति[२]—सवत् १५९०
(४) भट्टारक विशालकीर्ति—सवत् १६०१
(५) भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र—सवत् १६११
(६ भट्टारक सहस्त्रकीर्ति— सवत् १६३१
(७) भट्टारक नेमिचन्द्र—सवत् १६५०
(८) भट्टारक यश कीर्ति—सवत् १६७२
(९) भट्टारक भानुकीर्ति— संवत् १६९०
(१०) भट्टारक श्रीभूषण— सवत् १७०५
(११) भट्टारक धर्मचन्द्र— सवत् १७१२
(१२) भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति प्रथम—सवत् १७२७
(१३) भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति - सवत् १७३८
(१४) भट्टारक रत्नकीर्ति द्वितीय
(१५) भट्टारक ज्ञानभूषण
(१६) भट्टारक चन्द्रकीर्ति
(१७) भट्टारक पद्मनन्दि
(१८) भट्टारक सकलभूषण
(१९) भट्टारक सहस्त्रकीर्ति
(२०) भट्टारक अनन्तकीर्ति
(२१) भट्टारक हर्षकीर्ति

---

१ (क) नागौर ग्रन्थ भण्डार मे उपलब्ध भट्टारक पट्टावली के आधार पर।
(ख) डा० जोहरापुरकर-भट्टारक सम्प्रदाय पृष्ठ-१२४-२५
२. डॉ० कासलीवाल ने अपनी पुस्तक शाकम्भरी प्रदेश के सास्कृतिक विकास मे जैन धर्म का योगदान में "भुवनकीर्ति" नाम दिया है।

(२२) भट्टारक विद्याभूषण

(२३) भट्टारक हेमकीर्ति

(२४) भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्ति

(२५) भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति

(२६) भट्टारक कनककीर्ति

(२७) भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति

भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति नागौर गादी के अन्तिम भट्टारक हुए हैं। नागौर गादी का नागपुर, अमरावती, अजमेर आदि नगरो से भी सम्बन्ध रहा है। भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के पश्चात् नागौर ग्रन्थ भण्डार बन्द पड़ा रहा। अनेक वर्षों के बाद पं० सतीशचन्द्र तथा यतीन्द्र कुमार शास्त्री ने ग्रन्थ सूची निर्माण एव प्रकाशन का कार्य अपने हाथों में लिया था परन्तु किन्ही कारणो से वे इसे पूरा नहीं कर पाये।

ग्रन्थ सूचीको अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए अन्त मे तीन परिशिष्ट दिये गये हैं। प्रथम मे कतिपय अज्ञात एव अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण रचनाओं की नामावली दी गई है। ये रचनायें काव्य, पुराण, चरित, नाटक, रास एव अलकार, अर्थशास्त्र इतिहास आदि सभी विषयो से सम्बन्धित हैं। उनमें से बहुत सी रचनाये तो ऐसी हैं जो सभवत सर्व प्रथम विद्वानो के समक्ष आयी होंगी। इनमें से अपभ्रश भाषा के ग्रन्थो मे जिनपूजा पुरन्दर विधान (अमरकीर्ति), नायकुमार चरिउ (पुष्पदन्त), नारायण पृच्छा जयमाल, बाहुबली पाथडी, भविष्यदत्त चरिउ (प० धनपाल), प्राकृत के ग्रन्थो मे जयति उत्ताण (अभयदेव सूरि), चौबीस दण्डक (गजसार), वनस्पति सत्तरी (मुनिचन्द्र सूरि), सस्कृत के ग्रन्था मे– आत्मानुशासन (पार्श्वनाग), आराधना कथा कोश (सिहनन्दि), आलाप पद्धति (कवि विष्णु) आशाधराष्टक (शुभचन्द्र सूरि), कुमारसम्भव सटीक (टीकाकार प० लाल्लू), मूलसघागणि (रत्नकीर्ति), योग शतक (विदग्ध वैद्य), रत्न परीक्षा (चण्डेश्वर सेठ), वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक (दामोदर), सम्यक्त्व कौमुदी (कवि यश सेन), सुगन्ध दशमी कथा (ब्रह्म जिनदास), हेमकथा (रक्षामणि), तथा हिन्दी के ग्रन्थो मे इन्द्रवधुचित हुलास आरती (रुबीरग), खदीप भाषा (भूवानीदास), त्रेषठ श्लाका पुरुष चौपई (पं० जिनमति), प्रथम वखाण, रत्नचूडरास (यश कीर्ति), रामाज्ञा (तुलसीदास), वाद पच्चीसी (ब्रह्म गलाल), हरिश्चन्द्र चौपई (ब्रह्म वेणिदास), आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में—

ग्रन्थ सूचियों के निर्माण मे कई कठिनाईयो का सामना करना पडता है। प्रत्येक पाण्डु-लिपि को सावधानी के साथ पढकर, ग्रन्थ, ग्रन्थकार, रचना-संवत्, लिपि-सवत्, रचना स्थल, लिपि स्थल, विषयादि कई बातो का पता लगाना होता है। कभी कभी एक ही पन्ने मे एकाधिक रचनाए भी मिलती हैं। थोडी सी भी प्रमाद की स्थिति, लिपि की अस्पष्टता व लिपि-पढने की लापरवाही से अनेक भ्रान्तियो व अशुद्धियो की परम्परा चल पडती है। कभी लिपिकार को रचनाकार और कभी रचनाकार को लिपिकार समझ लिया जाता है। इसी तरह कभी लिपि-सवत् को रचना-सवत् समझ लिया जाता है।

रचना के अन्त मे दी गई प्रशस्तियो का ऐतिहासिक दृष्टि से बडा महत्त्व होता है। ये प्रशस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं–पहली स्वय लेखक द्वारा लिखी हुई तथा दूसरी लिपिकारो द्वारा लिखी हुई। ये दोनो ही प्रामाणिक होती हैं, और इनकी प्रामाणिकता मे कभी शका भी नही की जा सकती। ऐसा प्रतीत होता है कि इन ग्रन्थकारो एव लिपिकारो ने इतिहास के महत्त्व को बहुत पहले ही समझ लिया था, शायद इसलिए ही ग्रन्थ लिखवाने वाले श्रावको का, उनकी गुरु-परम्परा तथा तत्कालीन सम्राट् अथवा शासक के नाम्मोल्लेख के साथ-साथ उनके नगर का भी उल्लेख किया जाता था। इनमे ग्रन्थ, ग्रन्थकार, रचना-सवत्, लिपि-सवत्, लिपिकार, लिपिस्थल आदि की भी बहुमूल्य सूचनाए मिलती है। साहित्य के इतिहास लेखन मे इन सूचनाओ का बडा महत्त्व होता है।

प्रत्येक रचना से सम्बन्धित ऊपर लिखित जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद समग्र रचनाओ को वर्गीकृत करना पडता है। वर्गीकरण का यह कार्य जितना सरल दिखाई देता है, वह उतना ही दुरुह भी है। कई विषय और काव्य–रूप अन्य विषयो और काव्य–रूपो से इस तरह मिले दिखाई देते है कि उनको अलग-अलग वर्गो मे बाँटना बडा मुश्किल हो जाता है। इसका एक कारण तो यह है कि जैन-साहित्यकारो ने काव्य-रूपो के क्षेत्र मे नानाविध नये-नये प्रयोग किये। एक ही चरित्र व कथा को भिन्न-भिन्न रूपो मे वर्णित किया। उन्होने प्रचलित सामान्य काव्य–रूपो को हुबहु स्वीकार न कर उनमे व्यापकता, लौकिकता और सहजता का रग भरा। सगीत को शास्त्रीयता से मुक्त कर विभिन्न प्रकार की लोकदेशियो को अपनाया। आचार्यों द्वारा प्रतिपादित प्रबन्ध मुक्तक की चली आती हुई काव्य परम्परा के बीच काव्य रूपो के कई नये नये स्तर निर्मित किये। साथ ही काव्य विषय की दृष्टि से भी उन्हे नयी भाव-भूमि और मौलिक अर्थवत्ता दी। उदाहरण के लिए वेलि, बारहमासा, विवाहलो, रासो, चौपई सज्ञक विभिन्न काव्यो व रूपो का परिक्षण किया जा सकता है।

इस ग्रन्थ सूची मे समाविष्ट हस्तलिखित ग्रन्थो को २२ विषयो मे विभाजित किया गया है। ये विषय क्रमशः इस प्रकार हैं—(१) अध्यात्म, आगम, सिद्धान्त एव चर्चा, (२) आयुर्वेद (३) उपदेश एव सुभाषितावली, (४) कथा, (५) काव्य, (६) कोश, (७) चरित्र (८) सचित्र ग्रन्थ, (९) छन्द एव अलंकार, (१०) ज्योतिष (११) न्यायशास्त्र, (१२) नाटक एव सगीत,

(१३) नीतिशास्त्र, (१४) पुराण, (१५) पूजा एव स्तोत्र, (१६) मन्त्र एवम् यन्त्र, (१७) योग, (१८) व्याकरण, (१९) व्रत विधान, (२०) लोक विज्ञान, (२१) श्रावकाचार, (२२) अवशिष्ट साहित्य।

इस प्रकार इस ग्रन्थ-सूची मे कुल मिलाकर १८६८ हस्तलिखित ग्रन्थो का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थो का परिचय प्रस्तुत करते समय मैंने प्रत्येक ग्रन्थ के सम्बन्ध मे निम्न अट्ठारह प्रकार की जानकारी देने का प्रयत्न किया है—

(१) क्रमाक (२) ग्रन्थ नाम (३) ग्रन्थकार (रचयिता) (४) टीकाकार या भाषाकार (५) लिप्यासन का स्वरूप (६) पत्र सख्या (७) आकार (८) ग्रन्थ की दशा (९) पूर्ण या अपूर्ण (१०) भाषा (११) लिपि (१२) विषय (१३) ग्रन्थ सख्या (१४) रचनाकाल (१५) लिपि-काल (१६) ग्रन्थ का आदिभाग (१७) अन्त भाग और अन्त मे (१८) विशेष।

'क्रमाक' सूची मे समाविष्ट ग्रन्थो का क्रम सूचित करते है। 'ग्रन्थनाम' मे रचना का नाम, 'ग्रन्थकार' मे ग्रन्थ के रचयिता का नाम तथा 'टीकाकार' या भाषाकार' मे टीका करने या भाषा (अनुवाद) के करने वाला का नाम दिया गया है। "लिप्यासन के स्वरूप" मे जिस पर ग्रन्थ लिखा गया है बताया गया है, उदाहरण के लिये कागज, ताडपत्र, भोजपत्र या वस्त्र आदि पर। 'पत्र सख्या' मे ग्रन्थ के लिखित पन्नो की सख्या बताई गयी है। 'आकार' मे ग्रन्थ की लम्बाई व चौडाई के बारे मे जानकारी दी गई है। 'दशा' मे ग्रन्थ की हालत के बारे मे बताया गया है। पूर्ण या अपूर्ण शब्द ग्रन्थ की पूर्णता या अपूर्णता को द्योतित करते है। 'भाषा' से तात्पर्य ग्रन्थ के लिए प्रयुक्त की गई भाषा से है अर्थात किस भाषा म ग्रन्थ लिखा गया है। लिपि' मे भाषा के लिए कौनसी लिपि का प्रयोग किया गया है। विषय' मे ग्रन्थ किस विषय का है बताया गया है। 'ग्रन्थ सख्या' से ग्रन्थ विशेष के उस क्रम का बोध होता है जो भण्डार की सामान्य सूचीपत्र मे ग्रन्थ विशेष के लिए अकित है। रचनाकाल एव लिपिकाल मे ग्रन्थ की रचना तथा लिपि के समय की जानकारी दी गई है। ग्रन्थ के महत्त्वपूर्ण होने तथा अप्रकाशित आदि की जानकारी देने के लिए उसका आदि एव अन्तभाग तथा विशेष' दिया गया है।

ग्रन्थ-सूची को अधिकाधिक उपयोगी बनाने की दृष्टि से इसकी विस्तृत प्रस्तावना लिखी गई है। इसमे ग्रन्थो के लिखने की परम्परा का विकास, लेखन सामग्री तथा उसका उपयोग, ग्रन्थ सुरक्षा के लिए शास्त्र भण्डारो की स्थापना, राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डार, ग्रन्थ सूचियो की अनुसधान एव इतिहास लेखन मे उपयोगिता, नागौर का ऐतिहासिक परिचय, ग्रन्थ भण्डार की स्थापना, सुरक्षा एव विकास आदि विभिन्न विषयो की जानकारी दी गई है।

ग्रन्थ के अन्त मे तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं। प्रथम परिशिष्ट मे अज्ञात एव अप्रकाशित ग्रन्थो की अकारादि क्रम से नामावलि दी गई है। इससे अनेक ग्रन्थ जो साहित्य के इतिहास में अब तक अज्ञात रहे हैं वे इस ग्रन्थ द्वारा पहली बार प्रकाश मे आ रहे है। दूसरे परिशिष्ट मे अकारादि क्रम से ग्रन्थानुक्रमणिका दी गई है। तीसरे परिशिष्ट मे भी अकारादि क्रम से ही ग्रन्थकारानुक्रमणिका दी गई है।

ग्रन्थसूची के इस भाग में करीब दो हजार ग्रन्थो का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसमें यदि कोई कमी रह गयी हो अथवा लेखक का नाम, लिपिकाल, रचनाकाल आदि के देने मे कोई अशुद्धि रह गयी हो तो पाठक विद्वान् हमें सूचित करने का कष्ट करेंगे, जिससे भविष्य के लिए उन पर ध्यान रखा जा सके। नागौर का परिचय जब मैं प्रथम बार ग्रन्थ भण्डार देखने के लिए गया था तब श्री मदमलालजी जैन के साथ पूरे नागौर का भ्रमण किया था, तब उन्हीं जैन सा० के माध्यम से तथा वहाँ प्रचलित किंवदन्तियों लेखों तथा शिला-लेखो के आधार पर ही दिया है। इस सूची के आधार पर साहित्य एव इतिहास के कितने ही नए तथ्य उद्घाटित हो सकेगें तथा राजस्थान के कितने ही विद्वानों, श्रावकों, शासको एवं नगरो के सम्बन्ध में नवीन जानकारी मिल सकेगी।

आभार—

मैं सर्वप्रथम जैन अनुशीलन केन्द्र के निदेशक प्रो० रामचन्द्र द्विवेदी का आभारी हूँ जिन्होने ग्रन्थ-सूची के इस भाग को प्रकाशित करवाकर साहित्य जगत् का महान् उपकार किया है। जैन अनुशीलन केन्द्र द्वारा साहित्य-शोध, साहित्य-प्रकाशन एव हस्तलिखित ग्रन्थो के सूची-करण के क्षेत्र में जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, व किया जा रहा है वह अत्यधिक प्रशसनीय एव श्लाघनीय है। आशा है भविष्य मे साहित्य प्रकाशन के कार्य को और भी प्राथमिकता मिलेगी।

ग्रन्थ-सूची के इस भाग के स्वरूप एव रूपरेखा आदि के निखारने मे जिन विद्वानो का परामर्श एव प्रोत्साहन मिला है उनमे प्रमुख हैं--प्रो० रामचन्द्र द्विवेदी (जयपुर) प्रो० गोपी-नाथ शर्मा (उदयपुर), प्रो० सुधीरकुमार गुप्त (जयपुर), प्रो० के० सी० जैन (उज्जैन), डॉ० कस्तुरचन्द कासलीवाल एव प० अनूपचन्द न्यायतीर्थ (जयपुर)। इन सबके सहयोग के लिए मै आभारी हूँ और कृतज्ञ हूँ।

भट्टारकीय दिगम्बर जैन ग्रन्थ भण्डार नागौर के उन सभी व्यवस्थापको का आभारी हूँ जिन्होंने अपने यहाँ स्थित शास्त्र-भण्डार की ग्रन्थ-सूची बनाने मे मुझे पूर्ण सहयोग दिया। वास्तव मे यदि उनका सहयोग नही मिलता तो मैं इस कार्य मे प्रगति नहीं कर सकता था। ऐसे व्यवस्थापक महानुभावो मे श्री पन्नालाल जी चान्दवाड, श्री डुगरमलजी जैन, श्री जीवराज जी जैन, श्री शिखरीलाल जी जैन एव श्री मदनलाल जी जैन आदि सज्जनो के नाम विशेषत: उल्लेखनीय है, इन सबका मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रेस कापी बनाने, अनुक्रमणिका तैयार करने व प्रूफ आदि मे सहधर्मिणी स्नेहमयी चन्द्रकला जैन बी० ए० एलएल० बी० ने जो सहयोग दिया उसके लिए धन्यवाद देकर मैं उनके गौरव को कम नही करना चाहता।

अन्त मे पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था आदि में केन्द्र के सक्रिय निदेशक प्रो० द्विवेदी एव कपूर आर्ट प्रिन्टर्स जयपुर के प्रबन्धको का जो सहयोग मिला है उसके लिए मैं इन सबका हृदय से आभारी हूँ।

डॉ० प्रेमचन्द जैन
२१५१ हैदरी भवन,
मणिहारो का रास्ता, जयपुर-३

दि० १५-६-८१

भट्टारकीय ग्रन्थ भण्डार नागौर में संकलित

ग्रन्थों की सूची

विषय—अध्यात्म, आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा

१ **अभक्ष वर्णन**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–९" × ४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२५७२ । रचना काल— × । लिपिकाल— × ।

२ **अष्टोत्तरी शतक**—पं० भगवतीदास । देशी कागज । पत्र सख्या–३३ । आकार–१०" × ६" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या २२६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

३. **आगम**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । आकार–१०"¾ × ४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–१३७४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ सुदी १ मगलवार, स० १६५६ ।

४. **आठ कर्म प्रकृति विचार**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–३१ । आकार—११¾" × ६½" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२६३६ । रचना काल– ×· । लिपिकाल– × ।

५. **आप्त मीमांसा वचनिका**–समन्तभद्र । वचनिकाकार–जयचन्द छाबड़ा । देशी कागज । पत्र सख्या-६६ । आकार–१०" × ४¾" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी एव सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । रचनाकाल– × । वचनिका रचनाकाल–चैत्र कृष्णा १४ सं० १८६६ । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला २, सं० १९३३ ।

६. **आत्म सम्बोध काव्य**–रयधू । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–११" × ५½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या × । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७ **प्रति सख्या २** । पत्र सख्या–२५ । आकार–११½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०२४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

८. **प्रति संख्या ३** । पत्र सख्या–२७ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन सुदी १० बुधवार, स० १६२६ ।

९ **आत्मानुशासन**—गुणभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या-४९ । आकार—१०¾" × ४½" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–११३८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १४ सोमवार, स० १६१२ ।

१०. प्रति संख्या २ । पत्र सख्या २७ । आकार–११×"४½" । दशा जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या १४०५ । रचनालाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १२ सोमवार, सं० १७४२ ।

११. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–४६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१३७९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १० शनिवार, स० १६२८ ।

१२ प्रति संख्या ४ । पत्र सख्या–३८ । आकार–११"×४½" । दशा–प्रतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ६, मंगलवार, स० १६०५ ।

विशेष—लिपिकार ने पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

१३ प्रति संख्या–५ । पत्र सख्या–२७ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल ।

१४ आत्मानुशासन सटीक—गुणभद्राचार्य । टीकाकार–× । देशी कागज । पत्र सख्या–५० आकार- ११½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–२५३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१५ प्रति सख्या २ । पत्र सख्या–७५ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–प्रतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १०, स० १६१८ ।

१६ प्रति सख्या ३ । पत्र सख्या–६८ । आकार–११"×७¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १४ शुक्रवार, स० १८५३ ।

१७ आत्मानुशासन सटीक—गुणभद्राचार्य । टीकाकार–टोडरमल । देशीकागज । पत्र सख्या–१३६ । आकार–१२½"×६½" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–११२७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ८, शुक्रवार, स० १८६८ ।

१८. आत्मानुशासन टीका—पं० प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार ११¾"×6" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८०५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला ४, स० १८५६ ।

आदि भाग —

वीर प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोप मुद्योतिताऽखिल पदार्थमनल्पपुण्यम् ।
निर्वाणमार्गमनवद्यगुणप्रबन्धमात्मानुशासनमह प्रवर प्रवक्ष्ये ॥

वृहद्धर्मभ्रातुल्लोकसेनस्य विषयव्यामुग्ध बुद्धे सबोधन व्याजेन सर्वोपकारक सन्मार्गमुपदर्शयितुकामो गुणभद्र देवो निर्विघ्नतः शास्त्र परिसमाप्त्यादिक फलमभिलषन्नभिष्ट देवताविशेष नमस्कुर्वाणो लक्ष्मीत्याद्याह

अन्तभाग :—

मोक्षोपायमनन्यपुण्यममलज्ञानोदयं निर्मलम् ।
भव्यार्थं परमं प्रभेन्दुकृतिना व्यक्तैः प्रसन्नैः पदैः ॥
व्याख्यानं वरमात्मशासनमिदं व्यामोहविच्छेदतः ।
सुक्तार्थेषु कृतादरैरहरहश्चेतस्यलं चिन्त्यताम् ॥

इति श्री आत्मानुशासनतिलक प्रभाचन्द्राचार्य विरचितं सम्पूर्णम्

१९ आत्मानुशासन—पार्श्वनाग । देशी कागज । पत्र सख्या–२१ । आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–२०६० । रचनाकाल–भाद्रपद १५ बुधवार सं० १०४० । लिपिकाल–× ।

२० आराधना सार—मित्र सागर । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार—१०"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, सस्कृत एवं हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय—अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–१५२९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२१ आराधना सार पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार—१२"×"५ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–२०६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२२. आराधना सार—देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–११"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–१५१७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२३. प्रति संख्या २ । पत्र सख्या–२६ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६८० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२४ आलाप पद्धति – कवि विष्णु । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार—११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–२०४५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पोष कृष्णा १५, स० १६८५ ।

२५. आलोचना पाठ—जोहरीलाल । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार—१२"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१५३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२६. आलोचना सटीक—जोहरीलाल । टीकाकार–× । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–१८०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२७ इष्टोपदेश—गौतम स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या ५ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१३३७ । रचनाकाल–माघ कृष्णा ६ सोमवार, स० १५२४ ।

२८ **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–८ । आकार–९$\frac{3}{4}$″ × ३$\frac{3}{4}$″ . दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८५५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२९ **इष्टोपदेश—पूज्यपाद स्वामी** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–९$\frac{1}{4}$ × ४$\frac{1}{4}$ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–२०४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

३० **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–६ । आकार–११″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०३९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा २, बुधवार, सं० १६४६ ।

३१ **प्रति संख्या ३** । पत्र संख्या–६ । आकार–९$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

३२ **इष्टोपदेश टीका—गोतम स्वामी । टीकाकार पं० आशाधर** । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१०$\frac{3}{4}$″ × ५ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–२४७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला १४, सं० १५६२ ।

३३ **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–१८ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″ × ५″ दशा । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९८३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

३४ **प्रति संख्या ३** । पत्र संख्या–३७ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५९९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

३५ **उत्तराध्ययन**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–६४ । आकार–९$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१७५२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा ५, सं० १७४६ ।

३६ **उदय उदीरण त्रिभंगी—सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१५१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

३७ **उपासकाध्ययन वसुनंदी** । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१९२३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १४२१ ।

३८. **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–१३ । आकार–११″×५″ । दशा–अति जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९९७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १४२१ ।

३९. **प्रति संख्या ३** । पत्र संख्या–१३ । आकार–११$\frac{1}{2}$″ × ६$\frac{1}{2}$″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४०. **एक लावणी**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–९$\frac{1}{2}$″×५$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१६६२ । रचना काल–× । लिपिकाल–× ।

४१. **एकानेक निरूपण**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×५$\frac{3}{4}$″ ।

दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७०७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४२. अंक गर्भ षडारचक्र—देवनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार—११½×५ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२३४३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–४ । आकार–११¾"×५½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४५२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४४. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–४ । आकार–१०½"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४५. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या–४ । आकार–१२"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०३४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ३, सं० १७६७ ।

४६ अंक प्रमाण–× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६३१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४७. कर्मकाण्ड सटीक–× । टीकाकार–पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या–५० । आकार–१०½"×५¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । टीका हिन्दी मे । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१३५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ५, सं० १८४८ ।

४८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–३१ । आकार–१०½"×६¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६५४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४९. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–४४ । आकार–१२½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५८५ । रचनाकाल–× । टीकाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ६, सोमवार, स० १७६४ ।

५०. कर्म प्रकृति—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार—१०½"×४½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१६ । आकार–११"×५½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५२. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–६ । आकार–११¾"×६" । दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा ५, सं० १८२२ ।

५३. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या–२० । आकार–१०½"×४¾" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५४. **प्रति संख्या ५** । पत्र सख्या–२० । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२८८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५५. **प्रति संख्या ६** । पत्र सख्या–१७ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आश्विन शुक्ला १३, स० १६५६ ।

विशेष—यह जोबनेर मे लिखा गया है ।

५६. **प्रति सख्या ७** । पत्र सख्या–१६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १६१४ ।

५७. **प्रति संख्या ८** । पत्र सख्या–१० । आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५८. **कर्म प्रकृति सार्थ—सि० च० नेमिचन्द्र** । अर्थकार–× । देशी कागज । पत्र सख्या–२२ । आकार–११"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२३६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल ।

५९. **प्रति संख्या २** । पत्र सख्या–४० । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६०. **प्रति सख्या ३** । पत्र सख्या–११ । आकार–१२$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ६, शुक्रवार, स० १७६३ ।

६१. **प्रति सख्या ४** । पत्र सख्या–२३ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५१६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगशीर्ष शुक्ला ३, स० १८२२ ।

विशेष—स० १७२७ मगशीर्ष शुक्ला १४, मगलवार को महाराष्ट्र मे श्री महाराज रघुनाथसिंह के राज्य मे प्रति का सशोधन किया गया ।

६२. **प्रति सख्या ५** । पत्र सख्या–२५ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३४७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६३ **प्रति सख्या ६** । पत्र सख्या–१६ । आकार–१२$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१६५८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६४. **प्रति सख्या ७** । पत्र सख्या–१२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६५. **कर्म प्रकृति सूत्र भाषा**–× । देशी कागज । पत्र सख्या–७१ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–१६०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १, मगलवार, स० १८२८ ।

६६ **प्रति सख्या २** । पत्र सख्या–१५६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२८०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगशीर्ष शुक्ला २, बुधवार, स० १६६१ ।

विशेष—पद्य संख्या ३५०० हैं।

६७. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—कार्तिकेय । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार—$11\frac{1}{2}'' \times 5''$ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७०० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १०, रविवार स० १६०४ ।

६८. प्रति संख्या २ । पत्र सख्या–२८ । आकार–$10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४७६ । रचनाकाल । लिपिकाल–× ।

६९. काव्य टिप्पण–× । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–$10'' \times 5\frac{1}{2}''$ । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२०६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७०. क्रिया कलाप टीका– । टीकाकार–प्रभाचन्द्र । देशी कागज । पत्र सख्या–६५ । आकार–$12'' \times 5''$ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय—अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–२६४५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७१. क्रिया कोष—किशनसिंह । देशी कागज । पत्र सख्या–६१ । आकार–$10'' \times 5''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–२३९६ । रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला १५, रविवार, स० १७८४ । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला २, स० १९३७ ।

७२. गुण स्थान कथा—काल्हा छाबड़ा । देशी कागज । पत्र सख्या–१९ से २८ । आकार–$9'' \times 3\frac{3}{4}''$ । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या २८५७ । रचनाकाल–आषाढ शुक्ला १५, सोमवार, स० १७१३ । लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १४, बृहस्पतिवार, स० १८३६ ।

७३. गुणस्थान चर्चा–× । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–$10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२१४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७४. प्रति संख्या २ । पत्र सख्या–१ । आकार–$22\frac{1}{2}'' \times 14''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगशीर्ष शुक्ला २, स० १७८७ ।

७५. गुणस्थान चर्चा सार्थ—रत्न शेखर सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–$10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धात । ग्रन्थ सख्या–१८२६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७६. गुणस्थान बंध (व्युच्छति प्रकरण)–× । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–$10'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६४० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७७. गोम्मटसार—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–२५ । आकार—$11\frac{1}{2}'' \times 5''$ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२८१९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–वैशाख कृष्णा १३, सं० १६०० ।

७८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१५ । आकार–१६″ × ६″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ११, स० १६३६ ।

नोट— ग्रन्थ के पत्र आपस में चिपके हुए हैं । इसकी कालाडेरा जयपुर में लिपि की गई ।

७९. प्रति संख्या ३ । पत्र सख्या–१८ । आकार–११″ × ५″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८०. गोम्मटसार सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र । टीकाकार–× । देशी कागज । पत्र सख्या–३४ । आकार–११″ × ४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२८३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८१. गोम्मट सार (जीवकाण्ड मात्र)—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र सख्या–७१ । आकार–११″ × ४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२५६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १० सोमवार, स० १५१८ ।

८२ गोम्मटसार सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र । टीका–अज्ञात । देशीकागज । पत्र सख्या–२६० । आकार–१२″ × ४¾″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–१५७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा २ वृहस्पतिवार, स० १६५६ ।

८३. गोम्मटसार भाषा–सि० च० नेमिचन्द्र । भाषाकार–महापण्डित टोडरमल । देशी कागज । पत्र सख्या–१०२६ । आकार–१४½″ × ८½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–राजस्थानी (ढूढारी) । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२६२२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल—× ।

विशेष—नागौर गादी के भट्टारक १०८ श्री मुनीन्द्रकीर्तिजी ने "निसरावल" मूल्य देकर इस ग्रन्थ को स० १६१६ माघ शुक्ला ५ को लिया है । भाषाकार ने लिखा है कि जीव तत्त्व प्रदीपिका सस्कृत टीका के अनुसार भाषा की गई है । टीका का नाम "सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका टीका" है । वचनिकाकार श्री प० टोडरमलजी जयपुर निवासी ने अन्त मे लिखा है कि लब्धिसार और क्षपणासार शास्त्रो का व्याख्यान भी आवश्यकतानुसार मिला दिया गया है । अक्षर मोटे एवं सुन्दर हैं ।

८४. चक्रवर्ती ऋद्धि वर्णन–× । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–६½″ × ४¾″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–२२७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८५. चतुर्दश गुणस्थान चर्चा—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र सख्या–१५ । आकार–८″ × ४¾″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–१७८२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, स० १६४३ ।

८६. चतुर्दश गुणस्थान व्याख्यान—× । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार—१०¾″ × ५″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त ।

ग्रन्थ संख्या–२५६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८७. **चतुर्विंशति स्थानक चर्चा—सि० च० नेमिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१२½″×५½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१२४३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ११, सं० १८०० ।

८८. **चतुर्विंशति स्थानक—सि० च० नेमिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र सख्या—२६ । आकार–१०½″×५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२३४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगशीर्ष कृष्णा २, स० १८७८ ।

८९. **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–४२ । आकार–११″×४½″ । दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०८० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–प्रथम ज्येष्ठ शुक्ला १, स० १८७७ ।

९०. **चतुस्त्रिंशद भावना—मुनि पद्मनन्दि** । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–११¾″×४¾″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४२२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९१. **चरचा पत्र—सकलित** । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–११″×४½″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२१३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९२. **चरचा पत्र**–× । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आमार–८¾″×४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२१३४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९३. **चरचा पत्र**–× । देशी कागज । पत्र सख्या-४३ । आकार–१२¾″×५¾″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२७५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९४. **चर्चायें**—× । देशी कागज । पत्र सख्या–५६ । आकार–११½″×५¾″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–चर्चा । ग्रन्थ सख्या–१२७८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९५. **चर्चा तथा शील की नवपाटी**–× । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१२″×५½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–१६६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६. **चरचा शतक (सटीक)—पं० द्यानतराय । टीकाकार–हरजीमल** । देशी कागज । पत्र सख्या-५२ । आकार–१२½″×८¾″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२५०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ३, बुधवार, स० १९२८ ।

९७. **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–८२ । आकार–१३″×८½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–वैशाख कृष्णा ७, मगलवार, सं० १९१० ।

९८. **प्रति संख्या ३** । पत्र संख्या–४७ । आकार–१३$\frac{3}{4}$″ × ८$\frac{1}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९९. **चरचा शास्त्र**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–४५ । आकार–११″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पोष शुक्ला १, स० १८६६ ।

१००. **चरचा समाधान—पं० भूधरदास** । देशी कागज । पत्र संख्या–३ से १२६ । आकार–९$\frac{1}{2}$″ × ५″ । दशा–बहुत अच्छी । अपूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–चर्चा एव सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१२७७ । रचनाकाल–माघ शुक्ला ५, स० १८०६ । लिपिकाल–× ।

१०१. **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–७७ । आकार–१२″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२८१ । रचनाकाल–माघ शुक्ला ५, स० १८०६ । लिपिकाल–आषाढ शुक्ला ४, शुक्रवार, स० १८३० ।

१०२. **प्रति संख्या ३** । पत्र संख्या–४८ । आकार–१२$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२८० । रचनाकाल–स० १८०६ । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १२, स० १८८१ ।

१०३. **चौबीस ठाणा चौपई भाषा—प० लोहर** । देशी कागज । पत्र संख्या–३५ । आकार–१२$\frac{1}{4}$″ × ५$\frac{1}{4}$″ । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१७६६ । रचनाकाल–मगसिर सुदी ५, स० १७३६ । लिपिकाल–सं० १८५२ ।

टिप्पणी—चौबीस ठाणा के मूलकर्ता सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य हैं । उस ग्रन्थ के आधार पर ही हिन्दी रूप मे प० लोहर ने रचना की है ।

१०४. **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–५६ । आकार–१२$\frac{3}{4}$″ × ५″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७० । रचनाकाल–मगसिर सुदी ५, स० १७३६ । लिपिकाल—अश्विन कृष्णा १, स० १७६० ।

१०५. **चौबीस ठाणा पिठीका**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार—११$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१७७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०६. **चौबीस ठाणा पिठीका तथा बंध व्युच्छति प्रकरण—सि० च० नेमिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या–७३ । आकार–११$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत व सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२२४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०७. **चौबीस ठाणा सार्थ—सि० च० नेमिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या–३० । आकार–१०$\frac{1}{2}$″ × ५″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२४५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०८. **चौबीस दण्डक—गजसार** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७२० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—श्वेताम्बर आम्नायानुसार वर्णन किया गया है।

१०९. चौबीस दण्डक सार्थ—गजसार। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार—१०″×४¾″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत, हिन्दी तथा गुजराती। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२५६५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११०. चौबीस दण्डक गति विवरण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०½″×४½″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ सख्या–१६३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१११. जन्मान्तर गाथा–×। देशी कागज। पत्र सख्या–३। आकार–१०½″×४¼″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१४२४। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ।

११२. जीव तत्व प्रदीप–केशवाचार्य। देशी कागज। पत्र सख्या–११३। आकार–१०″×७″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२४१४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११३. जीव प्ररूपण—गुण रयण भूषण। देशी कागज। पत्र सख्या–२८। आकार—१०½″×४¾″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–३७७/अ। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र सुदी २, स० १५११।

११४. जीव विचार प्रकरण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार १०½″×४¼″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त ग्रन्थ सख्या–१९८२। रचनाकाल—×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १, स० १७०५।

११५. प्रति संख्या २। पत्र सख्या–१२ आकार–८¾″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२८०६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १२, स० १८४५।

११६. जीव विचार सूत्र सटीक—शान्ति सूरि। देशी कागज। पत्र सख्या–३१। आकार–१०″×४¼″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–१३०८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११७. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–५। आकार–१०″×४½″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७११। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११८. प्रति संख्या ३। पत्र सख्या–६। आकार–१०½″×४½″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२७१७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पोष कृष्णा १३, स० १७६७।

विशेष–अन्तिम पत्र पर २२ अभक्ष पदार्थों के नाम दिये हुए हैं।

११९. जैन शतक—भूधरदास खण्डेलवाल। देशी कागज। पत्र सख्या–१३। आकार–११″×५½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२३०८। रचनाकाल–पोष कृष्णा १३, स० १७८१। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १, बुधवार स० १६४८।

१२०. द्वादसी मुनि गाथा—मुनि द्वादसी। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—१०$\frac{1}{8}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—प्राकृत और सस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या—२५६५। रचनाकाल—×। लिपिकाल—चैत्र शुक्ला २, स० १७८८।

१२१. तर्क परिभाषा—केशव मिश्र। देशी कागज। पत्र सख्या—१८। आकार—११$\frac{1}{8}$"×५"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—सस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—तर्क शास्त्र। ग्रन्थ सख्या—१६७६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ४, स० १६८६।

१२२. तत्व धर्मामृत—चन्द्रकीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या—३३। आकार—११$\frac{1}{8}$"×५$\frac{1}{8}$"। दशा—सामान्य। पूर्ण। भाषा—सस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—आगम। ग्रन्थ सख्या—३८२/अ। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२३. प्रति सख्या २। पत्र सख्या—३३। आकार—१०$\frac{3}{8}$"×४$\frac{1}{8}$"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या—१०६८। रचनाकाल—×। लिपिकाल—भाद्रपद बुदी ६, स० १५६७।

१२४. प्रति संख्या ३। पत्र सख्या—३२। आकार—१२"×५"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या—१०३२। रचनाकाल—×। लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ५, स० १५६७।

टिप्पणी—आमेर शास्त्र भण्डार की ग्रन्थ सूची मे इसके कर्ता का नाम चन्द्रकीर्ति उल्लिखित है। प्रारम्भ का एक श्लोक दोनो ग्रन्थो का एक ही है किन्तु अन्तिम श्लोक भिन्न-भिन्न हैं। आमेर के ग्रन्थ मे श्लोक सख्या ४७७ हैं जबकि यहाँ इस ग्रन्थ मे ५०० श्लोक हैं। यहाँ इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम ग्रन्थ मे मुझे दृष्टिगत नही हुआ। अत मैंने इसे उसकी रचना ही मानी है।

१२५. तत्वबोध प्रकरण—×। देशी कागज। पत्र सख्या—२१। आकार—१२"×५$\frac{1}{2}$"। दशा—सामान्य। पूर्ण। भाषा—सस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या—१७५५। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२६. तत्व सार—देवसेन। देशी कागज। पत्र सख्या—६। आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—प्राकृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या—१५०६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२७. तत्वत्रय प्रकाशिनी—ब्रह्म श्रुतसागर। देशी कागज। पत्र सख्या—७। आकार—१०$\frac{3}{8}$"×४$\frac{1}{2}$। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—सस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या—२४४२। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

नोट—टीका का नाम तत्व त्रय प्रकाशिनी है।

१२८. तत्वज्ञान तरंगिणी—भ० ज्ञानभूषण। देशी कागज। पत्र सख्या—१६। आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{8}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—सस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या—२८५६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२९. तत्वज्ञान तरंगिणी सटीक—भ० ज्ञानभूषण। टीकाकार—×। देशी कागज।

पत्र संख्या—८९ । आकार—११"×७½" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२२६७ । रचनाकाल—सं० १५६० । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ९, सं० १९८६ ।

१३०. तत्वार्थ रत्न प्रभाकर—प्रभाचन्द्र देव । देशी कागज । पत्र संख्या—२ से ७४ । आकार—११½"×५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२८५४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

नोट—प्रथम पत्र नहीं है ।

१३१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—८२ । आकार—१२"×५" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२३५२ । रचनाकाल—भाद्रपद शुक्ला ५, स० १४८९ । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला १३, शुक्रवार, स० १५५० ।

१३२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६९ । आकार×११¾"×३¾" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२६२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१३३. तत्वार्थ सूत्र—उमा स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—१०¾×५½" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७६२ । रचना काल—× । लिपिकाल—× ।

१३४. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—२२ । आकार—११¾"×५¾" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५२० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला २, रविवार, स० १६२० ।

१३५. तत्वार्थ सूत्र सटीक—उमास्वामि । टीकाकार—श्रुतसागर । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । आकार—१०"×४½" । दशा—अच्छी । अपूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२०८२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१३६. तत्वार्थ सूत्र सार्थ—× । देशी कागज । पत्र संख्या—२७ । आकार—१०½"×४¾" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत व हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१३४९ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१३७. तत्वार्थ सूत्र सटीक—सदासुख । देशी कागज । पत्र संख्या—८६ । आकार—१२½"×५½" । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८६४ । रचनाकाल—फाल्गुन कृष्णा १०, सं० १९१० । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं० १९६३ ।

१३८. तत्वार्थ सूत्र भाषा—कनककीर्ति । देशीकागज । पत्र संख्या—४९ । आकार—११½"×५" । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३५० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ६, स० १८७२ ।

१३९. तत्वार्थ सूत्र वचनिका—पं० जयचंद । देशी कागज । पत्र संख्या—४७६ । आकार—१०¾"×५½" । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत एवं हिन्दी । लिपि—नागरी ।

विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–१८०१। रचनाकाल–चैत्र शुक्ला ५, स० १८३६। लिपिकाल— ज्येष्ठ शुक्ला ५, स० १६०४।

विशेष—ग्रन्त में वचनिकाकार ने स्वय का तथा अन्य ग्रनेक पण्डितो का परिचय दिया है।

१४० तेरह पंथ खण्डन—प० पन्नालाल। देशी कागज। पत्र सख्या–१२। ग्राकार—१२$\frac{1}{4}$" × ५$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–चर्चा। ग्रन्थ सख्या–२२७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

विशेष – दिगम्बर सम्प्रदाय के तेरह पथ के सिद्धान्तो का खण्डन किया गया है।

१४१. दण्डक चौपई–पं० दौलतराम। देशी कागज। पत्र सख्या–२। ग्राकार–१०$\frac{3}{4}$" × ५$\frac{1}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या—१६६३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४२. दण्डक सूत्र– गजसार मुनि। देशी कागज। पत्र सख्या–५। ग्राकार–१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत ग्रौर हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१७३२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १०, स० १७५४।

१४३. दश ग्रछेरा— ×। देशी कागज। पत्र सख्या—८। ग्राकार—१०" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–ग्रपभ्रंश ग्रौर हिन्दी। लिपि–नागरी. विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२२५७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ५. स० १७६६।

१४४. दर्शनसार सटीक देवसेनाचार्य। टीका–शिवजीलाल। देशी कागज। पत्र सख्या–१२०। ग्राकार–१२$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{2}$"। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–प्राकृत ग्रौर सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–१५६६। टीकाकाल–माघ शुक्ला १०, स० १६२३। लिपिकाल–×।

१४५ प्रति सख्या २। पत्र सख्या–६५। ग्राकार–११$\frac{1}{2}$" × ७$\frac{3}{4}$"। दशा–ग्रच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२३६६। रचनाकाल–माघ शुक्ला १०, स० ६६०। लिपिकाल–ग्रश्विन शुक्ला ८, शनिवार, स० १६२८।

विशेष—वि० स० ६६० माघ शुक्ला १०, को मूल रचना धारा नगरी के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे की गई। ग्रौर हिन्दी टीका १६२३ माघ शुक्ला १० को हुई है

१४६. दर्शन सार—ग्र० देवसन। देशी कागज। पत्र सख्या–२। ग्राकार–११$\frac{1}{2}$" × ५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२६५४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४७ द्रव्य संग्रह—सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र सख्या–६। ग्राकार—६$\frac{1}{4}$" × ४"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२४१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ८, स० १६६६।

१४८. प्रति संख्या २। पत्र सख्या–१६। ग्राकार–६$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२६१८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४९. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५८२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१५०. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या–६ । आकार–११" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३२६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१५१. द्रव्य संग्रह सटीक—प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–३२ । आकार–९$\frac{3}{4}$" × ३$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–११०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

आदिभाग—

नत्वा जिनाकर्मपहस्तितसर्वदोष,
लोकत्रयाधिपति सस्तुत पादपद्मम् ।
ज्ञान प्रभा प्रकटिताखिलवस्तुसार्थं,
षड्द्रव्यनिर्णयमह प्रकट प्रवक्ष्ये ॥१॥

अन्तभाग—

इति श्री परमागमिक भट्टारक–श्री नेमिचन्द्रविरचित–षड्द्रव्यसंग्रहे श्रीप्रभाचन्द्रदेवकृत संक्षेप टिप्पणक समाप्तम् ॥

१५२. द्रव्य संग्रह सटीक—पर्वत धर्मार्थी । देशी कागज । पत्र संख्या–५४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ५" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१३५४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा १४, बृहस्पतिवार, सं० १८२८ ।

१५३. द्रव्य संग्रह सटीक—ब्रह्मदेव । देशी कागज । पत्र संख्या–६८ । आकार—११$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२४१२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १०, रविवार, स० १४९६ ।

१५४. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–७२ । आकार १२$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६८१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १५२९ ।

१५५. द्रव्य संग्रह सार्थ–× । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–९" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२५७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१५६ प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–७ । आकार–१२$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१५७. द्रव्य संग्रह टिप्पण—प्रभाचन्द्रदेव । देशी कागज । पत्र संख्या–३२ । आकार–११" × ५" । दशा प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७९६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, रविवार, स० १६१७ ।

१५८ दोहा पाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१९ । आकार—

१०″×४½″। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२२६१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १०, स० १५६२।

१५६. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–१६। आकार–१०½″×४¾″। ग्रन्थ संख्या—१४४६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ५, स० १५५८।

१६०. द्वादश भावना–श्रुत सागर। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार—१०½″×४½″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१६३५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१६१. धर्म परीक्षा–हरिषेण। देशीकागज। पत्र संख्या–७३। आकार–१०¾″×४¾″। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१७७४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १२, रविवार, स० १५६५।

१६२ प्रति संख्या २। पत्र संख्या–१३३। आकार–६½″×४¾″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७६६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १३, शुक्रवार, स० १६०६।

विशेष– लिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखी है।

१६३ धर्म परीक्षा रास—सुमति कीर्ति सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–२३५। आकार–६¾″×४½″। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१०१२। रचनाकाल–मगसिर सुदी २, स० १६२५। लिपिकाल–×।

१६४ धर्म प्रश्नोत्तर—भ० सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–५३। आकार–१०″×४¾″। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–११४४। रचनाकाल×। लिपिकाल–×।

१६५. धर्म रसायण—पद्मनंदि मुनि। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार—११″×५″। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१६२५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ३, स० १६५४।

१६६ प्रति संख्या २। पत्र संख्या–१३। आकार–११″×४¾″। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१६७ प्रति संख्या ३। पत्र संख्या–१०। आकार–११½×५¼″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१६८ धर्म संवाद–×। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०½″×४½″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२४७७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१६६ ध्यान बत्तीसी—बनारसीदास। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार—१०¾″×५″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२४५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१७०. नन्दी सूत्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७१. नयचक्र—देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–३६ । आकार–१३½"×५½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत एवं प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२३२४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ११, रविवार, स० १५४२ ।

१७२ नयचक्र बालावबोध—सदानन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२८२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–११ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६१८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७४ नयचक्र भाषा—पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–८¾"×४" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६४८ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १०, स० १७२६ । लिपिकाल– × ।

१७५. नवतत्व टीका— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–११"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६११ । रचनाकाल × । लिपिकाल– × ।

१७६. नवतत्व वर्णन—अभयदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०¼"×४¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत व हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या २७१२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १७६४ ।

१७७ प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०½"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७२३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, स० १७४७ ।

१७८ प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–६ । आकार–१०¼"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७९. नवरत्न— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०¼"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८०. नास्तिकवाद प्रकरण— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–६¾"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८१. नित्य क्रिया काण्ड— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१-३६ । आकार–११½"×५½" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२८४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८२ प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१-१७ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२८५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३ परमात्म छत्तीसी – पं० भगवतीदास । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ संख्या–१६५८ । रचनाकाल- स० १७५० । लिपिकाल– × ।

१८४. परमात्म प्रकाश— योगिन्द्र देव । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–१३४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८५ परमात्म प्रकाश टीका— ब्रह्मदेव । देशी कागज । पत्र सख्या–१०६ । आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श, टीका सस्कृत मे । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–१८४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, मगलवार, स० १८८५ ।

१८६ पुण्य बत्तीसी – समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–१३१२ । रचनाकाल–स० १६६६ । लिपिकाल–माघ कृष्णा ७, स० १७८६ ।

१८७ पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय – अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२१२४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १८४८ ।

विशेष—इसकी लिपि इन्दौर में की गई ।

१८८ पंचसंग्रह— × । देशी कागज । पत्र सख्या–७७ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२५३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १५३५ ।

१८९ पचप्रकाशसार— × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२४६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१९० पंचास्तिकाय समयसार सटीक—अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–४८ । आकार–१२$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ सख्या–२३८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १७०६ ।

१९१ प्रति संख्या २ । पत्र सख्या–३५ । आकार–१२"×६" । दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१९२. पंचास्तिकाय व समयसार टीका – पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र सख्या–८४ । आकार–१०"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ सख्या–१६०२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १८८५ ।

१९३. प्रतिक्रमण चर्चा — × । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ९, सं. १७९० ।

१९४. प्रतिमा बहोत्तरी – पं० खानतराय । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ संख्या–२५३३ । रचनाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १७८१ । लिपिकाल– × ।

विशेष—इस ग्रन्थ की रचना दिल्ली में की गई ।

१९५. प्रथम बखाण— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १०, स० १८०२ ।

१९६. प्रमेयरत्नमाला वचनिका—पं० माणिक्य नन्दि । वचनिका —पं० जयचन्द । देशी कागज । पत्र सख्या–१४६ । आकार–११"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८६५ । रचनाकाल–आषाढ शुक्ला ४, बुधवार, स० १८६३ । लिपिकाल– × ।

१९७ प्रलय प्रमाण– × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९¾"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४९८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

टिप्पणी—त्रिलोकसार के अनुसार प्रलय के प्रमाण का वर्णन किया गया है ।

१९८ प्रवचनसार वृत्ति— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१३९ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–१२१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल - × ।

१९९. प्रवचनसार वृत्ति—अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–१४१ । आकार–११¾" × ५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, टीका सस्कृत में । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–१२९० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

टिप्पणी—टीका का नाम तत्वदीपिका है ।

२००. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–८९ । आकार–११" × ४" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२७३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–विक्रम सं०–१६२० ।

२०१. प्रति संख्या ३ । पत्र सख्या–३४ । आकार–१०¾"×५½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४४० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–विक्रम सं० १६२१ ।

२०२. प्रवचनसार सटीक— × । देशी कागज । पत्र सख्या–५८ । आकार–१०" × ५" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१८९७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद अमृतचन्द्राचार्य की टीकानुसार किया गया है। ग्रन्थ मे हिन्दी अनुवाद के कर्ता का नामोल्लेख नही है।

२०३ **प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भ० सकलकीर्ति**। देशी कागज। पत्र सख्या–१५१। आकार–१०½"×५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२४६५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा २, शुक्रवार, सं० १६२६।

विशेष—अकबर के राज्यकाल मे लिपि की गई है। १७१७ भाद्रपद शुक्ला १३, शुक्रवार, शक मवत् १५८२ मे दान दी गई।

२०४ **प्रश्नोत्तर रत्नमाला—राजा अमोघहर्ष**। देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–६½"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–देवनागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ सख्या–१३१३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १५, स० १६७३।

२०५. **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्ण। पर्ण। ग्रन्थ सख्या–१३३६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२०६ **बधस्वामित्व (बधतत्व)—देवेन्द्र सूरि**। देशी कागज। पत्र सख्या–६। आकार–१०½"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२७१०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा १२, स० १७१३।

२०७. **प्रति सख्या २**। पत्र सख्या–८। आकार–१०½"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२४८५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा ११, स० १७१३।

विशेष—श्री ब्रह्महेमा ने नागपुर मे लिपि की है।

२०८ **बन्धोदयदीरणसत्ता विचार—सि० च० नेमिचन्द्र**। देशी कागज। पत्र सख्या–५। आकार–१२½"×५½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२६३१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२०९ **प्रति संख्या २**। पत्र सख्या–१। आकार–९¾"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२६८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२१०. **बन्धोदयदीरणसत्ता स्वामित्व सार्थ—×**। देशी कागज। पत्र सख्या–६। आकार–११½"×४½"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२०५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा १२, स० १७१९।

२११ **भगवती आराधना सटीक—×**। देशी कागज। पत्र सख्या–५६२। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–१७८१। रचनाकाल–×। लिपिकाल—स० १५१८।

२१२ **भव्य मार्गणा—×**। देशी कागज। पत्र सख्या–५। आकार१२"×५½"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२३८८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२१३. भविष्यत् चौबीसी— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ संख्या–२२४१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२१४. भावना बत्तीसी— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६४ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१२८७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२१५. भावनासार संग्रह—महाराजा चामुण्डराय । देशी कागज । पत्र संख्या–६१ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१७३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

आदिभाग— ।।ॐ।। स्वस्ति ।। ॐ नमो वीतरागाय ।।

अरिहननरजो हननंरहस्यहरप्रजनार्हमर्हत ।।

सिद्धान सिद्धाष्ट गुणान् रत्नत्रयसाधकान् सुवेसाधन् ।।

अन्तभाग—इति सकलागम सयम सम्पन्न श्रीमद् जिनसेन भट्टारक श्री पादपद्म प्रसादा सादित चतु रनु योगपारावार पारग धर्म्म विजयते श्री चामुण्डमहाराज विरचिते भावनासार सग्रहे चारित्र सारे अनागार धर्म्म समाप्त ।।छ।।

टिप्पणी—ग्रन्थ के दीमक लग गई है, फिर भी अक्षरों को विशेष क्षति नहीं हुई है ।

२१६. भावसंग्रह—देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–५४ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२५०० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १५६४ ।

२१७. भावसंग्रह—देवसेन मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । आकार–१०" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१०५३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १५२६ ।

२१८ भावसंग्रह—श्रुतमुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–४० । आकार–१३"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१०३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

आदिभाग—

खविदघण घाइकम्मे अरहते सुविदिदत्थ – णिवहेय ।

सिद्धट्ठ गुणे सिद्धे रयणत्तय साहगे थुवे साहू ।।१।।

इदि वदिय – पचगुरु सरूवसिद्धत्थ भविय बोहत्थ ।

सुत्तुत्त मूलुत्तर – भावसरूवं पवक्खामि ।।२।।

अन्तभाग—

णाद–णिखिलत्थ–सत्थो सयल–णारिदेहिं पूजिओ विमलो ।

जिण–मग्ग–गमण–सूरोजयउ चिरं चारुकित्तिमुणी ।।२२।।

वर सारत्तय–णिउणो सुद्धं परओ विरहिय – परभाओ ।

भवियाण पडिबोहणपरो पहाचद – णाममुणी ।।२३।।

२१९ **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–४२ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१००७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२२० **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र संख्या–४० । आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १७२२ ।

२२१. **भावसंग्रह—पं० वामदेव** । देशी कागज । पत्र संख्या–३७ । आकार–११"×५" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१८६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ३, सं० १९०८ ।

२२२ **भावसंग्रह सटीक**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३५ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२०६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२२३ **भाव त्रिभंगी (सटीक)—सि० च० नेमिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या–८३ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१३७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–प्रथम श्रावण शुक्ला १, सं० १७३३ ।

२२४. **महावीर जिन नय विचार— यशः विजय** । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१२"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या १७०५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ७, सं० १८६७ ।

२२५ **मोक्षमार्ग प्रकाशक वचनिका—महापण्डित टोडरमल** । देशी कागज । पत्र संख्या–२०६ । आकार–१६"×६$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (राजस्थानी) । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२३६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १९३४ ।

२२६ **मृत्यु महोत्सव वचनिका—पं० सदासुख** । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–९$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत एवं हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२३९२ । वचनिका रचनाकाल–आषाढ शुक्ला ५, सं० १९१८ । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ७, रविवार, सं० १९२५ ।

२२७ **राजवार्तिक—अकलंकदेव** । देशी कागज । पत्र संख्या–३०८ । आकार–१२"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ संख्या–१८९२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२२८ **लघु तत्वार्थ सूत्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–७$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२२७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष – उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र से संकलन करके ही लघुसूत्र की रचना की गई है ।

२२९. **बृहद् द्रव्यसंग्रह सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र । टीकाकार**– × । देशी कागज । पत्र सख्या–१५५ । आकार–१०″ × ३½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और टीका संस्कृत में । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२१७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ बुदी १०, बृहस्पतिवार, सं० १४६२ ।

२३० **व्युच्छित्ति त्रिभंगी—सि० च० नेमिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–१०½″ × ५″ । दशा–प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१५०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ५, बृहस्पतिवार, स० १५६२ ।

२३१. **बाल पच्चीसी—ब्रह्म गुलाल** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१९″ × ४¾″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२४४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२३२ **विचार षट् त्रिंशक (चौबीस दण्डक सार्थ)—गजसार** । देशी कागज । पत्र सख्या–२२ । आकार–९¾″ × ४½″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२७४१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १२, शनिवार, स० १७६४ ।

२३३ **विशेष सत्ता त्रिभंगी—नयनंदि** । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१३″ × ५″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१९९२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२३४. **प्रति संख्या** २ । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–११″ × ४¾″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या १६३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२३५. **वेद कान्ति** — × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–११¾″ × ४¾″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–चर्चा । ग्रन्थ सख्या–२२४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२३६. **शोभन श्रुति—पं० धनपाल । टीकाकार—अमरसिंह** । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–१०¼″ × ४½″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–१३९४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–द्वितीय ज्येष्ठ कृष्णा १३, स० १५२७ ।

२३७ **षट्कर्मोपदेश रत्नमाला—अमरकीर्ति** । देशी कागज । पत्र संख्या–१०४ । आकार–१२″ × ४¾″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२७९५ । रचनाकाल–विक्रम सं० १२७४ । लिपिकाल–माघ शुक्ला ५, स० १६०१ ।

२३८ **षट् दर्शन समुच्चय**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०¾″ × ४¾″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२६९८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२३९. **षट् दर्शन विचार**– × । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१२″×५¾″ ।

दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१५२४। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

२४०. **षट् दर्शन समुच्चय टीका—हरिभद्र सूरि**। पत्र संख्या-२८। आकार-१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११५५। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

२४१. **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र संख्या-४। आकार-११"×५$\frac{1}{2}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१६४१। रचनाकाल-×। लिपिकाल-बैशाख शुक्ला १४, सं० १८६१।

२४२ **षट् द्रव्यसंग्रह टिप्पण—प्रभाचन्द्र देव**। देशी कागज। पत्र संख्या-१६। आकार-११"×५"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-प्राकृत और संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१६६६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

२४३ **षट् द्रव्य विवरण**—×। देशी कागज। पत्र संख्या-२। आकार-१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१४८२। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

२४४ **षट् पाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य**। देशी कागज। पत्र संख्या-१५। आकार-११"×५"। दशा-अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-प्राकृत। लिपि-नागरी। विषय-आगम। ग्रन्थ संख्या-२१०६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

२४५. **षट् पाहुड़ सटीक—कुन्दकुन्दाचार्य। टीकाकार**-×। देशी कागज। पत्र संख्या-४७। आकार-१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-प्राकृत और संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११७६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ६, रविवार, सं० १५८६।

२४६ **षट् पाहुड़ सटीक—श्रुत सागर**। देशी कागज। पत्र संख्या-१५३। आकार-११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-प्राकृत और संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१०८२। रचनाकाल-×। लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १४, सं० १८३०।

टिप्पणी—लिपिकार ने अपनी विस्तृत प्रशस्ति लिखी है।

२४७ **षट् पाहुड़ सटीक**—×। देशी कागज। पत्र संख्या-१८। आकार-११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा-अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा-प्राकृत व संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१०७६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-पौष बुदी १३, सोमवार, सं० १७८६।

२४८. **प्रति संख्या २**। पत्र संख्या-२७। आकार-१०"×५$\frac{3}{4}$"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१६६६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

२४९. **षट् त्रिंशति गाथा सार्थ—मुनिराज डाहसी**। देशी कागज। पत्र संख्या-७। आकार-९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-प्राकृत और संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१६६७। रचनाकाल-×। लिपिकाल-माघ कृष्णा १, सं० १६८५।

२५०. **समयसार नाटक सटीक—अमृतचन्द्र सूरि**। देशी कागज। पत्र संख्या-७५।

आकार-१०″×४$\frac{3}{4}$″। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या-२७३५। रचनाकाल-×। लिपिकाल-सं० १८०६।

२५१. **समयसार वृत्ति —अमृतचन्द्र सूरि।** देशी कागज। पत्र संख्या-२७। आकार-११″×४$\frac{1}{2}$″। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या-२६६०। रचनाकाल-×। लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ६, बुधवार, सं० १६२२।

विशेष-रणथम्भोर गढ के राजाधिराज श्री राव सूरजनदेव के राज्य में जोशी चतुर गर्ग गोत्री बु दी वाले ने लिपि की है।

२५२. **प्रति संख्या २।** पत्र सख्या-२८। आकार-१२$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{4}$″। दशा-अति जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१२६४। रचनाकाल-×। लिपिकाल-माघ शुक्ला ५, स० १७३२।

२५३ **प्रति सख्या ३।** पत्र सख्या-३७। आकार-१०$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″। दशा-जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या-१०२०। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

२५४ **प्रति सख्या ४।** पत्र सख्या-८३। आकार-१०″×५″। दशा-सामान्य। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या-१८४८। रचनाकाल-×। लिपिकाल-पौष शुक्ला १२, शुक्रवार, स० १६७८।

२५५. **प्रति संख्या ५।** पत्र संख्या-८०। आकार-८$\frac{1}{4}$″×४$\frac{3}{4}$″। दशा-सामान्य। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या-१२३७। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

२५६ **समयसार भाषा —पं० हेमराज।** पत्र संख्या-१६४। आकार-११$\frac{1}{2}$″×५$\frac{1}{2}$″। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-हिन्दी (पद्य)। लिपि-नागरी। ग्रन्थ सख्या-१०६०। रचनाकाल-माघ शुक्ला ५, स० १७६६। लिपिकाल-×।

२५७ **समयसार नाटक भाषा —पं० बनारसीदास।** देशी कागज। पत्र सख्या-४०। आकार-६$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″। दशा-अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा-हिन्दी (पद्य)। लिपि-नागरी। ग्रन्थ सख्या-११६८। रचनाकाल-×। लिपिकाल-स० १७२३।

२५८ **प्रति सख्या २।** देशी कागज। पत्र सख्या-५५। आकार-१०″×४$\frac{3}{4}$″। दशा-सामान्य। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या-१२३८। रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १३, रविवार, स० १६६३। लिपिकाल-×।

२५९ **प्रति संख्या ३।** देशी कागज। पत्र संख्या-२२। आकार-१०$\frac{3}{4}$″×४″। दशा-जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या-१०५६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

२६०. **समाधिशतक —पूज्यपाद स्वामी।** देशी कागज। पत्र संख्या-६। आकार-११″×४$\frac{3}{4}$″। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या-२३६७। रचनाकाल-×। लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, सं० १७००।

२६१ **सत्ता त्रिभंगी —सि० च० नेमिचन्द्र।** देशी कागज। पत्र संख्या-१७। आकार-१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{2}$″। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-प्राकृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ सख्या-१५११। रचनाकाल-×। लिपिकाल-माघ कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १५२४।

२६२. स्याद्वादरत्नाकर—देवाचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१९७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२६३ स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । देशी कागज । पत्र सख्या–२७ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११२८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ११, स० १५९८ ।

२६४ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३३ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १६७७ ।

२६५. सागार धर्मामृत—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र सख्या–१२२ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२३२६ । रचनाकाल–विक्रम स० १३०० । लिपिकाल– × ।

विशेष—ग्रन्थकर्ता **पं० आशाधर** की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है ।

२६६ सामायिकपाठ सटीक—पाण्डे जयवन्त । देशी कागज । पत्र सख्या–९३ । आकार–९"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२२६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ७, स० १९०२ ।

२६७ सिद्ध दण्डिका—देवेन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४८० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२६८. सिद्धान्तसार—जिनचन्द्रदेव । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–९"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, रविवार, स० १५२५ ।

२६९ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१२"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१९०१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२७०. सुभद्रानो चौढालियो—कवि मानसागर । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–२८२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ४, स० १८४१ ।

२७१ सुभाषित कोष—हरि । देशी कागज । पत्र सख्या–१९ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ सख्या–२०५० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२७२ संबोध पंचासिका— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२०८७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १, स० १६८५ ।

२७३. **संबोध पंचासिका—कवि दास** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०" × ४½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२७४ **संबोध सत्तरी—जयशेखर सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२७५ **संबोध सत्तरी**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, स० १६६७ ।

२७६ **सुखबोधार्थमाला—पं० देवसेन** । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ६, स० १८८३ ।

२७७. **श्रुतस्कन्ध—ब्रह्म हेमचन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०" × ४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१४५२ । रचनाकाल– । लिपिकाल–× ।

२७८ **श्रुतस्कन्ध—ब्रह्म हेम** । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–१०½" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ८, स० १५३१ ।

२७९ **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–८ । आकार–११½" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२८०. **प्रति संख्या ३** । पत्र संख्या–७ । आकार–१०¾" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२८१ **श्रेणिक गौतम सवाद**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६½" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२६३० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ११, स० १७५८ ।

२८२ **क्षपणसार—माधवचन्द्र गणि** । देशी कागज । पत्र संख्या–१०३ । आकार–११½" × ५½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२५४१ । रचनाकाल–स० १२६० । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ५, स० १६२३ ।

२८३ **त्रिभंगी—सि० च० नेमिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या–२३ (अन्तिम पत्र नही है) । आकार–११½" × ५½" । दशा–जीर्ण । अपूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२८४ **त्रिभंगी टिप्पण**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४६ । आकार–१२¾" × ५¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–

१०६६ । रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ४, सोमवार, स० १७६३ ।

२८५. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–५१ । आकार–१२" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

२८६. **प्रति संख्या ३** । पत्र सख्या–२१ । आकार–१४" × ८$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२५८ । रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

२८७. **त्रिभंगी भाषा**— ×। देशी कागज । पत्र संख्या–१४२ । आकार–११$\frac{3}{4}$" × ५$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–१२०८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ७, शनिवार, स० १८०७ ।

२८८ **ज्ञान पच्चीसी— प० बनारसीदास** । पत्र सख्या–१ । आकार–६$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–१६६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विषय—आयुर्वेद

२८९. **अश्विनीकुमार संहिता—अश्विनी कुमार**। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–११"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या–२०३०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२९०. **अंजन निदान सटीक—अग्निवेश**। देशी कागज। पत्र संख्या–५०। आकार–११½"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या–११०५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२९१ **आयुर्वेद संग्रहीत ग्रन्थ**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१७५। आकार–६¾"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या–१०२२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२९२ **आसव विधि**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१२½"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या–२२७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२९३ **काल शास्त्र—शंभूनाथ**। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०"×६½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या–१४१७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२९४ **प्रति संख्या २**–। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–११"×४½"। दशा–अतिजीर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४३६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२९५ **काल ज्ञान**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११½"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४५५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ३, बुधवार, सं० १८१६।

२९६. **प्रति संख्या २**। पत्र संख्या–११। आकार–८½"×४"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७७२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १४, सं० १७३४।

२९७. **गुण रत्नमाला—दामोदर**। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–११½"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–आयुर्वेद। ग्रंथ संख्या–१६१४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२९८. **गंगाहासासव विधि**–×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१२½"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७७९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२९९. **चित्त चमत्कार सार्थ**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१७। आकार–१०½"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–

२७७५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा २, रविवार, सं० १८५६ ।

३०० **ज्वर पराजय—पं० जयरत्न** । देशी कागज । पत्र संख्या–३९ । आकार–१०″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११७३ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १, स० १६६६ । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ४, बुधवार, स० १८६८ ।

३०१ **नाड़ी परीक्षा**— । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–८$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४८४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १९२१ ।

३०२ **प्रति सख्या** २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०″×५$\frac{3}{4}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६६० । रचनाकाल– × । लिपि-काल– ।

३०३. **प्रति संख्या** ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″ ७″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३७५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १९४७ ।

३०४ **नाडी परीक्षा सार्थ**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–९$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८५३ । रचना-काल– × । लिपिकाल– × ।

३०५ **प्रति सख्या** २ । देशी कागज । पत्र सख्या १ । आकार–९$\frac{1}{2}$″ × ५″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३०६ **निघण्टु— हेमचन्द्र सूरि** । देशी कागज । पत्र सख्या ९ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या १५३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३०७ **निघण्टु नाम रत्नाकर— परमानन्द** । देशी कागज । पत्र सख्या—५ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३०८ **निघण्टु— सोमश्री** । देशी कागज । पत्र सख्या–४७ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ बुदी ८, बुधवार, स० १६६५ ।

३०९ **निघण्टु**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–५१ । आकार–११″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३१० **पथ्यापथ्य संग्रह**– × । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″× ४$\frac{3}{4}$ । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या १४७४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, स० १८३७ ।

३११ **पाकार्णव**– × । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार– ८$\frac{1}{4}$″ × ६$\frac{1}{2}$″ ।

दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३१२. **मनोरमा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार– ११" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३१३ **योग चिन्तामणि** – × । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार– १०½" × ५¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला ५, स० १८४४ ।

३१४ **योग शतक—विदग्ध वैद्य पूर्णसेन** । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार– १२½" × ५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मार्गशीर्ष शुक्ला १०, मंगलवार स.० १८०० ।

३१५. **योग शतक** — × । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–८¾" × ६¾" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १, स० १६१४ ।

३१६ **योग शतक टिप्पण** — × । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार– १२½" × ५½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या– १३६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– माघ कृष्णा १, स० १८५२ ।

३१७ **योग शतक सटीक**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार– १२" × ५½" । दशा–प्राचीन जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या २०१८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १३, स० १७३६ ।

३१८. **योग शतक—अमृतल** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–११¾" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३१६ **योग शतक सार्थ** — × । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१२½"× ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १, स० १८६० ।

३२० **रस मंजरी—अज्ञात** । देशी कागज । पत्र संख्या २६ । आकार–१०" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११८३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३२१. **रस रत्नाकर (धातु रत्नमाला)**– × । देशी कागज । पत्र संख्या ७ । आकार– १०½" × ४½ । दशा–प्रतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३२२ **रसेन्द्र मंगल—नागार्जुन** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार– ६¾" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विषय–उपदेश एवं सुभाषित

३३८. **दान शील तप संवाद शतक—समयसुन्दर गणि** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सुभाषित । ग्रन्थ संख्या–२६८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३३९. **भूषण बावनी—द्वारकादास पाटणी** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०¾" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सुभाषित । ग्रन्थ संख्या–२००६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल × ।

३४०. **भूषण बावनी—भूषण स्वामी** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–९¾" × ४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सुभाषित । ग्रन्थ संख्या–१३०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३४१ **सिन्दुर प्रकरण—सौमप्रभाचार्य (सौमप्रभसूरि)** । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–११½" × ५¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सुभाषित । ग्रन्थ संख्या–१११२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १०, शुक्रवार, सं० १८६० ।

३४२. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१०¾" × ५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा ५, शनिवार, स० १७७३ ।

३४३ **सुक्ति मुक्तावली शास्त्र—सौमप्रभाचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–९" × ४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ३, बुधवार, स० १८४१ ।

टिप्पणी—सिन्दुर प्रकरण वर्णित है ।

३४४ **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । आकार–९¾" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९५३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ६, वृहस्पतिवार, स० १८०६ ।

३४५ **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१०" × ४¾" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९५९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३४६ **प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०½" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ११, स० १८६८ ।

३४७. **प्रति संख्या ५** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५९५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ८, स० १९०२ ।

३४८. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–$10\frac{3}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३४९ सुक्ति मुक्तावली सटीक— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२५ । आकार–$11'' \times 5''$ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६२९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ४, गुरुवार, सं० १८६८ ।

३५० सुप्पयदोहड़ा— × । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–$11'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–सुभाषित । ग्रथ संख्या–१४२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३५१. सुभाषित काव्य— भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–२३ । आकार $10\frac{1}{4}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४०० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १७०३ ।

३५२ सुभाषित रत्न सदोह— अमितगति । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार–$11\frac{1}{4}'' \times 5''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७४८ । रचनाकाल–पौष शुक्ला ५, सं० १३१५ । लिपिकाल–सं० १५७५ ।

३५३ सुभाषित रत्नावली— भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–$10\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ७, सं० १६८७ ।

३५४. सुभाषित श्लोक—(संग्रहित)— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२९ । आकार–$8\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६५० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३५५ सुभाषितार्णव— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३० । आकार–$11\frac{1}{4}'' \times 5''$ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३५६ प्रति संख्या— २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६५ । आकार–$11\frac{1}{4}'' \times 4\frac{3}{4}''$ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२६४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला १, बृहस्पतिवार, सं० १६६१ ।

३५७ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार–$11'' \times 5''$ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२५८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३५८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–५१ । आकार–$9\frac{1}{2}'' \times 4''$ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२२२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला २, मंगलवार, सं० १६८६ ।

३५९ प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–४८ । आकार–$11'' \times 5''$ । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८५९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ शुक्ला ७, सं० १६०८ ।

३६०. **सुभाषितावली—भ० सकलकीर्ति।** देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–९½″×४¾″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८८६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ३, रविवार, सं० १८२३।

३६१ **प्रति संख्या** २। देशी कागज। पत्र संख्या–२४। आकार–१०½″×४¾″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१००५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा २, सं० १६१३।

३६२ **प्रति संख्या** ३। देशी कागज। पत्र संख्या–२९। आकार–१०½″×४½″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२२३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ४, सं० १६६६।

३६३. **प्रति संख्या** ४। देशी कागज। पत्र संख्या–३१। आकार–११″ × ४¾″। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०१०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

३६४. **प्रति संख्या** ५। देशी कागज। पत्र संख्या–२९। आकार–९½″ × ४½″। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०६०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १५, सं० १६१५।

३६५. **प्रति संख्या** ६। देशी कागज। पत्र संख्या–१९। आकार–१०½″ × ४½″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१६२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

विषय—कथा साहित्य

३६६. अनन्तव्रत कथा—पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–११″×५″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–कथा । ग्रन्थ संख्या–२६२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ऽऽ शुक्रवार, स० १६२६ ।

३६७. प्रति संख्या २ । आकार–८½″×४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३६८ अनन्तव्रत कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१३½″×८½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–कथा । ग्रन्थ संख्या–२६१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ६, रविवार, स० १६४५ ।

विशेष—ग्रन्थ मे पद्य संख्या १७२ हैं ।

३६९. अवन्ति सुकुमाल कथा— हस्ती सूरी । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०″×४″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–कथा । ग्रन्थ संख्या–१७३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३७० अशोक सप्तमी कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–६¾″×४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–कथा । ग्रन्थ संख्या–१७८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३७१. अष्टान्हिका व्रत कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०¾″×५¼″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४४७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १३, स० १८६७ ।

३७२ आकाश पंचमी व्रत कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१३½″×८½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—इस ग्रन्थ में पद्यों की संख्या १२० हैं ।

३७३. आलय दशमी व्रत कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१३½″×८½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६१२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—ग्रन्थ मे पदों की संख्या १११ हैं ।

३७४. आदित्यवार कथा—कवि भानुकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०½″×४½″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२००१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—इस ग्रन्थ की रचना श्री मलूकादास अग्रवाल गर्ग गौत्र के पुत्र कवि भानु कीर्ति ने की है।

३७५ **आदित्यवार कथा—ब्रह्म रायमल्ल।** देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–१०″×४$\frac{1}{4}$″। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य) और सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१४५६। रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला २, बुधवार, स० १६३१। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १३, स० १७१०।

३७६ **आराधना कथा कोश—ब्रह्म नेमिदत्त।** देशी कागज। पत्र सख्या–१५६। आकार–११$\frac{3}{4}$″×५$\frac{1}{4}$″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२७०५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १, स० १८०३।

३७७ **एक पद—गुलाबचन्द।** देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१४४३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

टिप्पणी—इसमें आत्मा को सम्बोधित किया गया है।

३७८ **एक पद—रगलाल।** देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–६$\frac{1}{4}$″×८$\frac{1}{4}$″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१४८१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३७९ **कथा कोश—ब्रह्म नेमिदत्त।** देशी कागज। पत्र सख्या–३२३। आकार–६$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{2}$″। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी।। ग्रन्थ सख्या–१२३१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३८० **प्रति सख्या २।** देशी कागज। पत्र सख्या–१५६। आकार–१२$\frac{3}{4}$″×५$\frac{3}{4}$″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१०७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद बुदी ५, स० १८६०।

३८१ **प्रति संख्या ३।** देशी कागज। पत्र सख्या–१२२। आकार-६$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१२१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३८२ **प्रति संख्या ४।** देशी कागज। पत्र सख्या–१०१। आकार–१४$\frac{1}{2}$″×६$\frac{1}{2}$″। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१७६५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३८३. **कथा प्रबन्ध— प्रभाचन्द्र।** देशी कागज। पत्र सख्या–६२। आकार–११$\frac{1}{2}$″×५″। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–११४१। रचनाकाल–×। लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ७, स० १५६२।

३८४ **कथा संग्रह— ×।** देशी कागज। पत्र सख्या–२५। आकार–१०$\frac{1}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश व सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१७७५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३८५ **कथा संग्रह— ×।** देशी कागज। पत्र सख्या–२३। आकार–१०$\frac{1}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–११५४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३८६. कनकावली व शील कथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-९¾"×४½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७८६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

३८७. काष्टांगार कथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-१०¾"×४½" । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१९३६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा ३, सं० १७१० ।

३८८. काष्टांगार कथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१०"×४½" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६० । रचनाकाल- × । लिपिकाल-आषाढ शुक्ला ११, सं० १७०६ ।

३८९ गौतम ऋषि कुल — × देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१०½"×४½" । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६१७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

३९० चतुर्वंशी गरुड पंचमी कथा — भिन्न भिन्न कर्त्ता हैं । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-१३½"×८½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-मराठी । ग्रन्थ संख्या-२८४१ । रचनाकाल - × । लिपिकाल- × ।

३९१. चन्दनमलयगिरी वार्ता — भद्रसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-९¾"×३½" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२००४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

३९२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-८ । आकार-१०¾"×४½" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४५४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-बैसाख कृष्णा १२, स० १६६८ ।

३९३. चन्दनराजामलयगिरी चौपई — जिनहर्ष सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-१०½"×४½" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४९० । रचनाकाल-चैत्र शुक्ला १५, सं० १७११ । लिपिकाल- × ।

३९४ चौबीस कथा — पं० कामपाल । देशी कागज । पत्र संख्या-२८ । आकार-११"×४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२५४ । रचनाकाल-फाल्गुन बुदी ३, स० १७१२ । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १, स० १७८३ ।

३९५. जम्बूस्वामी कथा — पाण्डे जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार-१२½"×५¾" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५११ । रचनाकाल-भाद्रपद कृष्णा ५, गुरुवार स० १६४२ । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा २, स० १७९७ ।

विशेष — इस ग्रन्थ की कुचामण ग्राम मे लिपि की गई ।

३९६. जिनदत्त कथा — गुणभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । आकार-११"×४½" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५८५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-पौष शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६१६ ।

३६७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६२४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ३, शुक्रवार, स० १८६१ ।

३६८ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–४६ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–द्वितीय श्रावण शुक्ला १४, शनिवार, स० १७०३ ।

३६६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–३६ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार, स० १७०३ ।

४०० प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–६७ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा २, सोमवार, स० १६२४ ।

४०१ प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–५२ । आकार ११"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०२ जिनपूजा पुरन्दर कथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६८० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०३ जिनरात्रि कथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०४ जिनांतर वर्णन × । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी और अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०५ तीर्थ जयमाल—सुमति सागर । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–८$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०६ दशलक्षण कथा—पं० लोकसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१२"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, स० १५८८ ।

४०७ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६५६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, स० १६४७ ।

४०८. दशलक्षण कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–

१३½″×८½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६१३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ७, सं० १६४५।

४०६. दर्शन कथा—पं० भारमल्ल। देशी कागज। पत्र संख्या–३२। आकार–१३½″×८½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५८०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ कृष्णा ६, सं० १६३६।

४१०. द्वादशचक्री कथा—ब्रह्म नेमिदत्त। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११″×५½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६८४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४११. धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई—विजयराज। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–११½″×५″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०१७। रचनाकाल–सं० १७४२। लिपिकाल– ×।

टिप्पणी—भट्टारक जिनचन्द्र सूरि के तपागच्छ मे श्री विजयाराज ने रचना की है।

४१२ धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई—लालचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–१८। आकार–११¾″×५″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७६८। रचनाकाल–सं० १७४२। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, बृहस्पतिवार सं० १८२६।

४१३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२७। आकार–८½″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४६७। रचनाकाल–सं० १७४२। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १०, सं० १८२३।

४१४. धूप दशमी तथा अनन्तव्रत कथा— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१२½″×५¾″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२८६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४१५. नन्द सप्तमी कथा—ब्रह्म रायमल्ल। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०″×४″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६१२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४१६. नन्दीश्वर कथा— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०½″×४½″। दशा–प्रतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। पत्र संख्या–१५५१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४१७. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–६। आकार–६¾″×४¾″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८०२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४१८. नवकार कथा—श्रीमत्पाद। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–१०½″×४″। दशा–प्रतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६०५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४१९. नागकुमार पंचमी कथा—उभय भाषा कवि चक्रवर्ती श्री मल्लिषेण सूरि। देशी

कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–११"×४½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

आदिभाग—

श्री नेमिं जिनमानम्य सर्वसत्वहितप्रदम् ।
वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहं ।।१।।

कविभिर्जयदेवाद्यै र्गद्यै पंद्यै र्विनिर्मितम् ।
यत्तदेवास्ति चेदत्र विषमं मन्दमेधसाम् ।।२।।

अन्तभाग—

श्रुत्वा नागकुमार चारुचरितं श्री गौतमेनोदितं
भव्यानां सुखदायकं भवहरं पुण्यास्रवोत्पादकं ।
नत्वा तं मगधाधिपो गणधरं भक्त्यापुरं प्रागमच्छ्री–
मद्राजगृहं पुरंदरं पुराकारं विभूत्या समं ।।६।।

इत्युभयभाषाकवि चक्रवर्ति—श्री मल्लिषेणसूरि विरचितायां श्री नागकुमार पंचमीकथायां नागकुमार—मूनीश्वर—निर्वाणगमनो नाम पंचमः सर्ग. ।

जितकषायरिपुर्गु ण वारिधिर्नियत चारु चरित्र तपो निधि. ।
जयतु भूपतिरीटविघट्टित क्रमयुगोऽजितसेन मुनीश्वरः ।।१।।

अजनि तस्य मुनेर्वरदीक्षितो विगतमानमदो दूरितांतक ।
कनकसेन मुनिर्मुनि पुंगवो वर चरित्र महाव्रतपालक. ।।२।।

गतमदोऽजनि तस्य महामुनेः प्रथितवान् जिनसेनमुनीश्वरः ।
सकल शिष्यवरो हतमन्मथो भवमहोदधितारतर क. ।।३।।

तस्याऽनुज श्चारुचरित्रवृत्तिः प्रख्यातकीर्तिर्भुवि पुण्यमूर्तिः ।
नरेन्द्रसेनो जितवादिसेनो विज्ञाततत्त्वो जितकामसूत्र ।।४।।

तच्छिष्यो विबुधाग्रणीर्गुणनिधिः श्री मल्लिषेणाह्वय,
संजातः सकलागमेषु निपुणो वाग्देवतालंकृतः ।
तेनैषा कविचक्रिणा विरचिता श्री पंचमीसत्कथा,
भव्यानां दुरितौघनाशनकरी संसार विच्छेदिनी ।।५।।

स्पष्ट श्री कवि चक्रवर्ति गणिना भव्याब्जघर्मांशुना,
ग्रन्थौ पंचशती मया विरचिता विद्वज्जनानां प्रिया ।
तां भक्त्या विलिखंति चारु वचनं व्याकर्णयंत्यादरा,
ये शृणवन्ति मुदा सदा सहृदयास्ते यांति मुक्तिश्रियं ।।

इति नागकुमार चरित्रं समाप्तम् ।।

४२०. नागश्री कथा—ब्रह्म नेमीदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या–२४ । आकार–

६$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५८७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४२१. **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–१५ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४२२. **निर्दोष सप्तमी कथा—** × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७८७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४२३. **निर्दोष सप्तमी कथा—ब्रह्म जिनदास** । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–१३$\frac{1}{2}$"×८$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२८४२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ५, बुधवार, स० १६४५ । पद्य सख्या १०६ है ।

४२४. **पद्मावती कथा—महीचन्द्र सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–२७ । आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११६३ । रचनाकाल–अश्विन बुदी १३, स० १५२२ । लिपिकाल– × ।

४२५ **पद्मनन्दि पंचविंशति—पद्मनन्दि** । देशी कागज । पत्र सख्या–८८ । आकार–११"×१$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२४८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४२६ **प्रति सं० २** । देशी कागज । पत्र सख्या–१०१ । आकार–११" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४२७. **परमहंस चौपई—ब्रह्म रायमल्ल** । देशी कागज । पत्र सख्या–३६ । आकार–१०" × ५$\frac{3}{4}$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१११६ । रचनाकाल–ज्येष्ठ बुदी १३, शनिवार, स० १६३६ । लिपिकाल– × ।

४२८. **पंचपर्व कथा—ब्रह्मचारी वेणु** । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४२९ **प्रियमेल कथा—ब्रह्म वेणीदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–१४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२४८४ । रचनाकाल–श्रावण कृष्णा ११, स० १७०० ।

विशेष—ग्रन्थ की रचना अलिपुर में की गई है ।

४३०. **पुण्यास्रव कथा कोश—मुमुक्षु रामचन्द्र** । देशी कागज । पत्र सख्या–१५६ । आकार–६$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ३ शुक्रवार, सं० १४८७ ।

४३१. **पुण्यास्रव कथा कोश सार्थ—** × । देशी कागज । पत्र संख्या–११४ ।

आकार– ११$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १४, स० १७६७ ।

४३२ **पुष्पांजली कथा—ब्रह्म जिनदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार– १३$\frac{1}{2}$″ × ८$\frac{1}{2}$″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६११ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, सोमवार, स० १६४५ ।

नोट—पद्य सख्या १६१ हैं ।

४३३. **पुष्पांजलि कथा—मण्डलाचार्य श्रीभूषण** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार– १०$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या– १५४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४३४. **प्रति सं० २** । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल × ।

४३५ **प्रद्युम्न कथा—ब्रह्म वेणीदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–२७ । आकार– ११″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या– २००२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—यह ग्रन्थ **आणन्दपुर** मे समाप्त किया गया है । ग्रन्थाग्रन्थ सख्या ६०० है ।

४३६. **बारह व्रत कथा**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–९$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४३७ **बाहुबली पाथड़ी**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार– ११″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२११८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, स० १६६७ ।

४३८. **बुद्धवर्णन—कविराज सिद्धराज** । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । आकार–८$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या– १६२२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४३६ **बंकचूल कथा—ब्रह्म जिनदास** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार– १०$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—श्लोक सख्या १०६ है ।

४४० **प्रति सं० २** । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार– १०$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला १४, स० १७१० ।

४४१. **भरत बाहुबली वर्णन—शीवालाब**। पत्र संख्या–६। आकार–१०$\frac{१}{२}$"×५$\frac{३}{४}$"। दशा–जीर्णक्षीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२३३६। रचना-काल– ×। लिपिकाल– ×।

४४२. **मदनयुद्ध—बूचराज**। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–१०$\frac{१}{२}$"×४"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७००। रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १, स० १५८६। लिपिकाल—×।

४४३ **मृगीसंवाद चौपाई**— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–६$\frac{१}{२}$" × ४$\frac{१}{२}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२४६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४४४ **माधवानल कथा—कुंवर हरिराज**। देशी कागज। पत्र सख्या–४२। आकार–१०"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३५२। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १६१६। लिपिकाल–पौष शुक्ला ८ शुक्रवार स० १६५६।

विशेष—यह प्रतिलिपि जैसलमेर मे लिखि गई।

४४५ **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र सख्या–२०। आकार–१०"×४$\frac{१}{४}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–११२३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–स० १७४३।

४४६ **माधवानल कामकन्दला चौपई—देवकुमार**। देशी कागज। पत्र सख्या–१२। आकार– १०$\frac{१}{२}$" × ४$\frac{१}{२}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या १०२६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ शुक्ला ११, स० १७१७।

४४७ **मुक्तावलीकथा**— ×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–६$\frac{३}{४}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१७८६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४४८ **मूलसंघाग्रणी—रत्नकीर्ति**। देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–१२"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२११७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४४९ **मेघमालाव्रत कथा—बल्लभ मुनि**। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–८$\frac{१}{२}$" × ४$\frac{१}{४}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१३१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

४५० **मेघमालाव्रतकथा**–×। देशी कागज। पत्र सख्या -३। आकार–११$\frac{१}{२}$"×५$\frac{१}{४}$"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६५१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४५१. **यशवत्स कथा**— ×। देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–१०$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१६५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

विशेष—नागपुर में ग्रन्थ की लिपि की गई।

४५२. **रत्नत्रयव्रतकथा—श्रुतसागर**। देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६½" × ४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५३. **रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्ति** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार– १०½" × ४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५४ **रत्नावलीव्रतकथा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार– १०¼" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा २, रविवार, स० १६६९ ।

४५५. **रक्षाबन्धनकथा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×४" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ८, बुधवार, स० १८६७ ।

४५६. **रात्रि भोजन दोष चौपई—श्री मेघराज का पुत्र** । पत्र संख्या–१२ । आकार– १०½" × ४½" । दशा–प्रतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५७ **प्रति संख्या** २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½" × ४¼" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०८३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५८. **प्रति संख्या** ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२००५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५९. **रात्रि भोजन त्याग कथा—भ० सिहनंदि** । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार–११½" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७४९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– स० १६६२ ।

४६० **रात्रि भोजन त्याग कथा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार– १०½" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १०, वृहस्पतिवार स० १७१७ ।

४६१. **रोटतीजकथा – गुणनंदि** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–८½"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७२९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

४६२ **लब्धिविधानव्रतकथा—ब्रह्म जिनदास** । पत्र संख्या–५ । आकार–१३½"×८½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६०१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १५, शुक्रवार, स० १६४५ ।

विशेष—ग्रन्थ मे पद्यो की संख्या १६६ हैं।

४६३. **व्रतकथाकोश—श्रुतसागर** । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार– १२½" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३८० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४६४. **विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक—जयवती** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०½" × ४" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४६५ **विधानपंचकथासंग्रह—भिन्न-भिन्न कथा के भिन्न कर्त्ता हैं** । देशी कागज । पत्र संख्या–४५ । आकार–१०" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७६४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

> **टिप्पणी**—पृष्ठ १ से ४ तक नक्षत्रमाला विधान, ५ से ६ तक विमानपंक्ति कथा, ७ से ८ तक मेरुपंक्तिविधान, ११ तक श्रुतज्ञानकथा, १२ तक सुख सम्पत्ति व्रतफल कथा, २२ तक जिनरात्रिकथा, २४ तक रुक्मणि कथा, २७ तक चन्द्रषष्टि कथा, ३३ तक ज्येष्ठ जिनवर व्रतोपाख्यान, ३६ तक सप्त परमस्थान विधान कथा, ४२ तक पुरन्दर विधान कथोपाख्यान, ४३ तक श्रावण द्वादशी कथा, ४५ तक लक्षणपंक्तिकथा वर्णित हैं।

४६६. **वैताल पच्चीसी कथानक—शिवदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–४४ । आकार–१२¾" × ५¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८१५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १८९२ ।

४६७. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–५० । आकार–११½" × ५½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५८० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १४, सं० १८८६ ।

४६८. **शनिश्चर कथा—जीवणदास** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१२½" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या १४४० । रचनाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ७, स० १८०४ । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला १३, सं० १८६४ ।

४६९. **शुक सप्तति कथा**– × । देशी कागज । पत्र संख्या–४७ । आकार—१०¾" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १०, स० १८७६ ।

४७०. **सप्तव्यसन कथा—सोमकीर्ति आचार्य** । देशी कागज । पत्र सख्या–८५ । आकार–१०¾" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ५, मगलवार, स० १८९७ ।

आदिभाग—

> प्रणम्य श्रीजिनान् सिद्धान् आचार्यान् पाठकान् यतीन् ।
> सर्वद्वन्दविनिर्मुक्तान् सर्वकामार्थदायकान् ॥ १ ॥

अन्तभाग—

> नन्दीतटाके विदिते हि संघे श्री रामसेनाख्य पद प्रसादात् ।
> विनिर्मितो मंदधिया मयायं विस्तारणीयो भुवि साधुसभैः ॥

यो वा पठति विमृश्यति भव्योपि भावनायुक्तः ।
लभते स सौख्यमनिशं ग्रन्थं सोमकीर्तिना विरचितं ॥

रसनयनसमेते बाणयुक्तेन चन्द्रे १५२६ गतवति सति नून विक्रमस्यैव काले ।
प्रतिपदि धवलायां माघमासस्य सोमे हरिभदिनमनाज्ञे निर्मितो ग्रन्थः एषः ॥

सहस्रत्रयसंख्योऽयं सप्तषष्ठी समन्वितः ।
सप्तैव व्यसनाद्यश्च कथा समुच्चयोतत ॥

यावत् सुदर्शनो मेरुर्यावच्च सागरा धरा ।
तावन्नन्दत्वय लोके ग्रन्थो भव्यजनाश्रित ॥

इतिश्री इत्यार्षे भट्टारक श्री धर्मसेनाभः श्री भीमसेनदेवशिष्य आचार्य सोमकीर्ति विरचिते सप्तव्यसनकथा समुच्चये परस्त्रीव्यसनफलवर्णनो नाम सप्तमः सर्गः। इति सप्तव्यसनचरित्र कथा सपूर्णा ।

४७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१२ । आकार–१०″×४½″ । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४४८ । रचनाकाल–× । लपिकाल–× ।

टिप्पणी—केवल दो ही सर्ग हैं ।

४७२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–११″×५½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१६५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४७३. सम्यक्त्व कौमुदी—जयशेखर सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–३६ । आकार–१०¾″×६½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२१२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ४, मगलवार, स० १६४६ ।

४७४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३७ । आकार १२½″×५¾″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४७५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–३७ । आकार–१५″×६¾″ । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४७६ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–१०० । आकार–८½″×४¾″ । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ३, स० १८४६ ।

४७७. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र सख्या–४१ । आकार–११¾″×४½″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ७, शनिवार, स० १५७५ ।

टिप्पणी—अन्तिम प्रशस्ति पत्र नही है । कर्णाकुब्ज नगर में श्री ब्रह्मबलान के राज्य काल में श्री पूज्य प्रभसूरि के शिष्य मुनि विजयदेव ने लिपि की है । लिपिकार ने अपनी प्रशस्ति भी लिखि है—प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नही है ।

४७८ प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–६४। आकार–$१२\frac{३}{४}'' \times ५''$। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११५६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

४७९. सम्यक्त्व कौमुदी–पं० खेता। देशी कागज। पत्र संख्या–१३५। आकार–$११'' \times ४\frac{३}{४}''$। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–स० १८३६।

४८०. सम्यक्त्व कौमुदी—कवि यशसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–७३। आकार–$१२'' \times ५\frac{३}{४}''$। दशा–सुन्दर। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५६६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १३, स० १८५३।

४८१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–६६। आकार–$१०\frac{१}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५६८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–बैशाख कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, स० १५३५।

४८२. सम्यक्त्व कौमुदी–जोधराज गोदीका। देशी कागज। पत्र संख्या–३७। आकार–$१२\frac{१}{४}'' \times ५\frac{३}{४}''$। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १३, शुक्रवार, स० १७२४।

विशेष—छन्द संख्या ११७८ हैं।

४८३. सम्यक्त्व कौमुदी–×। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–$१०\frac{१}{२}'' \times ४\frac{१}{४}''$। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३३७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

४८४ सम्यक्त्व कौमुदी सार्थ—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१४४। आकार—$१०\frac{३}{४}'' \times ६\frac{१}{२}''$। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५७१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ८, स० १८५०।

४८५. सिहल सुत चतुष्पदी—समयसुन्दर। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार—$१०\frac{१}{४}'' \times ४''$। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०७०। रचनाकाल–स० १६७२। लिपिकाल–स० १७००, मेड़ता नगर में समाप्त किया।

४८६ सिंहासन बत्तीसी—सिद्धसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–७३। आकार–$११'' \times ४\frac{१}{२}''$। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११०८। रचनाकाल–अश्विन बुदी २, स० १६३६। लिपिकाल–बैशाख बुदी ५, मगलवार, स० १७०३।

४८७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१७८। आकार–$१०'' \times ५''$। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत, सस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२३५। रचनाकाल–अश्विन कृष्णा २, स० १६३२। लिपिकाल–×।

४८८. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१७५। आकार–$११\frac{१}{२}'' \times ५\frac{१}{२}''$। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२५५। रचनाकाल–अश्विन कृष्णा २, सं० १६३२। लिपिकाल–×।

४८९. **सुगन्ध दशमी कथा भाषा—खुशालचन्द** । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । आकार–६¼"×६¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा- हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६५४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १९४४ ।

४९०. **सुगन्ध दशमी कथा—सुशीलदेव** । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–११½"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७६४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १०, स० १५२२ ।

४९१. **सुगन्ध दशमी कथा—ब्रह्म जिनदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–१३½"×८½"। दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२६०८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, मगलवार, स० १९४५ ।

४९२. **सुगन्ध दशमी कथा—ब्रह्मज्ञान सागर** । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–६¼"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १, स० १९०३ ।

४९३. **सुगन्ध दशमी व पुष्पाञ्जली कथा**–× । देशी कागज । पत्र सख्या -१३ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२६६४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४९४. **षोडषकारण कथा**—× । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–१०"×४¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी और सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२६०२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४९५. **श्रावक चूल कथा**—× । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०५५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १३, स० १७१६ ।

४९६. **श्रीपाल कथा—पं० खेमल** । देशी कागज । पत्र सख्या-३५ । आकार–११"×५¼" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १३, स० १६१० ।

४९७. **श्रुतज्ञान कथा**–× । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०"×४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५५० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला १५, स० १६८५ ।

४९८. **हनुमान कथा—ब्रह्म रायमल्ल** । देशी कागज । पत्र सख्या–५७ । आकार–६½"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी(पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२०० । रचनाकाल–वैशाख कृष्णा ९, स० १६१६ । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, रविवार, स० १६३९ ।

४९९. **हणवन्त चौपई (हनुमन्त चौपई)—ब्रह्म रायमल्ल** । देशी कागज । पत्र सख्या–४२ । आकार–१२¼"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२५८३ । रचनाकाल–वैशाख शुक्ला ९, स० १६५७ । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १३, बृहस्पतिवार, स० १८६४ ।

५००. हरिश्चन्द्र चौपई—ब्रह्म वेणिदास । देशी कागज । पत्र सख्या–१७ । आकार–६¾"×४¾" । दशा– अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०२३ । रचनाकाल–स० १७७८, आगन्दपुर मध्ये । लिपिकाल–स० १८१६ ।

५०१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–११ से ३६ । आकार–१२"×६" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२८६२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५०२. हेमकथा—रत्नामणि । देशी कागज । पत्र सख्या– ४ । आकार–११"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२४२६ । रचना काल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला ११, स० १६८६ ।

५०३. होली कथा—छीत्तर ठोलिया । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–६½"×४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०६१ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १५, स० १६६० । लिपिकाल–स० १८३१ ।

५०४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–१०¾"×५½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५१२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५०५. होलीपर्व कथा–× । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–६"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२६६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५०६. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२८७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ११, स० १७५० ।

५०७. होली पर्व कथा सार्थ—× । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १०,स० १८५२ ।

५०८. हंसराज बच्छराज चौपई—मावहर्ष सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–३३ । आकार–८½"×७¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२४७८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १४, स० १६५० ।

५०९. हंस वत्स कथा–× । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५१०. क्षत्र चूड़ामणि—वादिभसिंह सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–३६ । आकार–१०"×४½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा– सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १४, सोमवार, सं० १५४४ ।

५११. क्षुल्लककुमार—सुन्दर । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०"×४½" ।

दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२००३ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, स० १६६७ मे मूलतान नगर मे पूर्ण किया गया । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १०, स० १८०१ । लिपि आणन्दपुर नगर मे की गई ।

५१२ त्रेषठ श्लाका पुरुष चौपई––पं० जिनमति । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–१२½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३८५ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला २, स० १७०० । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, स० १८०० ।

विशेष—इसमे त्रेषठ श्लाका पुरुषो का अर्थात् २४ तीर्थंकरो, ९ नारायणो, ९ प्रति-नारायणो, ९ बलभद्रो एव १२ चक्रवर्तियो के जीवन चरित्र वर्णित हैं ।

विषय—काव्य

५१३. अन्यायपदेश शतक—मैथिल मधुसूदन । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ संख्या–१८६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ११, सं० १८३८ ।

५१४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ६, शनिवार, सं० १८५४ ।

५१५ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–११$\frac{1}{4}$″×५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३११ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५१६ अष्टनायिका लक्षण । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१३१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५१७ अनित्य निरूपण चतुर्विंशति—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार—११″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–प्राचीन । । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६२३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५१८. आत्म सम्बोधन काव्य—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३० । आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या- १२८४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५१६ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–११$\frac{1}{4}$″×५″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३४८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—अन्तिम पत्र नही है ।

५२० आत्म सम्बोध पंचासिका—× । देशी कागज । पत्र संख्या–४१ । आकार–११″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या– १२१५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५२१ आर्य वसुधारा धारणी नाम महाविद्या—बोद्ध श्री नन्दन । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १७४१ ।

टिप्पणी—यह बोद्ध ग्रन्थ है । लक्ष्मी प्राप्ति के लिए पाठ कैसे किया जाता है इसमें, बताया गया है ।

५२२. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या ६ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५८४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

५२३. **ईश्वर कार्तिकेय संवाद, रुद्राक्ष उत्पत्ति धारण मंत्र विधान**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२६७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

५२४ **एक गीत श्रीमती कीर्तिवाचक** । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार—८$\frac{1}{2}$″ × ५″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३५६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × । मेडता में लिपि की गई ।

५२५ **काठिन्य श्लोक**– × । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–६$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

५२६. **क्रिया गुप्त पद्य**– × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा– सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२५६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

५२७ **किरातार्जुनीय भारवि** । देशी कागज । पत्र सख्या ५१ । आकार–११$\frac{1}{4}$″ × ५$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । । ग्रन्थ सख्या–१८१८ रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

५२८ **प्रति सख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–८६ । आकार–१०″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

५२९ **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–६० । आकार–६$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०९७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—केवल प्रथम के दस सर्ग ही है ।

५३० **प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र सख्या–७२ । आकार–११$\frac{1}{2}$″ × ५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

५३१ **प्रति संख्या ५** । देशी कागज । पत्र सख्या–१०७ । आकार–६$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला २, सोमवार, स० १६७५ को अजयमेरु (अजमेर) मे लिपि की गई ।

५३२ **किरातार्जुनीय सटीक—भारवि । टीकाकार—कोचल मल्लीनाथ सूरि ।** देशी कागज । पत्र सख्या–२७ से ४८ । । आकार–१२″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या—१८१६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला सं० १८६२ ।

५३३ **किरातार्जुनीय सटीक—भारवि । टीकाकार-एकनाथ भट्ट । देशी कागज ।** पत्र सख्या–२ से ३६ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–सामान्य । अपूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–

नागरी। ग्रन्थ सख्या–१११९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५३४. कुमार सम्भव—कालिदास। देशी कागज। पत्र संख्या–३१। आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–११३७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५३५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–६५। आकार–६"×४"। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–११७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, मगलवार, स० १७१७।

नोट–आषाढ कृष्णा ७, सं० १७६५ मे श्री चतुरभुज ने द्विज सारंगधर से अजमेरु (अजमेर) में लीनी है।

५३६. कुमार सम्भव सटीक—पं० लालु। देशी कागज। पत्र संख्या–४४। आकार–१३$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६०५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५३७ केशव बावनी—केशवदास। देशी कागज। पत्र सख्या–३। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२८२२। रचनाकाल–श्रावण शुक्ला ५, स० १७३६। लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १४, सं० १७५८।

५३८. खण्ड प्रशस्ति–×।। देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१५१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ५, स० १७१५।

५३९. प्रति सख्या २। देशी कागज पत्र सख्या–३। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१६१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४०. गीत गोविन्द (सटीक) – जयदेव। देशी कागज। पत्र सख्या–६४। आकार–६$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी और सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१८६०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १४, स० १७८०।

५४१. गुणधर ढाल–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–८"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२२६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४२. गौतम पृच्छा—सिद्धस्वरूप। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२७७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४३. घटकर्परकाव्य–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२२४०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११″ × ४$\frac{3}{8}$″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३३३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५४५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{3}{8}$″×५″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७६४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

५४६ चन्द्रप्रभ ढाल– × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–८″ × ४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२६३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

५४७. चातुर्मास व्याख्यान पद्धति––शिव निधान पाठक । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५५२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ६, सं० १८०० ।

५४८. चौबोली चतुष्पदी - जिनचंद्र सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–६$\frac{1}{8}$″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३६० । रचनाकाल–स० १७२४ । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ५, बुधवार, स० १८२० ।

५४९. चौर पचाशिका––कवि चौर । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–६″ × ४$\frac{1}{8}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७४५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५५०. ढाल बारह भावना––× । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार– ६″ × ४$\frac{1}{8}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३०० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

५५१ ढाल मगल की––× । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–४$\frac{3}{8}$″ × ४$\frac{1}{8}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५५२. ढाल सुभद्रारी– × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–८$\frac{1}{8}$″ × ४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२८२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

५५३. ढाल श्री मन्दिरजी–× । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–६″ × ४$\frac{1}{8}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

५५४. ढाल क्षमा की––मुनि फकीरचन्दजी । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–६″ × ४$\frac{1}{8}$″ । दशा–अच्छी पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२६८ रचनाकाल–× । लिपिकाल––× ।

५५५. तीस बोल–– × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–७$\frac{3}{8}$″ × ४″ ।

दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५५६. दया नरसिंह ढाल —दया नरसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–६½"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रथ सख्या–२२६४ । रचनाकाल –× । लिपिकाल–× ।

५५७. दश अच्छेरा ढाल —रायचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–८"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२८० । रचना–काल–सं० १८६५ । लिपिकाल–× ।

विशेष—मेडता सेर में चौमासा किया तब श्री रायचन्द्रजी ने रचना की ।

५५८. दान निर्णय —सूत । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१२"×५½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल—× ।

५५९. द्विसन्धानकाव्य-नेमिचन्द्र । देशी कागज । । पत्र संख्या–२५४ । आकार—११¾"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १४, शनिवार, स० १७०४ ।

नोट:—विस्तृत प्रशस्ति उपलब्ध है ।

५६०. द्विसन्धानकाव्य (सटीक)—नेमिचन्द्र । टीकाकार–पं० राघव । देशी कागज । पत्र सख्या–२२० । आकार–११"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १७१७ ।

५६१. धर्म परीक्षा–अमितगती सूरि । देशी–कागज । पत्र सख्या–११७ । आकार—११"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२२५ । रचनाकाल–स० १०७० । लिपिकाल–स० १७१५ ।

५६२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–४६ । आकार–१४¾"×६¾" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२७३ । रचनाकाल–स० १०७० । लिपिकाल–× ।

५६३. धर्म परीक्षा–पं० हरिषेण । देशी कागज । पत्र संख्या–११७ । आकार—८¾"×३¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–५५८/A । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५६४. धर्मशर्माभ्युदय– हरिश्चन्द कायस्थ । देशी कागज । पत्र संख्या–२१६ । आकार–१०¾"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२५२६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ७, स० १६८२ ।

५६५. नन्दीश्वर काव्य—भूपेन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–११"×४½" ।

दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– स० १७२३ ।

५६६. **नलदमयन्ती चउपई – समयसुन्दर सूरी ।** देशी कागज । पत्र सख्या–३० । आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११६४ । रचनाकाल– स० १६०३ । लिपिकाल–ज्येष्ठ बुदी १, स० १८२८ ।

५६७. **नलोदय टीका—रामऋषि मिश्र । टीकाकार–रविदेव ।** देशी कागज । पत्र सख्या–३० । आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५६८. **नलोदय टीकाकार—रविदेव ।** देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–११″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८५० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १५, शनिवार, स० १७१० ।

५६९. **प्रति सख्या २ ।** देशी कागज । पत्र सख्या–३५ । आकार–९$\frac{1}{2}$″×५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११२५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५७०. **प्रति संख्या ३ ।** देशी कागज । पत्र सख्या–३४ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला २, स० १७७० ।

५७१. **नवरत्न काव्य–× ।** देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″×५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १, स० १८६७ ।

५७२. **नीतिशतक—भर्तृहरि । देशी कागज ।** पत्र सख्या–२८ । आकार–१२″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२६३७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५७३. **नेमजी की ढाल—रायचन्द ।** देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार—९$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—पाली मे रचना हुई बताई गयी है, परन्तु समय नही दिया गया है ।

५७४. **नेमिदूत काव्य—श्री विक्रम देव ।** देशी कागज । पत्र सख्या–९ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । । ग्रन्थ सख्या–१८५८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १२, स० १८६० ।

५७५. **प्रति सख्या २ ।** देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–१३″×५$\frac{3}{4}$″ । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१९२९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ९, शुक्रवार, स० १८२४ ।

नोट—इस महाकाव्य मे भगवान नेमिनाथ के दूत का राजमति के पिता के यहाँ जाने

का वर्णन है। इस ग्रन्थ में कवि विक्रम ने महाकवि कालिदास कृत मेघदूत काव्य के पद्यों के एक एक चरण को श्लोक के अन्त में अपने अर्थ में प्रयोग किया है।

५७६. **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०३७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५७७. **प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र सख्या–१४ । आकार–१०″×५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०८५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष कृष्णा ७, मगलवार, सं० १८१६ ।

५७८. **नेमिनिर्वाण महाकाव्य—कवि वाग्भट्ट** । देशी कागज । पत्र सख्या–६७ । आकार–११″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या—११६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल—× ।

५७९. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–६० । आकार–११″×५″ । दशा–अति जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३४५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ११, मगलवार, स० १५६४ ।

५८०. **प्रतिसंख्या—३** । देशी कागज । पत्र सख्या–६८ । आकार–११″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १, बृहस्पतिवार स० १६६७ ।

५८१. **नैषध काव्य–हर्षकीर्ति** । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार–६$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट:—केवल द्वितीय सर्ग ही है ।

५८२. **प्रति सख्या २** । पत्र सख्या–६८ । आकार–१४″×५$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, स० १४५३ ।

५८३. **पण्डानो गीत**—× । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२५७८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

५८४. **पांच बोल**–× । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७३६ । रचनाकाल–×। लिपिकाल–× ।

५८५. **प्रतापसार काव्य—जीवन्धर** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार—११″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६४६ । रचनाकाल–स० ११६५ । लिपिकाल–× ।

५८६. **प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमल** । देशी कागज । पत्र सख्या—२ । आकार—

१०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल—× ।

५८७ प्रायश्चित बोल—× । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार ७$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२८१ । रचनाकाल–× । लिपि–काल—× ।

५८८. पुष्पांजलि व्रतोद्यापन–पं० गंगादास । देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार––६$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१७४४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—× ।

५८९. पंचमी सप्ताय—कांतिविजय । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७२२ । रचना-काल–× । लिपिकाल–× ।

५९० बावन दोहा बुद्धि रसायण—पं० महिराज । देशी कागज । पत्र सख्या–४७ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२५३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १७३३ ।

५९१ भक्तामर री ढाल—× । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–७$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५९२ भामिनी विलास—पं० जगन्नाथ । देशी कागज । पत्र सख्या–२१ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०४७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५९३ भोज प्रबन्ध—कवि वल्लाल । देशी कागज । पत्र सख्या–३४ । आकार—१०"×४" । दशा–जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा २, शुक्रवार, स० १५५८ ।

५९४ मदन पराजय–जिनदेव । देशी कागज । पत्र सख्या–४६ । आकार–६$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत (चम्पूकाव्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११२५ । रचना–काल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ११, स० १८३७ ।

५९५ प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१७ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या– १६४५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–प्रथम ज्येष्ठ कृष्णा १०, स० १८५८ ।

५९६ प्रति सख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–३२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११८८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला २, स० १५६२ ।

५९७. मदन पराजय—हरिदेव । देशी कागज । पत्र सख्या–२४ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३०० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, स० १५७४ ।

५६८. मयूराष्टक- कवि मयूर । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–८$\frac{3}{4}$″ × ४″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३५८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५६६ मेघकुमार ढाल—मुनि यशनाम । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार—६$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०६६ । रचना-काल–× । लिपिकाल–× ।

६००. मेघदूत काव्य—कालिदास । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–१०″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३०३ । रचना-काल–× । लिपिकाल–भाद्रपद ५, स० १७८३ ।

६०१ **प्रति संख्या २ ।** देशी कागज । पत्र सख्या–१२ । आकार–१०″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—१४३३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ३, बृहस्पति-वार, स० १७४६ ।

६०२ **प्रति सख्या ३ ।** देशी कागज । पत्र सख्या–१४ । आकार–१०″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण । । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ८, स० १६२० ।

विशेष—स० १६२० अश्विन कृष्णा ८, सोमवार को प० खेता ने अहिपुर मे लिपि की है ।

६०३. **प्रति संख्या ४ ।** देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–द्वितीय आषाढ कृष्णा १, स० १६८६ मे अहमदाबाद मे लिपि की गई ।

६०४ **प्रति संख्या ५ ।** देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–११″ × ५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१६१ । रचना काल–× । लिपिकाल- बैशाख कृष्णा ६, स० १६८६ ।

६०५ **मेघदूत काव्य सटीक—लक्ष्मी निवास ।** देशी कागज । पत्र संख्या-३० । आकार–६$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{4}$″ । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १, स० १७४५ ।

६०६ **मेघदूत काव्य सटीक—बल्लभ देव ।** । देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार–१३$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १२, सोमवार, स० १४८१ ।

६०७ **मेघदूत काव्य सटीक–कालिदास । टीकाकार–वत्स ।** देशी कागज । पत्र सख्या–२८ । आकार–१२$\frac{3}{4}$″ × ५$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११७१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ७, रविवार, सं० १८२२ ।

६०८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । आकार–८$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६०९ **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–२२ । आकार—१०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०९३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

६१० **प्रति सख्या ४** । देशी कागज । पत्र सख्या–२२ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१७५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १५, स० १८११ ।

६११. **प्रति संख्या ५** । देशी कागज । पत्र सख्या–९ । आकार–१२½"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१७५३। रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला ३, स० १८५३ ।

६१२ **प्रति सख्या ६** । (टीका–मल्लिनाथ सूरि) देशी कागज । पत्र सख्या–३६ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११९४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा १४, स० १७६३ ।

६१३. **मंगल कलश चौपई—लक्ष्मी हर्ष** । देशी कागज । पत्र सख्या–२४ । आकार–१०¼×"४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२८६१ । रचनाकाल–माघ शुक्ला ११, बृहस्पतिवार स० १७५९ । लिपिकाल–पौष कृष्णा १२, स० १८०३ ।

६१४ **यमक स्तोत्र—चिरन्तनाचार्य** । देशी कागज । पत्र सख्या–९ । आकार—१०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३२३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६१५. **रघुवश महाकाव्य—कालिदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–७६ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११३६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–× ।

६१६. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–३९ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४९६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६१७. **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–३५ । आकार–१२½"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—नवम् सर्ग पर्यन्त है ।

६१८ **प्रति सख्या ४** । देशी कागज । पत्र सख्या–९८ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५९८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १८०७ ।

६१९ **रघुवश वृत्ति—कालीदास । टीका–आनन्द देव** । देशी कागज । पत्र सख्या–२ से १४० । आकार–१०"×४¼" । दशा–जीर्ण क्षीण । अपूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—प्रथम पत्र नही है ।

६२०. **राम आज्ञा—तुलसीदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार—१०"×४¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०४३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२१. लघुस्वरराज काव्य सटीक—लघु पण्डित । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६ $\frac{1}{2}$" × ४ $\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२८३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १६४८ ।

६२२. लक्ष्मी सरस्वती संवाद—श्री भूषण । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१० $\frac{1}{2}$" × ४ $\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२११३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–११" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२४. वर्धमान काव्य—जयमित्र हल । देशी कागज । पत्र सख्या–५६ । आकार—१० $\frac{1}{2}$" × ४ $\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–४४३/अ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२५. वसुधारा धारिणी नाम महाविद्या—नन्दन । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०" × ४ $\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७८० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—यह बौद्ध ग्रन्थ है । इसमे लक्ष्मी प्राप्ति के लिए कैसे पाठ किया जाता है, बताया गया है।

६२६. वृन्दावन काव्य—कवि मामा । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार—११ $\frac{1}{4}$" × ५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२७ विक्रमसेन चौपई–× । देशी कागज । पत्र सख्या–५० । आकार–१०" × ४ $\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७४२ । रचनाकाल–स० १७२४ लिपिकाल–× ।

६२८. विदग्धमुखमण्डन (सटीक)—धर्मदास बौद्धाचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–२२ । आकार—१० $\frac{1}{2}$" × ५ $\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२९. विद्वद्भूषण काव्य—बालकृष्ण भट्ट । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–९" × ४ $\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२१२३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, सोमवार, स० १८३० ।

६३०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–९ । आकार–१२ $\frac{3}{4}$" × ५ $\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६३१. विद्वद्भूषण सटीक–बालकृष्ण भट्ट । टीकाकार–मधुसूदन भट्ट । पत्र सख्या–७७ । आकार–९" × ४ $\frac{1}{2}$" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६३२. **विशेष महाकाव्य सटीक (ऋतु संहार)—कालिदास । टीकाकार–अमरकीर्ति । देशी कागज** । पत्र सख्या–२५ । आकार—१०$\frac{1}{4}$″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६२५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला १०, स० १८५७ ।

६३३. **वैराग्यमाला—सहल** । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१२″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२१०५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–प्रथम श्रावण कृष्णा ५, स० १८२५ ।

६३४. **वैराग्यशतक—भर्तृहरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–११$\frac{3}{4}$″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८१२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६३५. **प्रति सख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–१७ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । अपूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२७६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६३६. **वैराग्य शतक सटीक**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१५ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ११, स० १८५१ ।

६३७. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार—१०$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२७१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ४, स० १८४० ।

६३८. **वैराग्यशतक सार्थ**– × । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–६$\frac{1}{2}$″ × ५″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर कृष्णा १३, मगलवार, स० १८३१ ।

६३९. **शत्रुंजय तीर्थद्वार—नयसुन्दर** । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार—१०″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६४० **शिशुपालवध—महाकवि माघ** । पत्र सख्या–७३ । आकार–११$\frac{3}{4}$″ × ५$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ८, बुधवार, स० १८५६ ।

६४१. **प्रति सख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–१०″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । अपूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४५८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६४२. **शिशुपालवध सटीक** – × । देशी कागज । पत्र सख्या–११८ । आकार–६$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३७० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६४३. **शिशुपालवध सटीक—माघ । टीकाकार आनन्ददेव** । देशी कागज । पत्र सख्या–

८७ । आकार–१२$\frac{3}{4}$″ × ५$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८२६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—टीका का नाम 'सन्देह विषेवधि' है । ग्यारहवें सर्ग की टीका भी पूर्ण नहीं की गई है । ग्रन्थ अपूर्ण है ।

६४४. शीलरथ गाथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″ × ६$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६४५. शील बिनती–कुमुदचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११″ × ५$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी और गुजराती मिश्रित । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४८३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६४६. शीलोपारी चितासन पद्मावती कथानक– × । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६४७ सज्जन चित्तवल्लभ—मल्लिषेण । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार—१०$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १६४६ ।

६४८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११$\frac{3}{4}$″ × ५$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६७८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा २, शनिवार, सं० १८१७ ।

६४९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–११″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ऽऽ रविवार, सं० १६८६ ।

विशेष—१६८६ पौष कृष्णा ७ शुक्रवार को ब्रह्मचारी वेणीदास ने संशोधन किया है । श्लोक संख्या २४ हैं ।

६५० प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–६$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५७७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ११, मंगलवार, सं० १८४४ ।

६५१. सप्तव्यसन समुच्चय–पं० भीमसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–७१ । आकार–११$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२७४ । रचनाकाल–माघ शुक्ला १, सं० १५२६ । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ३, सं० १६७६ ।

६५२. समगत बोल– × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–६$\frac{1}{2}$″ × ४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२८३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १६२७ ।

विशेष–सम्यक्त्व का श्वेताम्बर ग्राम्नाय के ग्रनुसार वर्णन किया गया है।

६५३. **सम्यक्त्वरास—ब्रह्म जिनदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । ग्राकार–६¾″×३¾″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ सख्या–१३१०। रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष कृष्णा ३, स० १८०० मालपुरा मध्ये।

६५४ **सिन्दुर प्रकरण – सोमप्रभाचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । ग्राकार–१०½″×४½″। दशा–जीर्ण। ग्रपूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१३२४। रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—इस ग्रन्थ मे केवल ७५ श्लोक ही उपलब्ध होते हैं। जबकि ग्राचार्य की ग्रन्य प्रतियो मे १०० श्लोक उपलब्ध होते हैं।

६५५. **प्रति संख्या २**। देशी कागज । पत्र सख्या–१२। ग्राकार–१०½″×४½″। दशा–ग्रतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२०४६। रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६५६ **प्रति संख्या ३**। देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । ग्राकार–११¾″×४½″। दशा–ग्रतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२४२०। । रचनाकाल– ×। लिपिकाल–× ।

६५७ **सिन्दुर प्रकरणसार्थ**—× । देशी कागज। पत्र सख्या–१७। ग्राकार–१०½″×४″। दशा–ग्रतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा-सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२०४६। रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६५८. **सीता पच्चीसी—श्री बृद्धिचन्द**। देशी कागज। पत्र संख्या–२। ग्राकार—१२″×५¾″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१५३६। रचनाकाल–स० १६००। लिपिकाल–माघ शुक्ला १२, स० १६३६।

६५६ **सीता सती जयमाला**—× । देशी कागज। पत्र सख्या–१। ग्राकार–१०″×४¾″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१५०५। रचनाकाल-×। लिपिकाल–× ।

६६० **सुभाषित रत्न संदोह –ग्रमितगति**। देशी कागज। पत्र सख्या–६२। ग्राकार–११″×४½″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या-२६७८। रचनाकाल–स० १०५०। लिपिकाल–बैशाख कृष्णा ५, स० १६३२ को नागोर मे लिपि की गई।

विशेष –लिपिकार ने ग्रपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखी है। रचना बहुत ही सुन्दर ग्रौर सरल सस्कृत मे है।

६६१. **सुमतारी ढाल—शिब्बूराम**। देशी कागज। पत्र सख्या–४। ग्राकार–८½″×४½″। दशा–ग्रच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३०२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–× ।

६६२. **सोनागीरि पच्चीसी—कवि भागीरथ**। देशी कागज। पत्र सख्या–६। ग्राकार–७″×४¾″। दशा–ग्रच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२४८२। रचनाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १४, स० १८६१। लिपिकाल–× ।

६६३. **सोली रो ढाल**—× । देशी कागज। पत्र सख्या–२। ग्राकार–८½″×४¾″।

दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-२२६६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६६४ स्थूलभद्र मुनि गीत—नयमल । देशी कागज । पत्र सख्या-१ आकार-१०$\frac{1}{4}$"× ४$\frac{1}{4}$" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-२५७० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६६५. श्रृंगार शतक (सटीक)—भर्तृहरि । देशी कागज । पत्र संख्या- ३० । आकार-११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-११५७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

६६६ श्रीमान् कुतूहल—विनय देवी । देशी कागज । पत्र सख्या-६ । आकार-६$\frac{1}{2}$"× ४$\frac{1}{4}$" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्र श । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-१४५१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला २, स० १६६० ।

नोट—इस ग्रन्थ मे कामिनी को क्रियाओ का वर्णन किया गया है ।

६६७. क्षेम कुतूहल— क्षेम कवि । देशी कागज । पत्र सख्या-२३ । आकार-१०$\frac{1}{4}$"× ४$\frac{1}{4}$" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-१७५७ । रचनाकाल-स० १४५३ । लिपिकाल-स० १६६३ ।

६६८ ज्ञान हिमची—कवि जगरूप । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार- १०$\frac{1}{2}$"× ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

विशेष—मुसलमान, मुल्ला, पीर, अल्ला आदि शब्दो का विवेचन तात्विक ढग से किया गया है । ग्रन्थ द्रष्टव्य है ।

———

विषय—कोश साहित्य

६६६. अनेकार्थ मंजरी—नन्ददास । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–कोश । ग्रन्थ सख्या–१३२८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १३, वृहस्पतिवार, स० १८२३ ।

६७०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार–६" × ४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०४० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७१. अनेकार्थध्वनि मंजरी—कवि सूद । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०¼" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२१३३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ८, शनिवार, स० १६८१ ।

विशेष—नागौर मे लिपि की गई ।

६७२. अनेकार्थध्वनि मंजरी— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२४२४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मार्गशीर्ष शुक्ला १४, स० १७१० ।

विशेष—ग्रन्थ के फट जाने पर भी अक्षरो की कोई क्षति नही हुई है ।

६७३ प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या– १२ । आकार–१०" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७४. अनेकार्थ नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–५४ । आकार–१०" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । अपूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–कोश । ग्रन्थ सख्या–१०४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७५. अनेकार्थ नाममाला— × । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०" × ४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा– सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७६ अभिधान चिन्तामणि—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–३० । आकार–११" × ४¼" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १, बुधवार, सं० १६१० ।

६७७ अमर कोश—अमरसिंह । देशी कागज । पत्र सख्या–७६ । आकार–१०¼" × ४¼" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १३, स० १८१५ ।

६७८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–८¼" × ५¾" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १३, सं० १६०८ ।

विशेष—केवल प्रथम काण्ड मात्र ही है ।

६७६ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–३६ से ११७ तक । आकार–१२″ × ५३⁄४″ । दशा–अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२८४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६८०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ से ८१ तक । आकार–११३⁄४″ × ४१⁄४″ । दशा–अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२८६३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ३, बुधवार, स० १८२२ ।

६८१. अमरकोश वृत्ति—अमरसिंह । वृत्तिकार—महेश्वर शर्मा । देशी कागज । पत्र सख्या–६५ । आकार–१२१⁄२″ × ४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६८२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–शक् स० १७७१ ।

६८२ अमरकोश वृत्ति—अमरसिंह । वृत्तिकार—भट्टोपाध्याय सुनुलिगयसूरी । देशी कागज । पत्र सख्या–१२३ । आकार–१२″ × ४१⁄२″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर सुदी ६, मगलवार, स० १७१२ ।

६८३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–७६ । आकार–११″ × ५१⁄४″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४०५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ५, मगलवार, स० १६२२ ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ सख्या ६५०० है ।

६८४ एकाक्षर नाममाला—पं० वररुचि । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०″ × ५३⁄४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८८४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा ६, सोमवार, स० १६२२ ।

६८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१२″ × ५३⁄४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६८६ एकाक्षरी नाममाला—प्राकसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०″ × ४१⁄४″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२१५६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६८७ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०३⁄४″ × ४३⁄४″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४३३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६८८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–११″ × ४३⁄४″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६८६. प्रति सख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०१⁄२″ × ४१⁄२″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२८५८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ८, सं० १८२६ ।

६६० **क्रियाकोश—किशनसिंह** । देशी कागज । पत्र सख्या–१७ । आकार–११$\frac{3}{4}$″×५$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३१५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६६१. **गणित नाममाला—हरिदत्त** । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१९४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट— ग्रन्थ का दूसरा नाम ज्योतिष नाममाला भी है ।

६६२ **चिन्तामणि नाममाला—हेमचन्द्राचार्य** । । देशी कागज । पत्र सख्या–४४ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११७७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन बुदी २, स० १६७८ ।

६६३ **द्वि अभिधान कोश** — × । देशी कागज । पत्र सख्या ११ । आकार–८$\frac{1}{2}$″×५″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१९८९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६६४ **धनजय नाममाला—धनंजय** । देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×५″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७९६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६६५. **प्रति सख्या** २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१९९६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६६६ **प्रति संख्या** ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार–११″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७५० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १२, स० १८२२ ।

६६७ **प्रति संख्या** ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६६८ **प्रति संख्या** ५ । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१३९५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६६९. **प्रति संख्या** ६ । देशी कागज । पत्र सख्या–१४ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१२९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १, स० १८०५ ।

७००. **प्रति सख्या** ७ । देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार–११$\frac{1}{4}$″×५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६९२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७०१ **प्रति संख्या** ८ । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६९१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७०२. **प्रति संख्या** ९ । देशी कागज । पत्र सख्या–१४ । आकार–११$\frac{1}{2}$″×५″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६५० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा ६, सोमवार, सं० १५६२ ।

७०३ प्रति संख्या १० । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१०″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १७१५ ।

७०४ नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–४० । आकार–१०$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२९९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १६३४ ।

७०५. नाममाला—कवि धनंजय । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । आकार–११″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ११, स० १६८१ ।

७०६ पुण्यास्रव कथाकोश—रामचन्द्र । देशी कागज । पत्र सख्या–२०३ । आकार–१०″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११२२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १५, सं० १८६२ ।

७०७. महालक्ष्मी पद्धति—पं० महादेव । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–६$\frac{3}{4}$″×५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१९०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा ६, शुक्रवार, स० १९२२ ।

७०८ मानमंजरी नाममाला—नन्ददास । देशी कागज । पत्र सख्या–२२ । आकार–७$\frac{1}{2}$″×६″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८७७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ४, शुक्रवार, स० १९०३ ।

७०९ लघुनाममाला—हर्षकीर्ति सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–६३ । आकार–१०″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १, स० १८७३ ।

७१०. लिंगानुशासन—अमरसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–११″×५″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १३, स० १८९४ ।

७११ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–७४-९९ । आकार–११″×६″ । दशा–जीर्ण । अपूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०७९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १८६६ ।

नोट—इसे अमरकोश भी कहा गया है ।

———

विषय—चरित्र

७१२. **अर्जुन चौपई—समयसुन्दर सूरि** । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । आकार–१०३/४"×४१/२" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–चरित्र । ग्रन्थ सख्या–१११० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७१३. **अवन्ति सुकुमाल महामुनि वर्णन—महानन्द मुनि** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०१/२"×४३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–चरित्र । ग्रन्थ सख्या–२८२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ७, स० १७६६ ।

७१४ **उत्तम चरित्र**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०१/२"×४३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–चरित्र । ग्रन्थ सख्या–१५१३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७१५. **ऋषभनाथ चरित्र—भ० सकलकीर्ति** । देशी कागज । पत्र सख्या–१४५ । आकार–१२१/२"×५१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–चरित्र । ग्रन्थ सख्या–२६७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १२, स० १८३३ ।

विशेष—श्लोक सख्या ४६२८ हैं ।

७१६. **अंबड़ चरित्र—पं० अमरसुन्दर** । देशी कागज । पत्र सख्या–३१ । आकार–६३/४"×४३/४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७१५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १३, स० १८२६ ।

७१७ **करकण्ड, महाराज चरित्र—कनकामर** । देशी कागज । पत्र सख्या–७३ । आकार–१०१/२"×४३/४" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७१८ **कुल ध्वज चौपई—पं० जयसर** । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–१०"×४३/४" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३६६ । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १०, स० १७३४ । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा २, वृहस्पतिवार, स० १७५३ ।

७१९ **गुज सधन्टप चरित्र -पं० सुन्दरराज** । देशी कागज । पत्र सख्या–१८ । आकार–१०"×४१/२" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२०६ । रचनाकाल–प्रथम ज्येष्ठ बुदी १५, बुधवार, स० १५५३ । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला १२, शनिवार, स० १६७० ।

७२०. **गौतमस्वामी चरित्र—मण्डलाचार्य धर्मचन्द्र** । देशी कागज । पत्र सख्या–३१ । आकार–१२"×५१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२२६ । रचनाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला २, स० १७१६ । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ८, शुक्रवार, स० १८३१ ।

७२१. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, शनिवार, स० १८२१ ।

७२२. **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र संख्या–३८ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११३६ । । रचनाकाल–जेष्ठ शुक्ला २, शुक्रवार, सं० १७२६ । लिपिकाल–पौष शुक्ला ८, रविवार, स० १८४८ ।

७२३ **प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५५५ । रचनाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला २, शुक्रवार, स० १७२६ । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, स० १८२५ ।

७२४. **चन्द्रप्रभ चरित्र—पं० दामोदर** । देशी कागज । पत्र संख्या–६२ । आकार–१२$\frac{1}{4}$" × ५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७४३ । रचनाकाल–भाद्रपद ६, स० १७२७ । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा २, स० १८४४ ।

आदिभाग—

> श्रिय चन्द्रप्रभो नित्या चन्द्रदश्चन्द्र लाछनः ।
> भव्य कुमुदचन्द्रो वश्चन्द्रप्रभो जिन. क्रियात् ॥ १ ॥
>
> कुशामन वचोब्धिज्जगत्तारण हेतवे ।
> तेन स्ववाक्य सूरार्त्र्धर्मपोत' प्रकाशित ॥ २ ॥
>
> युगादौ येन तीर्थ्रेशा धर्मतीर्थ. प्रवर्नित. ।
> तमह वृषभ वन्दे वृषद वृषनायकम् ॥ ३ ॥

अन्तभाग—

जिनरुचिदृढमूनो ज्ञान विज्ञान पीठ शुभवि रण साखश्चारुशीलादि पत्र: ।
सुगुणचयसमृद्ध स्वर्गसौख्यप्रसून शिवसुखफलदो वै जैनधर्मद्रुमोऽस्तु ॥ ८४ ॥

भूभृन्नेत्राचलशसधराकप्रमे (१७२७) वर्षेऽतीते नवमीदिवसे मासि भाद्रे सुयोगे ।
रम्ये ग्रामे विरचितमिद श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि नाभेयस्य प्रवरभवने भूरिशोभा निवासे ॥८५॥

> रम्य चतु सहस्राणि पन्चदशयुतानि वै ।
> अनुष्टुप्के समाख्यात श्लोकैरिद प्रमाणत ॥ ८६ ॥

इति श्रीमण्डलसूरि श्रीभूषण तत्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचन्द्र शिष्य कविदामोदर–विरचिते श्री चन्द्रप्रभचरिते श्री चन्दप्रभ निर्वाणगमन वर्णनो नाम सप्त–विंशतितम सर्ग: ।

७२५. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–६५ । आकार–१५"×६$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११५० । रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला ६, सं० १७२७ । लिपिकाल–स० १८६६ ।

७२६ **चन्द्रप्रभ चरित्र—यशः कीर्ति** । देशी कागज । पत्र सख्या–११७ । आकार–१०″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३५५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला ५, स० १६०१ ।

७२७ **प्रति सख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–६४ । आकार– १०$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{1}{2}$ । दशा–जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१३४१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा १०, सं० १६२७ ।

७२८. **चन्द्रलेहा चरित्र—रामवल्लभ** । देशी कागज । पत्र सख्या–३५ । आकार–१०″ × ५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२५२६ । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १०, रविवार, स० १७२८ । लिपिकाल–पौष कृष्णा १०, स० १८५४ ।

७२६ **प्रति सख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–६४ । आकार–६″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२७५१ । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १०, स० १७२८ । लिपिकाल–माघ शुक्ला ११, स० १८३१ ।

७३०. **चरित्रसार टिप्पण—चामुण्डराय** । देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार–१०$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७३१. **चेतन कर्म चरित्र—भैया भगवतीदास** । देशी कागज । पत्र सख्या– १२ । आकार–१२″×५$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२१२२ । रचनाकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ७, मगलवार, स० १७३२ । लिपिकाल–मगसिर कृष्णा ३, स० १८५६ ।

विशेष—इस ग्रन्थ की लिपि नागौर में की गई ।

७३२ **चेतनचरित्र—यश कीर्ति** । देशी कागज । पत्र सख्या–१५ । आकार–११$\frac{1}{2}$″×५$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ६, स० १६०८ ।

७३३. **जम्बूस्वामीचरित्र–भ० सकलकीर्ति** । देशी कागज । पत्र सख्या–५८ । आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८०३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

७३४. **प्रति सख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–७५ । आकार–११$\frac{1}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १७१३ ।

७३५ **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–४८ । आकार–१५″ × ७″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६१६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ शुक्ला १५, मगलवार, स० १८६६ ।

विशेष – श्लोक सख्या २१७० है ।

७३६ **जम्बूस्वामीचरित्र**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०३/४"×४१/२" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ७, सं० १७२४ ।

७३७ **जिनदत्तचरित्र**—पं० लाखू । देशी कागज । पत्र संख्या–१५८ । आकार–१०१/२"×४३/४" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२६१ । रचनाकाल–पौष बुदी ६, स० १२७५ । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार, स० १५६८ ।

नोट—ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार को नागपुर (नागौर) मे मुहम्मद खाँ के राज्यकाल में लिपि की गई है ।

७३८ **जिनदत्तचरित्र**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२५ । आकार–१३"×४१/२" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३४८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष - इस ग्रन्थ मे १०६० श्लोक हैं, सपूर्ण ग्रन्थ में ६ सर्ग हैं । श्री विद्यानन्ददेव ने अपने पढने के लिए लिपि करवाई ।

७३९ **जीवंधरचरित्र**—भ० शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–७७ । आकार–१११/२"×४१/२" । दशा–अतीजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३७० । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १३, स० १६२८ । लिपिकाल– × ।

आदिभाग—

श्रीसन्मति सता कुर्यात्समीहितफल परं ।
येनाप्येत महामुक्तराजस्य वर—वैभव' ।।१।।

अन्तभाग—

येषा धर्मकथासुयोगसुविधिज्ञान प्रमोदा,
गमाचार श्रीशुभचन्द्र एष भविनां ससारतः संभव ।
मार्गादर्शनकोविद हतहित तामस्यभार सदा,
छिद्याद्वाक्किरणै कथचिदतुलै सर्वत्र सुव्यापिभिः ।।८५।।

श्रीमूलसघो यातिमुल्यसेव्य' श्रीभारतीगच्छ विशेषशोभ' ।
मिथ्यामतध्वान्त विनाशदक्षो जीयाच्चिर श्रीशुभचन्द्रभासी ।।६।।

श्रीमद्विक्रमभूपतेर्वसुहत द्वैतेशते सप्तके,
वेदै न्युनतरेसमे शुभतरे मासे वरेण्ये शुचौ ।
वारे गीष्पतिके त्रयोदश तिथौ सन्नूतने पत्तने,
श्रीचन्द्रप्रभधाम्नि वै विरचित चेद मया तोषत' ।।७।।

आचद्रार्क चिर जीयाच्छुभचन्द्रेण भाषित ।
चरित जीवकस्याऽत्र स्वामिन शुभकारण ।।८८।।

इति श्री मुमुक्षु—शुभचन्द्रविरचिते श्रीमज्जीवधरस्वामिचरिते जीवधरस्वामिमोक्ष गमनवर्णन नाम त्रयोदशलभ ।।१३।।

७४०. धन्यकुमारचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र सख्या–१२ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७४१. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२२ । आकार–११"×५¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३४१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७४२ धन्यकुमार चरित्र—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । आकार–११¼"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२५१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–वैशाख कृष्णा ४, रविवार, स० १८५० ।

७४३. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–११½"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ स० १८६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १८४४ ।

७४४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । आकार–१०½"×४½" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२३६३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—माघ शुक्ला ४, मगलवार, स० १६६४ ।

७४५, धन्यकुमारचरित्र—गुणभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–४४ । आकार–१०"×५½" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०४२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, शुक्रवार, स० १६५३ ।

आदिभाग—

स्वयभूव महावीरं लब्धाऽनन्तचतुष्टय ।
शतेन्द्रप्रणत वन्दे मोक्षाय शरण सताम् ।।१।।
प्रणमामि गुरुंश्चैव सर्वसत्वाऽभयंकरान् ।
रत्नत्रयेण सयुक्तान्ससारार्णवतारकान् ।।२।।
दिश्यात्सरस्वती बुद्धि मम मन्दधियो दृढा ।
भक्त्यानुरजिता जैनी मातेव पुत्र वत्सला ।।३।।
स्याद्वादवाक्यसदर्भ प्रणमम् परमागमम् ।
श्रुतार्थभावना वक्ष्ये कृतपुण्येन भाविताम् ।।४।।

अन्तभाग—

य ससारमसारमुन्नतमतिर्ज्ञात्वा विरक्तोऽभवद्धत्वा
मोहमहाभट शुभमना रागांधकार तथा ।
आदायेति महाव्रत भवहर माणिक्यसेनो मुनि–
नैर्ग्रन्थ्य सुखद चकार हृदये रत्नत्रय मण्डन ।।१।।

शिष्योऽभूत्पदपंकजैकभ्रमरः श्रीनेमिसेनोविभुस्तस्य,
श्रीगुरु पुंगवस्य सुतपाश्चारित्रभूषान्वितः ।
कामक्रोधमदान्ध गन्ध करिणो ध्वंसे मृगाणां पतिः,
सम्यग्दर्शन–बोध–साम्य निचितो भव्यांऽबुजानां रवि ॥२॥

आचारं समितीर्दशौ दशविधं धर्मं तपः संयमम्
सिद्धान्तस्य गणाधिपस्य गुणिनः शिष्यो हि मान्योऽभवत् ।
सैद्धान्तौ गुणभद्रनाममुनिपो मिथ्यात्वकामान्तकृत्
स्याद्वादामलरत्नभूषणधरो मिथ्यानयध्वंसकः ॥३॥

तस्येय निरलकारा ग्रन्थाकृतिरसुन्दरा ।
अलकारवता दृष्या सालकाराकृता न हि ॥४॥

शास्त्रमिद कृतं राज्ये राज्ञो श्रीपरमादिन ।
पुरे विलासपूर्वे च जिनालयैविराजिते ॥५॥

यः पाठयति पठयेव पठन्तमनुमोदयेत् ।
सः स्वर्ग लभते भव्यः सर्वाक्षसुखदायक ॥६॥

लम्बकचुकऽगोत्रीऽभूच्छुभचन्द्रो महामनाः ।
साधु सुशीलवान शान्त श्रावको धर्मवत्सल ॥७॥

तस्य पुत्रो वभूवाऽत्र वल्हणो दानवान्वशी ।
परोपकारचेतस्को न्यायेनार्जितसद्धन ॥८॥

धर्मानुरागिणा तेन धर्मकथा निबन्धन ।
चरित कारित पुण्य शिवायेति शिवार्थिन ॥९॥

इति धन्यकुमारचरित्रं सम्पूर्णं ।

७४६. **प्रति संख्या २** । पत्र सख्या–६ । आकार–९½"×३½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, स० १५२० ।

७४७. **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–५० । आकार–११¼"×५" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—कई पत्र परस्पर चिपक गये हैं जिनको अलग करने पर भी अक्षर स्पष्ट नही हैं ।

७४८. **धन्यकुमारचरित्र —पं० रयधू** । देशी कागज । पत्र संख्या - १४ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२३६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

७४९. **नवपदयंत्रचक्रद्वार (श्रीपालचरित्र)**– × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, सं० १६२२ ।

नोट—यह ग्रन्थ श्वेताम्बराम्नाय के अनुसार है। इसमें श्रीपाल का चरित्र प्राकृत गाथाओं में निबद्ध किया हुआ है।

७५०. **नागकुमारचरित्र—पुष्पदन्त**। देशी कागज। पत्र संख्या-७०। आकार—११"×४¾"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—अपभ्रंश। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१०७३। रचनाकाल-×। लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १३, सोमवार, स० १६३६।

७५१. **प्रति संख्या** २। देशी कागज। पत्र संख्या—६७। आकार-१२"×५"। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२६७६। रचनाकाल—×। लिपिकाल-मगसिर शुक्ला ५, सोमवार, स० १५३८।

७५२ **नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर**। देशी कागज। पत्र संख्या-४२। आकार-११½"×५"। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११३४। रचनाकाल—श्रावण शुक्ला १५, सोमवार, स० १२१३। लिपिकाल-चैत्र शुक्ला २, शुक्रवार, स० १५६६।

७५३. **नागकुमार चरित्र—मल्लिषेण सूरी**। देशी कागज। पत्र संख्या—२८। आकार—११½"×५"। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१२७१। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

आदिभाग—

श्रीनेमिं जिनमनम्य सर्वसत्वहितप्रदम्।
वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहं ॥१॥
कविभिर्जयदेवाद्यैर्पद्यैर्विनिर्मितम्।
यत्तदेवास्ति चेदत्र विषमं मन्दमेधसाम् ॥२॥
प्रसिद्धं संस्कृतैर्वाक्यैर्विद्वज्जन मनोहरम्।
तन्मया पद्यबन्धेन मल्लिषेणेन रच्यते ॥३॥

अन्तभाग—

श्रुत्वा नागकुमार चारु चरितं श्री गौतमेनोदितं।
भव्याना सुखदायकं भवहरं पुण्यास्रवोत्पादकं।
नत्वा तं मुगधाधिपो गणधरं भक्त्या पुरं प्रागमत्—
च्छ्रीमद्राजगृहं पुरन्दरपुराकारं विभूत्या समं ॥६१॥
इत्युभयभाषाकविचक्रवर्ति श्री मल्लिषेणसूरि
विरचितायां श्री नागकुमार पंचमीकथायां नागकुमार मुनीश्वर—
निर्वाणगमनो नाम पंचमः सर्गः।

७५४. **नागश्रीचरित्र—कवि किशनसिंह**। देशी कागज। पत्र संख्या-२८। आकार-६"×४½"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-हिन्दीपद्य। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११६२। रचनाकाल-श्रावण बुदी ६, बृहस्पतिवार, स० १७७०। लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला २, स० १७७६।

७५५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–९½"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०१५ । रचनाकाल–श्रावण शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, स० १७७३ । लिपिकाल– × ।

७५६. नैषधचरित्र (केवल द्वितीय सर्ग)–**महाकवि हर्ष** । देशी कागज । पत्र सख्या–१४ । आकार–१२"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७५७. पद्मणमहाराज चरित्र · पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार ११½"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७७२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

७५८ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–८९ । आकार–११½"×५" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—अपभ्र श । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७५९ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–८९ । आकार १०¾"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१७६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६० ४०७. प्रति सख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–७८ । आकार–११"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०९१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ५, मगलवार, स० १८२१ ।

७६१ प्रति सख्या ५ । देशी कागज । पत्र सख्या–१३१ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१११४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ५ मगलवार, स० १८२१ ।

७६२. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र सख्या–१०८ । आकार–११½"×४½" दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६३. प्रद्युम्न चरित्र—पं० रयधू । देशी कागज । पत्र सख्या–११९ । आकार–१०¾"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६४ प्रद्युम्न चरित्र—महासेनाचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–१३० । आकार–१०¾"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला ९, शनिवार, स० १६६० ।

७६५. प्रद्युम्न चरित्र श्री सिंह । देशी कागज । पत्र सख्या–११८ । आकार–१०¾"×४¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६६. प्रति संख्या २ । । देशी कागज । पत्र सख्या–१४३ । आकार–९¾"×४¼" ।

दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १४, बृहस्पतिवार, स० १६८० ।

७६७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–४०३ । **आकार–८$\frac{3}{4}$"×६"** । दशा– प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६८ प्रद्युम्न चरित्र—आचार्य सोमकीर्ति । देशी कागज । पत्र सख्या–१३८ । आकार–१२"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११२४ । रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ बुदी ११, मगलवार, स० १६२८ ।

७६९ प्रभजंन चरित्र × । देशी कागज । पत्र सख्या–१७ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२११४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १, रविवार, स० १७४२ ।

७७० प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०१० । रचनाकाल × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १५, शनिवार, स० १७०० ।

नोट—यशोधर चरित्र पीठिका मे से ही **प्रभजनचरित्र** लेकर वर्णन किया गया है ।

७७१ प्रीतिकरमहामुनि चरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र सख्या–३० । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७७२ प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१११६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला ८, स० १६०६ ।

७७३. प्रति सख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–३२ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१३६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल -कार्तिक कृष्णा ८, स० १७४६ ।

७७४. प्रति सख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा– अच्छी । पूरा । ग्रन्थ सख्या–२६४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ५, स० १६८२ ।

७७५ प्रीतिकरमुनि चरित्र भाषा- साह जोधराज गोदीका । देशी कागज । पत्र सख्या–५३ । आकार- ११$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२६१५ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, शुक्रवार, स० १७२१। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १, स० १८६४ ।

७७६ बाहुबली चरित्र—धनपाल । देशी कागज । पत्र सख्या–२४६ । आकार–१२"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०५५ । रचनाकाल–बैशाख शुक्ला १३, स० १४५० । लिपिकाल–× ।

७७७. बाहुबली पाथड़ी—अभयचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४५६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १, सं० १६६८ ।

७७८ भद्रबाहु चरित्र—आचार्य रत्ननन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । (२१वां नहीं है) । आकार–१२"×५½" । दशा–प्रति जीर्ण क्षीण । अपूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७०४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १, सोमवार, सं० १६३६ ।

७७९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२३ । आकार–११"×४¾" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६२९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १, सम्वत् १८४३ ।

७८० प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–२८ । आकार–११"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७८१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–५१ । आकार–१२"×५½" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी टीकाकी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५६८ । रचनाकाल-श्रावण शुक्ला १५, स० १८६३ । लिपिकाल–× ।

७८२ प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । आकार–११"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या– २३५० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, स० १६४५ ।

७८३. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या– २२ । आकार–११¾"×५½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या– २४५१ । रचनाकाल – × । लिपिकाल– सं० १६५० ।

७८४. भविष्यदत्त चरित्र—पं० श्रीधर । देशी कागज । पत्र संख्या–७३ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१११८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १६१४ ।

आदि भाग .—

श्रीमत त्रिजगन्नाथं नमामि वृषभ जिनं ।
इन्द्रादिभि· सदा यस्य पादपद्मद्वयी नता ।। १ ।।

अन्त भाग .—

श्री चन्द्रप्रभस्य जगतामधिपस्य तीर्थे यातेयमद्भुतकथा कविकंठभूषा ।
विस्तारिता च मुनिनाथगणैः क्रमेण ज्ञाता मयाप्यपरसूरि मुखाम्बुजेभ्यः ।।५१।।
भक्त्याऽत्र ये चरितमेतद नूनबुद्धया श्रण्वति ससदि पठति च पाठयति ।
दत्वा धनं निजकरेण च लेखयति व्युदग्राहभावरहिताश्च लिखंति संतः ।।५२।।
ते भवति बललक्षणशुद्धा श्रीघरामलमुखा जनमुख्याः ।
प्राप्त चिंतित समस्त सुखार्थाः शुभ्रकीर्तिधवली कृतलोकाः ।।५३।।

इति श्री भविष्यदत्त चरिते श्रीधरविरचिते साधु लक्ष्मण नामांकिते
श्री वर्द्धन—नंदि वर्द्धन मोक्षगमन वर्णनं
नाम पंचदश सर्ग समाप्तः ॥

७८५ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६३ । आकार–११¾"×४¾" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८४३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १० बृहस्पतिवार सं० १६७२ ।

७८६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–६८ । आकार–८¾"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १६१४ ।

७८७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–५४ । आकार–११¾"×४½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– चैत्र शुक्ला १३, रविवार, सं० १५३२ ।

विशेष — ग्रन्थ के दीमक लग जाने से क्षतिग्रस्तता को प्राप्त हो रहा है । श्लोक संख्या १५०४ है ।

७८८. भविष्यदत्त चरित्र–धनपाल । देशी कागज । पत्र संख्या–१०४ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०१४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ५ बृहस्पतिवार । सं० १८६२ ।

७८९ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१४५ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला १३, बृहस्पतिवार सं० १५६७ ।

७९० प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–११६ आकार–११"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, रविवार सं० १५९५ ।

७९१ भविष्यदत्त चौपई—ब्रह्मरायमल्ल । देशी कागज । पत्र संख्या ५६ । आकार–११½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी पद्य । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५६१ । रचनाकाल–कार्तिक शुक्ला १४, सं० १६३३ । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा १४, सं० १८८४ ।

७९२ मलय सुन्दरी चरित्र—अखयराम लुहाड़िया । देशी कागज । पत्र संख्या–१२० । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३८५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

विशेष—ग्रन्थ के दीमक लगजाने पर भी अक्षरो की क्षति नहीं हुई है ।

७९३ मल्लिनाथ चरित्र–भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–३२ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ११, सं० १८२३ ।

७९४. महिपाल चरित्र भाषा—पं० नथमल । देशी कागज । पत्र संख्या–६७ । आकार–

१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२७०। रचनाकाल–आषाढ़ कृष्णा ४, बुधवार, स० १६१८। लिपिकाल–श्रावण बुदी २, सं० १६३६।

विशेष—भाषाकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है।

७६५ यशोधर चरित्र—मुमुक्षु विद्यानन्द। देशी कागज। पत्र सख्या–६५। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१०३५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

७६६. यशोधर चरित्र—सोमकीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या–८१। आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०४५। रचनाकाल–पौष बुदी ५, रविवार, स० १५४२। लिपिकाल–×।

आदिभाग—

प्रणम्य शंकर देव सर्वज्ञ जितमन्मथ।
रागादिसर्वदोषघ्न मोहनिद्रा विवर्जित ॥ १ ॥
अर्हंत' परमाभक्त्या सिद्धान्सूरीश्वरांस्तथा।
पाठकान् साधवान्श्चेति नत्वा परमया मुदा ॥ २ ॥
यशोधरनरेन्द्रस्य जनन्या सहितस्य हि।
पवित्रं चरित वक्ष्ये समासेन यथागम ॥ ३ ॥
जिनेन्द्रवन्दनोद्भूता नमामि शारदां परां।
श्री गुरुभ्य प्रमोदेन श्रेयसे प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥
यत्प्रोक्त हरिषेणाद्यैः पुष्पदंतपुरस्सरैः।
श्रीमद्वासवसेनाद्यैः शास्त्रस्याणवपारगै'।

अन्तभाग—

नदीतटाख्यगच्छे वंशे श्री रामसेनदेवस्य।
जातो गुणार्णवैकश्च श्रीमाश्च श्रीभीमसेनेति ॥ ६० ॥
निर्मित तस्य शिष्येण श्रीयशोधर सज्ञकं।
श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोध्याऽधीयता बुधाः ॥ ६१ ॥
वर्षे षट्त्रिंशसंख्ये तिथिपरगणनायुक्त सवत्सरे (१५३६) वै
पचम्या पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तरास्थे हि चन्द्रे।
गोढिल्या मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेन्द्रस्य रम्ये
सोमादिकीर्तिनेद नृपवरचरित निर्मितं शुद्धभक्त्या ॥ ६२ ॥

इति श्री यशोधरचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्य—विरचिते अभयरुचि–भट्टारक–स्वर्गगमनो नाम अष्टम. सर्ग' ॥ ८ ॥

ग्रन्थाग्रन्थ १०१८। इति श्रीयशोधर चरितं समाप्तं।

७९७ यशोधर चरित्र – सोमदेव सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–२२८ । **आकार–**
१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । **ग्रन्थ संख्या–१३६३ ।**
रचनाकाल–चैत्र शुक्ला १३, स० ८८१ । लिपिकाल–म० १६५१ ।

७९८ यशोधर चरित्र–पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र सख्या–५७ । **आकार–**१०$\frac{3}{4}$"×
५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या **१०५१ । रचना–**
काल– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १४, स० १६६४ ।

७९९. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–६८ । आकार–९"×४" । **दशा–**
जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–**माघ शुक्ला ५, स०**
१५२१ ।

८०० **प्रति सख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–५६ । **आकार**–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" ।
दशा–जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११२६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–**पौष कृष्णा ३,**
स० १५७४ ।

८०१. **प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र सख्या–७४ । **आकार**–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" ।
दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११३० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–**अश्विन शुक्ला ५,**
शुक्रवार, स० १४८७ ।

८०२. **प्रति सख्या ५** । देशी कागज । पत्र सख्या–५६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" ।
दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–**अश्विन शुक्ला १,**
बृहस्पतिवार, स० १६२१ ।

८०३. **प्रति संख्या ६** । देशी कागज । पत्र सख्या–८० । **आकार**–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" ।
दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–**आषाढ कृष्णा ११, स०**
१५८९ ।

८०४. **प्रति संख्या ७** । देशी कागज । पत्र सख्या–७४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" ।
दशा–जीर्णक्षीण । । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८०५. **प्रति सख्या ८** । देशी कागज । पत्र सख्या–७१ । **आकार**–११"×५$\frac{1}{4}$" ।
दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४१२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–**भाद्रपद शुक्ला ५,**
शनिवार, स० १६५१ ।

८०६. **यशोधर चरित्र—पद्मनाभ कायस्थ** । देशी कागज । पत्र सख्या–८१ । **आकार–**
१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ **सख्या–१०७५ ।**
रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ९, स० १६७४ ।

अन्तभाग—

जात. श्री वीरसिंह सकलरिपुकुलव्रातनिर्घातपातो,
वंशे श्री तोमराणां निजविमल यशोव्याप्तदिक्चक्रवाल. ।
दानैर्मानैर्विवेकैर्न भवति समता येन साकं नृपाणां,

केषामेषा कवितां प्रभवति धिषणा वर्णने तद्गुणानां ॥ १ ॥
ईश्वरचूडारत्नं विनिहतकरघातवृत्तसंहातः ।
चन्द्र इव दुग्धसिंधोस्तस्मादुद्धरण भूपतिर्जनितः ॥ २ ॥
यस्य हि नृपते यशसा सहसा शुभ्रीकृत त्रिभुवनेऽस्मिन् ।
कैलाशति गिरिनिकरः क्षीरति नीरं शुचीयते तिमिरं ॥ ३ ॥
तत्पुत्रो वीरमेन्द्रः सकलवसुमतीपाल चूडामणिर्यः
प्रख्यात· सर्वलोके सकलबुधकलानंदकारी विशेषात् ।
तस्मिन् भूपालरत्ने निखिलनिधिगृहे गोपदुर्गे प्रसिद्धि
भुंजाने प्राज्यराज्य विगतरिपुभय सुप्रजः सेव्यमान ॥ ४ ॥
वशेऽभूज्जैसवाले विमलगुणनिधिर्भूलण साधुरत्न ।
साधुश्री जैनपालो भवदुदित यास्तत्सुतो दानशील: ।
जैनेन्द्राराधनेषु प्रमुदितहृदय· सेवकः सद्गुरूणां
लोणाख्या सत्यशीलाऽजनिविमलमतिर्जैनपालस्य भार्या ॥ ५ ॥
जाताः षट् तनयास्तयो· सुकृतिनोः श्री हसराजोऽभवत् ।
तेषामाद्यतमस्ततस्तदनुजः सैराजनामाऽजनि ।
रैराजो भवराजकः समजनि प्रख्यातकीर्तिमहा—
साधुश्री कुशराजकस्तदनुजः च श्री क्षेमराजो लघुः ॥ ६ ॥
जात· श्रीकुशराज एव सकलक्ष्मापाल चूडामणे. ।
श्रीमत्तोमरवीरमस्य विदितो विश्वासपात्र महान् ।
मत्री मत्र विचक्षण क्षणमय क्षीणारिपक्ष. क्षणात्
क्षोणीमीक्षणरक्षणक्षमति. जैनेन्द्रपूजारतः ॥ ७ ॥
स्वर्गस्पृद्धिसमृद्धिकोतिविमलश्चैत्यालयः कारितो ।
लोकाना हृदयगमो बहुधनैश्चन्द्रप्रभस्य प्रभो ।
येनैतत्समकालमेवरुचिर भव्य च काव्यं तथा
साधु श्रीकुशराजकेन सुधिया कीर्तेश्चिरस्थापकं ॥ ८ ॥
तिस्रस्तस्यैव भार्या गुणचरितयुर्षस्तासु रल्होभिधाना ।
पत्नी धन्या चरित्रा व्रतनियमयुता शीलशौचेन युक्ता ।
दात्री देवार्चनाढ्या गृहकृतिकुशला तत्सुतः कामरूपो ।
दाता कल्याणसिंहो जिनगुरुचरणाराधने तत्परोऽभूत ॥ ९ ॥
लक्षणश्री. द्वितीयाभूत्सुशीला च पतिव्रता ।
कौशीरा च तृतीयेयमभूद्गुणवती सती ॥ १० ॥
शान्तिर्द्देशस्य भूयात्तदनु नरपते· सुप्रजानां जनानां ।
वक्तृणां वाचकानां ... . ॥ ११ ॥

यावत्कूर्मस्य पृष्ठे भुजगपतिरय तत्र तिष्ठेद्गरिष्ठे
यावत्तत्रापि चचद्विकटफणिफणामण्डले क्षोणिरेषा ।
यावत्क्षोणी समस्त त्रिदश पतिवृत श्चारुचामीकराद्रि ।
स्तावद्भव्य विशुद्ध जगति विजयता काव्यमेतच्चिराय ॥ १२ ॥
कायस्थ पद्मनाभेन बुधपादाम्बजरेणुनां ।
कृतिरेषा विजयता स्थेयादाचन्द्रतारक ॥ १३ ॥

इति समाप्तम् ॥

८०७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–७७ । आकार–११" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक बुदी ५, बृहस्पतिवार, सं० १६२३ ।

८०८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–६४ । आकार–१०" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– स० १८०६ ।

८०९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–७६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८१०. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–६४ । आकार–१०" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १६८६ ।

८११. यशोधरचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र सख्या–४६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला ७, स० १७४० ।

८१२ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३४ । आकार–११" × ५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१८६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १३, बृहस्पतिवार, स० १६४४ ।

नोट—लिपिकार की प्रशस्ति दी हुई है ।

८१३ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–४६ । आकार–११$\frac{1}{2}$" × ५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६८७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८१४ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–४४ । आकार- १०$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६९३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ३, सं० १५४७ ।

८१५ यशोधर चरित्र—पूर्णदेव । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–१२" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३१७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १७६० ।

८१६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–११″×४″। दशा–जीर्ण क्षीण पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२६२१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १, बुधवार, सं० १६०८।

८१७. यशोधरचरित्र—वासवसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–५८। आकार–११″×५″। दशा–जीर्णक्षीण।। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२५२२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १३, स० १६१६।

विशेष—लिपिकार की प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है।

८१८. यशोधरचरित्र (पीठिका बंध)—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२२। आकार–११″×४¾″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२५६२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८१९ यशोधर चरित्र टिप्पण—प्रभाचन्द्र। देशी कागज। पत्र सख्या–१८। आकार–११″×५″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२३५५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ३, शनिवार, स० १६३५।

विशेष—हुमायु के राज्यकाल में लिपि की गई है।

८२० रत्न चूड़रास—यश कीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या–६। आकार–१०½″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२४७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मगसिर कृष्णा २, स० १६४०।

८२१. वर्द्धमान काव्य—पं० नरसेन। देशी कागज। पत्र सख्या–१४। आकार–११×″×४½″। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१३६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—पत्र परस्पर मे चिपके हुए होने से अक्षर अस्पष्ट हो गये हैं।

८२२. वर्द्धमान चरित्र—कवि असग। देशी कागज। पत्र सख्या–८३। आकार–११″×४¾″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८२३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–६०। आकार–१४½″×६½″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२६३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८२४ प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र सख्या–७६। आकार–११″×४¾″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५०३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं०१६६०।

८२५ वर्द्धमान चरित्र–पुष्पदन्त। देशी कागज। पत्र सख्या–६७। आकार–११½″×४¾″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८२६. वरांग चरित्र—पं० तेजपाल। देशी कागज। पत्र संख्या–५५। आकार—

११½"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२१३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १६२१।

८२७ वरांग चरित्र – भट्टारक वर्द्धमान। देशी कागज। पत्र संख्या–३६। आकार–१२½"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८२८. विक्रमसेन चौपई—मानसागर। देशी कागज। पत्र संख्या–५३। आकार—८¾"×५¾"। दशा–जीर्णक्षीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४५७। रचनाकाल–सं० १७२४। लिपिकाल–×।

८२९ शान्तिनाथ चरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–१०५। आकार–१२¾"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १४, मंगलवार, सं० १८३३।

८३० प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१७४। आकार–१२¾"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३८२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, रविवार, सं० १८३५।

८३१. शालिभद्र महामुनि चरित्र—जिनसिंह सूरि (जिनराज)। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–१०"×४"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७३८। रचनाकाल–अश्विन कृष्णा ६, सं० १६७८। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १, सं० १६८६।

८३२. सम्मतिजिन चरित्र—रयधू। देशी कागज। पत्र संख्या–१४५। आकार—११¾"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या—१०५४। रचनाकाल—×। लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, सोमवार, सं० १६०६।

८३३. सम्भवनाथचरित्र—पं० तेजपाल। देशी कागज। पत्र संख्या–७६। आकार–११"×५"। दशा–जीर्ण।। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ४, सं० १६४८।

८३४ सुकुमाल महामुनि चौपई—शान्ति हर्ष। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–६¾"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४२१। रचनाकाल–आषाढ शुक्ला ८, सं० १७४१। लिपिकाल–×।

८३५ सुकुमाल स्वामी चरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–३४। आकार–१०"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ३, सोमवार, सं० १८२४।

८३६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४१। आकार–१०¾×४¾"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ कृष्णा १, सं० १६८१।

८३७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । आकार-१०$\frac{3}{4}$" × ६$\frac{1}{2}$" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३७९ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ला ७, शनिवार, स० १८२४ ।

नोट—श्लोक संख्या ११०० है ।

८३८. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-४ से २३ । आकार-११" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८५९ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-द्वितीय श्रावण कृष्णा ५, स० १५९२ ।

८३९. सुदर्शन चरित्र-मुमुक्षु श्री विद्यानन्दि । देशी कागज । पत्र सख्या-४२ । आकार-११"×५$\frac{1}{2}$" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-१८६६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा, १४, शुक्रवार, स० १८२५ ।

८४०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या-५७ । आकार-१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या-१०८९ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-बैशाख शुक्ला ५, स० १६८२ ।

८४१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या-७९ । आकार-९$\frac{3}{4}$"×४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या-२३९० । रचनाकाल- × । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ८, शुक्रवार, सं० १७०२ ।

८४२. सुदर्शनचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या-७१ । आकार-११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-१२४७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-माघ कृष्णा १२, रविवार, स० १६६१ ।

८४३. सुदर्शनचरित्र—मुनि नयनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार-१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" ।दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०५२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला २, बुधवार, स० १५७० ।

८४४. सुरपति कुमार चतुष्पदी—पं० मानसागर गणि । देशी कागज । पत्र सख्या-१४ । आकार-१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-२५९० । रचनाकाल-सं० १७२९ । लिपिकाल-सं० १७२९ ।

८४५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या-१६ । आकार-१०"×५$\frac{1}{4}$" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-११०२ । रचनाकाल-स० १७२९ । लिपिकाल-माघ शुक्ला १५, स० १८९९ ।

८४६ श्रीपाल चरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र सख्या-१९ । आकार-१२" × ५$\frac{3}{4}$" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५२० । रचनाकाल- × । लिपिकाल-माघ कृष्णा २, स० १८२७ ।

८४७. श्रीपालचरित्र—प० नरसेन । देशी कागज । पत्र संख्या- ४१ । आकार-१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल- × ।

८४८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–४७ । आकार–१०३/४"×४१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८४९. श्रीपालचरित्र–पं० रयधू । देशी कागज । पत्र संख्या–१११ । आकार–१२"×४" । दशा–प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन बुदी १०, सं० १५६५ ।

नोट–पोरवाल वंशीय श्री हरसिंह के पुत्र प० रयधु ग्वालियर निवासी १५वी शताब्दी के विद्वान हैं । बादशाह हुमायु के राज्य मे लिपि की गई है ।

८५०. श्रीपाल चरित्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–४९ । आकार—१११/२"×५१/४" । दशा–सुन्दर । । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, स० १९३६ ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति के सस्कृत चरित्र के आधार पर हिन्दी लिखी गई है । हिन्दीकार ने अपना नाम नही दिया है ।

८५१. श्रीपालरास—यश विजयगणि । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–१०१/४"×४३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१००४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भादवा बुदी ११, सं० १९३२ ।

८५२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–१०१/४"×४३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०९२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा ११, स० १९३२ ।

८५३. श्रेणिकचरित्र—शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–९४ । आकार–१०३/४"×५१/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७९४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १५, बुधवार, स० १८५४ ।

आदिभाग—

श्री वर्द्धमानमानद नौमि नानागुणाकर ।
विशुद्ध ध्यान दीप्ताच्चिहूर्तकर्म्म समुच्चय ॥ १ ॥

अन्तभाग—

जयतु जितविपक्षो मूलसघ सुपक्षो,
हरतु तिमिरभार भारती गच्छबार ।
नयतु सुगतमार्ग शासनं शुद्धवर्गं
जयतु शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दो मुनीन्द्र ॥ १७ ।
तदन्वये श्रीमुनिपद्मनन्दी विभाति भव्याकर–पद्मनन्दि ।
शोभाधिशाली वरपुष्पदन्त सुकांतिसभिन्न सुपुष्पदन्त ॥ १८ ॥
पुराण काव्यार्थ विदावरत्व विकाशयन्मुक्तिविदावरत्व ।
विभातु वीर. सकलाद्यकीर्ति. कृतापकेनो सकलाद्यकीर्तिः ॥ १९ ॥

भुवनकीर्ति यति. जयताच्चमी भुवनपूरितकीर्तिचय: सदा ।
भुवनबिम्बजिनागमकारणो भव नवाम्बुदवातभर: पर. ।। २० ।।

तत्पट्टोदयपर्वते रविरभूच भव्याम्बुजं भासयन् ।
सन्नेत्राग्रहरं तमो विघटयन्नानाकरै: भासुर: ।
भव्यानां सुगतश्च विग्रहमत: श्रीज्ञानभूष. सदा
चित्र चद्रकसगत: शुभकर: श्रीवर्द्धमानोदय. ।। २१ ।।

जगति विजयकीर्ति: पुण्यमूर्ति: सुकीर्ति: जयतु च मतिराजो भूमिपै. स्पृष्टपाद: ।
नय नलिन हिमांशुर्ज्ञानभूषस्य पट्टे विविध-परविवादिक्ष्माधरे वज्रपात. ।। २२ ।।

तच्छिष्येण शुभेन्दुना शुभमन: श्रीज्ञानभावेन वै पूतं पुण्यपुराण मानुषभवससार विध्वसक: ।
नो कीर्त्या व्यरचि प्रमोहवशतो जैने मते केवल नाहकारवशात्कवित्तमदत: श्रीपद्मनाभेहित ।। २३ ।।

इद चरित्रं पठत: शिवं वै श्रोतुश्च पद्मे श्वरवत्पवित्रं ।
भविष्णु ससारसुख नृदेव सभुज्य सम्यक्त्व फलप्रदीप ।। २४ ।।

चन्द्रार्क हेमगिरीसागर भूविमान गंगानदीगमनसिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठंति यावदभितो वरमर्त्यसेवास्तिष्ठतु कोविदमनोम्बुजमध्यभूता: ।।२५।।

इति श्रीश्रेणिकभवानुबद्ध-भविष्यत्पद्मनाभपुराणे पचकल्याणवर्णन नाम पचदश: पर्व: ।। १५ ।।

८५४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या-१२४ । आकार-११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या-१०८१ रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

८५५. श्रेणिकचरित्र-× । देशी कागज । पत्र सख्या-२२ । आकार-१२"×६$\frac{3}{4}$" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५०४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट—केवल चार सर्ग ही हैं ।

८५६. श्रेणिक महाराज चरित्र-अभयकुमार । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार-१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रथ सख्या-१४६२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला १५, शुक्रवार, सं० १६६५ ।

८५७. हनुमच्चरित्र ब्रह्मजित । देशी कागज । पत्र सख्या-७८ । आकार-११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-१७६३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-पौष शुक्ला ८, रविवार, सं० १६७५ ।

८५८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या-७४ । आकार-११"×५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या-१०८७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आश्विन कृष्णा ७, बुधवार, सं० १६४४ ।

८५९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-७४ । आकार-१०$\frac{1}{2}$"×५" ।

दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११०७ । रचनाकाल–X । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, स० १६४६ ।

८६०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–८७ । आकार–११½"X५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२५६ । रचनाकाल–X । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १५८३ ।

८६१. प्रति संख्या ५ । देशी–कागज । पत्र संख्या–८१ । आकार–११"X४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२५२ । रचनाकाल–X । लिपिकाल–स० १६६१ ।

८६२. होलरेणुका चरित्र—पं० जिनदास । देशी कागज । पत्र सख्या–४६ । आकार–१०½"X५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५७३ । रचनाकाल–X । लिपिकाल–X ।

८६३. हंसराज बैछराज चौपई – जिनोदय सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–१०½"X४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२८०७ । रचनाकाल–X । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ६, शुक्रवार, स० १७६६ ।

८६४. त्रिषष्टि पर्वाणिस्य विरावली चरित्र – हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१५४ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०३४ । रचनाकाल–X । लिपिकाल–X ।

नोट—ग्रन्थाग्र० स० ३५०० है । गुणसुन्दर के पढने के लिए लिपि की गई, ग्रन्थ १३ सर्गों में विभक्त है ।

विषय—सचित्र ग्रन्थ

८६५. **अढाई द्वीप चित्र**—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार- ३३½"×३३½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२२२०। रचनाकाल–×।

विशेष—अढाई द्वीप का रगीन चित्र कपड़े पर बना हुआ है।

८६६ **अढाई द्वीप चित्र**—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार- ४२½ × ४२½। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत और हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय- अढाई द्वीप चित्र। ग्रन्थ सख्या—२२१६। रचनाकाल–चैत्र शुक्ला ५, बृहस्पतिवार, सं० १८०१ को श्री गुणचन्द्र मुनि ने पद्मपुरा मे लिखा।

विशेष—वस्त्र में छिद्र हो जाने पर भी अक्षरो को कोई क्षति नहीं हुई है। हाथ से किया हुआ रगीन चित्र बहुत सुन्दर है।

८६७ **अढाई द्वीप चित्र**— ×। वस्त्र पर। पत्र सख्या–१। आकार—३७"×३७"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२०८। रचनाकाल—×।

८६८. **अरहनाथ जी चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या- १। आकार–३¼"× २¼। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२२०१। रचनाकाल—×।

विशेष—चित्र श्वेताम्बराम्नायानुसार बना हुआ है।

८६९ **कुन्थनाथ जी का चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—३¾"×"३। दशा—अच्छी। पूर्ण। विषय–कुन्थनाथ तीर्थ कर चित्र। ग्रन्थ संख्या—२१९७। रचनाकाल— ×।

८७० **गणेश चित्र**— ×। देशी कागज। पत्र संख्या- १। आकार—८"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या—२१६७। रचनाकाल— ×।

विशेष—गणेश का अतीव सुन्दर रंगीन चित्र कागज पर बना हुआ है, जिसमें एक स्त्री गणेश जी के समक्ष खडी हुई प्रार्थना कर रही है।

८७१. **गणेश चित्र**— ×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—८¾"×४¾"। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या—२१८९। रचनाकाल—×।

८७२ **गणेश व सरस्वती चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—८"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२१६८। रचनाकाल—×।

विशेष—गणेश के चित्र के समक्ष सरस्वती हंस के वाहन सहित है। यह चित्र कागज पर चित्राङ्कित है। सिंहासन के नीचे चुहा भी चित्राङ्कित किया गया है।

८७३. **गायक का चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६¾"×३½"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या—२१८५। रचनाकाल×।

विशेष—बहुत ही पतले कागज पर हाथ का बना हुआ रगीन चित्र है।

८७४. **चतुर्विंशति तीर्थ कर चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार—५$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या—२१७६। रचनाकाल—×।

विशेष—यह चित्र श्वेताम्बर आम्नायानुसार बना हुआ है।

८७५ **चतुर्विंशति तीर्थ कर चित्र**—×। देशी कागज। पत्र सख्या—१। आकार—२"×१$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२२०२। रचनाकाल—×।

८७६ **चन्द्रप्रभ चित्र**—×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–६$\frac{1}{2}$"×७$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२२०३। रचनाकाल–×।

विशेष—चित्र श्वेताम्बर आम्नायानुसार है।

८७७ **चन्द्रप्रभ चित्र**—×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–४$\frac{1}{4}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२१६४। रचनाकाल–×।

८७८ **चन्द्रप्रभ चित्र**। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–६"×४"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२१८२। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार हाथ का बना हुआ रगीन चित्र है।

८७९. **जम्बूद्वीप चित्र**–×। वस्त्र पर। पत्र सख्या–१। आकार–२५$\frac{1}{2}$"×२५$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२११३। रचनाकाल—×।

विशेष—जम्बूद्वीप का कपडे पर रगीन चित्र है, चित्र मे सुनहरी काम अतीव सुन्दर मनोहारी लगता है।

८८० **जम्बूद्वीप चित्र**—×। वस्त्र पर। पत्र सख्या–१। आकार–३१$\frac{1}{2}$"×२७"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२२०५। रचनाकाल–×।

८८१. **तीन लोक का चित्र**—×। वस्त्र पर। पत्र सख्या–१। आकार–३१"×१६$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२२१२। रचनाकाल ×।

८८२. **तीन लोक का चित्र**—×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२८१४। रचनाकाल–×।

८८३. **दुर्गादेवी चित्र**—×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२१७७। रचनाकाल–×।

विशेष—सिंह पर बैठी हुई दुर्गादेवी के आगे वीर भेरी बजा रहा है तथा पिछे की तरफ हाथ में छत्र लिये हुए दूसरा वीर खडा है। पतले कागज पर हाथ का बना हुआ अतीव सुन्दर चित्र है।

८८४. **दुर्गादेवी चित्र**—×। देशी कागज। पत्र सख्या—१। आकार–६$\frac{1}{2}$"×४"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२१८४। रचनाकाल–×।

विशेष—सिंह पर बैठी हुई देवी के समक्ष, योद्धा देवी को रोकते हुए रंगीन चित्र द्वारा बताये गये हैं।

८८५. **दुर्गा का चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१०½"×५¾"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१६२। रचनाकाल–×।

८८६ **द्वादश भुजा हनुमत् चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१३"×१३"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२२३५। रचनाकाल–×।

८८७. **नरकों के पाथड़ों का चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार–२६½"×२३½"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२१५। रचनाकाल–×।

विशेष—कपड़े पर सातों नरको के पाथड़ों का सुन्दर चित्रण किया हुआ है।

८८८. **नेमिनाथ चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–५½"×५½"। दशा-सुन्दर। ग्रन्थ संख्या–२१७५। रचनाकाल–×।

८८९. **नेमिनाथ चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६¾"×४"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८१। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार कागज पर हाथ का बना हुआ नेमिनाथ का सुन्दर चित्र है।

८९० **नेमिनाथ चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–३½"×२½"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९९। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार बना हुआ चित्र है।

८९१. **पद्मप्रभू चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–५¾"×४½"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८०। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर मतानुसार बना हुआ कागज पर रंगीन चित्र है।

८९२. **पद्मावती देवी व पार्श्वनाथ का चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०¾"×५½"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७३। रचनाकाल–×।

विशेष—कागज पर हाथ का बना हुआ सुन्दर रंगीन चित्र है।

८९३. **पार्श्वनाथ चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१२"×५¾"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९०। रचनाकाल–×।

विशेष—चित्र में पार्श्वनाथ स्वामी के दाहिनी ओर श्री ऋषभनाथ और सम्भवनाथ का चित्र है। बाईं ओर श्री नेमिनाथ और महावीर स्वामी का चित्र है।

८९४ **पार्श्वनाथ चित्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–४½"×२¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९६। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर मतानुसार चित्र है।

८६५. **पार्श्वनाथ का चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–६″×४″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१८३ । रचनाकाल–× ।

विशेष—कागज पर हाथ का बना हुआ मनोहारी चित्र है ।

८६६ **पार्श्वनाथ का चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–५$\frac{3}{4}$″×३$\frac{1}{2}$″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१८६ । रचनाकाल–× ।

८६७ **पार्श्वनाथ व पद्मावती का चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–६$\frac{1}{2}$″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१७४ । रचनाकाल–× ।

८६८ **पार्श्वनाथ व पद्मावती देवी का चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–८$\frac{1}{2}$″×५″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१७२ । रचनाकाल–× ।

८६९. **पुष्पदन्त चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–४$\frac{1}{4}$″×४″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१६५ । रचनाकाल–× ।

विशेष—श्वेताम्बर मतानुसार रंगीन चित्र है ।

९०० **पुष्पदन्त चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–५$\frac{1}{2}$″×५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१७६ । रचनाकाल–× ।

९०१. **भरत क्षेत्र विस्तार चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११$\frac{1}{2}$″×५″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८२० । रचनाकाल–× ।

९०२. **भैरव चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–८″×६″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१७१ । रचनाकाल–× ।

विशेष—भैरव जी का चित्र, विशाल नरमुण्डी व खाण्डा हाथ मे लिए हुये है ।

९०३ **महावीरस्वामी चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–५″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१७८ । रचनाकाल–× ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार कागज पर रंगीन चित्र अतीव सुन्दर बना हुआ है ।

९०४ **महावीरस्वामी चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–६$\frac{3}{4}$″×५$\frac{1}{2}$″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१६१ । रचनाकाल–× ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय के अनुसार चित्र है ।

९०५. **वृहद् कलिकुण्ड चित्र**—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–२३$\frac{3}{4}$″×२३$\frac{1}{2}$″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२०९ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १६०७ ।

विशेष—कपड़े पर बने हुए इस चित्र में ९ कोठे हैं ।

९०६ **वासुपूज्य चित्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–३$\frac{1}{4}$″×२$\frac{1}{2}$″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२२०० । रचनाकाल–× ।

विशेष—चित्र श्वेताम्बर आम्नायानुसार है।

९०७. शीतलनाथ चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–३½"× २½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१६८। रचनाकाल–×।

विशेष—चित्र श्वेताम्बर मतानुसार है।

९०८. श्रीकृष्ण का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६"×४"। दशा–प्राचीन। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१६३। रचनाकाल–×।

विशेष—केवल खाका बना हुआ है।

९०९. श्रीकृष्ण चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६½"×३¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१८७। रचनाकाल–×।

विशेष—पतले कागज पर हाथ का बना हुआ रंगीन चित्र है, साथ ही नीचे श्रीकृष्ण की संस्कृत में स्तुति भी दी गई है।

९१० सरस्वती चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–४¾"×३¾"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८८। रचनाकाल–×।

विशेष—चित्र में हंस पर एक बैठी हुई देवी का चित्र है और समक्ष मे एक स्त्री प्रार्थना करती हुई चित्रित है।

९११ सामुद्रिक विचार चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–२१½"×११¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–२२२४। रचनाकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं० १८७०।

विशेष—स्त्री और पुरुष के हाथ व पैर का चित्र अंकित है। १८७० ज्येष्ठ कृष्णा ३, इस चित्र पर लिखा हुआ है। ''आचर्यश्री रामकीर्ति छात्र रामचन्द्रस्यमिद पत्रम्,'' हाथ व पैर के चित्रो मे चित्राङ्कित है।

९१२ हनुमान चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–८"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१६६। रचनाकाल–×।

विशेष—हनुमान जी का रंगीन चित्र जिसके एक हाथ में गदा तथा दूसरे हाथ मे नर मुण्ड है। चित्र हाथ का बनाया हुआ है और अतीव सुन्दर लगता है।

९१३. हनुमान चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–८"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१६६। रचनाकाल–×।

विशेष—कागज के सुन्दर बने हुए चित्र मे हनुमान जी को पहाड़ ले जाते हुए चित्रित किया गया है।

९१४. हनुमान चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–८"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७०। रचनाकाल–×।

विशेष—कागज पर हाथ से बने हुए चित्र में हनुमानजी हाथ मे गदा तथा कुत्ते की मुण्डि लिए हुए हैं।

९१५. **ज्ञानचौपड़**—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या-१। आकार-३५″×२६$\frac{1}{2}$″। दशा-सुन्दर। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२२२६। रचनाकाल-×।

९१६ **ज्ञानचौपड़**—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या-१। आकार-२२″ × २१$\frac{1}{4}$″। दशा-सुन्दर। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२२२८। रचनाकाल-स० १८९२।

विषय—छन्द शास्त्र एवं अलंकार

९१७ कुवीप भाषा—कुंवर मुखानीदास। देशी कागज । पत्र संख्या—९। आकार—९½″×४¼″। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ सख्या— २०५८। रचनाकाल—भाद्रपद शुक्ला २, बृहस्पतिवार, सं० १७७२। लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ३, स० १८१८।

९१८. छन्द रत्नावली—हरिराम । देशी कागज । पत्र संख्या—१४। आकार—१०¼″×५″। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ सख्या—२५४०। रचनाकाल—×। लिपिकाल—बैशाख शुक्ला ६, सं० १८३४।

९१९. छन्द शतक—हर्षकीर्ति सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या—१७। आकार—९½″×४″। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—अपभ्रंश। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ सख्या—१४६१। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

९२० छन्द शास्त्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—३। आकार—८½″×४½″। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—सस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—१४८५। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—×।

९२१ छन्दसार—नारायण दास। देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार—१०¼″×५″। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ सख्या—१६५५। रचनाकाल—भाद्रपद कृष्णा १४, बृहस्पतिवार, स० १८२१। लिपिकाल—×।

९२२. छन्दोमजंरी—गंगादास। देशी कागज। पत्र संख्या—१४। आकार—१०½″×४″। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—प्राकृत और सस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ सख्या—२५८१। रचनाकाल—×। लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ११, स० १८४९।

९२३ छन्दोवंतस—×। देशी कागज। पत्र सख्या—१२। आकार—१०¼″×४½″। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ सख्या—२२५४। रचनाकाल—×। लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा १०, बृहस्पतिवार, स० १७८४।

९२४ पार्श्वनाथजी री वेशान्तरी छन्द—×। देशी कागज। पत्र संख्या—५। आकार—९½″×४¼″। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—२१५३। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—सं० १८६८।

विशेष—कवि ने अपना नाम न लिख कर कविराज लिखा है। आगे कवि ने लिखा है कि मैंने कालिदास कवि जैसे छन्दों की रचना की है।

९२५. पिंगल छन्दशास्त्र—पुहुप सहाय (पुष्प सहाय)। देशी कागज। पत्र संख्या—९। आकार—१०¼″×४¼″। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—[illegible]। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—१७११। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १७४६।

९२६. **प्रति संख्या २।** देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–१०" × ४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३१६। रचनाकला– ×। लिपिकाल– ×। सं० १६३६।

९२७. **पिङ्गल रूप दीपक—जयकिशन।** देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–८$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–२४६३। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला २, सं० १७७२। लिपिकाल–सं० १८८२।

९२८. **प्रस्तार वर्णन—हर्षकीर्ति सूरि।** देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–२४२७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

९२९. **भाषा भूषण—महाराजा जसवन्त सिंह।** देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–१०" × ४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। विषय–अलंकार शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–११०४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

९३०. **वृत रत्नाकर—केदारनाथ भट्ट।** देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१६६४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, मंगलवार, सं० १६६०।

९३१. **प्रति संख्या २।** देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–११$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९६१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १५, बृहस्पतिवार, सं० १५२६।

९३२. **प्रति संख्या ३।** देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११$\frac{3}{4}$" × ५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१३८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

९३३. **प्रति संख्या ४।** देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७६३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १८११।

९३४. **प्रति संख्या ५।** देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०" × ४$\frac{1}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३८७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

९३५. **वृत रत्नाकर सटीक—पं० केदार का पुत्र राम।** देशी कागज। पत्र संख्या–७३। आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–२६४६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

९३६. **वृतरत्नाकर सटीक—केदारनाथ भट्ट। टीकाकार—समयसुन्दर उपाध्याय।** देशी कागज। पत्र संख्या–२७। आकार–१२" × ५$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत।

लिपि–नागरी । विषय–छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१२२८ । रचनाकाल–× । टीका का काल–सं० १६६१ । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १३, शुक्रवार, स० १७६२ ।

६३७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२४ । आकार–१०½"×५½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०६४ । रचनाकाल–× । टीकाकाल–स० १६६१ । लिपिकाल–× ।

६३८. वृतरत्नाकर सटीक—केदारनाथ भट्ट । टीका—कवि सुल्हण । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । आकार–१०¼"×४¼" । दशा– अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७२४ । रचनाकाल–× । टीका काल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ३, स० १८७५ ।

६३९ वाग्भट्टालंकार—वाग्भट्ट । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–१०"× ४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अलकार शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१४६४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६४०. प्रति संख्या २ । । देशी कागज । पत्र सख्या–१८ । आकार–½"×४१०¾" । दशा–जीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

६४१ विदग्ध मुखमण्डल—धर्मदास । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–११¾"×६" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अलंकार शास्त्र । ग्रन्थ सख्या–१८२५ । रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला २, सं० १८३६ ।

६४२. श्रुतबोध—कालिदास । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०"× ४¾" । दशा–जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–छन्द शास्त्र । ग्रन्थ सख्या–११४८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष कृष्णा १४ सं० १६३६ ।

६४३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६२७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

६४४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०¼" × ५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

६४५. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार– १०" × ४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–प्रथम श्रावण कृष्णा ६, रविवार, सं० १७१४ ।

६४६. प्रति सख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०¾"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष कृष्णा ६, सं० १८४२ ।

६४७. श्रुतबोध सटीक—पुजर । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०½×

४¾ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६३४ । रचना-काल–X । लिपिकाल–X ।

१४८. श्रुतबोध सटीक–X । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०¼″×४¾″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१६० । रचना काल–X । लिपिकाल–पौष कृष्णा ५, स० १७७२ ।

विषय—ज्योतिष

९४९. अध्यात्म तरंगिणी—सोमदेव शर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–११"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–ज्योतिष । ग्रन्थ सख्या–१७५१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा १४, बृहस्पतिवार, सं० १८०७ ।

९५० अरिष्टफल–× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि – नागरी । विषय–ज्योतिष । ग्रन्थ सख्या–१४७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९५१. अवयड़ केवली । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या–२८१५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

९५२. अंग कूरकरण शास्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–ज्योतिष । ग्रन्थ सख्या–१३२२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९५३. आराधना कथा कोष—मुनि सिंहनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या–३४ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । अपूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि- नागरी । विषय–ज्योतिष । ग्रन्थ सख्या–२८४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९५४. कालज्ञान – महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या–२१०२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ८, रविवार, सं० १७११ ।

९५५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०७१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९५६ कालज्ञान—लक्ष्मी वल्लभ गणि । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–ज्योतिष । ग्रन्थ सख्या–१७९२ । । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

९५७. गणित नाममाला—हरिदत्त शर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या–१९६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १७७९ ।

९५८. गर्भिण्यादि प्रश्न विचार—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८३१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९५९ गुरुवार—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३९८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६० ग्रह दृष्टि वर्णन—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६१. ग्रह दीपक—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१११ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६२. ग्रह शान्ति विधि (हवनपद्धति)—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३२ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६३. ग्रह शान्ति विधान—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–होम विधान । ग्रन्थ संख्या–१९९९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ८, सं० १९१९ ।

९६४ ग्रहायु प्रमाण–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४५४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६५. गौरख यन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या- १ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९२१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६६. चन्द्र सूर्य कालानल चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७२३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६७. चमत्कार चिन्तामणि—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–९$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६८. चमत्कार चिन्तामणि–स्वानपाल द्विज । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४९६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १, सं० १८५८ ।

९६९. चौघड़िया चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९"×" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५९० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६७०. **जन्म कुण्डली विचार**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११½" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७१. **जन्म पत्रिका**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०" × ४½" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५०० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७२. **जन्मपत्री पद्धति–हर्षकीर्ति द्वारा संकलित** । देशी कागज । पत्र संख्या–३४ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८२३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १३, शनिवार, सं० १७७२ ।

६७३. **जन्मफल विचार**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–७½" × ४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७४. **जन्म पद्धति** — × । देशी कागज । पत्र संख्या–६३ । आकार–६" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८३७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—इसमे जन्म पत्रिका बनाने की विधि को सरल तरीके से समझाया गया है ।

६७५. **जातक—दण्डिराज दैवज्ञ**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४६ । आकार–१२" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११८२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७६ **जातक प्रदीप–सांवला** । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–१०" × ४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–गुजराती मिश्रित हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७७. **ज्योतिष चक्र—हेम प्रभसूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–६७ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

६७८. **ज्योतिष रत्नमाला—श्रीपति** । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, स० १६८५ ।

विशेष—पत्र संख्या १ से १८ तक तो ज्योतिष रत्नमाला ग्रन्थ है और उसके पश्चात् २१ तक श्री भाष्कराचित्त ग्रहागम कुतुहल श्री विदग्ध बुद्धि वल्लभ कृत ग्रन्थ लिखा गया है ।

६७६. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–३८ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२५० । रचनाकाल–स० १५७३ । लिपिकाल– × ।

६८०. ज्योतिषसार—नारचन्द्र । देशी कागज । पत्र सख्या–६० । आकार–$६\frac{1}{2}'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–११०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अधिक मास अश्विन शुक्ला १५, सोमवार, स० १८७६ ।

६८१. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२३ । आकार–$१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

६८२. प्रति सख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–३१ । आकार–$१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२८५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६८३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–४४ । आकार–$१०'' \times ३\frac{3}{4}''$ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२२० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ६, मगलवार, स० १७६३ ।

नोट—पत्रो के कोणे जीर्ण हो गये हैं ।

६८४ प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र सख्या–२५ । आकार–$६\frac{3}{4}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१७८४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६८५ प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र सख्या–२५ । आकार–$१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{1}{2}''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१५५८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६८६ प्रति सख्या ७ । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–$११'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ६, स० १७८८ ।

६८७. ज्योतिषसार भाषा–कवि कृपाराम । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । आकार–$१०\frac{3}{4}'' \times ५\frac{1}{4}''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२५८७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगसिर कृष्णा १४, स० १८८५ ।

६८८ ज्योतिषसार टिप्पण—प० नारचन्द । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–$८\frac{3}{4}'' \times ५\frac{1}{2}''$ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२८४७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६८९. ज्योतिषसार (सटीक)—नारचन्द । टीकाकार—भुजोदित्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । आकार–$१०\frac{1}{2}'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १, स० १८३७ ।

६९० टीपणं री पाटी—× । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–$६\frac{3}{4}'' \times ४\frac{3}{4}''$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५४७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा १२, स० १९३३ ।

६९१ ताजिक नीलकण्ठी—पं० नीलकण्ठ । देशी कागज । पत्र सख्या–२२ । आकार–

१०$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८०२ । रचनाकाल–सं० १६६४ । लिपिकाल–× ।

९९२. ताजिक पद्मकोश—पद्मकोश । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०७३ । रचनाकाल–सं० १६२३ । लिपिकाल–माघ शुक्ला ७, सं० १८५३ ।

९९३. ताजिक रत्नकोश— × । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२४८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला २, सं० १८४४ ।

विशेष—इस ग्रन्थ का अपर नाम पद्मकोष भी है ।

९९४ दशान्तर दशा फलाफल— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–११" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १०, बृहस्पतिवार, सं० १८४१ ।

९९५ द्वादशराशी फल— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

९९६ द्वि घटिक विचार—पं० शिवा । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११" × ५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १, बृहस्पतिवार, सं० १८९८ ।

९९७. दिनमान पत्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ५, सं० १८५१ ।

९९८ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

९९९ दिन रात्रि मान पत्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११$\frac{3}{4}$" × ५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०७८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०००. दुघड़िया विचार–पं० शिवा । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११" × ५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८३३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१००१. नवग्रह फल— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१२$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या—१९२२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१००२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–९$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–

अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७७३ । रचनाकाल–× । लिपि–काल–× ।

१००३ **नवग्रह स्तोत्र व दान**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०½″×४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५५५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१००४ **नारद संहिता**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–८¾″×३½″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१५१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१००५. **पंचाग विधि**— × । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार–१२″×५¾″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२५१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१००६. **पल्य विचार—वंसतराज** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–६¼″×४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५१५ । रचना॰काल–× । लिपिकाल– × ।

१००७ **प्रश्नसार—हयग्रीव** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–११½″×६″ । दशा–जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७०० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ३, स० १८८६ ।

१००८ **प्रश्नसार संग्रह** । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१२″×५¾″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६१६ । रचना–काल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ६, स० १८६८ ।

१००९ **प्रश्नावली - जिनवल्लभ सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार—११″×४¾″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४३७ । रचना-काल–× । लिपिकाल–× ।

१०१० **ब्रह्म प्रदीप—पं० काशीनाथ** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार—१०″×४¼″ । दशा- जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८८४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा ४, स १६८२ ।

१०११ **माडली पुराण —माडली ऋषि** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०″×४½″ । दशा–जीर्णशीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०१२ **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०″×४½″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६१७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०१३ **भुवन दीपक-पद्म प्रभसूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१०½″×५½″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०१४. माघ लग्न फल— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार—११″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०१५. मुहूर्त चिन्तामणि—दैवज्ञराम । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७३० । रचनाकाल – × । लिपिकाल– × ।

१०१६. मुहूर्त चिन्तामणि सटीक– दैवज्ञराम । टीकाकार-नारायण । देशी कागज । पत्र संख्या–९५ । आकार–१३$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९८३ । रचनाकाल– × । टीकाकाल-सं० १६२६ । लिपिकाल– सं० १९३१ ।

१०१७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१५७ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″ × ५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—इस ग्रन्थ की टीका सं० १६५७ गीरीश नगर (अब वाराणसी) में होना बताया गया है ।

१०१८ मुहूर्त मुक्तावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–९$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५१८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा १, सं० १८५२ ।

१०१९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१०″ × ५″ । दशा–प्राचीन । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१५५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०२०. मेघवर्षा— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०२१. मेदनीपुर का लग्न पत्र– × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०७७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०२२. योगसार ग्रहफल— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–७″ × ६″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ५, सोमवार, सं० १९०७ ।

१०२३. रमल शकुनावली । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा १, सं० १८४४ ।

१०२४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१२$\frac{1}{2}$″ × ६$\frac{1}{2}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६३९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ९, सोमवार, सं० १८७० ।

१०२५. रमल शास्त्र—पं० चिन्तामणि । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–६½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–६½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२७. राशि नक्षत्र फल—महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२८. राशि फल—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार—८¾"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२९. राशि लाभ व्यय चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार—६½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५८४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३०. राशि संक्रान्ति—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६३३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १८४४ ।

१०३१ लग्न चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१२¾"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८१३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३२. लग्नचन्द्रिका—काशीनाथ । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार–९"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६०३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला २, बृहस्पतिवार, स० १८४१ ।

१०३३ लग्न प्रमाण - × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८३७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३४. लग्नादि वर्णन—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३५. लग्नाक्षत फल—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–७½"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७१६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३६. लघु जातक (सटीक)—भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार—१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—१०७४ । रचनाकाल –× । लिपिकाल— स० १८३५ ।

१०३८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१८२१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार—६"×४$\frac{3}{4}$" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ३, रविवार, सं० १८१६ ।

१०४०. लघु जातक भाषा—कृपाराम । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–११"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—ज्योतिष सार नामक सस्कृत ग्रन्थ का ही हिन्दी ग्रन्थ नाम लघु जातक रखकर कर्ता ने लिखा है ।

१०४१. लीलावती भाषा—लालचन्द । देशी कागज । पत्र सख्या–१५ । आकार—१२"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगसिर कृष्णा १, बृहस्पतिवार, स० १७६८ ।

विशेष—भाषाकार ने उस समय के राजादि का पूर्ण वर्णन किया है । ग्रन्थ इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

१०४२. लीलावती सटीक –भास्कराचार्य । **टीकाकार–गंगाधर** । देशी कागज । पत्र सख्या–६७ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२५६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०४३. वर्ष कुण्डली विचार–× । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२१४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०४४. वर्ष फलाफल चक्र – × । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ७, स० १८४६ ।

१०४५. बृहद जातक (सटीक)—वराहमिहिराचार्य । **टीकाकार–भट्टोत्पल** । देशी कागज । पत्र सख्या–१७२ । आकार–१३$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६८४ । रचनाकाल–× । टीकाकाल–चैत्र शुक्ला ५, बृहस्पतिवार, स० १०२३ । लिपिकाल–स० १६४२ ।

१०४६. विविन्नमणि श्रंक— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–६″ × ४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७८७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ४, मंगलवार सं० १७७३ ।

१०४७ विपरीत ग्रहण प्रकरण । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०½″ × ४½″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०४८. विवाह पटल— × । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०″ × ४½″ । दशा–प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५०१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १, सं० १७८१ ।

१०४९. विवाह पटल—श्रीराम मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–११″ × ४″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६११ । रचनाकाल–अश्विन कृष्णा २, बुधवार, सं० १७२० । लिपिकाल– × ।

१०५०. विवाह पटल (भाषा)–पं० रूपचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०½″ × ४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०५१. विवाह पटल सार्थ— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–७¾″ × ४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४१५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, सं० १८१७ ।

१०५२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०″ × ३¾″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२२५० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०५३. शकुन रत्नावली– × । देशी कागज । पत्र संख्या -१३ से ३२ । आकार–१०″ × ४¾″ । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८५२ । रचनाकाल – × । लिपिकाल– × ।

१०५४. शकुन शास्त्र—भगवद् भाषित । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार—१०″ × ४½″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १०, सं० १८१७ ।

नोट—सुपारी रखकर देखने से विचारे हुए प्रश्न का फल ज्ञात होता है । इसके लिये इस ग्रन्थ का पत्र ७ और ८ देखें ।

१०५५. शकुनावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–८½″ × ४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८२३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०५६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०½″ × ४½″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०५७. शीघ्र बोध (सटीक)—काशीनाथ भट्टाचार्य । टीका-श्रीतिलक । देशी कागज । पत्र संख्या—६१ । आकार—१०½" × ६¾" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६८१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ५, सं० १६१७ ।

१०५८. शीघ्रबोध—काशीनाथ भट्टाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । आकार—११¾" × ५½" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८१० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०५९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । आकार—१०" × ५½" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११४२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०६०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—६¾" × ४½" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३३१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—श्रावण कृष्णा ७, सं० १६०६ ।

१०६१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—६" × ४½" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३३२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०६२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—१५ । आकार—१२¼" × ५¾" । दशा—अच्छी पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१५२१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०६३. शीघ्रबोध सार्थ—× । देशी कागज । पत्र संख्या—५३ । आकार—१०¾" × ५¼" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४८६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला ५, रविवार, सं० १८६० ।

१०६४. शुक्रोदय फल—× । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१०¼" × ४¼" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६७८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०६५. षट् पंचाशिका—भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—११¾" × ५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८४५ । रचनाकाल—लिपिकाल—× ।

१०६६. प्रति संख्या २ । । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—१०" × ४¼" दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०६७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार—१०¾" × ५¼" । अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१८३० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—श्रावण कृष्णा ५, बृहस्पतिवार सं० १८८५ ।

१०६८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—१०½" × ४¼" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४३० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

१०६९. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२११० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०७०. सट् पंचासिका—वराहमिहिराचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–१०" × ४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२२४७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा २, स० १७९० ।

१०७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६४२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०७२. षट् पंचासिक सटीक— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०$\frac{3}{4}$" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२१२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०७३. षट् पंचासिका सटीक--वराहमिहिराचार्य । टीकाकार–भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र सख्या–२७ । आकार–१०$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३५३ । रचना टीकाकाल–स० ९०० । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १५, बुधवार, स० १८७७ ।

विशेष—टीका का नाम "प्रश्नसागरोत्तरणोत्पल" है ।

१०७४. षोडषयोग— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१२" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । अपूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । । ग्रन्थ सख्या–२८४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०७५. स्वरोदय-- × । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–११$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८४७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०७६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१२$\frac{1}{4}$" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१७०२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १८९९ ।

१०७७ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–११$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१९९८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०७८. प्रति सख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२८३३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल— × ।

१०७९. स्वप्न विचार— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—स्वप्न मे देखी हुई वस्तुओं का फल का वर्णन वर्णित है ।

१०८०. स्वप्नाध्याय–× । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–९½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२८१६ । रचनाकाल– × । लिपि-काल–श्रावण शुक्ला ७, गुरुवार, स० १७८३ ।

१०८१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१७½" × ६½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२८३७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १७३५ ।

विशेष – ग्रन्थ की अ'बावती नगर मे लिपि की गई ।

१०८२. साठी संवत्सरी—× । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६८८ । रचनाकाल–× । लिपि-काल—× ।

१०८३ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–११½"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५३६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—× ।

१०८४ सामुद्रिकशास्त्र –× । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–१०"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०८६ प्रति सख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–१०" × ४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण ।ग्रन्थ सख्या–२४७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१०८७ सारणी—× । देशी कागज । पत्र सख्या–१२ । आकार–११½" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०८८. सारणी—× । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०" × ४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६२७ । रचनाकाल– × । लिपि-काल– × ।

१०८९ सारणी— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–९½"× ४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४२८ । रचनाकाल–× । लिपि-काल– × ।

१०९०. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०" × ४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१६२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०९१. सारणी— × । देशी कागज । पत्र सख्या १३७ । आकार–११" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१००२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, मगलवार, स० १८४६ ।

१०९२. सूर्य ग्रह घात—पं० सूर्य । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–९" ×

४ १/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१०६३. संवत्सर फल—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–११" × ४ ३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, स० १७८८ ।

विशेष—इस ग्रन्थ की लिपि डेहू नामक ग्राम मे की गई ।

१०६४ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१३" × ६ १/२" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०६५. होरा चक्र—× । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१२" × ५ ३/४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१०६६. त्रिपता चक्र—× । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१० १/४" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५५३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१०६७ ज्ञान प्रकाशित दीपार्णव–×। देशी कागज । पत्र सख्या–४४ । आकार–११" × ५ १/४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× । कार्तिक कृष्णा १४, स० १६३० ।

१०६८ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–४१ । आकार–११" × ५ १/४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१५७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

— —

विषय—न्याय शास्त्र

१०९९. अष्ट सहस्त्री—विद्यानन्दि । देशी कागज । पत्र सख्या—२४५ । आकार—११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—न्याय शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१३८० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पौष प्रतिपदा, बुधवार, सं० १६७४ ।

११००. आख्या वन्तवाद—× । देशी कागज । पत्र सख्या—३ । आकार—१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—न्याय शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१७९९ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११०१ आप्तमीमांसा वचनिका—समन्तभद्राचार्य । टीकाकार—जयचन्द । देशी कागज । पत्र सख्या—७२ । आकार—११$\frac{1}{4}$"×५" । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—सस्कृत, टीका हिन्दी मे । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या—१८७० । रचनाकाल— × । टीकाकाल-चैत्र कृष्णा १४, सं० १८६६ । लिपिकाल— × ।

११०२ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या—५८ । आकार—१२$\frac{1}{4}$"×६$\frac{1}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२६४७ । वचनिका का रचनाकाल—चैत्र कृष्णा १४,स० १८६६ । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १०, रविवार, सं० १८९४ ।

११०३. आलाप पद्धति—पं० देवसेन । देशी कागज । पत्र सख्या—१० । आकार—१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५३१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ७, स० १७१५ ।

११०४. प्रति संख्या २ । । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— १२$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६०९ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

११०५ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—१०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{4}$" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२४२३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—× ।

११०६ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या—७ । आकार—१२$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३३४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल— × ।

११०७. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र सख्या—९ । आकार—१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५९९ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ६, मंगलवार सं० १५६८ ।

११०८. ईश्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र—अभिनव गुप्ताचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—५३ । आकार—१३"×७$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—न्याय । ग्रन्थ सख्या—१६८८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११०९. गरुडोपनिषद्—हरिहर ब्रह्म । देशी कागज । पत्र सख्या—२ । आकार—

११३/४″ × ५१/२″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं० १८६४।

१११०. गुणस्थान स्वरूप—रत्नशेखर सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०″ × ४१/२″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१६२७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–द्वितीय श्रावण शुक्ला ५, स० १८१८।

११११. चतुर्दश गुणस्थान––×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–१२१/२″ × ४१/२″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१५४६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१११२ जीव चौपई—पं० दौलतराम। देशी कागज। पत्र सख्या–३। आकार–६″ × ४१/३″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१४३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१११३. तर्क परिभाषा—केशव मिश्र। देशी कागज। पत्र सख्या–१५। आकार–१०१/३″ × ४१/२″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२३७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा ५, मंगलवार, स० १६६६।

१११४ तर्क संग्रह––अनन्त भट्ट। देशी कागज। पत्र सख्या–५। आकार–१०१/२″ × ५″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१७१२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–स० १८७६।

१११५. तार्किकसार संग्रह–पं० वरदराज। देशी कागज। पत्र सख्या–२५। आकार–१३१/२″ × ५१/२″। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१०३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१११६ न्यायसूत्रमिथिलेश्वर सूरी। देशी कागज। पत्र सख्या–१६। आकार–८३/४″ × ३३/४″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१३१८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, शुक्रवार, स० १६६७।

१११७ न्याय दीपिका—अभिनव धर्मभूषणाचार्य। देशी कागज। पत्र सख्या–२७। आकार–१११/२″ × ५″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१३५७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १३, रविवार, स० १८१०।

१११८. प्रमेय रत्नमाला—माणिक्य नन्दि। देशी कागज। पत्र सख्या–७७। आकार–६१/२″ × ५१/३″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–११६३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१११९. विधि सामान्य—×। देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–१०१/२″ × ५१/२″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१७५६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११२० सप्त पदार्थ सत्रावचूरि—× । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार—१०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३१७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल— × ।

११२१ सिद्धान्त चन्द्रोदय (तर्क संग्रह व्याख्या)—अनन्तभट्ट टीका—श्रीकृष्ण धूर्जटि दीक्षित । देशी कागज । पत्र संख्या—३२ । आकार—१०$\frac{1}{4}$ ×" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या—१६६६ । रचनाकाल—× । टीकाकाल—सं० १२७५ । लिपिकाल—× ।

———

विषय—नाटक एवं संगीत

११२२. मदन पराजय—जिनदेव । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–११″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–नाटक । ग्रन्थ सख्या–२४३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १४, स० १६६१ ।

११२३ मिथ्यात्व खण्डन – कवि अनुप । देशी कागज । पत्र सख्या– । ४५ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″ × ७″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय— नाटक । ग्रन्थ सख्या–२२७४ । रचनाकाल–पौष शुक्ला ५, रविवार, स० १८२१ ।

११२४ मिथ्यात्व खण्डन (नाटक)— साह कन्नीराम । देशी कागज । पत्र सख्या–६३ । आकार–६$\frac{3}{4}$″×× ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । विषय–नाटक । ग्रन्थ सख्या–१२७६ । रचनाकाल–पौष शुक्ला ५, स० १८२० । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ६, शनिवार स० १६०० ।

नोट—कवि ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है । ग्रन्थकर्त्ता आदि निवासी चाकसू **श्री पेमराज** के सुपुत्र हैं । सवाई जैपुर के लश्कर के मन्दिर के पास बोरडी के रास्ते मे रचना की गई है ।

११२५ हनुमन्नाटक–प० दामोदर मिश्र । देशी कागज । पत्र सख्या–३६ । आकार–१०$\frac{1}{4}$″ × ४$\frac{3}{4}$″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–नाटक । ग्रन्थ सख्या–१४१६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा ६, स० १८४१ ।

११२६ ज्ञानसूर्योदय नाटक—वादिचन्द्र । देशी कागज । पत्र सख्या–३१ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–नाटक । ग्रन्थ सख्या–५०७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–द्वितीय श्रावण सुदी २ स० १७६८ ।

अन्त—इतिश्रीवादिचन्द्र विरचित ज्ञानसूर्योदयनामनाटको चतुर्थो अध्यायः ४ । इति नाटक सम्पूर्णम् । स० १७६८ वर्षे मिति द्वितीया श्रावण शुक्ला तृतीया लिपिकृत मण्डलसूरि श्री चन्दकीर्तिना लुणवा मध्ये स्वात्मार्थम् लेखकवाचकयो शिव भूयात् ।। १ ।।

११२७ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३७ । **आकार**–१०$\frac{3}{4}$″ × ४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–नाटक । ग्रन्थ सख्या–१२३० । रचनाकाल–माघ शुक्ला ८, स० १६४८ । लिपिकाल–× ।

११२८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–५३ । **आकार**–१२$\frac{1}{2}$″ × ५$\frac{3}{4}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१०१ । रचनाकाल–माघ शुक्ला ८, स० १६४८ । लिपि-काल–× ।

आदिभाग—

अनाद्यनन्तरूपाय पचवर्णात्ममूर्त्तये ।

अनन्तमहिमाप्ताय सदोंकार नमोस्तु ते ॥ १ ॥
तस्मादभिन्नरूपस्य वृषभस्य जिनेशतु: ।
नत्वा तस्य पदांभोजं भूषिताऽखिल भूतल ॥ २ ॥
भूपीठभ्रान्तभूतानां भूयिष्ठानन्ददायिनीं ।
भजे भवापहा भाषां भवभ्रमणभजिनी ॥ ३ ॥
येषा ग्रन्थस्य सन्दर्भो प्रोस्फुरीतिविदोंहृदि ।
ववंदे तान् गुरुन् भूयो भक्तिभारनमः शिरा. ॥ ४ ॥

अन्तभाग—

मूलसघे समासाद्य ज्ञानभूषं बुधोत्तमाः ।
दुस्तर हि भवाभोधिं सुतरिं मन्वते हृदि ॥ ८५ ॥
तत्पट्टामलभूषण समभवद्दैगम्बरीये मत्ते,
चचद्यर्हकर स भाति चतुरः श्रीमत्प्रभाचन्द्रमाः ।
तत्पट्टेऽजनि वादिवृंदतिलक श्रीवादिचन्द्रो यति ।
स्तेनाय व्यरचि प्रबोधतरणिः भव्याब्जसबोधन ॥ ८६ ॥
वसुवेदरसाब्जाके १६८४) वर्षे माघे सिताष्टमी दिवसे ।
श्रीमन्मधूकनगरे सिद्धोऽय बोधसरभ· ॥ ८७ ॥ इति समाप्तम् ॥

११२६ संगीतसार—पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या–८४ । आकार–६$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–संगीत । ग्रन्थ संख्या–१३७१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विषय—नीतिशास्त्र

११३० चाणक्य नीति – चाणक्य । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–नीतिशास्त्र । ग्रन्थ सख्या–१८४२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १८५३ ।

११३१. नन्दबत्तीसी—नन्दसेन । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय–नीतिशास्त्र । ग्रन्थ सख्या–१३४० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

११३२ नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–६३ । आकार—१०" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–नीतिशास्त्र । ग्रन्थ सख्या—२४१७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

११३३ नीतिशतक (सटीक)—भर्तृहरि । देशी कागज । पत्र सख्या–१५ । आकार–११$\frac{3}{4}$" × ५$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–नीतिशास्त्र । ग्रन्थ सख्या–१८७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १, स० १८२७ ।

११३४ प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३३ । आकार–११$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११५८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

११३५ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–८$\frac{1}{2}$" × ४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५६४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ११, स० १८७१ ।

११३६ नीतिशतक सटीक— × । देशी कागज । पत्र सख्या–५६ । आकार–१२$\frac{1}{4}$× ५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२६४८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला १०, मंगलवार, स० १८३३ ।

११३७ नीतिसंग्रह-- × । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–११" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२८३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

११३८. पंचतन्त्र–विष्णु शर्मा । देशी कागज । पत्र सख्या–८० । आकार–११" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या– १०१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

११३९. राजनीतिशास्त्र—चम्पा । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१२$\frac{1}{2}$" ×

५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४४७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

११४०. वृहद् चाणक्य राजनीतिशास्त्र—चाणक्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–१०"×४¾" । दशा–प्रतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६५५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

११४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–११"×४½" । दशा–प्रतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ११, बुधवार, सं० १७१६ ।

———

विषय—पुराण

११४२. उत्तरपुराण—पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या–२६३ । आकार–१३½"× ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–पुराण । ग्रन्थ संख्या–१०४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १४८२ ।

११४३. उत्तरपुराण (सटीक)—पुष्पदन्त । टीकाकार—प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । आकार–११¾"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पुराण । ग्रन्थ संख्या–११६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १५, शनिवार, स० १६५८ ।

११४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–१३½"×५½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

११४५. उत्तरपुराणटिप्पण प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–६३ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५२१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

११४६ गरुडपुराण (सटीक)—वेदव्यास । टीकाकार— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६८ । आकार–१३" × ४¾" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पुराण । ग्रन्थ संख्या–१६८० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

११४७. चक्रधरपुराण—जिनसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१३६ । आकार–११¾"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–४०८अ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

११४८. नेमिजिनपुराण—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या–२२६ । आकार–११½"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । ग्रन्थ संख्या–१२३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला २, सोमवार, स० १६०६ ।

११४९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२०८ । आकार–१०½" × ४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४०४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ शुक्ला १४, शनिवार, स० १६६१ ।

११५०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१९५ । आकार–१०½" × ४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

११५१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–२५३ । आकार–१०" × ४¾" ।

दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१०११। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन सुदी १३, शुक्रवार, सं० १६७४।

११५२. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–१६१। आकार–१२"×४३/४"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२६७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–स० १६७४।

११५३. प्रति सख्या ६। देशी कागज। पत्र सख्या–१८५। आकार–१११/२"×४१/२"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२५६२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा १, रविवार, सं० १७०६।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ सख्या ४५०० है। लिपिकार की प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नही है।

११५४. प्रति सख्या ७। देशी कागज। पत्र सख्या–२३०। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२३२२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–द्वितीय भाद्रपद कृष्णा ८, सोमवार, स० १६६५।

११५५. पद्मनाभपुराण—भट्टारक सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या–६४। आकार–९"×६१/२"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२३७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मगशीर्ष शुक्ला ५, सोमवार, सं० १८५३।

११५६. पद्मपुराण भाषा–प० लक्ष्मीदास। देशी कागज। पत्र सख्या–१७१। आकार–११३/४"×५३/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रथ सख्या–१७८०। रचनाकाल–पौष शुक्ला १०, स० १७८३। लिपिकाल–स० १८१८।

११५७. पद्मपुराण—रविषेणाचार्य। देशी कागज। पत्र सख्या–५६७। आकार–१३"×५३/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१२२६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मगसिर कृष्णा १३, स० १८२३।

नोट—श्री पार्श्वनाथ के मन्दिर में नागौर में लिपि की।

११५८. पार्श्वनाथपुराण—पद्मकीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या–७६। आकार–११"×४३/४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१७७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–स० १५००।

११५९. पार्श्वनाथ पुराण–पं० रइधू। देशी कागज। पत्र संख्या–८६। आकार—११"×४३/४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–११६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, बुधवार, सं० १६४६।

नोट—लिपिकार की प्रशस्ति विस्तृत दी गई है।

११६०. पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास। देशी कागज। पत्र संख्या–६३। आकार–१०"×५३/४"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०६६।

रचनाकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, सं० १७८६ । लिपिकाल–भाद्रपद बुदी ११, सं० १८३८ ।

११६१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५६ । आकार–१२½"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६७० । रचनाकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, स० १७८६ । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ६, मंगलवार, स० १७६८ ।

११६२. पुण्यचन्द्रोदयमुनिसुव्रतपुराण—केशवसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१११ । आकार–१०¾"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०४६ (ब) । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र बुदी ७, स० १८६७ ।

११६३. पुराणसार सग्रह—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–१२२ । आकार–११"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ६, रविवार, स० १८३७ ।

११६४. भविष्यपुराण— × । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–६"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५३८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

११६५. मार्कण्डेयपुराण (सटीक)—ऋषि मार्कण्डेय । देशी कागज । पत्र संख्या- ६२ । आकार–११¾"×६½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगसिर कृष्णा ८, बृहस्पतिवार, स० १६२० ।

११६६ रामपुराण—भट्टारक सोमसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१०"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२१४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

आदिभाग—

श्रीजिनाय नम वदेऽहृ सुव्रतदेव पचकल्याणनायक ।
देवदेवादिभि सेव्य भव्यवृ द सुखप्रद ॥ १ ॥
शेषान् सिद्धजिनान् सरीन् पाठकाना साधू सयुकान् ।
नत्वा वक्षे हि पद्मस्य पुराणगुण सागर ॥ २ ॥
वन्दे वृषभसेनादिन् गुणाधीशान् यतीश्वरान् ।
द्वा दशाग श्रुतयैश्च कृत मोक्षस्य हेतवे ॥ ३ ॥
वदे समन्तभद्र त श्रुतसागर पारग ।
भविष्यत् समये योऽत्र तीर्थनाथो भविष्यति ॥ ४ ॥

अन्तभाग—

सप्तदश सहस्राणि वर्षाणि राघवस्येवं ।
ज्ञेय हि परमायुश्च सुखसतति सम्पद ॥ १४ ॥

अष्टादश सहस्राणि वर्षाणि लक्ष्मणस्य च ।
आयु · ···परम सौख्य भोग सम्पत्ति दायक ॥ १५ ॥
रामस्य चरितं रम्य श्रणोतियश्च धार्मिकः ।
लभते स शिवस्थान सर्वसुखाकर पर ॥ १६ ॥
विक्रमस्य गते शाके षोडष (१६५६) शतवर्षके ।
शतपंचाशत समायुक्ते मासे श्रावणिके तथा ॥ १७ ॥
शुक्लपक्ष त्रयोदश्या बुधवारे शुभे दिने ।
निष्पन्न चरित रम्य रामाचन्द्रस्त पावन ॥ १८ ॥
महेन्द्रकीति योगीन्द्र प्रासादात् च कृत मया ।
सोमसेन रामस्य पुराण पुण्य हेतवे ॥ १९ ॥
यदुक्त रविषेणेन पुराण विस्तरा ······ · ·· ··· ···· ।
··· · ···· सकुच्य किंचित विकथित मया ॥ २० ॥
गर्वेण न कृत शास्त्र नापि कीर्ति फलाप्तये ।
केवल पुण्य हेत्वर्थं स्तुता रामगुणा मया ॥ २१ ॥
नाह जानामि शास्त्राणि न छन्दो न नाटक ।
तथापि च विनोदेन कृत रामपुराणक ॥ २२ ॥
ये सतति विपुषो लोके मोषय उचते मम ।
शास्त्र परोपकाराय ते कृता ब्रह्मणामुखि ॥ २३ ॥
कथा मात्र च पद्मस्य वर्त्ततेवर्णाना विना ।
अस्मिन् ग्रन्थे उभौ भव्या श्रण्वन्तु सावधानतः ॥ २४ ॥
विस्तार रुचिनः सिव्या ये सति भद्रमानसा ।
ते श्रण्वन्तु पुराण हि रविषेणस्य निर्मित ॥ २५ ॥
रविषेण कृते ग्रन्थे कथा यावत्पवर्त्तते ।
तावत् च सकलात्रापि वर्तते वर्ण मा विना ॥ २६ ॥
वर्ण्यविषये रम्ये जिन्नूर नगरे वरे ।
मन्दिरे पार्श्वनाथस्य सिद्धो ग्रन्थः शुभे दिने ॥ २७ ॥
सेनगणेति विख्याति गुणभद्रो भवन्मुनि· ।
पट्टे तस्यैव सजातः सोमसेनो यतीश्वर· ॥ २८ ॥
तेनेद निर्मित शास्त्र रामदेवस्य भक्तित· ।
स्वस्य निर्वाणहेत्वर्थं संक्षेपेण महात्मनः ॥ २९ ॥
यस्मिन् निदपुरे शास्त्र श्रण्वन्ति च पठन्ति च ।
तत्र सर्वं सुखक्षेमं परं भवति मगलं ॥ ३० ॥

धर्मात् लभन्ते शिव–सौख्य–सम्पदः स्वर्गादि राज्याणि भवन्ति ।
धर्मात् तस्मात् कुर्वन्ति जिनधर्ममेक, विहाय पाप नरकादिकारक ।। ३१ ।।

सेरागरो याति पर पवित्रे वृषभषेरा गराधर शुभवक्षे ।
गुराभद्रोजनिक विजनमुख्य· पमितवर्गा सुखाकरजातः ।। ३२ ।।

श्री मूलसंघे वर पुष्कराख्ये गच्छे सुजातोगुणभद्रसूरिः ।
पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारको भुवि विदुषा शिरोमरिए ।। ३३ ।।

सहस्त्र सप्तशत त्रीरिए वर्त्तत भूवि विस्तरात् ।
सोमसेनमिद वक्षे चिरजीव चिरजीवित ।। ३४ ।।

इति श्री रामपुराणे भट्टारक श्री सोमसेन विरचिते रामस्वामिनो निर्वाणवर्णननामनो त्रयस्त्रिशत्तमोधिकार. ।।३३।। छ । ग्रन्थाग्रन्थ ७३०० ।। मिति श्री जिनायनम· ।।

११६७. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१८ । आकार–१२″×६′ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२६३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

११६८ रामायण शास्त्र—चिन्तन महामुनि । देशी कागज । पत्र सख्या–५१ । आकार–११$\frac{1}{4}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–जीर्णक्षीरण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०५६ । रचनाकाल–आषाढ बुदी ५, रविवार स० १४६३ । लिपिकाल–× ।

११६९ वर्द्धमान पुराण–नवलदास शाह । देशी कागज । पत्र सख्या–१७. । आकार–१२$\frac{1}{2}$″×६″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२५८९ । रचनाकाल–मगशीर्ष शुक्ला १५, स० १६६१ । लिपिकाल–मगशीर्ष शुक्ला ८, बुधवार, स० १८५८ ।

विशेष—भट्टारक सकलकीर्तिजी के उपदेश के मुताबिक ग्रन्थ की रचना की है । पुराण कर्ता ने पूर्ण प्रशस्ति तथा उस समय के राज्य कालादि का विस्तृत वर्णन किया है ।

११७०. शान्तिनाथपुराण (सटीक)—भ० सकलकीर्ति । टीकाकार—सेवाराम । देशी कागज । पत्र सख्या–३२७ । आकार–८$\frac{1}{2}$″×७″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२४७६ । रचनाकाल–× । टीकाकाल–श्रावण कृष्णा ८, स० १८३४ । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, स० १९२९ ।

विशेष—भाषाकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

११७१ शिवपुराण—वेदव्यास । देशी कागज । पत्र सख्या–१८९ । आकार–११″×७$\frac{1}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

विशेष—वैष्णव पुराण है ।

११७२. सम्यक्त्वकौमुदी पुराण—महीचन्द्र। देशी कागज। पत्र सख्या–६७। आकार–१०″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१११३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १८८४।

११७३. हरिवंशपुराण—ब्रह्म जिनदास। देशी कागज। पत्र सख्या–२६। आकार–९¾″×४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१५८२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११७४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–३४८। आकार–११¾″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२५६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा ५, शुक्रवार, स० १७१८।

११७५ प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र सख्या–२६६। आकार–१२″×५″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२४८०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १४, स० १७५६।

११७६. हरिवंशपुराण—मुनि यशःकीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या–२६३। आकार–११¼″×५¼″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२६४४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, स० १६५२।

११७७ त्रिषष्टिस्मृति—प० आशाधर। देशी कागज। पत्र सख्या–२२। आकार–१०½″×३¾″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१२६३। रचनाकाल–स० १२९२। लिपिकाल–पौष शुक्ला ९, शुक्रवार, स० १५५५।

११७८ त्रिषष्ठिशलाका महापुरुषचरित्र—हेमचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–११९। आकार–१०″×४½″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३६२। रचनाकाल–स० १५०४। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, स० १६४८।

११७९ त्रिषष्ठिलक्षण महापुराण—पुष्पदन्त। देशी कागज। पत्र सख्या–१७१। आकार–१३¾″×५½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१३५१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११८०. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–२५३। आकार–१३″×५½″। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१४१५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला ६, स० १५८५।

११८१ प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र सख्या–१५५। आकार–१३½″×५¼″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१०४०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १४९३।

११८२. त्रिषष्ठि लक्षणमहापुराण—गुणभद्राचार्य। देशी कागज। पत्र सख्या–४१०। आकार–११¼″×४″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१२११। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११८३ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४६३। आकार–११¼″×५¼″।

दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०५०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ शुक्ला १३, शनिवार, स० १७०८।

नोट—विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

११८४. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र सख्या–३३६। आकार–११"×५"। दशा–प्रतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१४०२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मगसिर शुक्ला १४, बुधवार, स० १६६०।

११८५. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र सख्या–३१६। आकार–१३$\frac{3}{8}$"×६"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१८८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १३, स० १६७६।

विषय—पूजा एवं स्तोत्र

११८६. **अकलंक स्तुति—बौद्धाचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा—जीर्णशीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२०३६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

विशेष—इस ग्रन्थ के अन्त में "अकलकाचार्य विरचित स्तोत्रं" लिखा है, और इसके निचे बौद्धाचार्य लिखा है । यह स्तुति बौद्धाचार्य ने अवश्य की है । किन्तु बौद्धाचार्य का नाम अकलक होना शंकास्पद है ।

११८७. **अग्निस्तोत्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—६$\frac{1}{2}$"×३$\frac{3}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—१६६२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ३, शुक्रवार, सं० १८१८ ।

११८८. **अढाईद्वीपपूजन भाषा—डालूराम** । देशी कागज । पत्र संख्या—२४४ । आकार—१३$\frac{3}{4}$"×६ । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२८४० । रचनाकाल—ज्येष्ठ शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १८८७ । लिपिकाल—द्वितीय बैशाख कृष्णा २, रविवार, स० १६०७ ।

११८६. **अढाईद्वीपपूजा**—× । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—१०"×५$\frac{3}{4}$"। दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—१६०२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—सं० १७६४ ।

११६० **अन्नपूर्णास्तोत्र—शंकराचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—६$\frac{1}{2}$"×३$\frac{3}{4}$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१६१७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—माघ शुक्ला १ सं० १८६० ।

११६१ **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—६$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७७१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पौष कृष्णा १, रविवार, स० १८२१ ।

११६२. **अपामार्ग स्तोत्र—गोविन्द** । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—८$\frac{1}{2}$×२$\frac{1}{2}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२०१८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—स० १८६१ ।

विशेष—अपामार्ग का हिन्दी नाम "आधा झाडा" है ।

११६३. **अष्टदल पूजा और षोडशफल पूजा**—× । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—११"×५$\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—१५६२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११६४. **अष्टान्हिका पूजा—भ० शुभचन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२७२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

११६५. **अंकगर्भखण्डारचक्र—देवनन्दि** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०½" × ४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२०२१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

११६६ **आशाधराष्टक—शुभचन्द्र सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१२"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२६४१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

११६७ **इन्द्रध्वज पूजा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–७६ । आकार–१२½"× ५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि- नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–१७१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १८३४ ।

११६८ **इन्द्रध्वज पूजन—भ० विश्व भूषण** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२२ । आकार–१०¾" × ५¾" दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२७४७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ६, सं० १८६६ ।

११६६ **इन्द्र वधुचित हुलास आरती—रुचिरंग** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–७" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–आरती । ग्रन्थ संख्या–२७०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१२०० **इन्द्र स्तुति**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–१५०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१२०१ **इन्द्राक्षिजगच्चिन्तामणि कवच**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–८½"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२०२ **इन्द्राक्षि नित्य पूजा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–६½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–१६२३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १२ सं० १६२२ ।

१२०३ **इन्द्राक्षिसहस्त्रनामस्तवन**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–६½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१६२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२०४. **एकीभावस्तोत्र—वादिराज** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१२½"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१६६४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२०५. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार– ११३/४"×५३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १८६० ।

१२०६. **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–११"×५३/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १७१४ ।

१२०७. **प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०१/२"×४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३४० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ३, शनिवार स० १४९२ ।

१२०८. **प्रति संख्या ५** । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१११/२"×४३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२०९ **प्रति संख्या ६** । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०"×४३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२१०. **प्रति संख्या ७** । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१११/२"×५१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०४७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२११ **एकीभाव स्तोत्र (सार्थ)–वादिराज सूरि । टीकाकार—नागचन्द्र सूरि** । देशी कागज । पत्र सख्या–१० । आकार–६३/४"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१३२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२१२. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०१/२"×४१/२" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा १४, स० १६८८ ।

१२१३ **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–१०१/२"×४१/२"। दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२७२८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–प्रथम श्रावण शुक्ला ८, स० १७१४ ।

१२१४ **प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–११"×४३/४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२७२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२१५ **एकीभाव व कल्याण मन्दिर स्तोत्र**—× । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार१२३/४" × ५३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१८०९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १२, स० १८३६ ।

१२१६. **ऋषभदेव स्तवन**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११" × ४३/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१५०२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२१७. **ऋषिमण्डलपूजा—गुणनंदि** । देशी कागज । पत्र सख्या–१४ । आकार–

११"×५½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२३३८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२१८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–११"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२१९ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । (२वा तथा १६ वां पत्र नही है) । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२८६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ११, स० १७०८ ।

१२२० ऋषिमण्डलस्तोत्र—× । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–६½"× ३½" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१२०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट · प्रथम पत्र के फट जाने से अक्षर अस्पष्ट हो गये हैं ।

१२२१ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–१२½"×५¾" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१९५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– अश्विन शुक्ला ११ स० १८२६ ।

१२२२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–८¾"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ८, बृहस्पतिवार स० १८८१ ।

विशेष—यह स्तोत्र मन्त्र सहित है ।

१२२३ ऋषिमण्डलस्तोत्र (सार्थ)—गौतम स्वामी । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–९¾"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२४८७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२२४ कर्मदहनपूजा—× । देशी कागज । पत्र सख्या–२५ । आकार–८¾"×४¾"। दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२२७१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ७ शनिवार, स० १८८४ ।

१२२५ कल्याणमन्दिरस्तोत्र–कुमुदचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०"×४½ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८१४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१२२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–९ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१९१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२२७ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–९"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या -१९५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १४, सं० १८२७ ।

१२२८ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१३८४ । रचनाकाल–× । लिपिकल–×।

१२२६. **प्रति संख्या ५** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०″ × ४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६४७ । रचनाकाल × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १८४० ।

१२३०. **प्रति संख्या ६** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–६½″×४½″ ।दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ८, बुधवार सं० १८४६ ।

१२३१. **प्रति संख्या ७** । देशी कागज । आकार–११″ × ४½″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पत्र संख्या । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६७५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१२३२. **प्रति संख्या ८** । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार–१०½″×४½″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१७४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १६३१ ।

१२३३. **प्रति संख्या ६** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–६¾″×४½″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२३४. **प्रति संख्या १०** । देशी कागज । पत्र संख्या–३ आकार–६¾″×४½″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२०२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२३५. **प्रति संख्या ११** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–११½″×५½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३१५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ५, सोमवार, सं० १८६० ।

१२३६. **प्रति संख्या १२** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०″×४½″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२०१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १५ स० १४६७ ।

१२३७ **प्रति संख्या १३** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०″×४″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४११ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ६, स० १६०७ ।

१२३८ **प्रति संख्या १४** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०¾″×५½″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३३१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२३६. **प्रति संख्या १५** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–८½″×५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२२८४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × । पौष शुक्ला ४, स० १८८१ ।

१२४० **कल्याण मन्दिर स्तोत्र (सटीक)—कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–८½″×४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा १४ बृहस्पतिवार स० १८७० ।

१२४१. **कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सटीक)—कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार—भट्टारक**

हर्षकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–**वैशाख कृष्णा ५, सं० १६७७ ।**

१२४२ **कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सार्थ)**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–१०¾" × ४½" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–**स्तोत्र** । ग्रन्थ संख्या–२७४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२४३. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–११"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–**चैत्र शुक्ला १, बुधवार, सं० १६०१ ।**

१२४४ **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १६६३ ।

१२४५. **प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–११"×४¾" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१४० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१२४६. **प्रति संख्या ५** । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१०½" ×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२४७ **कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सटीक)—कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार–श्री सिद्धसेनाचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या ६ । आकार–८"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१२४८ **कल्याण मन्दिर स्तोत्र (सटीक)–कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार–हुकमचन्द** । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत व हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५१२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–× ।

१२४९ **गणधरवलय**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२७६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१२५०. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०¾"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१५८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२५१. **गर्भखडारचक्र–देवनंदि** । देशी कागज । पत्र संख्या–५५ से ६६=२६ आकार–१२"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । अपूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तुति । ग्रन्थ संख्या–१३५६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–× ।

१२५२ **गौतम स्तोत्र–जिनप्रभसूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या– १ । आकार—०¾"×४½" दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१५६३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१२५३. **चतुर्दशीव्रतोद्यापन पूजा—पं० ताराचन्द श्रावक** । देशी कागज । पत्र

संख्या—८। आकार—१०½"×५"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ सख्या—१६१६। रचनाकाल—चैत्र शुक्ला ५, सं० १८०२। लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, स० १८६२।

१२५४. चतुर्विंशति जिननमस्कार—×। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार-१०½" × ४½"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या-२५५०। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

१२५५. चतुर्विशति जिनस्तवन—×। देशी कागज। पत्र सख्या-२। आकार-१०½"×४½"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या-२३१६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

विशेष—अन्तिम पत्र मे कुछ उपदेशात्मक श्लोक है।

१२५६ चतुर्विशति तीर्थंकर स्तुति—समन्तभद्र स्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या-१५। आकार-११"×५"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-सस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या-२११६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-बैशाख कृष्णा १०, मगलवार, स० १६५६।

१२५७ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या-६। आकार-१०½×४½। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या-२११५। रचनाकाल-×। लिपिकाल-आषाढ कृष्णा ११, मगलवार, स० १६७८।

१२५८. चतुर्विशति तीर्थंकरों की स्तुति—माघनन्दि।। देशी कागज। पत्र सख्या-२। आकार-१०¼" × ५"। दशा-अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-सस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या-१४६६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-पौष कृष्णा ६, सं० १६६१।

१२५९. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या-२। आकार-११"×४¾"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या-२०६२। रचनाकाल-×। लिपिकाल-आषाढ शुक्ला ७, स० १७०५।

१२६० चतुर्विशति तीर्थंकर स्तुति (सटीक) पं० धनश्याम। टीकाकार—पं० शोभनदेवाचार्य। देशी कागज। पत्र सख्या-११। आकार-१०½"×४½"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-सस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या-२१६३। रचनाकाल-×। टीकाकाल-×। लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ८, स० १६७०।

विशेष—मूल ग्रन्थ कर्ता प० धनपाल के लघुभ्राता श्रीशोभनदेवाचार्य ने वृत्ति की है।

१२६१. चतुर्विशति तीर्थंकर पूजा—चौधरी रामचन्द्र। देशी कागज। पत्र सख्या-६०। आकार-९½" × ६¾"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-पूजा। ग्रन्थ सख्या-१७६५। रचनाकाल-×। लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ५, स० १८५७।

१२६२. चतुर्विशति तीर्थंकर पूजा—शुभचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र सख्या-५०।

आकार–११" × ४३/४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५८३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, स० १६६३ ।

१२६३ चतुर्विशंति जिन स्तवन–प० रविसागर गरिण । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०" × ४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१७३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१२६४ चतुर्विशंति जिनस्तवन—जिनप्रभसूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–६३/४" × ४१/४" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या– १६४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२६५. चतुर्विशंति जिनस्तवन—ज्ञानचन्द्र । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०१/४" × ४१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१८८० । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१२६६ चतु षष्ठी स्तोत्र—× । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार– १२१/२"× ५१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि- नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १, स० १६०४ ।

१२६७. चतु षष्ठी महायोगीनी महास्तवन —धर्मनन्दाचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०१/२"×४१/४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या—२६७१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२६८ चिन्तामरिण पार्श्वनाथ पूजा—× । देशी कागज । पत्र सख्या—१० । आकार—८ "×४३/४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी और सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ सख्या—२२६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– भाद्रपद शुक्ला ६ स० १६५८ ।

विशेष—इसमे गजपथा जी की पूजा लिखी हुई है ।

१२६९ चिन्तामरिण पार्श्वजिनस्तवन (सार्थ)—× । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–८१/२"×४१/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१८८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२७० चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र—धरणेन्द्र । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०१/२"×६१/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१७०८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल— × ।

१२७१ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०१/२"×४३/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१७०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा १४, स० १८७६ ।

१२७२. चित्र बन्ध स्तोत्र—× । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–६"×४१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या १३३८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१२७३. **चौबीसजिनआशीर्वाद**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२१५६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला २, सं० १७०१ ।

१२७४. **चौबीस तीर्थंकर स्तवन**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–८¾"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२७१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला ११, सं० १८४१ ।

१२७५. **चौबीस तीर्थंकरों की पूजा—वृन्दावनदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–४२ । आकार–१२¾"×५¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–१५६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१२७६ **चौषठयोगीनी स्तोत्र**—× । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–६¾"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२०२२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—ग्रन्थ की लिपि नागौर मे की गयी है ।

१२७७ **जय तिहुअण स्तोत्र—अभयदेव सूरि** । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०" × ४¼" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२७८४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१२७८ **ज्वालामालिनी स्तोत्र**– × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–६¾" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२४६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ५, स० १८४४ ।

१२७९ **जिनगुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन—आचार्य देवनन्दि** । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–६½"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२८० **जिनपूजापुरन्दरविधान—अमरकीर्ति** । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–११"×४¾" दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२८०५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२८१ **जिनपंचकल्याणकपूजा—जयकीर्ति** । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–११½" × ५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–१६०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा २, रविवार, स० १६८३ ।

१२८२. **जिनयज्ञकल्प—पं० आशाधर** । देशी कागज । पत्र सख्या–१५१ । आकार–१०½" × ४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रथ सख्या–१६७५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट : प्रारम्भ में श्री वसुनन्दि सैद्धान्ति द्वारा रचित प्रतिष्ठासार सग्रह के ६ परिच्छेद

(पृष्ठ सख्या २२ तक) हैं, पृष्ठ २३ से ६८ तक पूज्यपाद कृत अभिषेक विधि है। ६९ से १५१ तक प० आशाधर जी कृत जिनयज्ञकल्प निबन्ध यानी 'कल्प दीपक' प्रकरण पर्यन्त है।

१२८३ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–८८। आकार १०$\frac{3}{8}$"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५०५। **रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १५, स० १२८५।** लिपिकाल– ×।

१२८४ जिनरस वर्णन—वेणीराम। देशी कागज। पत्र संख्या—१७। आकार–८$\frac{3}{8}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। **विषय–स्तोत्र।** ग्रन्थ सख्या–१५६८। रचनाकाल–माघ शुक्ला ११, मगलवार, स० १७६६। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ७, स० १८३६।

१२८५ जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–८"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–१७१०। रचनाकाल–×। लिपिकाल—×।

१२८६. जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–२७९३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–**माघ शुक्ला** १४, स० १७४७।

विशेष –इसी ग्रन्थ मे धरणेन्द्रस्तोत्र, पंच परमेष्ठी स्तोत्र, ऋषि मण्डल स्तोत्र और वृहत् वर्णन भी है।

१२८७ जिन स्तवन सार्थ—जयानन्द सूरि। देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–२५६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, स० १७४१।

१२८८ जिन स्तुति— ×। देशी कागज। पत्र सख्या–७। आकार—१०$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–२६६१। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२८९ जिन सुप्रभात स्तोत्र—सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र सख्या- १। आकार–८$\frac{1}{2}$"×३$\frac{3}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। **विषय–स्तोत्र।** ग्रन्थ सख्या–१५३३। रचनाकाल—×। लिपिकाल–×।

१२९० जिनेन्द्र वन्दना—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार- १०"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–१७१५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२९१ जिनेन्द्र स्तवन–×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–जीर्णशीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। **विषय–स्तोत्र।** ग्रन्थ संख्या–१४७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ९, स० १६८५।

१२९२ तेरह द्वीप पूजा–×। देशी कागज। पत्र संख्या–१७०। आकार–११$\frac{3}{8}$"×

७$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत व हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२३३१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष कृष्णा २, स० १६३६।

१२६३. **दशलक्षण जयमाल—भावशर्मा**। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२३८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–स० १६८१।

१२६४ **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३६०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १६७६।

१२६५ **प्रति संख्या ३**। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३८८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२६६ **प्रति संख्या ४**। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–११$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१५८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ७, बुधवार, स० १६२६।

१२६७ **प्रति संख्या ५**। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–१२$\frac{1}{2}$"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६६६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा ७, मगलवार, स० १८८१।

१२६८ **दशलक्षणजयमाला—पाण्डे रइधू**। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१६३०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, स० १८१६।

१२६६ **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र संख्या–२ से १०। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२८४८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३०० **प्रति संख्या ३**। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या– २०४४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३०१. **प्रति संख्या ४**। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ५, मगलवार, स० १७३६।

१३०२. **प्रति संख्या ५**। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१२×५$\frac{3}{4}$। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५०८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १०, सं० १८२७।

१३०३. **प्रति संख्या ६**। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–८"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५०२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १२, सोमवार, सं० १८०८।

१३०४ दशलक्षणपूजा—पं० द्यानतराय । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार– ६½"×६½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–१७१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–द्वितीय वैशाख कृष्णा १, सोमवार, सं० १८६६ ।

१३०५. दशलक्षण पूजा—सुमतिसागर । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार– १७"×६½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२६०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३०६. द्वादश व्रतोद्यापन—× । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार– ११½"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाचिकी, अपभ्रंश, चुलिका आदि । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१३०७. द्वात्रिंशी भावना—× । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०" ×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या– २२५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

विशेष – अन्तिम पत्र पर विद्यामंत्र गर्भित स्तोत्र है ।

१३०८. द्विजपाल पूजादि व विधान—विद्यानंदि । देशी कागज । पत्र सख्या–१२ । आकार–११½"×५½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या– १६०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१३०९ दीपमालिका स्वाध्याय—× । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार– १०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३१० देवागम स्तोत्र समन्तभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार– १०"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या- १३२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३११ प्रति सख्या—२ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११½"×५½" दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१६७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३१२ नन्दीश्वर पंक्ति पूजा विधान—× । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–११½"×५¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय– पूजा । ग्रन्थ सख्या–२१२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १२, स० १८०१ ।

१३१३ नवग्रह पूजा—× । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३१४. नवग्रह पूजा विधान—× । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–१०"

४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२६७३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—इस ग्रन्थ में चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन, पार्श्वनाथ पद्मावती स्तोत्र, पूज्यपादाचार्य कृत पार्श्वनाथ चिन्तामणि पद्मावती स्तोत्र, मध्यवलयपूजा, विद्या देवतार्चन, जिन मातृपूजन, चतुर्विंशति मात्रा विधान और नवग्रहपूजाविधान भी है ।

१३१५. नवग्रह पूजा सामग्री—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–२५"×१०" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ८, सोमवार, स० १६७६ ।

नोट—इसमे पूजा सामग्री का विस्तृत वर्णन है । इस पत्र में जाप्य के भेद, स्तवन विधि, अट्ठारह धान्य, पण्डितो के धारण करने योग्य आभरण सप्त ध्यान, गुरोपकरण, थापड़ा, खावका सामग्री, मंगल द्रव्य व्योरा, क्षेत्रपाल पूजा विधि, पच रत्ननाम, सर्वोषधी का ब्योरा, दशाग धूप का व्योरा, कु भकार विधि, खाने की विधि, वास की विधि और ज्वर की विधि एव पट्टावली का वर्णन है । वचनिकाकार ने अपना पूर्ण परिचय दिया है ।

१३१६. नारायणपृच्छाजयमाल—× । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्र श । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२०५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३१७. निर्वाणकाण्डभाषा— भगवतीदास । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–८"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी और सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२२६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १४, रविवार, स० १६३३ ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ मे १ से ७ पत्र तक तीन लोक की पूजा है; तदन्तर पत्र ८ मे बारह भावना, इसके बाद ६ वें पत्र मे एक पद है और पश्चात् निवार्णकाण्ड पूर्ण किया गया है ।

१३१८. निर्वाणक्षेत्र पूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१२$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५२२ । रचनाकाल–भाद्रपद कृष्णा १४, स० १८७० । लिपिकाल–× ।

१३१६ नेमिनाथस्तवन—× । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{8}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१६७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३२० नेमिनाथ स्तोत्र— पं० शाली । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१५१६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३२१. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—स्तोत्र में केवल दो अक्षर 'नेम' का ही प्रयोग किया गया है ।

१३२२ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला ५, शनिवार, स० १७१२ ।

१३२३. पद्मावती छन्द—कल्याण । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२०६९ । । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१३२४ पद्मावती पूजन—गोविन्दस्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२१५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३२५ पद्मावती पूजा—× । देशी कागज । पत्र सख्या–२१ । आकार–८$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी एव सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–१५२३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३२६ पद्मावती स्तोत्र– × । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१७०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३२७. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–७$\frac{3}{4}$"×४" दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१७२१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३२८ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२७२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला १, सं० १८८७ ।

१३२९ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–९$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १९०६ ।

१३३० प्रति सख्या ५ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४६१ रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३३१, पद्मावती सहस्त्रनाम—अमृतवत्स । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–११"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२५४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३३२ पद्मावत्याष्टक सटीक पार्श्वदेवगणि । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–१०"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–१६२० । रचनाकाल–बैशाख शुक्ला ५, स० १२०३ । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, स० १९२२ ।

१३३३ पल्य विधानपूजा—भ० शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–७ ।

आकार–११½" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२८५५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३३४. पल्य विधान पूजा—रत्न नन्दि । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–११"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२७८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १७६६ ।

१३३५ पल्य विधान पूजा—अनन्तकीर्ति । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०¼" × ४¼" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२४०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१३३६ पार्श्वनाथ स्तवन—× । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०"×४" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१४६४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३३७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–११"×४¾ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल—× ।

नोट—इस पत्र मे वितराग स्तोत्र तथा शान्ति स्तोत्र भी है ।

१३३८. प्रति सख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार- १०¾"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३०३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—इसी पत्र मे वीतराग स्तोत्र तथा शान्तीनाथ स्तोत्र भी है ।

१३३९ पार्श्वनाथ स्तोत्र—शिवसुन्दर । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–९"×३¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१४७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३४०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–११"×४½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५१५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल -आषाढ कृष्णा १२, स० १७१४ ।

१३४१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१२½"×५½" । दशा– अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१७०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ८, स० १८९२ ।

१३४२ पार्श्वनाथ स्तोत्र सटीक–× । **टीकाकार–पद्मप्रभ देव** । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१६१० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३४३. पार्श्वनाथ स्तवन सटीक—पद्मप्रभ सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०½"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या– २३२१ । । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

नोट—इसी पत्र के पीछे की ओर सोमसेनगणि विरचित पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है।

१३४४ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११"×४¾"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०६१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३४५ प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०¼"×४¾"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१३२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३४६. पार्श्वनाथ स्तुति—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–८¾"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२५७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३४७ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२ आकार–१०½"×४¾"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६३५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १२, सं० १७२६।

१३४८ पाशा केवली—×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०¼"×४¼"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१७२६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मगसिर कृष्णा १०, सं० १६५२।

१३४९ पुष्पांजली पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–८¼"×५¼" दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२४४८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ५, सं० १९०६।

१३५० पूजासारसमुच्चय—संग्रहीत। देशी कागज। पत्र संख्या–८७। आकार–११"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२५०६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, सं० १५१८।

१३५१ पूजा संग्रह—×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश एवं संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२८३१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १७०४।

विशेष—इस ग्रन्थ मे देव पूजा, सिद्धों की जयमाल व पूजा, सौलह कारण पूजा व जयमाल, दशलक्षण पूजा व जयमाल श्री भाव शर्मा कृत और अन्त में नन्दीश्वर पूजा व जयमाल है।

१३५२ प्रतिक्रमण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२३। आकार–११¼"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३९४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३५३ प्रतिक्रमण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०½"×४¼"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२९२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १४, सं० १६८१।

१३५४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–१०"×५½"।

दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२५०७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१३५५ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार १०″×४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२८२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३५६ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१०$\frac{1}{8}$″×५″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३५७. प्रतिक्रमण (समाचारी सटीक)—जिनवल्लभ गणि । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४″ । दशा–अति जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७६३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३५८ प्रतिष्ठासारसंग्रह —वसुनंदि । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२५२७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा १५, स० १५१९ ।

१३५९ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३१ । आकार–११″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४७० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ३, स० १५६५ ।

१३६०. पंचकल्याणक पूजा —× । देशी कागज । पत्र सख्या–२३ । आकार–६$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत व प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२८०८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३६१. पंचपरमेष्ठी स्तोत्र —जिनप्रभ सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–२४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२७६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, बुधवार, स० १८५२ ।

१३६२ पंचमेरु पूजा —श्रीकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–६$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–१६३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्र पद कृष्णा २, स० १८२७ ।

१३६३ पचमी व्रतोद्यापन पूजा—ताराचन्द श्रावक । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×५″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६१५ । रचनाकाल–चैत्र शुक्ला ५, स० १८०२ । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, स० १८६२ ।

१३६४. बड़ा स्तवन—अश्वसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–७$\frac{3}{4}$″×४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१३३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३६५ बाला त्रिपुरा पद्धति—श्रीराम । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । आकार–८$\frac{1}{2}$″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२५७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १६६३ ।

१३६६ भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–

१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२००० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट –-श्लोक सख्या ४४ है ।

१३६७ प्रति संख्या २ । देशी काजग । पत्र सख्या–३ । आकार–१०"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १५, स० १८१४ ।

नोट—श्लोक सख्या ४४ हैं ।

१३६८. प्रति संख्या—३ । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०३३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा २, सोमवार, स० १६७८ ।

नोट—श्लोक सख्या ४४ हैं ।

१३६९. भक्तामर स्तोत्र— मानतु गाचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२०४८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट— श्लोक सख्या ४८ हैं ।

१३७० प्रतिसंख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–८$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३७१ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१३८२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

नोट— श्लोक सख्या–४८ है ।

१३७२ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—श्लोक सख्या ४४ हैं ।

१३७३ प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र सख्या–९ । आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४६५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल– × ।

नोट—श्लोक सख्या ४४ हैं ।

१३७४ प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१६५३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १८२३ ।

१३७५ प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–८"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१६१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—श्लोक सख्या ४८ है ।

१३७६. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र सख्या–१२ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३७७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३७७. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२७ । आकार–१०¾"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४०० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ८, सं० १८६६ ।

विशेष—ग्रन्थ की लिपि भोपाल में की गई ।

१३७८. भक्तामर स्तोत्र (सटीक)—नथमल और लालचन्द । देशी कागज । पत्र सख्या–४३ । आकार–११¾"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत व हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२२६६ । टीकाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १०, बुधवार, सं० १८२६ । लिपिकाल–पौष कृष्णा ११, मगलवार, स० १६५० ।

टिप्पणी—रायमल्लजी की टीका को देख करके हिन्दी टीका की गई प्रतीत होती है ।

१३७६ भक्तामर भाषा—पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१६६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८० भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—मानतुंगाचार्य । वृत्तिकार—**रत्नचन्द्र मुनि** । देशी कागज । पत्र सख्या–३१ । आकार–११"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५६६ । टीकाकाल–आषाढ शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६६७ । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ८, रविवार, स० १७११ ।

१३८१. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३३ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१३८७ । रचनाकाल– × । टीकाकाल–आषाढ शुक्ला ५, बुधवार, स० १६६७ । लिपिकाल–पौष शुक्ला १, स० १७७० ।

१३८२. भक्तामर (सटीक)—मानतुंगाचार्य । **टीका**– × । देशी कागज । पत्र सख्या–१५ । आकार–११"×५½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८३. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । अपूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१६८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—ग्रन्थ की केवल ३२ श्लोको में ही समाप्ति की गई है ।

१३८४ भक्तामर स्तोत्र (सटीक)—मानतुंगाचार्य । **टीका—अमरप्रभ सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०¼"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या—१६८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८५. प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१६६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८६. भक्तामर तथा सिद्धप्रिय स्तोत्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१० ।

आकार–९½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८७. भारती स्तोत्र–शंकराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१२½"×५¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२५१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८८. भुवनेश्वरी स्तोत्र–पृथ्वीधराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११¾"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२५१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८९. भूपाल चतुर्विशति स्तोत्र–पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२८०० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा २, स० १७०४ ।

विशेष–इसी ग्रन्थ मे वादिराज कृत एकीभाव स्तोत्र तथा अकलकाष्टक भी है ।

१३९०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ९, सं० १६७५ ।

१३९१ भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र (सटीक)–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१२½"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१९९३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ५, बृहस्पतिवार, स० १७९९ ।

१३९२ मगलपाठ–× । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३९३ महर्षि स्तवन–पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२०३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३९४. महालक्ष्मी कवच– × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९¾"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१९०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३९५ महालक्ष्मी स्तोत्र–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–८½"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा– संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१७३८ । रचनाकाल × । लिपिकाल– × ।

१३९६. महिम्नस्तोत्र (सटीक)–अमोघ पुष्पदन्त । टीका–ललिताशंकर । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । आकार–१२"×५½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१७२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १७९९ ।

१३९७. महिम्नस्तोत्र—अमोघ पुष्पदन्त। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–८३/४"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१३०६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा २, स० १८५८।

१३९८. मुक्तावली पूजा—×। देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–१०"×४१/२"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ सख्या–२४०७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३९९ यमाष्टकस्तोत्र सटीक –×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–१०१/२"×४१/२"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–२०१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४००. रत्नत्रय पजा—। देशी कागज। पत्र सख्या–६। आकार–११"×४३/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ सख्या–१९३३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ७, स० १८२६।

१४०१. रत्नत्रय पूजा—×। देशी कागज। पत्र सख्या–६। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ सख्या–२२५५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४०२ रामचन्द्र स्तवन—सनतकुमार। देशी कागज। पत्र सख्या–८। आकार–१०"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–२०९७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

अन्तभाग—

श्रीसनत्कुमारसहिताया नारदोक्त श्रीरामचन्द्रस्तवराज सपूरणम्॥

विशेष—यह वैष्णव ग्रन्थ है।

१४०३ लघु प्रतिक्रमण—×। देशी कागज। पत्र सख्या–१४। आकार–११"×४३/४"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२४३४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४०४ लघु शान्ति पाठ—×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–९३/४"×४१/४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१६४२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४०५. लघु सहस्त्र नाम स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–१०३/४"×४३/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२६६०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४०६. लघु स्तवन (सटीक)—श्री सोमनाथ। टीकाकार—मुनि मन्वगुण क्षोणी। देशी कागज। पत्र सख्या–१६। आकार–८१/२"×४१/४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत।

लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६०७। टीकाकाल—स० १३६७। लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १५, सं० १६२२।

१४०७. लघुस्वयंभू स्तोत्र—देवनंदि। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०"×४$\frac{1}{3}$"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३८३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ४, स० १७१४।

१४०८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७४६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–स० १८२०।

१४०९ प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६७३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४१० प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–११$\frac{1}{3}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४३८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १४, सोमवार, स० १८३८।

१४११ प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१२"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०६२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ४, स० १८१७।

१४१२. लघु स्वयभू स्तोत्र (सटीक)—देवनदि। टीका— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१७४७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, स० १८२०।

१४१३ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५७५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४१४ प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–९"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५३७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ८, सं० १८२७।

१४१५ लब्धिविधान पूजा—ब्र० हर्षकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२६५८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–बैशाख कृष्णा १३, स० १६४३।

१४१६ वर्द्धमान जिन स्तवन—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–७$\frac{1}{2}$"×३"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२८१२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४१७ वर्द्धमान जिन स्तवन (सटीक)—प० कनककुशल गणि। देशी कागज। पत्र

संख्या–१ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५६४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १६५३ ।

१४१८. **चन्देतान की जयमाल—माघनन्दि** । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२१३५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १६८२ ।

विशेष—सं० १६८३ बैशाख कृष्णा ६, को ब्रह्मगोपाल ने शोधित किया है ।

१४१६. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४२०. **बृहतप्रतिक्रमण (सार्थ)**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४५ । आकार–१३"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२७५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ३, रविवार, सं० १८५८ ।

१४२१. **बृहतशान्ति पाठ**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–६$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२५५८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४२२ **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०$\frac{1}{4}$" × ४"$\frac{1}{2}$ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५५६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४२३ **बृहत्स्वयम्भू स्तोत्र (सटीक)**—**समन्तभद्राचार्य । टीकाकार—प्रभाचन्द्राचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या–१३८ । आकार–१२$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{2}$" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१३४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ५, रविवार, सं० १७८८ ।

१४२४ **बृहत्षोडशकारण पूजा** — × । देशी कागज । पत्र संख्या–२८ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२६३१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१४२५ **बृहत्प्रतिक्रमण**— × । देशी कागज । पत्र संख्या— ६१ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११५१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल–पौष शुक्ला ८, बृहस्पतिवार, सं० १४६८ ।

१४२६. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४५३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४२७ **विधान व कथा संग्रह** × । देशी कागज । पत्र संख्या–११६ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–वृत, विधान एवं कथा । ग्रन्थ संख्या–१०२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४२८ **विनती संग्रह—पं० भूधरदासजी** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६½"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२७५८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

१४२९. **विमलनाथ स्तवन—विनीत सागर** । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–८½"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२७८६ । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला ९, स० १७८८ । लिपिकाल– × ।

विशेष—इस ग्रन्थ मे पार्श्वनाथ, आदीश्वर, चौबीस तीर्थंकर, सम्मेद शिखरजी, बारह मासा आदि सिद्धचक्र स्तवन भी है ।

१४३० **विषापहार स्तोत्र—धनंजय** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–८¾"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१८७५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १०, सं० १८७० ।

१४३१ **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–११"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४३२ **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–११"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ८, स० १६८२ ।

१४३३ **प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार—१०"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२०४१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४३४ **प्रति संख्या ५** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०२५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

१४३५ **विषापहार स्तोत्रादि टीका— ×** । **टीकाकार–नागचन्द्र सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–२८ । आकार–९½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१००४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

नोट—श्री प० मोहन ने स्वात्मपठनार्थ लिपि की है । इस ग्रन्थ मे श्री देवनंदि कृत सिद्धप्रियं व वादिराज उपनाम वर्द्धमान मुनीश्वर रचित एकीभाव स्तोत्र तथा महापण्डित आशाधर कृत "जिनस्तुति" और अन्त मे श्री धनंजय कृत विषापहार आदि स्तोत्रो की टीका नागचन्द्र सूरि ने इसमे की है ।

आदिभाग—

वंदित्वा सद्गुरुन् पंचज्ञानभूषणहेतवे

व्याख्या विषापहारस्य नागचन्द्रेण कथ्यते ।।१।।

अन्तभाग—

इयमर्हन्मतक्षीरपारावारपार्वणशशांकस्य मूलसंघदेशीगण पुस्तकगच्छप-नशोकावलीतिलकालकारस्य तौलवदेशविदेश पवित्रीकरण प्रवण श्रीमल्ललितकीर्तिभ-

ट्टारकस्याग्रशिष्य गुणवद्गाणगोषण—सकलशास्त्राध्ययन प्रतिष्ठायात्राद्युपदेशानून धर्मप्रभावनाधुरीण — देवचन्द्रमुनीन्द्रचरणनखकिरण चन्द्रिका — चकोरायमाणेन करणाय विप्रकुलोत्त स श्रीवत्सगोत्रपवित्र पार्श्वनाथगुमटाम्बातनूजेन प्रवादिग- जकेशरिणा नागचन्द्रसूरिणा विषापहारस्तोत्रस्य कृतव्याख्या कल्पान्त तत्वबोधायेति भद्रम् । इति विषापहारस्तोत्र-टीका समाप्त ।

१४३६. **प्रति संख्या** २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२३ । आकार–१०″×४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १२, सं० १८६८ ।

१४३७ **विषापहार विलाप स्तवन—वादिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–९$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२००७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४३८ **शनि, गौतम और पार्श्वनाथ स्तवन-संग्रह**–×। देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–८$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी और सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या २३१८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ शुक्ला १२, स० १८६२ ।

टिप्पणी—शनि स्तवन वि० स० १८६२ आषाढ शुक्ला ११, को लिखा गया । गौतम स्तवन के कर्ता लालूराम है । पार्श्वनाथ स्तोत्र के कर्ता श्री समयसुन्दर हैं ।

१४३९ **शनिश्चर स्तोत्र—दशरथ** । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–८$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२७६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४४० **शारदा स्तवन—हीर** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१४४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४४१ **शिव पच्चीसी व ध्यान बत्तीसी—बनारसीदास** । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या–१९३५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४४२ **शिव स्तोत्र**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–८″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१९२४ । रचना-काल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला ११, स० १९८० ।

१४४३ **शीतलाष्टक**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१५५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—नवग्रह मंत्र तथा शीतला देवी स्तोत्र है।

१४४४. शोभन स्तोत्र—केशरलाल। देशी कागज। पत्र संख्या-५। आकार-१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२४३६। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४४५ षोडषकारण जयमाल—×। देशी कागज। पत्र संख्या-१०। आकार-१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-अपभ्रंश और संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-पूजा। ग्रन्थ संख्या-२३८४। रचनाकाल- ×। लिपिकाल - ×।

१४४६ षोडषकारण पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या-४। आकार-१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-पूजा। ग्रन्थ संख्या-२४१०। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ५, सं० १७०६।

१४४७ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-३। आकार-१०" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२७२६। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४४८ सन्ध्या वन्दन —×। देशी कागज। पत्र संख्या-३। आकार-१०$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{2}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-१६४७। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४४९ समन्तभद्र स्तोत्र - ×। देशी कागज। पत्र संख्या-२२। आकार-११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२७५६। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १६७६।

१४५० समवशरण स्तोत्र—विष्णु शोभन (सेन)। देशी कागज। पत्र संख्या-४। आकार-११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२३५१। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

टिप्पणी—श्वेताम्बर आम्नायानुसार वर्णन है।

१४५१ समवशरण स्तोत्र—धनदेव। देशी कागज। पत्र संख्या-६। आकार-११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२६५६। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ११, रविवार, सं०१६४८।

१४५२ समाधि शतक—पूज्यपाद स्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या-६। आकार-१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{3}{4}$"। दशा-अनिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१९६२। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४५३ सम्मेद शिखरजी पूजा—मंतदेव। देशी कागज। पत्र संख्या-३। आकार-११"×५$\frac{1}{4}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-हिन्दी (पद्य)। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-१५०६। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४५४. सम्मेद शिखर पूजा— ×। देशी कागज। पत्र संख्या-२। आकार-९"×

४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या–२५५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४५५ सम्मेद शिखर महात्म्य—धर्मदास क्षुल्लक । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–६$\frac{3}{4}$" × ६$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (गद्य पद्य मिश्रित) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१९३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला ११, स० १९४२ ।

१४५६ सम्मेद शिखर विधान—हीरालाल । देशी कागज । पत्र सख्या–१८ । आकार–६"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८७३ । रचनाकाल–बैशाख कृष्णा ६, शुक्रवार, स० १९८१ । लिपिकाल– × ।

१४५५. सरस्वती स्तोत्र—प० आशाधर । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२१४८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४५८. सरस्वती स्तोत्र (सार्थ)— × । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२०८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४५९, सरस्वती स्तोत्र—प० बनारसीदास । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२६२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६० सरस्वती स्तोत्र—वृहस्पति । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा– सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–२०३५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

टिप्पणी—सरस्वती का रंगीन चित्र है, जिसमे सरस्वती हस पर बैठी हुई है । इसको प० भाग्य समुद्र के पठन के लिए लिखा गया बताया गया है ।

१४६१ सरस्वती स्तोत्र— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–८$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२८१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६२ सरस्वती स्तोत्र—श्री ब्रह्मा । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार—१०$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार–९"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०२३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला १३, शनिवार, स० १९०६ ।

१४६४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–११$\frac{1}{2}$" × ६$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१८२८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १९४८ ।

१४६५. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या– २ । आकार–९$\frac{3}{4}$"×६$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६६. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–८$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६७ सरस्वती स्तोत्र—विष्णु । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–६"×३$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१८४० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६८. सरस्वती स्तोत्र—नागचन्द्र मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–९"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१९१५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६९. सर्वतीर्थमाला स्तोत्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२१४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४७० सहस्त्र नाम स्तोत्र—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२३६४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४७१. सहस्त्र नाम स्तवन - जिनसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । आकार-१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४७२ स्तम्भन पार्श्वनाथ स्तोत्र—नयचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८९३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४७३ स्तोत्र संग्रह—संग्रहीत । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२४५८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

टिप्पणी—चतुर्विशति स्तोत्र, चन्द्रप्रभ स्तोत्र, चौबीस जिन स्तोत्र, पार्श्वनाथ स्तोत्र, शान्ति जिन स्तोत्र, महावीर स्तोत्र और घण्टा कर्ण मन्त्रादि है ।

१४७४ स्वर्णाकर्षण भैरव पद्धति विधि व स्तोत्र– × । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६०५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–द्वितीय फाल्गुन कृष्णा ६, सं० १९२२ ।

१४७५ साधु वन्दना—बनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–८$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४७६ः साधु वन्दना—पार्श्वचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०" × ३$\frac{३}{४}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२०१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–वैशाख कृष्णा १, सं० १७७६ ।

विशेष—अन्तिम पत्र पर वर्तमान काल के २४ तीर्थंकरो के नाम तथा सोलह सतीयो के नाम भी हैं ।

१४७७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०$\frac{१}{२}$"×४$\frac{३}{४}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण ।-ग्रन्थ संख्या–२७३३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४७८. साधु वन्दना—समयसुन्दर गणि । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । (१८वा पत्र नही है) । आकार–१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{२}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । अपूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२५३० । रचनाकाल–चैत्र मास स० १६६७ में अहमदाबाद मे । लिपिकाल– × ।

१४७९. साधारण जिनस्तवन (सटीक)—जयनन्द सूरि । टीकाकार—पं० कनक कुशल गणि । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार– १०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{४}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२५६३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

टिप्पणी—ग्रन्थ की रचना इन्द्रवज्रा छन्द मे की गई है ।

१४८०. सामयिक पाठ—\ । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१०" × ४$\frac{१}{२}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ५, स० १६७६ ।

१४८१ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१०$\frac{१}{४}$" × ४$\frac{३}{४}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४८२ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–११$\frac{१}{४}$"×४" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३४७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४८३ सामायिक पाठ— । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–११"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२४३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४८४ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०" × ४$\frac{१}{२}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७५३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४८५. सामायिक पाठ—× । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–१२$\frac{३}{४}$"× ६" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२०८० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४८६. प्रति संख्या २ । **देशी** कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–१०½″×४½″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४८७ सामायिक पाठ सटिक— × । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१२″×६″ दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२७७४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १७३६ ।

१४८८ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०″×४¾″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२८१८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४८६. प्रति सख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–१४ । आकार–१२½″×६″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६० सामयिक पाठ (सटीक)— × । **टीका**—× । देशी कागज । पत्र सख्या–४२ । आकार–११½″×५½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१७७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६१ सामायिक पाठ तथा तीन चौबीस नाम—× । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–११½″×५½″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६२ सिद्धचक्र पूजा—शुभचन्द्र । देशी कागज । पत्र सख्या–४५ । आकार–१०½″×४½″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५८४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६३ सिद्धचक पूजा—श्रुतसागर सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–१५ । आकार–११″×४¾″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–२०३८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६४ सिद्धचक्र पूजा—प० आशाधर । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–११¼″×४¾″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ सख्या–२३६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६५ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–६½″×४¾″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२२४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर कृष्णा ६, स० १८८६ ।

१४६६ सिद्धप्रिय स्तोत्र— × । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–६¾″×४¼″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या–१५६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६७, सिद्ध प्रिय स्तोत्र (सटीक)—देवनन्दि । टीकाकार—सहस्त्रकीर्ति । पत्र

सख्या–१४। आकार–८½"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१६६५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४६८. **सिद्ध सारस्वत मन्त्र गर्भित स्तोत्र—अनुभूति स्वरूपाचार्य।** देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–१०¾"×५½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–१८२२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४६६ **सिद्धान्त बिन्दु स्तोत्र—शंकराचार्य।** देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार–१०½"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा– सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–१६४६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५०० **सूर्योदय स्तोत्र—पं० कृष्ण ऋषि।** देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–८½"×३½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–१८३४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला ५, स० १८११।

१५०१ **शृंखला बद्ध श्री जिन चतुर्विशंति स्तोत्र—×।** देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–६½"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–१६५०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल— ×।

१५०२ **श्रावक प्रतिक्रमण—×।** देशी कागज। पत्र सख्या–१३। आकार–१०½"×६½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१६००। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५०३ **श्रीपाल स्तोत्र—×।** देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११½" × ४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ सख्या–१४७२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५०४ **श्रुत स्कन्ध पूजन भाषा—हेमचन्द्र ब्रह्मचारी। भाषाकार—पं० बिरधी चन्द।** देशी कागज। पत्र सख्या–१५। दशा–अच्छी। आकार–१२½"×५½"। पूर्ण। भाषा–संस्कृत व हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ सख्या–२६६६। भाषाकाल–फाल्गुन कृष्णा ५, सोमवार, स० १६०५। लिपिकाल– ×।

१५०५ **क्षेत्रपाल पूजा—शान्तिदास।** देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–१०"×४¾। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ सख्या–२३६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५०६ **ज्ञाताष्टक—×।** देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–६½"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४६०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १३, स० १७०६।

१५०७ ज्ञानांकुश स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–६¾"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत एवं हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२४८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ·।

विशेष—ग्रन्थ के अन्त मे प० द्यानतरायजी कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र है।

———

विषय—मन्त्र एवं यन्त्र

१५०८. **अनादि मूल मन्त्र** × । देशी कागज । पत्र संख्या –१ । आकार–६" × २½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१३२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५०६ **अर्घ काण्ड यन्त्र**—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार— २६" × २६" दशा जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत व संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२८११ । रचनाकाल– × ।

१५१० **उच्छिष्ट गणपति पद्धति** —× । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार— १०" × ५¾" । दशा अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१८८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ३ सं० १६२२ ।

१५११ **ऋषि मण्डल यन्त्र** —× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–१२¾" × १२¾" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । रचनाकाल– × ।

विशेष—वस्त्र पर यन्त्र के पुरे कोठे भरे हुए नहीं हैं ।

१५१२ **ऋषि मण्डल यन्त्र**— × । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–२१" × २१" दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२०७ । रचना काल– × ।

टिप्पणी—वस्त्र कट जाने से छिद्र हो गये हैं ।

१५१३ **ऋषि मण्डल व पार्श्वनाथ चिन्तामणि बड़ा यन्त्र**— × । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–४३½" × २७½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२२३ । रचनाकाल– × ।

टिप्पणी—ऋषि मण्डल व चिन्तामणि दोनो यन्त्र एक ही कपड़े पर बने हुए है ।

१५१४ **कर्म दहन मण्डल यन्त्र** – × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार— २२" × १८½" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२१० । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १, मंगलवार, सं० १८४५, महाराष्ट्र नगर में रचना की गई ।

विशेष—कागज पर यन्त्र बनाकर कपडे पर न फटने के लिए चिपका दिया गया है ।

१५१५. **कलश स्थापना मन्त्र**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार– ११" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–२७८२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

१५१६. गणधर वलय यन्त्र – × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । **आकार**–१३½" × १३½" । **दशा–अच्छी** । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि नागरी । विषय-यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२०४ । **रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला** १५, बृहस्पतिवार स० १७८६ ।

१५१७. गाथा यन्त्र– × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । **आकार**–१०½" × ४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२४२६ । रचना काल– × । लिपिकाल– × ।

१५१८ गुण स्थान चरचा— × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–२४⅛" × १५½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि––नागरी । विषय––सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२२२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—कपडे पर गुण स्थानो का पूर्ण विवरण दिया गया है ।

१५१९. चिन्तामणि पार्श्वनाथ यन्त्र— । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–१८"½ × १८½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या—२२१७ । रचनाकाल– × ।

विशेष—कपडे पर चिन्तामणि पार्श्वनाथ का रगीन यन्त्र है ।

१५२०. ज्वालामालिनी यन्त्र— × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–१७½" × १७½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२१८ **रचनाकाल**– × ।

१५२१. दशलक्षण धर्म यन्त्र– × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–६½" × ६½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२३० । रचना-काल–भाद्रपद शुक्ला ६, स० १६१८ ।

विशेष—वस्त्र पर दशलक्षण धर्म यन्त्र बना हुआ है ।

१५२२. ध्यानावस्था विचार यन्त्र— । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार—२४¾" × २४¾" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय-यन्त्र । ग्रन्थ सख्या –२२२६ । रचनाकाल– × ।

टिप्पणी—इस यन्त्र मे माला फेरते समय ध्यानावस्था के विचारो को बताया गया है । इसी यन्त्र मे रत्न त्रय के तीन कोठे हैं, दूसरे चक्र मे दशलक्षण धर्मो का वर्णन, तीसरे मे चौबीस तीर्थङ्करो के तथा अन्तिम वलय मे १०८खाने है । उनमे कृत, कारित, अनुमोदना पूर्वक क्रोध, मान, माया और लोभ के त्याग का ध्यानावस्था मे विचार करने का वर्णन है ।

१५२३ नवकार महामन्त्र कल्प— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०" × ४¾" दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२८३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५२४. नवकार रास—जिनदास श्रावक । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र । ग्रन्थ संख्या–१७५४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१५२५. पद्मावती देवी यन्त्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–२१$\frac{1}{2}$"×१६" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२३७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१५२६ परमेष्ठी मन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्रतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र । ग्रन्थ सख्या–१४६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१५२७. पंच परमेष्ठीमण्डल यन्त्र— × । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–२१$\frac{1}{2}$"×१८$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२०६ । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १, मगलवार स० १८४५ ।

१५२८. भैरव पताका यन्त्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–२५"×२०$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१५२९. भैरव पद्मावती कल्प—मल्लिषेण सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–३६ । आकार—१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२७५२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१५३०. वृहत्षोडष कारण यन्त्र— × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–२६$\frac{1}{2}$"×२६$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२१४ । रचनाकाल– × ।

विशेष— कपडे पर रगीन चित्र है, जिसमे १६८ कोठे बने हुए हैं ।

१५३१. वृहद् सिद्धचक्र यन्त्र— × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–२५$\frac{1}{2}$"×२५$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२१६ । रचनाकाल– × ।

१५३२ विजयपताका मन्त्र— × । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र । ग्रन्थसख्या–१५५६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५३३. विजयपताका यन्त्र— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–६"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५३४ शान्ति चक्र मण्डल— × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–६$\frac{3}{4}$" × ८$\frac{3}{4}$" दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२२७ । रचना-काल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा २, स० १८०१ ।

१५३५. शिवार्चन चन्द्रिका—श्रीनिवास भट्ट । देशी कागज । पत्र सख्या ४ । आकार–११" × ५" दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ सख्या–१८८७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५३६ षट्कोण यन्त्र— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–७" × ५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२३४ । रचनाकाल– ×। लिपिकाल– × ।

नोट– कपड़े पर षट्कोण का अपूर्ण यन्त्र बना हुआ है ।

१५३७ सम्यक चरित्र यन्त्र— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–६" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२३३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५३८. सम्यग्दर्शन यन्त्र— × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–५$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र। ग्रन्थ सख्या–२२३२ । रचना–काल– × ।

१५३९ सम्यग्दर्शन यन्त्र— × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–५$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२३१ । रचनाकाल– × ।

१५४० स्वर्णाकर्षण भैरव— × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०" × ६$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ सख्या–१९०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ३, स० १९२३ ।

१५४१ हमल वज्र यन्त्र— × । वस्त्र पर । पत्र सख्या–१ । आकार–१८"×१७" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२२२ । रचनाकाल– × ।

विशेष—यह यन्त्र श्वेताम्बराम्नायानुसार है । यन्त्र मे सुनहरी काम है, वह अति सुन्दर लगता है ।

योग शास्त्र

१५४२. योग शास्त्र—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–४८ । **आकार–** १०$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । **विषय–योग । ग्रन्थ संख्या–** १६७० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १४, स० १६६०

१५४३ योगसार सग्रह—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३५ । **आकार–११"×** ५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । **विषय–योग** । **ग्रन्थ संख्या–१५६३** । **रचनाकाल**– × । लिपिकाल– × ।

१५४४ योगसाधनविधि (सटीक)— गोरखनाथ । टीकाकार—रूपनाथ ज्योतिषी । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । आकार–११"×५$\frac{3}{4}$" । **दशा–अच्छी** । पूर्ण । **भाषा–** हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–योग । ग्रन्थ सख्या–१७२२ । **रचनाकाल**– × । **लिपिकाल**– × ।

१५४५ योग ज्ञान—× । देशी कागज । पत्र **सख्या–६** । **आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"** । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । **विषय–योग** । ग्रन्थ सख्या–१४२३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५४६ प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । **आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"** । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५४७ हट प्रदीपिका आत्माराम योगीन्द्र । देशी कागज । पत्र **सख्या–१५** । आकार–६$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । **विषय–योग** । **ग्रन्थ** सख्या–१६४० । । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद **शुक्ला १**, स० १८८० ।

१५४८ ज्ञान तरंगिणी–मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूषण । देशी कागज । पत्र सख्या–२७ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८१७ । रचनाकाल–स० १५६० । लिपिकाल–फाल्गुन **शुक्ला** १२, स० १८१८ ।

१५४९ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–२८ । **आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"** । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२७५ । रचनाकाल–सं० १५६० । **लिपिकाल–सं०** १८५० ।

१५५० प्रति सख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–१७ । **आकार–११$\frac{3}{4}$"×५"** । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४४१ । रचनाकाल–सं० १५६० । लिपिकाल–**माघ शुक्ला** १२, स० १७६२

१५५१. ज्ञानार्णव—शुभचन्द्रदेव । देशी कागज । पत्र सख्या–१४३ । **आकार–** ११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । **ग्रन्थ सख्या–**

१२०५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ११, सोमवार, स० १५०७ ।

टिप्पणी—पन्ने परस्पर चिपके हुए हैं ।

१५५२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–६८ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अति जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११४७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ बुदी ३, शनिवार, स० १५२३ ।

१५५३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–२५१ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{2}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १, बृहस्पतिवार, स० १८४३ ।

१५५४ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–१३७ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२७६२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–माघ कृष्णा ४, स० १६१२ ।

१५५५, ज्ञानार्णव गद्यटीका—श्रुतसागर । देशी कागज । पत्र सख्या– ११ । आकार–६$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा १, शनिवार, स० १७८० ।

१५५६ ज्ञानार्णव तत्व प्रकरण—× । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१६६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—श्री शुभचन्द्राचार्य कृत ज्ञानार्णव के आधार पर हिन्दी मे तत्व प्रकरण को लिखा गया है ।

१५५७ ज्ञानार्णव तत्व प्रकरण—× । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२१५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५५८ ज्ञानार्णव वचनिका—पं० जयचन्द । देशी कागज । पत्र सख्या–२७१ । आकार–११" × ७$\frac{3}{4}$" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत टीका हिन्दी मे । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८०० । रचनाकाल–माघ शुक्ला ५, स० १८६६ । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ८, स० १८७५ ।

विशेष—वचनिकाकार की विस्तृत प्रशस्ति है ।

१५५६ ज्ञानार्णव वचनिका—शुभचन्द्राचार्य । टीकाकार—पं० जयचन्द छाबड़ा । देशी कागज । पत्र सख्या–२ से ४० (प्रथम पत्र नही है) । आकार–१३$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२८५३ । रचनाकाल– × ।

टीका रचनाकाल–माघ शुक्ला ५, बृहस्पतिवार, सं० १८१७। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ४, शनिवार, सं० १८६३।

१५६०. ज्ञानाकुंश–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०″×४$\frac{3}{4}$″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४०१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ७, सं० १८२०।

व्याकरण शास्त्र

१५६१ अनिट कारिका— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–११" × ४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ सख्या–१४८७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५६२ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०" × ४" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१४८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५६३ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–८¾" × ४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१८८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५६४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०¼" × ४¼" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२१५० । रचनाकाल– । लिपिकाल– × ।

१५६५ प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०¾" × ४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६२८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आश्विन शुक्ला १३, स० १७१३ ।

१५६६. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–११" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६३३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५६७ अनिट् कारिका (सार्थ)— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–११" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५६८ अनिट् सेट कारकष्टी— × । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१०½" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२००६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५६९ अव्यय तथा उपसर्गार्थ— × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–११¾" × ५¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ सख्या–१६६४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५७० अव्यय दीपिका— × । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१२" × ६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल स० १८२३ ।

१५७१ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–६¾" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १०, स० १८२१ ।

१५७२. **अव्यय दीपिका वृत्ति**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२००८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५७३. **उपसर्ग शब्द**— × । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार–१२"× ६" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१८८२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १६१४ ।

१५७४. **कातन्त्र रूपमाला—शिव वर्मा** । देशी कागज । पत्र संख्या–१०५ । आकार–१२"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६८२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५७५ **कातन्त्र रूपमाला वृत्ति—भावसेन** । देशी कागज । पत्र संख्या–६८ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३७८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५७६. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२८ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५७७ **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ७, सोमवार, सं० १५२४ ।

१५७८ **कारक परीक्षा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–११$\frac{1}{2}$"× ५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५७९ **कारक विवरण**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–८$\frac{3}{4}$"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७४० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ४, सं०१८७३ ।

१५८०. **क्रिया कलाप—विजयानन्द** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४५५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १७८४ ।

१५८१. **धातु पाठ—हर्षकीर्ति सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–११"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७५० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५८२. **धातु पाठ—हेमसिंह खण्डेलवाल** । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—कर्ता ने अपना पूर्ण परिचय दिया है । यह रचना सारस्वत मतानुसार है ।

१५८३ धातु रूपावली—×। देशी कागज। पत्र सख्या–२४। आकार–१२½″× ५¾″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१८०८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५८४ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–५४। आकार–११½″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा-सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–११८७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५८५ पद संहिता—×। देशी कागज। पत्र सख्या–१०। आकार–१०½″×५″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत और हिन्दी। लिपि नागरी। ग्रन्थ सख्या–१८३६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—परमहंस परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया के पद्यो का सरल हिन्दी में अनुवाद है।

१५८६ पाणिनीय सूत्र परिभाषा—व्याडि। देशी कागज। पत्र सख्या–३। आकार–१०″ × ४½″। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२२५३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, स० १८४४।

१५८७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–६¾″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२३१२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल ×।

१५८८ पंच सन्धि शब्द ×। देशी कागज। पत्र सख्या–७। आकार–६″×४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२११६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५८९ प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राश्रम। देशी कागज। पत्र सख्या–१७२। आकार–१२½″×४¾″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२६६७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ।

नोट—द्वितीया वृत्ति है।

१५९० प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राश्रम। देशी कागज। पत्र सख्या–५१। आकार–१२½″×४¾″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२६६८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १, स०१६५४।

नोट—तृतीया वृत्ति है।

१५९१ प्राकृत लक्षण—पं० चण्ड। देशी कागज। पत्र सख्या–६। आकार–१०¾″×५″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१३३३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५९२ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–१४। आकार–११″×५½″। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१४९२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५९३ प्राकृत लक्षण विधान—कवि चण्ड। देशी कागज। पत्र सख्या–२०।

आकार–१२½"×५½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, सस्कृत, अपभ्रंश, पैशाची, मागधी और सौरशेनी । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ सख्या–१०४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला १२, स० १७३२ ।

१५९४. **लघु सारस्वत—कल्याण सरस्वती** । देशी कागज । पत्र सख्या–२२ । आकार–९½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ सख्या–१९९० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष कृष्ण २, स० १८०७ ।

१५९५ **लघु सिद्धान्त कौमुदी—पाणिनी ऋषिराज** । देशी कागज । पत्र सख्या–९२ । आकार–१०"×४½ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ सख्या–११९७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५९६ **वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक—दामोदर** । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३१४ । रचनाकाल–स० १६०७ । लिपिकाल– × ।

नोट—ग्रन्थाग्रन्थ सख्या ६३२ है ।

१५९७. **वाक्य प्रकाशाभिधस्य टीका**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–९ । आकार–१०"×४½" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५९८ **शब्द बोध**– × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०½"×४⅚" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ सख्या–१७६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५९९ **शब्द भेद प्रकाश—महेश्वर कवि** । देशी कागज । पत्र सख्या–१७ आकार–१२"×५½ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ सख्या–१९८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६०० **शब्द रूपावली**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–११ । आकार–१२"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६०१ **प्रति संख्या—२** । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । आकार–१२"×५½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२७४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १२ स० १८८७ ।

१६०२. **शब्द रूपावली**— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१८⅞"×५⅔ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६०३ **शब्द रूपावली (अकारान्त पुलिंग शब्द)**– × । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०½×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–

२०१७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६०४ शब्द रूपावली— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–२६। आकार–८$\frac{1}{2}$× ४$\frac{1}{2}$। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२११६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, सं० १८८३।

१६०५ शब्द समुच्चय—अमरचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३३२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६०६ शब्द साधन — ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–८$\frac{1}{4}$"×४" दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१८५१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, सं० १८८३।

१६०७ शब्दानुशासन वृत्ति—हेमचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–५२। आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६०८ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६७१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—चतुर्थ अध्याय पर्यन्त है।

१६०९ षट् कारक प्रक्रिया—। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०× ४$\frac{1}{4}$। दशा– प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१२७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला, ७ सं० १८२१।

१६१० सन्धि अर्थ—पं० योगक। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–६"× ४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत व हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१४७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १, सं० १८१६।

१६११ सप्त सूत्र– । देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–७$\frac{1}{2}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१४५०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६१२. समास चक्र— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६८५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– सं० १६१७।

१६१३. समास प्रयोग पटल—वररूचि।। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१६४५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६१४ समास प्रयोग पटल—पं० वररूचि। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि नागरी। ग्रन्थ संख्या–

२६५३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६१५. सर्वधातु रूपावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३० । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१२४२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १४, सं० १८५५ ।

१६१६. सारस्वत दीपिका–अनुभूति स्वरूपाचार्य । टीकाकार–मेघरत्न । देशी कागज । पत्र संख्या–३०६ । आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१०६५ । रचनाकाल– × । टीकाकाल–विक्रम सं० १५३६ । लिपिकाल– × ।

१६१७ सारस्वत धातु पाठ– हर्षकीर्ति सूरी । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१२६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ३, सं० १७५८ ।

१६१८ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१०×४$\frac{3}{4}$ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ८, शुक्रवार सं० १६५८ ।

नोट— ग्रन्थ की नागपुर के तपागच्छ में रचना हुई लिखा है ।

१६१९ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१०० । रचनाकाल- × । लिपिकाल– × ।

१६२० सारस्वत प्रक्रिया पाठ – परमहंस परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार– १०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१८८३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६२१. सारस्वत ऋजुप्रक्रिया—परमहंस परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६२२ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–९"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६०८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा ८, सं० १७०३ ।

१६२३ सारस्वत प्रक्रिया—परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१०३ । आकार–१०$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रथ संख्या–२६८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ७, सं० १६४२ ।

१६२४ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७६ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४२५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६२५ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–५६ । आकार १०"×४"। दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१६७३ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १, बृहस्पतिवार स० १७६० ।

१६२६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–१०२ । आकार–१०"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या– १५८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल—आषाढ कृष्णा १४, स० १७८६ ।

१६२७ प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र सख्या–२८ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११४८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६२८ प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–८६ । आकार-११½"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१००६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– कार्तिक शुक्ला ३, बृहस्पतिवार स० १५७६ ।

१६२९ प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र सख्या-४१ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६३० प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र सख्या–५६ । आकार—१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६३१. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र सख्या–६१ । आकार–११½"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ११, शुक्रवार स० १८०५ ।

१६३२ प्रति सख्या १० । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१३३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६३३ प्रति सख्या ११ । देशी कागज । पत्र सख्या -४३ । आकार–१०"×५" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—अनेक पत्र जीर्णक्षीण अवस्था मे है। अनुभूति स्वरूपाचार्य का दूसरा नाम नरेन्द्रपुरीचरण है ।

१६३४ प्रति संख्या १२ । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–११¾"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६३५ प्रति सख्या १३ । । देशी कागज । पत्र सख्या–४३ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—अनुभूति स्वरूपाचार्य का दूसरा नाम नरेन्द्रपुरीचरण है, उसी नाम से उल्लेख किया गया है ।

१६३६ प्रति संख्या १४ । **टीकाकार—श्री मिश्र वासव** । देशी कागज । पत्र सख्या—८३ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११८० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ५, रविवार, स० १६१५ ।

नोट—टीका का नाम बालबोधिनी टीका है ।

१६३७ प्रति संख्या १५ । देशी कागज । पत्र संख्या–५२ । आकार– १०"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१८७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष कृष्णा ८, सोमवार स० १८४४ ।

१६३८. प्रति संख्या १६ । देशी कागज । पत्र संख्या–४७ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११५३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—अन्तिम पत्र नही है ।

१६३९. प्रति संख्या १७ । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–११×"४½" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१३९३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १५४६ ।

१६४० प्रति संख्या १८ । देशी कागज । पत्र सख्या–१०४ । आकार–११½"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४५० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला ७, स० १६५७ ।

१६४१ प्रति सख्या १९ । देशी कागज । पत्र सख्या–५९ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४९४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६४२ प्रति संख्या २० । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–११"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२८०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष— केवल विसर्ग सन्धि है ।

१६४३ प्रति सख्या २१ । देशी कागज । पत्र सख्या–९ । आकार–९½"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२६८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६४४ सारस्वत ऋजु प्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–११½×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या- २०७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—प० उधा ने नागौर मे लिपि किया ।

१६४५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–९"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१३७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—सज्ञा प्रकरण प्रर्यन्त ही है ।

१६४६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०" × ४½ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२०२९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा २, मगलवार, स० १७०३ ।

नोट—ग्रन्थ संज्ञा पर्यन्त ही है ।

१६४७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–७ । आकार–१०"४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६४८ सारस्वत व्याकरण (सटीक)— अनुभूति स्वरूपाचार्य। टीका—धर्मदेव। देशी कागज। पत्र सख्या–६५। आकार–११$\frac{3}{4}$″×५″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०५८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १, बृहस्पतिवार, सं० १६०३।

१६४६ सारस्वत शब्दाधिकार— ×। देशी कागज। पत्र सख्या–६१। आकार–६$\frac{1}{2}$″×३$\frac{3}{4}$″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१५६४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ६, स० १६८६।

१६५०. सिद्धान्त कौमुदी (सूत्र मात्र) – ×। देशी कागज। पत्र सख्या–१७। आकार–११″×५$\frac{1}{4}$″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ सख्या–१३०५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६५१ सिद्धान्त चन्द्रिका (केवल विसर्ग सन्धि)–×। देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–११$\frac{1}{2}$″×५$\frac{1}{4}$″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२२८८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६५२ सिद्धान्त चन्द्रिका सटीक–उद्भट्ट। देशी कागज। पत्र सख्या–१ से १०। आकार–१२″×५$\frac{3}{4}$″। दशा–अच्छी। अपूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२८५०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६५३. सिद्धान्त चन्द्रिका मूल – रामचन्द्राश्रम। देशी कागज। पत्र सख्या–२४। आकार–१२$\frac{1}{2}$″×४$\frac{3}{4}$″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१८४६ रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६५४ प्रति सख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–४८। आकार–८$\frac{3}{4}$″×६$\frac{1}{4}$″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१८७४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–स० १६६०।

१६५५, प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र सख्या–५१। आकार– ८$\frac{3}{4}$″×६$\frac{1}{4}$″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८७८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ४, सोमवार स० १६०६।

१६५६. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र सख्या–२४। आकार–८$\frac{3}{4}$″×६$\frac{3}{4}$″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१७३५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—ग्रन्थ मे केवल स्वर सन्धि प्रकरण है।

१६५७ प्रति सख्या—५ देशी कागज। पत्र सख्या–२५। आकार–१०$\frac{1}{2}$″×६″। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–११३६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६५८. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र सख्या–४०। आकार–१०$\frac{1}{2}$″×५$\frac{1}{4}$″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२२६४। रचनाकाल– ×। लिपकाल– ×।

नोट—चूरादिक प्रकरण से ग्रन्थ प्रारम्भ किया गया है।

१६५६ सिद्धान्त चन्द्रिका—रामचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र सख्या–१३०।

आकार–१०"×४½ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, स० १८०६ ।

१६६० प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२१ । आकार–१०"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२७४० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १३, शुक्रवार स० १७८४ ।

१६६१ सिद्धान्त चन्द्रिका वृत्ति—रामचन्द्राश्रमचार्य । वृत्तिकार–सदानन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–८० । आकार–९¾"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६२ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या–१३२ । आकार–१०"×४½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६३ प्रति संख्या ४ । देशी कागज पत्र संख्या–२४२ । आकार–११½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण बुदी ८, स० १८६६ ।

१६६४ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या–१३३ । काकार–१०½"×४¾ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६५ प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–६५ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १४, मगलवार, स० १८४० ।

१६६६ प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र सख्या–१०३ । आकार–११×५½ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३१८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल × ।

१६६७. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र सख्या–११३ । आकार–११"×५½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२३२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६८ संस्कृत मजरी—× । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२१०८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, सोमवार, स० १८१९ ।

व्रत विधान साहित्य

१६६६. अणुव्रत रत्नप्रदीप—लाहल सुवलरकण। देशी कागज। पत्र सख्या–१२४। आकार–११½"×४¾"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ सख्या–१४११। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ६, शनिवार, सं० १५६६।

१६७०. अनन्त विधान कथा– ×। देशी कागज। पत्र सख्या–२ आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ सख्या–१४३२। रचनाकाल– ×।

१६७१ अष्टक सटीक–शुभचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र सख्या–१८। आकार–१०¾"×४½"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–विधि विधान। ग्रन्थ सख्या–२४०४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–×।

नोट—ग्रन्थ के दीमक लगजाने से अक्षरो को क्षति हुई है।

१६७२ अक्षय निधि व्रत विधान–×। देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–१०¾"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ सख्या–२६६३। रचनाकाल– × । लिपिकाल– ×।

१६७३ एकली करण विधान—×। देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–११¾"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–विधि विधान। ग्रन्थ संख्या–२५०६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६७४. कल्याण पंचका रूपण विधान—×। देशी कागज। पत्र सख्या–२१। आकार–११"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ सख्या–११६१। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१६७५ कल्याण माला—×। देशी कागज। पत्र सख्या–५। आकार–६½"×४"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–विधान। ग्रन्थ सख्या–१५४३। रचनाकाल–×। लिपिकाल– स० १६६२।

१६७६ जलयात्रा पूजा विधान—देशी कागज। पत्र सख्या—२। आकार–११"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा विधान। ग्रन्थ सख्या–१८५६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६७७ जिनयज्ञ कल्प — पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र सख्या–७२। आकार–११"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–विधि विधान। ग्रन्थ संख्या–२५१४। रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १५, सं० १२८५। लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ३ सं० १५०३।

१६७८. दशलक्षण व्रतोद्यापन— ×। देशी कागज। पत्र सख्या–१८। आकार–१०¾"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ सख्या–२१५४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल स० १७२१।

१६७९. द्वादश व्रत कथा— देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–९½"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ सख्या–१३२७।। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६८०. नन्दीश्वर कथा–×। देशी कागज। पत्र सख्या–३। आकार–११"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्रत कथा। ग्रन्थ सख्या–१९८४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६८१ नन्दीश्वर पंक्ति विधान—शिव वर्मा। देशी कागज। पत्र सख्या–२। आकार–११½"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–विधि विधान। ग्रन्थ सख्या–२०११। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६८२. प्रतिमा भंग शान्ति विधि—×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–९"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–शान्ति विधि। ग्रन्थ सख्या–१४४४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६८३ पच मास चतुर्दशी व्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या–२३। आकार–१०½"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ सख्या–१२२७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६८४. पंचमी व्रत पूजा विधान—हर्षकीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या–५। आकार–१०"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ सख्या–१८४१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ कृष्णा ४, रविवार, स० १९१३।

१६८५. पंचाशत क्रिया व्रतोद्यापन—×। देशी कागज। पत्र सख्या–८। आकार–१०"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ सख्या–२४०८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६८६ बारह व्रत टिप्पणी – ×। देशी कागज। पत्र सख्या–८। आकार–९"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या–२०५१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६८७. राई प्रकरण विधि—× । देशी कागज । पत्र सख्या– ३ । आकार–६३⁄₄"×४३⁄₄" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–विधि विधान । ग्रन्थ संख्या–२७८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—इस ग्रन्थ में विवाह के समय की जाने वाली क्रियाओं का वर्णन है ।

१६८८. राम विष्णु स्थापना—× । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–६१⁄₂"×४१⁄₂" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–विधि विधान । ग्रन्थ संख्या–२७६२ । । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—इस ग्रन्थ मे वैष्णव मतानुसार राम और विष्णु की स्थापना का वर्णन है ।

१६८६. रूक्मणी व्रत विधान कथा—**विशालकीर्ति** । देशी कागज । पत्र सख्या ५ । आकार–१३१⁄₂×८१⁄₂ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–मराठी । विषय–व्रत विधान । ग्रन्थ सख्या–२६१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १, शनिवार, स० १६४५ ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ मे पद्यो की सख्या १६६ हैं ।

१६६० व्रतों का वर्णन—× । देशी कागज । पत्र सख्या–२ । आकार–१२"×५३⁄₄" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–व्रत विधान । ग्रन्थ सख्या–१६५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६१. व्रत विधान कथा—**देवनन्दि** । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–१०३⁄₄"×५१⁄₂" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–व्रत कथा । ग्रन्थ संख्या–१३३५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६२ व्रत विधान रासो—**जिनमति** । देशी कागज । पत्र सख्या–१६ । आकार–११"×५१⁄₂" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–व्रत विधान । ग्रन्थ सख्या–१६०८ । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १०, स० १७६७ । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १४, स० १८५६ ।

१६६३ व्रत विधान रासो–पं० दौलतराम । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–८१⁄₂"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) लिपि–नागरी । विषय–रासो साहित्य । ग्रन्थ सख्या–१६६४ । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, स० १७६० । लिपिकाल–आषाढ शुक्ला १३, स० १८६४ ।

१६६४ व्रतसार— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०"×४१⁄₂" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या–२४६४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६५ वसुधारानाम धारिणी महाशास्त्र— × । देशी कागज । पत्र सख्या–६ ।

आकार–६¾"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा– सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–विधि विधान । ग्रन्थ सख्या–१६६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६६ श्रुतस्तपन विधि - × । देशी कागज । पत्र संख्या–४४ । आकार–११"×५" दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–विधि विधान । ग्रन्थ सख्या–२४०२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

———

लोक विज्ञान साहित्य

१६६७ **जम्बूद्वीप वर्णन**—× । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । **आकार**– १०½"× ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । **विषय–लोक विज्ञान** । **ग्रन्थ** सख्या–१६०१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६८ **त्रिलोक प्रज्ञप्ति – सि० च० नेमिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र सख्या–२८६ । आकार– १०½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । **विषय–लोक विज्ञान** । ग्रन्थ सख्या–१७६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६९. त्रिलोक स्थिति— देशी कागज । पत्र सख्या– ३३ । **आकार**–१०½"× ५½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–लोक विज्ञान । ग्रन्थ सख्या–११५६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, स० १६०४ ।

१७०० **त्रिलोकसार सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र सख्या– २३ । आकार–११"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय– लोक विज्ञान । ग्रन्थ सख्या–१३४२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७०१. **प्रति सख्या**—२ । देशी कागज । पत्र सख्या–७६ । **आकार**–१०¾"× ४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–**माघ शुक्ला १५, सोमवार**, स० १५५१ ।

१७०२. **प्रति सख्या** ३ । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । **आकार**–१२"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–२४६६ । रचनाकाल– × । **लिपिकाल–कार्तिक** शुक्ला १२, स० १५१० ।

१७०३ **त्रिलोकसार (सटीक)—नेमिचन्द्र । टीकाकार–सहस्त्रकीर्ति** । **देशी कागज** । पत्र सख्या–८५ । आकार–१०"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–**मूल प्राकृत मे और टीका सस्कृत मे** । लिपि–नागरी । विषय–लोक **विज्ञान** । ग्रन्थ सख्या–११४० । **रचनाकाल**– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ११, सोमवार, स० १५८४ ।

१७०४ **प्रति सख्या** २ । देशी कागज । पत्र सख्या–८५ । **आकार–१०¾"×४¾"** । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–**ज्येष्ठ कृष्णा ११, बृहस्पतिवार**, स० १५६५ ।

१७०५ **त्रिलोकसार सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र । टीका—ब्रह्माश्रुताचार्य** । देशी कागज । पत्र सख्या–४६ । **आकार**–११"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । **भाषा–प्राकृत एव** सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७०६. त्रिलोकसार सटीक—सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र । टीका—× । देशी

कागज। पत्र सख्या–२२१। आकार–११$\frac{3}{4}$" × ५$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत (मूल) टीका सस्कृत में। लिपि–नागरी। विषय–लोक विज्ञान। ग्रन्थ सख्या–१२१६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—टीका का नाम तत्व प्रदीपिका है।

१७०७. **त्रिलोकसार भाषा—सुमतिकीर्ति। देशी कागज**। पत्र संख्या–११। आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१६२६। रचनाकाल–माघ शुक्ला १२, स० १६२७। लिपिकाल– ×।

नोट—त्रिलोकसार (प्राकृत)मूल के कर्ता सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र हैं। उसी के आधार पर प्रस्तुत ग्रन्थ मे भाषा की गई है।

१७०८ **प्रति संख्या** २। देशी कागज। पत्र सख्या–८। आकार–१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२७३०। रचनाकाल–माघ शुक्ला १२, स० १६२७। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १, स० १८६०।

१७०९ **त्रिलोकसार भाषा—वत्तनाथ योगी**। देशी कागज। पत्र संख्या–६२। आकार–११"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१११७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ बुदी ५, सोमवार, स० १८६२।

श्रावकाचार साहित्य

१७१०. आचारसार—वीरनन्दि । देशी कागज । पत्र सख्या—६६ । आकार—१०"×४½" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ सख्या—१०८५ (ब) । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७११. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या—६२ । आकार—११"×४½" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—१३०२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—पौष कृष्णा ३, रविवार, स० १६६५ ।

१७१२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या—४१ । आकार—११"×४¾"" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—१२६५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१३ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या—४६ । आकार—११"×४¾" । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२४६२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१४ उपदेश माला— धर्मदास गरिण । देशी कागज । पत्र सख्या—३० । आकार—१०¼"×४¼" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ सख्या—११४५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१५ उपदेश रत्नमाला— सकलभूषण । देशी कागज । पत्र सख्या—१२७ । आकार—१०¼"×३¾" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ सख्या—१६७४ । रचनाकाल—श्रावण शुक्ला ६, स० १६२७ । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा ८, सोमवार, स० १८०४ ।

नोट—इस ग्रन्थ का नाम षट्कर्मोपदेश रत्नमाला भी है ।

१७१६ प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या—६८ । आकार—१२¼"×५¾" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२७०८ । रचनाकाल—श्रावण शुक्ला ६, स० १६२७ । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा २, शुक्रवार, स० १८८७ ।

आदिभाग—

वदे श्रीवृषभदेव दिव्यलक्षणलक्षितम् ।
प्रीणित-प्राणिसद्वर्ग युगादिपुरुषोत्तमम् ।।१।।

अन्तभाग—

श्रीमूलसघतिलके वरनदिसघे गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्धे ।
श्रीकुन्दकुन्दगुरु पट्टपरम्पराया श्री पद्मनदि मुनीपः समभुज्जिताक्षः ।।
तत्पट्टधारी जनहितकारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी ।

भट्टारक. श्री सकलादिकीर्तिः प्रसिद्धनामाऽजनि पुण्यमूर्तिः ।
भुवनकीर्तिगुरुस्तत उर्जितो भुवनभासनशासन मण्डनः ।
अजनि तीव्र तपश्चरणक्षमो विविधधर्मसमृद्धि सुदेशकः ।।

श्रीज्ञानभूषेण परिभूषितांग प्रसिद्ध पाण्डित्यकलानिधानः ।
श्रीज्ञानभूषाख्यगुरुस्तदीय पट्टोदयाद्राविव भानुरासीत् ।।

भट्टारक. श्रीविजयादिकीर्तिस्तदीय पट्टे परिलब्धकीर्तिः ।
महामना मोक्षसुखाभिलाषी बभूवः जैनावनिपार्श्वपाद ।।

भट्टारक· श्रीशुभचन्द्रसूरिस्तत्पट्टपंके रुहतिग्मरश्मिः ।
त्रैविद्यवंद्यः सकल प्रसिद्धो वादीभसिंहो जयताद्धरित्र्यां ।

पट्टे तस्य प्रीणित प्राणिवर्गं शान्तो दान्त शीलशाली सुधीमान् ।
जीयात्सूरि; श्रीसुमत्यादिकीर्तिर्गच्छाधीश क्रमकान्ति. कलावान् ।।

तस्याभूच्च गुरु भ्राता नाम्ना सकलभूषण ।
सूरिर्जिनमते लीनमनाःसन्तोषपोषक· ।।

तेनोपदेशसद्रत्नमालासंज्ञो मनोहर. ।
कृत· कृति जनानद-निमित्त ग्रन्थ· एषक ।।

श्रीनेमिचन्द्राचार्यादि यतीनामाग्रहात्कृत ।
सद्वर्धमानाटोलादि प्रार्थनातो मयैषक ।।

सप्तविंशत्यधिके षोडशशतवत्सरेषु विक्रमत· ।
श्रावणमासे शुक्लपक्षे षष्ठ्या कृतो ग्रन्थ ।।

१७१७ उपासकाचार —पूज्यपाद स्वामि । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—१०¾″×४½″ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ सख्या—२७६० । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१८. उपासकाध्ययन - वसुनन्दि । देशी कागज । पत्र सख्या—२६ । आकार—११″×४½″ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ सख्या—१३७५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१६ प्रति सख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या—३३ । आकार—१०½″×४¾″ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—१३७७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—सं० १६५३ ।

१७२०. प्रति सख्या ३ । देशी कागज । पत्र सख्या—२६ । आकार—११¾″×४½″ । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । । ग्रन्थ संख्या—१३६७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७२१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या—३८ । आकार— १०½″×४½″ । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—१३७८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ६, रविवार, स० १५२४ ।

१७२२ **प्रति संख्या ५** । देशी कागज । पत्र संख्या–३८ । आकार–१२″×४¾″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६७५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७२३ **क्रिया कलाप सटीक—पं० आशाधर** । देशी कागज । पत्र संख्या–१०८ । आकार–१४″×५½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७५५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा १, सं० १५३६ ।

१७२४. **क्रिया कलाप टीका—प्रभाचन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२३ । आकार–१०½″×४¾″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७२५ **क्रियाकोश भाषा—किशनसिंह** । देशी कागज । पत्र संख्या–८६ । आकार– १२″ × ५½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०६६ । रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला १५, रविवार, सं० १७८४ । लिपिकाल–पौष शुक्ला १५, सं० १८६४ ।

१७२६ **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–७६ । आकार–११½″ ५″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८०४ । रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला १५, रविवार, सं० १७८४ । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ८, शनिवार, सं० १८४६ ।

१७२७ **क्रिया विधि मंत्र**– × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–६¾″×४″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १२, रविवार, सं० १८४८ ।

१७२८ **जिन कल्याण माला—पं० आशाधर** । देशी कागज । पत्र संख्या -२ । आकार– ६¾″ ×·४½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७८४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७२९ **जैनरास**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–१०¾″×५½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या २५३५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, रविवार, सं० १९०१ ।

१७३० **धर्म परीक्षा – अमितगति** । देशी कागज । पत्र संख्या–९२ । आकार–११″×४¾″ दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६८९ । रचनाकाल–सं० १०७० । लिपिकाल– × ।

नोट—ग्रन्थ कर्ता की पूर्ण प्रशस्ति लिखि हुई है ।

१७३१. **धर्म प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—भट्टारक सकलकीर्ति** । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार–१०″×४¾″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७३२. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–८३ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१२८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ८, सोमवार, सं० १६५७ ।

१७३३. **धर्म संग्रह—पं० मेधावी** । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार–१०½" × ४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२४१ । रचनाकाल–स० १४४० । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला १४, शनिवार, स० १५७० ।

१७३४ **प्रति संख्या** २ । देशी कागज । पत्र सख्या–६० । आकार–११½"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०३७ । रचनाकाल–स० १४४० । लिपिकाल–भाद्रपद बुदी २, स० १७०८ ।

१७३५ **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र सख्या–५६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११८७ । रचनाकाल–स० १४४० । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ८, बुधवार, सं० १५६७ ।

नोट—ग्रन्थ कर्ता ने अपना पूर्ण परिचय दिया है ।

१७३६. **धर्म संग्रह—पं० मेधावी** । देशी कागज । पत्र सख्या–७४ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२५७३ । रचनाकाल–बैशाख शुक्ला १५, रविवार, स० १६४६ ।

विशेष—इस ग्रन्थ का नाम "सम्बन्ध ससूचिका चूलिका" भी है ।

१७३७. **धर्मामृत सुक्ति—पं० आशाधर** । देशी कागज । पत्र सख्या–६० । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१४०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १०, स० १५३६ ।

१७३८ **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–४७ । आकार–६½"×६¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–११८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—ग्रन्थ का अपरनाम सुक्ति सग्रह है ।

१७३६ **धर्मोपदेशपीयूष वर्ष–ब्रह्म नेमिदत्त** । देशी कागज । पत्र सख्या–२६ । आकार–१०"×४¾" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१०४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—पत्र अत्यधिक जीर्णावस्था मे हैं ।

आदिभाग—

श्री सर्वज्ञं प्रणम्योच्चैः केवलज्ञानलोचन ।
सद्धर्म देशयाम्येष भव्यानां शर्महेतवे ।।१।।

अन्तभाग—

गच्छे श्रीमति मूलतिलके सारस्वतीये शुभे ।

विद्यानदि गुरुप्रपट्टकमलोल्लास प्रदो भास्कर. ।
श्री भट्टारकमल्लिभूषणगुरू सिद्धान्तसिंधुर्मंहा—
स्तच्छिष्यो मुनिसिंहनदि सुगुरूर्जीयात् सता भूतले ।।१।।
तेषा पादाब्जयुग्मे निहित निजमतिर्नेमिदन. स्वशक्त्या ।
भक्त्या शास्त्र चकार प्रचुरसुखकर श्रावकाचारमुच्चैं. ।
नित्य भव्यैर्विशुदैं· सकलगुणनिधं प्राप्तिहेतु च मत्वा ।
युक्त्या ससेवितोऽसौ दिशतु शुभतम मगल सज्जनाना ।।१८।।
लेखकाना वाचकाना पाठकाना तथैव च
पालकाना सुख कुर्यान्नित्य शास्त्रमिद शुभं ।।१६।।

इति श्री धर्मोपदेशपीयूषवर्षनाम श्रावकाचारे भट्टारक श्री मल्लिभूषण-शिष्यब्रह्मनेमिदत्तविरचिते, सल्लेखनाक्रम व्यावर्णनोनाम पचमोऽधिकार । इति समाप्त ।

१७४० **प्रति संख्या** २ । देशी कागज । पत्र सख्या—२३ । आकार—६¾″×४½″ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—११४६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला ११, सोमवार, स० १६२६ ।

१७४१. **प्रति संख्या** ३ । देशी कागज । पत्र सख्या—२२ । आकार—१०″×४½″ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—१३६२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला २, स० १६७७ ।

१७४२ **प्रति संख्या** ४ । देशी कागज । पत्र सख्या—२१ । आकार—११″×४½″ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—१६१८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— बैशाख शुक्ला ५, स० १७०५ ।

१७४३ **प्रति संख्या** ५ । देशी कागज । पत्र सख्या—३१ । आकार—१०½″×४½″ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२५२३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— स० १६४४ ।

१७४४ **प्रति संख्या** ६ । देशी कागज । पत्र सख्या—२५ । आकार—१०½″×४¾″ । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२६६६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा १, स० १६६० ।

१७४५ **धर्मोपदेशामृत—पद्मनन्दि** । देशी कागज । पत्र सख्या—२४ । आकार—११½″×५½″। दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या—२७०२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

विशेष— ग्रन्थ के प्रारम्भ में पद्मनन्दि पच्चीसी लिखा है ।

१७४६ **पद्मनंदि पंचविंशति —पद्मनंदि** । देशी कागज । पत्र सख्या—२२४ । आकार—११″×४½″ । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ सख्या—१२७६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—स० १५८० ।

नोट—पत्र गल चुके हैं ।

१७४७ प्रति संख्या २। । देशी कागज । पत्र संख्या-६६ । आकार-१२½"×५½" । दशा- अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या १२८२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल- × ।

१७४८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५८ । आकार-११¾"×७" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या- १५३७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल- × ।

१७४९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार-१०½"×४½" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०४५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५० प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार—१२½"×६" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१००६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५१ प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । आकार-१०½"×४½" दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८५७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ६, शुक्रवार, स० १८०७ ।

१७५२ प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-४८ । आकार-११¾"×५¾" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६३२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-कार्तिक सुक्ला ३, सोमवार, स० १८१६ ।

१७५३ प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार-१२½"×५¾" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३२३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-× ।

१७५४ पद्मनंदि पचविंशति (सटीक)— × । देशी कागज । पत्र संख्या-१४७ । आकार-१२½"×५½" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५४६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५५, प्रबोधसार—यश कीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-११½"×५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६५६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५६ प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-१२३ । आकार-१०¾"×८½" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५७ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७३ । आकार-११¾"×६¾" । दशा-बहुत सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५६२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १२, स० १९२१ ।

१७५८ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१११ । आकार-११"×४½" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७४२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा ७, रविवार, सं० १७११ ।

नोट—प्रशस्ति दी गई है ।

१७५६ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२७ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"× ५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७६०. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–११४ । आकार–११$\frac{1}{4}$"× ५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ६, सोमवार, स० १६६५ ।

१७६१ प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–१३८ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३५० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ४, सोमवार, स० १७२६ ।

१७६२ प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या–१५६ । आकार–११"× ४$\frac{3}{4}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२३३ । रचनाकाल– × । लिपि-काल– × ।

१७६३ प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या–१३३ । आकार–११"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३०१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा १, स० १६५० ।

१७६४ प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–११० । आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ बुदी ६, सोमवार, स० १५६० ।

१७६५ प्रति संख्या १० । देशी कागज । पत्र संख्या–११३ । आकार–६$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७६६ प्रति संख्या ११ । देशी कागज । पत्र संख्या–१३४ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६२४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मगसिर कृष्णा ३, सोमवार, स० १५६३ ।

टिप्पणी—लिपिकार ने पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

१७६७ प्रति संख्या १२ । देशी कागज । पत्र संख्या–१७१ । आकार–११$\frac{1}{2}$"× ५$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६०० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, स १६५३ ।

१७६८. प्रति संख्या १३ । देशी कागज । पत्र संख्या–८६ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" दशा–जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा २, शनिवार, स० १७०६ ।

नोट—लिपिकार की प्रशस्ति का पत्र नहीं हैं ।

१७६६ प्रायश्चित शास्त्र—अकलंक स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०"×५" । दशा–अच्छी सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४७८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७७०. **मूलाचार प्रदीपिका—भट्टारक सकलकीर्ति** । देशी कागज । पत्र संख्या–१०७ । आकार–१५३/४"×६१/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–श्रावकाचार । ग्रन्थ सख्या–१०७७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७७१ **रत्नकरण्ड श्रावकाचार (सटीक)—समन्तभद्र । टीकाकार–प्रभाचन्द्राचार्य** । देशी कागज । पत्र सख्या–३८ । आकार—१५"×६३/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१२७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–प्रथम आषाढ कृष्णा ७, स० १८६६ ।

१७७२ **प्रति संख्या २** । । देशी कागज । पत्र सख्या–६९ । आकार १०१/४"×४१/२" । दशा–जीर्णक्षीण । । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या १००० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला १२, स० १५४३ ।

१७७३. **रत्नकरण्ड श्रावकाचार—श्रीचन्द** । देशी कागज । पत्र सख्या–१४० । आकार–१०३/४"×४१/२"दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–श्रावकाचार । ग्रन्थ सख्या–१०९१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा ११, रविवार, स० १६५१ ।

१७७४. **प्रति सख्या २** । देशी कागज । पत्र सख्या–१३१ । आकार–१२३/४"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१७९८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७७५ **रत्नमाला – शिवकोट्याचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१२१/२"×५१/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२०१५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल— × ।

१७७६ **रत्नसार—पं० जीवन्धर** । देशी कागज । पत्र सख्या–३० । आकार-११"×४३/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२७०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७७७ **रात्रि भोजन दोष विचार—धर्म समुद्र वाचक** । देशी कागज । पत्र सख्या–१८ । आकार–१०"×४१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२४७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल -चैत्र शुक्ला ५, सोमवार, स० १६८७ ।

१७७८ **विवेक विलास—जिनदत्त सूरि** । देशी कागज । पत्र सख्या–४९ । आकार–६१/२"×४१/४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२४३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १६०६ ।

विशेष—श्री शेरशाह के राज्य में लिपि की गई । परस्पर में पत्र चिपक जाने से अक्षरो को क्षति हुई है ।

१७७९ **व्रतसार श्रावकाचार**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०३/४"×४१/२" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५९१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१७८० षट्कर्मोपदेश माला--अमरकीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या–९३। आकार–११½" × ५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१४०८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ कृष्णा १३, स० १६०७।

१७८१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–१०१। आकार–११½"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–११३३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–पौष बुदी १३, सोमवार, स० १५९३।

१७८२ षट्कर्मोपदेश रत्नमाला—भट्टारक लक्ष्मणसेन। पत्र सख्या–९५। आकार–११½" × ४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ सख्या–१०८५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १५, शुक्रवार, स० १७३३।

नोट—प्रशस्ति विस्तृत रूप से दी हुई है।

१७८३ श्रावकचूर्णी— ×। देशी कागज। पत्र सख्या–३६। आकार–१०½" ×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ सख्या–१४१६। रचनाकाल-- ×। लिपिकाल--- ×।

१७८४ श्रावक धर्म कथन— ×। देशी कागज। पत्र संख्या– ७। आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१३११। रचनाकाल— ×। लिपिकाल– ×।

१७८५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–६। आकार–६" × ४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–१६१२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १२, स० १६७१।

१७८६ श्रावक व्रत भण्डा प्रकरण सार्थ - ×। देशी कागज। पत्र सख्या–३। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२०६४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७८७ श्रावकाचार—पद्मनन्दि। देशी कागज। पत्र सख्या–६४। आकार–१०¾"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१०१३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ सुदी १३, सोमवार, स० १७०३।

नोट—प्रशस्ति विस्तृत रूप में उपलब्ध है।

१७८८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–९४। आकार–१०¾"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–११८९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा २, बृहस्पतिवार स० १६१५।

१७८९ प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र सख्या–६८। आकार–११¾" ×

४३/४″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२४३७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, बृहस्पतिवार, स० १६००।

१७६०. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र सख्या–६८। आकार–१०१/२″×४३/४″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२६६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १, रविवार, स० १६७६।

१७६१. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र सख्या–७७। आकार–१०३/४″×४३/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२५३४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ८, स० १६७२।

विशेष—लिपिकार ने अपनी प्रशस्ति मे भट्टारको का अच्छा वर्णन किया है।

१७६२. श्रावकाचार – पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र सख्या–१७ से ६५। आकार–१०″×४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ सख्या–१२१०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–१३। आकार–११″×४३/४″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२३६३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६४ श्रावकाचार – ×। देशी कागज। पत्र सख्या–११। आकार–१२″×५″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३५६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६५ श्रावकाचार—भट्टारक सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र सख्या–७०। आकार–१२″×५″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ सख्या–१७३४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६६ श्रावकाचार—पूज्यपाद स्वामी। देशी कागज। पत्र सख्या–६। आकार–१०३/४″×४१/२। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२०५६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ शुक्ला ५, स० १६७५।

१७६७ प्रति सख्या २। देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–१०″×५१/२″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या– २४४६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६८ श्रावकाराधन- समय सुन्दर। देशी कागज। पत्र सख्या–८। आकार–१०१/४″×४१/२″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२७१६। रचनाकाल–स० १६६७। लिपिकाल– ×।

१७६६. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा— कार्तिकेय। देशी कागज। पत्र सख्या–२७। आकार–१०३/४″×५१/४″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ सख्या–१३६८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १६३५।

१८०० **सागार धर्मामृत—पं० आशाधर।** देशी कागज। पत्र संख्या–५६। आकार–११" × ५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१२४०। रचनाकाल–सं० १२९६। लिपिकाल–मगसिर शुक्ला २, बृहस्पतिवार, सं० १६५३

१८०१ **प्रति संख्या २।** देशी कागज। पत्र संख्या–९६। आकार–१०३/४"×५१/२"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१००१। रचनाकाल–पौष कृष्णा ७, सं० १२९६। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ८, सोमवार, सं० १६१२।

नोट—प्रशस्ति विस्तृत रूप से उपलब्ध है।

१८०२ **सागार धर्मामृत सटीक—पं० आशाधर। टीकाकार**–×। देशी कागज। पत्र संख्या–९२। आकार–१०"×४१/४"। दशा–जीर्णक्षीण।। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१००८। रचनाकाल–पौष बुदी ७, सं० १२९६। लिपिकाल–×।

नोट—टीका का नाम "कुमुद चन्द्रिका" है।

१८०३ **प्रति संख्या २** देशी कागज। पत्र संख्या–११४। आकार–१११/२"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३२५। रचनाकाल–सं० १३००। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ५, मंगलवार, सं० १६८७।

विशेष—वि० सं० १३०० कार्तिक मास मे नलकच्छपुर मे नेमिनाथ चैत्यालय में रचना की गई।

१८०४ **सार समुच्चय—कुलभद्र।** देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–११"×४१/२"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०१३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा २, मंगलवार, सं० १६९९।

विशेष—इस ग्रन्थ की मालपूरा मे लिपि की गई।

१८०५ **प्रति संख्या २।** । देशी कागज। पत्र संख्या–१७। आकार–११"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४०६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१८०६. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–१११/२"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६५५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला ७, सोमवार, सं० १६४५।

१८०७ **प्रति संख्या ४।** देशी कागज। पत्र संख्या–२३। आकार–१०"×४१/२"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या– २६९७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१८०८ **प्रति संख्या ५।** देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–१०१/२"×४१/२"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ११, मंगलवार, सं० १५६२।

विशेष—लिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है।

१८०९. **सम्बोध पंचासिका सार्थ** – × । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०"×४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत व संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या २४२२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा १४, शनिवार, सं० १७०६ ।

१८१०. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–८१ । आकार–११½" ×५½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा २, शनिवार, सं० १८१७ ।

१८११. **त्रिवर्णाचार—जिनसेनाचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या–२०२ । आकार–१३"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या–१५८९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

———

अवशिष्ट साहित्य

१८१२. अट्ठारह नाता को ब्योरो— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–५½" × २¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–एक ही भव में १८ नाते जीव का वर्णन है । ग्रन्थ सख्या–१६४१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१८१३ आतुर पंचखाण (आतुर प्रत्याख्यान)— × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०" × ४½" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मगल पाठ । ग्रन्थ सख्या–१४६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—श्वेताम्बर आम्नायानुरूप रचना है ।

१८१४. एकविंशति स्थानक—सिद्धसेन सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या–४ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय–धर्म । ग्रन्थ सख्या–२७८३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१८१५. ऋषभवास बिनती – × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–७½" × ६½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५४७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा १२, बृहस्पतिवार, स० १७८४ ।

१८१६ कोकसार—आनन्द । देशी कागज । पत्र सख्या–४० । आकार–८½" × ५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । विषय–कामशास्त्र । ग्रन्थ सख्या–१०८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ६, मगलवार, स० १६२८ ।

१८१७ खण्ड प्रशस्ति— × । देशी कागज । पत्र सख्या–८ । आकार–११" × ४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ सख्या–१०४८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८१८. गजसिंह कुमार चौपई—ऋषि देवीचन्द । देशी कागज । पत्र सख्या–१३ । आकार–१०½" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१८६५ । रचनाकाल–कार्तिक शुक्ला ५, मगलवार, स० १८२७ । लिपिकाल– × ।

१८१९ खधक मुनि की सज्झाय -- × देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–११" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–धर्म । ग्रन्थ सख्या–२८२४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८२० गद्य पद्धति— × । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०½" × ४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–२३१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– स० १६३० ।

१८२१ **गुर्वावली**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१२½"×६" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–इतिहास । ग्रन्थ संख्या–२६४० । रचनाकाल–× लिपिकाल–× ।

टिप्पणी—अन्तिम पत्र पर प्रायश्चित विधि भी है ।

१८२२. **चुने हुए रत्न**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–१०"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–भिन्न-भिन्न विषयों के पद्य । ग्रन्थ संख्या–१२२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८२३. **छाया पुरुष लक्षण** — × देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत व प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सामुद्रिक शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१६२८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८२४. **जम्बूद्वीप संग्रहणी—हरिभद्र सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–गणित । ग्रन्थ संख्या–१५२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १, स० १७६८ ।

१८२५ **जिनधर्म पद—समय सुन्दर** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१२½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पदावली । ग्रन्थ संख्या–१४४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१८२६ **जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई—कवि जगरूप** । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–११¾"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७५८ । रचनाकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १२, बुधवार, स० १८१६ । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १५, स० १८७२ ।

१८२७ **ढुण्ढिया मत खण्डन—हाससी मुनि** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एव संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–ढुण्ढिया मत का खण्डन । ग्रन्थ संख्या–१५२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला २, स० १८४७ ।

१८२८. **दान विधि**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६¾"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–धर्म । ग्रन्थ संख्या–१६५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१८२६, **दानादि संवाद—समय सुन्दर** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ संख्या–१५५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३०. **दीक्षा प्रतिष्ठा विधि**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–११"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत एवं हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३१. नन्दीश्वर जयमाल— × । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, संस्कृत व हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ सख्या–१६६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा ६, स० १७१० ।

१८३२ नवनिधि नाम— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–११"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–नव निधियों के नाम । ग्रन्थ सख्या–२८२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३३ नेमजी का पद—**उदय रत्न** । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ सख्या–१४१८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—नेमजी का राजुल से भव-भव का सम्बन्ध बताया गया है ।

१८३४. नेमजी राजुल सवैया—**रामकरण** । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सख्या–१५१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३५. नेमीश्वर पद—**धर्मचन्द नेमिचन्द** । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१३"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ सख्या–१७६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३६ पार्श्वनाथ विनती—**जिनसमुद्र सूरि** । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–विनती । ग्रन्थ सख्या–१४३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३७ पिण्ड विशुद्धावचूरी—**जिनवल्लभ सूरि** । **टीका**—**श्रीचन्द सूरि** । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत एवं प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–पिण्ड शुद्धि वर्णन । ग्रन्थ सख्या–२७८८ । रचनाकाल– × । टीकाकाल–कार्तिक कृष्णा ११, स० ११७८ । लिपिकाल– × ।

१८३८ प्रद्युम्न चरित्र—**महासेनाचार्य** । देशी कागज । पत्र सख्या–७१ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–चरित्र । ग्रन्थ सख्या–२४८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा १३, स० १६६८ ।

१८३९ पच्चक्खाण— × । देशी कागज । पत्र सख्या–१ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–आचार । ग्रन्थ सख्या–२७३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४० बुद्धिसागर दृष्टान्त—**बुद्धिसागर** । देशी कागज । पत्र सख्या–५ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–उपदेश । ग्रन्थ सख्या–१३१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १५, बुधवार, स० १६४६ ।

१८४१. भजन व आरती संग्रह— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४३ । आकार–१२"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–भजन व आरतीयों का संग्रह । ग्रन्थ संख्या–११९० । रचनाकाल– × । लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ला ९, स० १८६१ ।

१८४२ भविष्यदत्त चरित्र—पं० धनपाल । देशी कागज । पत्र संख्या-१०४ । आकार–११¾"×५" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय-चरित्र । ग्रन्थ संख्या–२५८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ९, बृहस्पतिवार, स० १५६७ ।

१८४३ भावना बत्तीसी –× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०¾"×४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ संख्या–२६५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४४. भावी कुलकरों की नामावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–नामावली । ग्रन्थ संख्या–२८३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४५. भुवनेश्वरी स्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११¾" × ५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२५१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४६. मूर्ति पूजा मण्डन—प० मिहिर चन्द्र दास जैनी । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–८¾"×५" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–तर्कों के आधार पर मूर्ति पूजा का मण्डन किया गया है । ग्रन्थ संख्या–१६३७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–स० १९४५ ।

१८४७. मुद्राविधि— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ आकार–१०"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि– नागरी । विषय–मुद्रा पहिनने का वर्णन । ग्रन्थ संख्या–२७७७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४८. रघुवंश के राजाओं की नामावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–इतिहास । ग्रन्थ संख्या–१८८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४९. रत्नकोश— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–संगीत । ग्रन्थ संख्या–२११२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८५०. रत्न परीक्षा— × । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–रत्नों की परीक्षा । ग्रन्थ संख्या–२७४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८५१. रत्न परीक्षा (रत्न दीपिका)—चण्डेश्वर सेठ। देशी कागज। पत्र सख्या–५। आकार–१०"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–रत्न परीक्षा वर्णन। ग्रन्थ सख्या–२७४४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला ३, शुक्रवार, स० १८७८।

१८५२ शील श्री चरित्र — ×। देशी कागज। पत्र सख्या–५। आकार–१२½"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–चरित्र। ग्रन्थ सख्या–२१०३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

विशेष—गौतम स्वामी से राजा श्रेणिक ने यह चरित्र सुना है, उसी का वर्णन है।

१८५३ षोडष कारण पूजा — ×। देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–१०"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत व सस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ सख्या–२४१०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला ५, स० १७०६।

१८५४ स्त्री के सोलह लक्षण — ×। देशी कागज। पत्र सख्या–१। आकार–१०¾"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–लक्षणावली। ग्रन्थ सख्या १४६३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१८५५ स्वर सन्धि—पं० योगक। देशी कागज। पत्र सख्या–१६। आकार–१०¾"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–सस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ सख्या–२०८४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१८५६ सज्जन चित्त वल्लभ—मल्लिषेण। देशी कागज। पत्र सख्या–३। आकार–१०½"×४" दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१४४१। रचना काल– ×। लिपिकाल– ×।

१८५७. सवैया बत्तीशी—कवि जगन पोहकरण (ब्राह्मण) देशी कागज। पत्र सख्या–४। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१४३१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–पौष कृष्णा ८, मगलवार, स० १६६५।

१८५८. सग्रह ग्रन्थ—सग्रहीत। देशी कागज। पत्र सख्या–७४। आकार–११¾"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–सस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–१२८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १२, स० १८६६।

१८५९. संदीप्त वेदान्त शास्त्र— परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मध्वकर। देशी कागज। पत्र सख्या–१४। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्णशीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–वेदान्त। ग्रन्थ सख्या–१४३५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१८६० सयम वर्णन— ×। देशी कागज। पत्र सख्या–८। आकार–१२"×५½"। दशा–जीर्णशीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ सख्या–२१४६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१८६१. हरिवंश पुराण—मुनि यशःकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—२६३ । आकार—११½″×५½″ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—पुराण । ग्रन्थ संख्या—२६४४ रचनाकाल—× । लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १६५२ ।

१८६२. त्रिलोचन चन्द्रिका—प्रगल्भ तर्कसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—६½″×४½″ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—दर्शन । ग्रन्थ संख्या—१७३७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—× ।

अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रन्थों की नामावली

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
१.	११८६	अकलंक स्तुती	बौद्धाचार्य	सस्कृत
२.	५१३	अन्यापदेश शतक	मैथिली मधुसूदन	,,
३.	११९२	अपामार्ग स्तोत्र	गोविन्द	,,
४.	७१६	अबड चरित्र	प० अमरसुन्दर	,,
५.	७१३	अवन्ति सुकुमाल महामुनि वर्णन	महानन्दमुनि	हिन्दी
६.	२८९	अश्विनी कुमार संहिता	अश्विनी कुमार	सस्कृत, हिन्दी
७.	३७३	आखय दशमी व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी
८.	१९	आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	सस्कृत
९	९५३	आराधना कथाकोश	मुनि सिहनन्दि	,,
१०	२४	आलाप पद्धति	कवि विष्णु	,,
११	११९६	आशाधराष्टक	शुभचन्द्रसूरि	सस्कृत
१२	११९९	इन्द्र वधुचितहुलास आरती	रुचिरग	हिन्दी
१३	२७	इष्टोपदेश टीका	गौतम स्वामी	सस्कृत
१४.	१८१४	एकविंशति स्थानक	सिंहसेन सूरि	प्राकृत, सस्कृत
१५	९५४	काल ज्ञान	महादेव	सस्कृत
१६	३८७	काष्टागार कथा	—	हिन्दी
१७.	५३६	कुमारसम्भव सटीक	टीका लालु की	सस्कृत
१८	९१७	खुदीप भाषा	कुंवरभुवानीदास	हिन्दी
१९.	९६१	ग्रह दीपक	—	सस्कृत
२०	१२६७	चतुषष्टि महायोगिनी महास्तवन	धर्मनन्दाचार्य	हिन्दी
२१.	३९३	चन्दनराजा मलय गिरी चोपई	जिनहर्ष सूरि	,,
२२.	७२८	चन्द्रलेहा चरित्र	जिनहर्ष सूरि	,,
२३	५४७	चातुर्मास व्याख्यान पद्धति	शिवनिधान पाठक	,,
२४	२९९	चिन्त चमत्कार सार्थ	—	सस्कृत, हिन्दी
२५	५४८	चौबोली चतुष्पदी	जिनचन्द्र सूरि	हिन्दी
२६	१०८	चौबीस दण्डक	गजसार	प्राकृत
२७	१३९	जयति उखाण (बालावबोध)	अभयदेव सूरि	प्राकृत, हिन्दी
२८	१२८०	जिनपूजा पुरन्दर विधान	अमरकीर्ति	अपभ्रंश

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
२६.	१२८६	जिन सहस्त्र नाम स्तोत्र	सिद्धसेन दिवाकर	सस्कृत
३०.	१२८७	जिनस्तवन मार्थ	जयानन्द सूरि	,,
३१.	११२	जीव तत्व प्रदीप	केशवाचार्य	प्राकृत, संस्कृत
३२.	६७७	ज्योतिष चक्र	हेमप्रभ सूरि	सस्कृत
३३.	१२८	तत्व ज्ञान तरगिणी	मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूषण	सस्कृत
३४	६६८	ज्ञानहीमची	कवि जगरूप	हिन्दी
३५	६६२	ताजिकपद्मकोश		सस्कृत
३६	५१२	त्रेषठ श्लाका पुरुष चौपई	प० जिनमति	हिन्दी
३७	१८३	दश श्रछेग	—	हिन्दी, अपभ्रंश
३८	४१०	द्वादश चक्री कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	सस्कृत
३६	१६८	धर्म सवाद	—	,,
४०	५६५	नन्दीश्वर काव्य	मृगेन्द्र	,,
४१	१६८१	नदीश्वर पक्ति विधान कथा	शिववर्मा	,,
४२	१७२	नयचक्र बालावबोध	सदानन्द	हिन्दी
४३	७५०	नागकुमारी चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश
४४	१३१६	नारायण पृच्छा जयमाल	—	
४५	१३६१	पचपरमेष्ठी स्तोत्र	जिनप्रभ सूरि	सस्कृत
४६.	११५५	पद्मनाभ पुराण	भ० सकलकीर्ति	,,
४७	१३२४	पद्मावती पूजन	गोविन्द स्वामी	,,
४८.	१६५	प्रथम बखाण	—	हिन्दी
४६.	७६५	प्रद्युम्न चरित्र	महाकवि सिंह	अपभ्रंश
५०	६२४	पार्श्वनाथजी रो देशान्तरी छद	कविराज	हिन्दी
५१.	६२५	पिंगल छद	पद्दुप सहाय	अपभ्रंश
५२	६२७	पिंगलरूप दीपक	जयकिशन	हिन्दी
५३	?	पिंगल भाषा	प० सुखदेव मिश्र	,,
५४	१८३७	पिण्डविशुद्धावचूरी	जिनवल्लभ सूरि	सस्कृत, प्राकृत
५५.	४२६	प्रियमेलक कथा	ब्रह्मवेणीदास	हिन्दी
५६.	१३६५	बाला त्रिपुरा पद्धति	श्रीराम	सस्कृत
५७	५६०	बुद्धि रसायण	प० अहिराज	अपभ्रंश, हिन्दी
५८.	४३७	बाहुबली-पाथडी	—	अप०, स०
५६.	४४१	भरत बाहुबली वर्णन	शीवराज	हिन्दी

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
६०.	७८८	भविष्यदत्त चरित्र	प० धनपाल	अपभ्रंश
६१.	२१२	भव्य मार्गणा	—	हिन्दी
६२.	१३८७	भारती स्तोत्र	शंकराचार्य	संस्कृत
६३	३३६	भूषण बावनी	द्वारकादास पाटणी	हिन्दी
६४	६१३	मंगल कलश चौपई	लक्ष्मी हर्ष	,,
६५.	५६८	मयुराष्टक	कवि मयुर	संस्कृत
६६	१३६३	महर्षि स्तवन	पं० आशाधर	,,
६७.	४४८	मूलसंघाग्रणी	रत्नकीर्ति	,,
६८	६०५	मेघदूत सटीक	लक्ष्मी निवास	,,
६९.	३१४	योग शतक	विदग्ध वैद्य	,,
७०	१५४५	योग ज्ञान	—	,,
७१.	८२०	रत्नचूडरास	यशः कीर्ति	हिन्दी
७२	१८५१	रत्न परीक्षा	चण्डेश्वर सेठ	संस्कृत
७३.	१७७६	रत्नसार	प० जीवधर	,,
७४.	१६८७	राई प्रकरण विधि	—	हिन्दी
७५.	६२०	रामाज्ञा	तुलसीदास	हिन्दी
७६.	१४०२	रामचन्द्र स्तवन	सनत्कुमार	संस्कृत
७७.	१७७७	रात्रि भोजन दोष विचार	धर्मसमुद्रवाचक	हिन्दी
७८.	१६८६	रुकमणी व्रत विधान कथा	विशालकीर्ति	मराठी
७९.	६२१	लघुस्तवन सटीक	लघु पण्डित	संस्कृत
८०.	३२५	लंघन पथ्य निर्णय	वाचक दीपचन्द्र	,,
८१.	४६२	लब्धि विधान व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी
८२.	६२२	लक्ष्मी-सरस्वती संवाद	श्रीभूषण	संस्कृत
८३.	३२६	वनस्पति सत्तरी सार्थ	मुनिचन्द सूरि	प्राकृत, संस्कृत
८४.	१४१७	वर्द्धमान जिनस्तवन सटीक	प० कनककुशलगणि	संस्कृत
८५.	१०४४	वर्ष कुण्डली विचार	—	,,
८६.	६२५	वसुधारा महाविद्या	नन्दन	संस्कृत
८७	१५६६	वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	दामोदर	,,
८८.	२३१	वाद पच्चीसी	ब्रह्म गुलाल	हिन्दी
८९.	८२८	विक्रमसेन चौपई	मानसागर	,,
९०.	१०४६	विचिंतमणि अंक	—	,,
९१.	६३१	विद्वद्भूषण काव्य	बालकृष्ण भट्ट	संस्कृत

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
९२.	१४२९	विमलनाथ स्तवन	विनीत सागर	हिन्दी
९३	१०५१	विवाहपटल सार्थ	—	संस्कृत, हिन्दी
९४.	१७७८	विवेक विलास	जिनदत्त सूरि	संस्कृत
९५	१४३७	विषापहार विलाप स्तवन	वादिचन्द्र	,,
९६	६३३	वैराग्य माला	सहल	,,
९७.	१४३९	शनिश्चर स्तोत्र	दशरथ	,,
९८.	६२६	वृन्दावन काव्य	कवि माना	,,
९९.	४९५	श्रावक चूल कथा	—	,,
१००.	५११	क्षुल्लककुमार (राजऋषिवर चौपई)	सुन्दर	हिन्दी
१०१.	२८१	श्रेणिक गौतम संवाद	—	संस्कृत
१०२	१६९९	श्रुतस्तपन विधि	—	,,
१०३.	६५१	सप्त व्यसन समुच्चय	प० भीमसेन	,,
१०४	४८०	सम्यक्त्व	कवि यशसेन	,,
१०५.	१४५१	समवशरण स्तोत्र	धनदेव	,,
१०६.	१८६०	संयम वर्णन	—	अपभ्रंश, हिन्दी
१०७.	१४५९	सरस्वती स्तुति	बनारसीदास	हिन्दी
१०८.	१०९३	संवत्सर फल	—	संस्कृत
१०९.	१४७६	साधु वन्दना	पार्श्वचन्द्र	,,
११०.	१४७८	साधु वन्दना	समयसुन्दर गणि	हिन्दी
१११	२९६	सामायिक सटीक	पाण्डे जयवंत	संस्कृत, हिन्दी
११२	१४९३	सिद्धचक्र पूजा	श्रुतसागर	संस्कृत
११३.	३४१	सिन्दुरप्रकरण	सोमप्रभाचार्य	,,
११४	४८५	सिंहल सुत चतुष्पदी	समयसुन्दर	हिन्दी
११५.	४९०	सुगन्धदशमी कथा	सुशीलदेव	अपभ्रंश
११६.	४९१	सुगन्धदशमी कथा	ब्रह्म जिनदास	संस्कृत
११७.	२७०	सुभद्रानो चोढालीयो	कवि मानसागर	हिन्दी

क०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
११८.	२७१	सुभाषित कोश	हरि	सस्कृत
११६	८४४	सुरपति कुमार चतुष्पदि	प० मानसागर	हिन्दी
१२०.	६६४	स्थूलभद्रमुनि गीत	नथमल	,,
१२१.	५००	हरिश्चन्द्र चौपई	ब्रह्मवेणीदास	,,
१२२	५०६	हन्सवत्स कथा	—	,,
१२३.	५०८	हन्सराज बच्छराज चौपई	भावहर्ष	,,
१२४	५०२	हेम कथा	रक्षामणि	सस्कृत और हिन्दी

अनुक्रमणिका अकारादि स्वर

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
अर्जुन चौपाई	समयसुन्दर	हिन्दी	७२	७१२
अरहनाथ चित्र	–	–	६३	८६८
अरिष्ट फल	–	सस्कृत	१०३	६५०
अवन्ति सुकुमाल कथा	हस्ती सूरि	हिन्दी	३७	३६६
अवन्ति सुकुमाल महामुनि वर्णन	महानन्द मुनि	,,	७२	७१३
अवयड केवली	–	सस्कृत	१०३	६५१
अव्यय तथा उपसर्गार्थ	–	,,	१७०	१५६६
अव्यय दीपिका	–	,,	१७०	१५७०
अव्यय दीपिका वृत्ति	–	,,	१७१	१५७२
अश्विनी कुमार सहिता	अश्विनी कुमार	,,	२६	२८६
अशोक सप्तमी कथा	–	,,	३७	३७०
अष्टक सटीक	शुभचन्द्राचार्य	प्राकृत-सस्कृत	१८०	१६७१
अष्ट नायिका लक्षण	–	सस्कृत	५६	५१६
अष्ट दल पूजा और षोडष दल पूजा	–	हिन्दी	१३१	११६३
अष्ट सहस्त्री	विद्यानन्दि	संस्कृत	११७	१०६६
अष्टाह्निका पूजा	भ० शुभचन्द्राचार्य	,,	१३२	११६५
अस्टाह्निका व्रत कथा	–	,,	३७	३७१
अष्टोत्तरी शतक	प० भगवती दास	हिन्दी	१	२
अक गर्भ खण्डार चक्र	देव नन्दि	सस्कृत	५	४२
,,	–	,,	१३२	११६५
अक प्रमाण	–	प्राकृत-हिन्दी	५	४६
अग फुरकरण शास्त्र	–	हिन्दी	१०३	६५२
अजन निदान सटीक	अग्निवेश	सस्कृत-हिन्दी	२६	२६०
अबड चरित्र	प० अमर सुन्दर	सस्कृत	७२	७१६
(आ)				
आकाश पचमी व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	३७	३७२
आखय दशमी व्रत कथा	–	,,	३७	३७३
आख्या दन्तवाद	–	संस्कृत	११७	११००
आगम	–	प्राकृत-हिन्दी	१	३
आचारसार	वीर नन्दि	सस्कृत	१८६	१७१०
आठ कर्म प्रकृति विचार	–	हिन्दी	१	४
आत्म मीमासा वचनिका	समन्तभद्र	संस्कृत–हिन्दी	१	५
आत्म मीमासा वचनिका	जयचन्द छाबड़ा	,,	१	५

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रंथ सूची क्रमांक
आत्म सम्बोध काव्य	रयधू	अपभ्रंश	१	६
आत्म सम्बोध काव्य	—	,,	५३	५१८
आत्म सम्बोध पंचासिका	—	,,	५३	५२०
आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	संस्कृत	२	१४
आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	संस्कृत	३	१६
आत्मानुशासन सटीक	प० प्रभाचन्द्राचार्य	,,	२	१८
आत्मानुशासन सटीक	—	हिन्दी	२	१७
आतुर पचखाण	—	संस्कृत	१६८	१८१३
आदित्यवार कथा	भानुकीर्ति	हिन्दी	३८	३७५
आप्त मीमासा	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	११७	११०१
आयुर्वेद सग्रहीत ग्रंथ	—	संस्कृत-हिन्दी	२९	२९१
आर्य वसुधारा धारणी नाम महाविद्या	श्री नन्दन	संस्कृत	५३	५२१
आराधना कथा कोश	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	३८	३७६
आराधना कथा कोश	मुनि सिंहनन्दि	,,	१०३	९५३
आराधनासार	मित्रसागर	प्राकृत-संस्कृत और हिन्दी	३	२०
आराधनासार	प० देवसेन	प्राकृत	३	२२
आलाप पद्धति	कवि विष्णु	संस्कृत	३	२४
आलाप पद्धति	प० देवसेन	,,	११७	११०३
आलोचना पाठ	जोहरी लाल	हिन्दी	३	२५
आशाधराष्टक	शुभचन्द्र सूरि	संस्कृत	१३२	११९६
आसव विधि	—	हिन्दी	२९	२९२

(इ+ई)

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रंथ सूची क्रमांक
इन्द्रध्वज पूजन	भ० विश्वभूषण	संस्कृत	१३२	११९८
इन्द्रध्वज पूजा	—	,,	१३२	११९७
इन्द्र वधुचित हुलास आरती	रुचिरग	हिन्दी	१३२	११९९
इन्द्र स्तुति	—	अपभ्रंश	१३२	१२००
इन्द्राक्षि जगच्चिन्तामणि कवच	—	संस्कृत	१३२	१२०१
इन्द्राक्षि नित्य पूजा	—	,,	१३२	१२०३
इन्द्राक्षि सहस्त्र नाम स्तवन	—	,,	१३२	१२०३
इष्टोपदेश	पूज्यपाद गौतम स्वामी	,,	३	२७
इष्टोपदेश	पूज्यपाद	,,	४	२९

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
इष्टोपदेश टीका	पं० आशाधर	संस्कृत	४	३२
ईश्वर कार्तिकेय संवाद एवं रूद्राक्ष उत्पत्ति, धारण मंत्र विधान	–	,,	५४	५२३
ईश्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र	अभिनव गुप्ताचार्य	,,	११७	११०८

(उ)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
उच्छिष्ट गणपति पद्धति	–	संस्कृत	१६३	१५१०
उत्तम चरित्र	–	,,	७२	७१४
उत्तर पुराण	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१२४	११४२
उत्तर पुराण सटीक	–	अपभ्रंश, संस्कृत	१२४	११४३
उत्तर पुराण सटीक	प्रभाचन्द्राचार्य	संस्कृत	१२४	११४५
उत्तराध्ययन	–	प्राकृत	४	३५
उदय उदीरण त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	,,	४	३६
उपदेश माला	धर्मदास गणि	अपभ्रंश	१८६	१७१४
उपदेश रत्नमाला	सकलभूषण	संस्कृत	१८६	१७१५
उपसर्ग शब्द	–	,,	१७१	१५७३
उपासकाचार	पूज्यपाद	,,	१८७	१७१७
उपासकाध्ययन	वसुनन्दि	संस्कृत	१८७	१७१८

(ए—ऐ)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
एक गीत	श्रीमति कीर्तिवाचक	हिन्दी	५४	५२४
एक पद	रंगलाल	,,	३८	३७८
एक पद	गुलाबचन्द	,,	३८	३७७
एक लावणी	–	,,	४	४०
एकलीकरण विधान	–	संस्कृत	१८०	१६७३
एक विंशति स्थानक	सिद्धसेन सूरि	प्राकृत और हिन्दी	१९८	१८१४
एकाक्षर नाममाला	पं० वररुचि	संस्कृत	६९	६८४
एकाक्षरी नाममाला	प्राकसूरि	,,	६९	६८६
एकीभाव व कल्याण मन्दिर स्तोत्र	–	,,	१३३	१२१५
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज सूरि	,,	१३२	१२०४
एकीभाव स्तोत्र सार्थ	–	,,	१३३	१२११
एकीभाव स्तोत्र टीका	नागचन्द्र सूरि	,,	१३३	१२१२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
	(ऋ)			
ऋषभदास विनती		हिन्दी	१९८	१८१५
ऋषभदेव स्तवन	–	संस्कृत	१३३	१२१६
ऋषभनाथ चरित्र	भ० सकलकीर्ति	,,	७२	७१५
ऋषि मण्डल व पार्श्वनाथ चिन्तामणी बडा यन्त्र	–	,,	१६३	१५१३
ऋषि मण्डल पूजा	गुणनन्दि	,,	१३३	१२१७
ऋषि मण्डल यन्त्र	–	,,	१६३	१५१२
ऋषि मण्डल यन्त्र	–	,,	१६३	१५११
ऋषि मण्डल स्तोत्र	–	,,	१३४	१२२०
ऋषि मण्डल स्तोत्र सार्थ	गौतम स्वामी	संस्कृत—हिन्दी	१३४	१२२३
	(क)			
कथाकोश	ब्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत	३८	३७९
कथा प्रबन्ध	प्रभाचन्द्र	,,	३८	३८३
कथा संग्रह	–	अपभ्रंश व संस्कृत	३८	३८४
कथा संग्रह	–	संस्कृत	३८	३८५
कनकावली व शील कथा	–	,,	३९	३८६
करकण्डु चरित्र	कनकामर	अपभ्रंश	७२	७१७
कर्म काण्ड सटीक	पं० हेमराज	हिन्दी	५	४७
कर्मकाण्ड सटीक	–	,,	५	४८
कर्म दहन पूजा	–	संस्कृत, हिन्दी	१३४	१२२४
कर्म दहन मण्डल यन्त्र	–	संस्कृत	१६३	१५१४
कर्म प्रकृति	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	५	५०
कर्म प्रकृति सार्थ	–	प्राकृत – संस्कृत	६	५८
कर्म प्रकृति सूत्र भाषा	–	हिन्दी	६	६५
कल्याण पचका रोपण विधान	–	संस्कृत	१८०	१६७४
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	,,	१३४	१२२५
कल्याण मन्दिर स्तोत्र (सटीक)	–	,,	१३५	१२४०
कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका	भ० हर्षकीर्ति	,,	१३५	१२४१
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	–	,,	१३६	१२४२
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	सिद्धसेनाचार्य	,,	१३६	१२४७
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	हुकमचन्द	संस्कृत—हिन्दी	१३६	१२४८
कल्याण माला	–	संस्कृत	१८०	१६७५
कलश स्थापना मन्त्र	–	,,	१६३	१५१५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
काठिन्य श्लोक	—	संस्कृत	५४	५२५
कातन्त्र रूपमाला	शिव वर्मा	,,	१७१	१५७४
कातन्त्र रूपमाला वृत्ति	भावसेन	,,	१७१	१५७५
कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्तिकेय	प्राकृत	७	६७
कारक परीक्षा	—	संस्कृत	१७१	१५७८
कारक विवरण	—	,,	१७१	१५७९
काल ज्ञान	—	,,	२९	२९५
कालज्ञान	महादेव	,,	१०३	९५४
कालज्ञान	लक्ष्मी वल्लभगणि	हिन्दी	१०३	६५६
काव्य टिप्पण	—	संस्कृत	७	६९
काष्टागांर कथा	—	हिन्दी	३९	३८७
क्रिया कलाप	विजयानन्द	संस्कृत	१७१	१५८०
क्रिया कलाप टीका	प्रभाचन्द्र	,,	७	७०
क्रियाकलाप सटीक	प० आशाधर	,,	१८८	१७२३
क्रियाकलाप सटीक	प्रभाचन्द्र	,,	१८८	१७२४
क्रियाकोश	किशनसिंह	हिन्दी	७,७०,१८८	७१,६९० १७२५
क्रिया गुप्त पद्य	—	संस्कृत	५४	५२६
किरातार्जुनीय	भारवि	,,	५४	५२७
किरातार्जुनीय सटीक	मल्लिनाथ सूरि	,,	५४	५३२
किरातार्जुनीय सटीक	एकनाथ भट्ट	,,	५४	५३३
क्रिया विधि मन्त्र	—	,,	१८८	१७२७
कुन्थनाथ चित्र	—	—	९३	८६९
कुमार-सम्भव	कालिदास	,,	५५	५३४
कुमार सम्भव सटीक	प० लालु	,,	५५	५३६
कुल ध्वज चौपई	प० जयसर	हिन्दी	७२	७१८
केशव बावनी	केशवदास	,,	५५	५३७
कोकसार	आनन्द	,,	१९८	१८१६
	(ख)			
खण्ड प्रशस्ति	—	संस्कृत	१९८	१८१७
खण्ड प्रशस्ति	—	,,	५५	५३८
खंधक मुनि की सज्झाय	—	हिन्दी	१९८	१८१९
खूदीप भाषा	कु वर भुवानीदास	,,	९९	९१७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
		(ग)		
गर्जसिंह कुमार चौपई	ऋषि देवीचन्द	हिन्दी	१९८	१८१८
गणधर वलय	–	संस्कृत	१३६	१२४९
गणधर वलय यन्त्र	–	,,	१६४	१५१६
गद्य पद्धति	–	,,	१९८	१८२०
गणेश चित्र	–	–	९३	८७०
गणेश व सरस्वती चित्र	–	–	९३	८७२
गणितनाम माला	हरिदत्त	सस्कृत	७०,१०३	६९१,९५७
गर्भ खण्डार चक्र	देवनन्दि	,,	१३६	१२५१
गार्भिण्यादि प्रश्न विचार	–	हिन्दी	१०३	९५८
गरुडोपनिषद्	हरिहर ब्रह्म	संस्कृत	११७	११०९
गरूड पुराण	वेदव्यास	,,	१२४	११४६
ग्रह दृष्टि वर्णन	–	,,	१०४	९६०
ग्रह दीपक	–	,,	१०४	९६१
ग्रह शान्ति विधि	–	,,	१०४	९६२
ग्रह शान्ति विधान	प० आशाधर	,,	१०४	९६३
ग्रहायु प्रमाण	–	,,	१०४	९६४
गाथा यन्त्र	–	प्राकृत	१६४	१५१७
गायक का चित्र	–	–	९३	८७३
गीत गोविन्द (सटीक)	जयदेव	हिन्दी, सस्कृत	५५	५४०
गुज सन्घटप चरित्र	प० जयसर	हिन्दी	७२	७१९
गुणधर ढाल	–	,,	५५	५४१
गुणरत्न माला	दामोदर	सस्कृत	२६	२९७
गुण स्थान कथा	काहना छावडा	हिन्दी	७	७२
गुण स्थान चर्चा	–	प्राकृत और हिन्दी	७	७३
गुण स्थान चर्चा सार्थ	रत्नशेखर सूरि	संस्कृत	७	७५
गुण स्थान चर्चा सार्थ	–	प्राकृत–हिन्दी	१६४	१५१८
गुण स्थान बंध	–	संस्कृत	७	७६
गुणस्थान स्वरूप	रत्नशेखर सूरि	संस्कृत	११८	१११०
गुरुवार व्युच्छति प्रकरण	–	हिन्दी	१०४	९५९
गुर्वावली	–	संस्कृत	१९९	१८२१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
गोम्मटसार	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	७	७७
गोम्मटसार भाषा	प० टोडरमल	राजस्थानी	८	८३
गोम्मटसार सटीक (जीवकाण्ड मात्र)	–	प्राकृत–संस्कृत	८	८२
गोम्मटसार सटीक	–	,,	८	८०
गोरख यन्त्र	–	हिन्दी	१०४	९६५
गौतम ऋषि कुल	–	प्राकृत-हिन्दी	३९	३८९
गौतम पृच्छरी	सिद्धस्वरूप	हिन्दी	५५	५४२
गौतम स्वामी चरित्र	मण्डलाचार्य श्रीधर्मचन्द	संस्कृत	७२	७२०
गौतम स्तोत्र	जिनप्रभसूरि	,,	१३६	१२५२
		(घ)		
घटकर्पर काव्य	–	संस्कृत	५५	५४३
		(च)		
चक्रधर पुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१२४	११४७
चक्रवर्ती ऋद्धि वर्णन	–	हिन्दी	८	८४
चतुर्दश गुणस्थान चर्चा	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत–संस्कृत	८	८७
चतुर्दश गुणस्थान	–	हिन्दी	३९	३९०
चतुर्दशी गरूड पचमी कथा	–	मराठी	११८	११११
चतुर्दशी व्रतोद्यापनपूजा	प० ताराचन्द श्रावक	संस्कृत	१३६	१२५३
चतुर्विंशति स्थानक चर्चा	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	९	८८
चतुर्विंशति तीर्थंकर चित्र	–	–	९४	१८७४
चतुर्विंशति तीर्थंकर चित्र	–	–	९४	१८७५
चतुर्विंशति जिन नमस्कार	–	हिन्दी	१३७	१२५४
चतुर्विंशति जिनस्तवन	–	संस्कृत	१३७	१२५५
चतुर्विंशति तीर्थ कर स्तुति	समन्तभद्र	,,	१३७	१२५६
चतुर्विंशति तीर्थं कर स्तुति	प० घनश्याम	,,	१३७	१२६०
चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	चौधरी रामचन्द्र	हिन्दी	१३७	१२६१
चतुर्विंशति तीर्थं कर पूजा	शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	१३७	१२६२
चतुर्विंशति जिनस्तवन	प० रविसागर गणि	,,	१३८	१२६३
चतुर्विंशति जिनस्तवन	जिनप्रभसूरि	,,	१३८	१२६४
चतुर्विंशति जिनस्तवन	ज्ञानचन्द्र	,,	१३८	१२६५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
चतु षष्ठी स्तोत्र	—	संस्कृत	१३८	१२६६
चतु:षष्ठी महायोगिनी महास्तवन	धर्म नन्दाचार्य	हिन्दी	१३८	१२६७
चतु त्रिंशद भावना	मुनि पद्मनंदि	संस्कृत	६	६०
चन्दनमलय गिरिवार्ता	भद्रसेन	हिन्दी	३६	३६१
चन्दनराजमलयगिरि चौपई	जिनहर्ष सूरि	—	३६	३६३
चन्द्रप्रभ चरित्र	प० दामोदर	संस्कृत	७३	७२४
चन्द्रप्रभ चरित्र	यश:कीर्ति	अपभ्र श	७४	७२६
चन्द्रप्रभु चित्र	—	—	६४	८७६
चन्द्रप्रभ ढाल	—	हिन्दी	५६	५४६
चन्द्रलेहा चरित्र	रामवल्लभ	,,	७४	७२८
चन्द्रहासासव विधि	—	,,	२६	२६८
चन्द्रसूर्य कालानल चक्र	—	संस्कृत	१०४	६६६
चमत्कार चिन्तामणि	स्थानपाल द्विज	,,	१०४	६६७
चरचा पत्र	—	हिन्दी	६	६१
चर्चायें	—	प्राकृत—हिन्दी	६	६४
चर्चा तथा शील की नवपाढी	—	,,	६	६५
चरचा शतक टीका	हरजीमल	हिन्दी	६	६६
चरचा शास्त्र	—	,,	१०	६६
चरचा समाधान	भूधरदास	प्राकृत हिन्दी	१०	१००
चारित्रसार टिप्पण	चामुण्डराय	संस्कृत	७४	७३०
चाणक्यनीति	चाणक्य	,,	१२२	११३०
चिन्त चमत्कार सार्थ	—	संस्कृत हिन्दी	२६	२६६
चिन्तामणि नाममाला	हरिदत्त	संस्कृत	७०	६६१
चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	—	संस्कृत—हिन्दी	१३८	१२६८
चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र	धरणेन्द्र	संस्कृत	१३८	१२७०
चिन्तामणि पार्श्वनाथ यन्त्र	—	,,	१६४	१५१६
चित्रबन्ध स्तोत्र	—	,,	१३८	१२७२
चुने हुए रत्न	—	,,	१६६	१८२२
चेतन कर्म चरित्र	भैया भगवतीदास	हिन्दी	७४	७३१
चेतन चरित्र	यश.कीर्ति	,,	७४	७३२
चौघड़िया चक्र	—	संस्कृत और हिन्दी	१०४	६६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
चौबीस कथा	प. कामपाल	हिन्दी	३६	३६४
चौबीस जिन आशीर्वाद	–	संस्कृत	१३६	१२७३
चौबीस तीर्थंकर स्तवन	–	,,	१३६	१२७४
चौबीस तीर्थंकरो की पूजा	वृन्दावनदास	संस्कृत और हिन्दी	१३६	१२७५
चौबीस ठाणा चौपाई	प० लोहट	प्राकृत और हिन्दी	१०	१०३
चौबीस ठाणा भाषा	–	प्राकृत	१०	१०५
चौबीस ठाणा पिठिका तथा बंध व्युच्छति प्रकरण	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत और संस्कृत	१०	१०६
चौबीस ठाणा सार्थ	सि० च० नेमिचन्द्र	संस्कृत	१०	१०७
चौबीस दण्डक	गजसार	प्राकृत	१०,११	१०८,१०६
चौबीस दण्डक गीत विवरण	-	हिन्दी	११	११०
चौबोली चतुष्पदी	जिनचन्द्र सूरि	,,	५६	५४८
चौर पचासिका	कवि चोर	संस्कृत	५६	५४६
चौषठ योगिनी स्तोत्र	–	,,	१३६	१२७६
(छ)				
छन्द रत्नावली	हरिराम	हिन्दी	६६	६१८
छन्द शतक	हर्ष कीर्ति सूरि	अपभ्रंश	६६	६१६
छन्द शास्त्र	–	संस्कृत	६६	६२०
छन्दसार	नारायणदास	हिन्दी	६६	६२१
छन्दोमजरी	गगादास	प्राकृत-संस्कृत	६६	६२२
छन्दोवतस	–	संस्कृत	६६	६२३
छाया पुरुष लक्षण	–	संस्कृत-प्राकृत	१६६	१८२३
(ज)				
जन्म कुण्डली विचार	–	संस्कृत	१०५	६७०
जन्म पद्धति	–	संस्कृत-हिन्दी	१०५	६७४
जन्म पत्रिका	–	संस्कृत	१०५	६७१
जन्म पत्री पद्धति	हर्षकीर्ति द्वारा संकलित	,,	१०५	६७२
जन्म फल विचार	–	,,	१०५	६७३
जन्मान्तर गाथा	–	प्राकृत	११	१११
जम्बू स्वामी कथा	पाण्डे जिनदास	हिन्दी	३६	३६५
जम्बू स्वामी चरित्र	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	७४	७३३
जम्बूद्वीप चित्र	–	,,	६४	८७६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
जीव चौपई	प० दौलतराम	हिन्दी	११८	१११२
जीव तत्व प्रदीप	केशवाचार्य	प्राकृत और संस्कृत	११	११२
जीवन्धरचरित्र	भ० शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	७५	७३६
जीव प्ररूपणा	गुणरयणभूषण	प्राकृत	११	११३
जीव विचार प्रकरण	—	प्राकृत और संस्कृत	११	११४
जीव विचार सूत्र सटीक	शान्ति सूरि	,,	११	११६
जैन रास	—	हिन्दी	१८८	१७२६
जैन शतक	भूधरदास खण्डेलवाल	,,	११	११६
	(ट—ढ)			
टीपणी री पाटी	—	संस्कृत और हिन्दी	१०६	६६०
ढुण्ढिया मत खण्डन	ढाढसी मुनि	प्राकृत और संस्कृत	१६६	१८२७
ढाढसी मुनि गाथा	ढाढसी	,,	१२	१२०
ढाल बारह भावना	—	हिन्दी	५६	५५०
ढाल मगल की	—	,,	५६	५५१
ढाल सुभद्रारी	—	,,	५६	५५२
ढाल श्रीमन्दिर जी	—	,,	५६	५५३
ढाल क्षमा की	मुनि फकीरचन्द	,,	५६	५५४
	(त)			
तत्वधर्मामृत	चन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१२	१२२
तत्वबोध प्रकरण	—	,	१२	१२५
तत्वसार	प० देवसेन	प्राकृत	१२	१२६
तत्वत्रय प्रकाशिनी	ब्रह्मश्रुतसागर	संस्कृत	१२	१२७
तत्वज्ञान तरगिणी	भ० ज्ञानभूषण	संस्कृत	१२	१२८
तत्वार्थ रत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र देव	,,	१३	१३०
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,	१३	१३३
तत्वार्थ सूत्र टीका	श्रुतसागर	,,	१३	१३५
तत्वार्थ सूत्र टीका	सदासुख	संस्कृत और हिन्दी	१३	१३७
तत्वार्थ सूत्र भाषा	कनककीर्ति	,,	१३	१३८
तत्वार्थ सूत्र वचनिका	प० जयचन्द	,,	१३	१३९
तर्क परिभाषा	केशव मिश्र	संस्कृत	१२, ११८, १२१,	१११४
तर्क संग्रह	अनन्त भट्ट	,,	११८	१११४
ताजिक नीलकण्ठी	प० नीलकण्ठ	,,	१०६	६६१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
दान निर्णय शतक	कवि सूत	संस्कृत	५७	५५८
दान विधि	—	,,	१६६	१८२८
दानशील तप सवाद शतक	समयसुन्दर गणि	हिन्दी	३४	३३८
दानादि सवाद	समयसुन्दर	,,	१६६	१८२६
द्वादश चक्री कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत	४१	४१०
द्वादश भावना	श्रुतसागर	,,	१६	१६०
द्वादश भूजा हनुमत्चित्र	—	—	६५	८८६
द्वादश राशि फल	—	,,	१०७	६६५
द्वादशव्रतोद्यापन	—	,,	१४२	१३०६
द्वादश व्रतकथा	—	,,	१८१	१६७६
द्वात्रिंशी भावना	—	,,	१४२	१३०७
द्वि घटिक विचार	प० शिवा	,,	१०७	६६६
द्विसन्धान काव्य	नेमिचन्द्र	,,	५७	५५६
द्विसन्धान काव्य सटीक	प० राघव	,,	५७	५६०
द्वि अभिधान कोश	—	,,	७०	६६३
द्विजपाल पूजादि व विधान	विद्यानन्दि	,,	१४२	१३०८
दिनमान पत्र	—	हिन्दी	१०७	६६७
दीपमालिकास्वाध्याय	—	,,	१४२	१३०६
दीक्षा प्रतिष्ठा विधि	—	सम्कृत और हिन्दी	१६६	१८३०
दुर्गादेवी चित्र	—	—	६४,६५	८८३,८८५
दुघडिया विचार	प० शिवा	संस्कृत	१०७	१०००
देवागम स्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	,,	१४२	१३१
दोहा पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	१५	१५८

(ध)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
धनजय नाममाला	धनजय	संस्कृत	७०	६६४
धन्यकुमार चरित्र	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	७६	७४०
धन्यकुमार चरित्र	गुणभद्राचार्य	,,	७६	७४५
धन्यकुमार चरित्र	भ० सकलकीर्ति	,	७६	७४२
धन्यकुमार चरित्र	प० रयधू	अपभ्रंश	७७	७४८
धर्मपरीक्षा रास	सुमति कीर्ति सूरि	हिन्दी	१६	१६३
धर्मप्रश्नोत्तर	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	१६	१६४
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार	भ० सकलकीर्ति	,,	१८८	१७३१
धर्मरसायण	मुनि पद्मनदि	प्राकृत	१६	१६५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
धर्म परीक्षा	प० हरिषेण	अपभ्रंश	५७	५६३
धर्म परीक्षा	अमितगतिसूरि	संस्कृत	५७,१८८	५६१,१७३०
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	विजयराज	हिन्दी	४१	४११
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	लालचन्द	,,	४१	४१२
धर्मशर्माभ्युदय	हरिश्चन्द्र कायस्थ	संस्कृत	५७	५६४
धर्मसंग्रह	पं० मेघावी	,,	१८९	१७३७
धर्म संवाद	—	,	१६	१६८
धर्मामृत सूक्ति	प० आशाधर	,	१८९	१७३३
धर्मोपदेश पियुष	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	१८९	१७३९
धर्मोपदेशामृत	पद्मनंदि	,,	१९०	१७४५
ध्यान बत्तीसी	बनारसीदास	हिन्दी	१६	१६९
ध्यानावस्था विचार यंत्र	—	संस्कृत	१६४	१५२२
धातुपाठ	हर्षकीर्ति सूरि	,	१७१	१५८१
धातु पाठ	हेमसिंह खण्डेलवाल	,,	१७१	१५८२
धातु रूपावली	—	,,	१७२	१५८३
धूप दशमी तथा अनन्तव्रत कथा	—	,,	४१	४१४

(न)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
नन्द बत्तीसी	नन्दसेन	संस्कृत और हिन्दी	१२२	११३१
नन्द सप्तमी कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	४१	४१५
नन्दीश्वर कथा	—	संस्कृत	४१,१८१	४१६,१६८०
नन्दीश्वर काव्य	मृगेन्द्र	,,	५७	५६५
नन्दीश्वर जयमाल	—	प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी	२००	१८३१
नन्दीश्वर पंक्तिपूजा विधान	—	संस्कृत	१४२	१३१२
नन्दीश्वर पंक्ति विधान	शिववर्मा	,,	१८१	१६८१
नन्दी सूत्र	—	अपभ्रंश	१७	१७०
नयचक्र	देवसेन	संस्कृत और प्राकृत	१७	१७१
नयचक्रबालाव बोध	सदानन्द	हिन्दी	१७	१७२
नयचक्र भाषा	प० हेमराज	,,	१७	१७४
नलदमयन्ती चउपई	समयसुन्दर सूरि	,,	५८	५६६
नलोदय काव्य	रविदेव	संस्कृत	५८	५६८
नलोदय टीका	रामऋषि मिश्र	,,	५८	५६७
नवकार कथा	श्रीमत्पाद	,,	४१	४१८
नरकों के पायडो का चित्र	—	—	९५	८८७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
नवतत्व टीका	—	संस्कृत	१७	१७५
नवतत्त्व वर्णन	अभयदेव सूरि	प्राकृत और हिन्दी	१७	१७६
नवपद यन्त्र चक्रद्वार (श्रीपाल चरित्र)	—	प्राकृत	७७	७४६
नवग्रह पूजा	—	संस्कृत	१४२	१३१३
नवग्रह पूजा विधान	—	,,	१४२	१३१४
नवग्रह पूजा सामग्री	—	हिन्दी	१४३	१३१५
नवग्रह फल	—	,,	१०७	१००१
नवग्रह स्तोत्र व दान	—	संस्कृत और हिन्दी	१०८	१००३
नवकार महामन्त्र कल्प	—	संस्कृत	१६४	१५२३
नवकार रास	जिनदास श्रावक	हिन्दी	१६५	१५२४
नवरथ	—	,,	१७	१७९
नवरत्न काव्य	—	संस्कृत और हिन्दी	५८	५७१
न्याय दीपिका	अभिनव धर्मभूषणाचार्य	संस्कृत	११८	१११७
न्याय सूत्र	मिथिलेश्वर सूरि	,,	११८	१११६
नवनिधि नाम	—	हिन्दी	२००	१८३२
नागकुमार चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	७८	७५०
नागकुमार चरित्र	प० धर्मधर	संस्कृत	७८	७५२
नागकुमार चरित्र	मल्लिषेण सूरि	,,	७८	७५३
नागकुमार पचमी कथा	मल्लिषेण सूरि	,,	४१	४१९
नागश्री कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	४२	४२०
नागश्री चरित्र	कवि किशनसिंह	हिन्दी	७८	७५४
नाडी परीक्षा सार्थ	—	संस्कृत	३०	३०४
नाममाला	हेमचन्द्राचार्य	,,	७१	७०४
नाममाला	कवि धनजय	,,	७१	७०५
नारद सहिता	—	,,	१०८	१००४
नारायण पृच्छा जयमाल	—	अपभ्रंश	१४३	१३१६
नास्तिकवाद प्रकरण	—	संस्कृत	१७	१८०
निघण्टु	हेमचन्द्र सूरि	,,	३०	३०६
निघण्टु	सोमश्री	,,	३०	३०८
निघण्टु नाम रत्नाकर	परमानन्द	,,	३०	३०७
नित्य क्रिया काण्ड	—	प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी	१७	१८१
निर्दोष सप्तमी कथा	—	हिन्दी	४३	४२२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवतीदास	संस्कृत और हिन्दी	१४३	१३१७
निर्वाण क्षेत्र पूजा	—	हिन्दी	१४३	१३१८
नीतिशतक	भर्तृहरि	संस्कृत	५८	५७२
नीतिवाक्यामृत	सोमदेव सूरि	,,	१२२	११३३
नीतिशतक सटीक	—	,,	१२२	११३
नीति संग्रह	—	,,	१२२	११३७
नेमजिन पुराण	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	१२४	११४८
नेमजी की ढाल	रायचन्द्र	हिन्दी	५८	५७३
नेमजी का पद	उदयरत्न	,,	२००	१८३
नेमिदूत काव्य	विक्रमदेव	संस्कृत	५८	५७४
नेमजी राजुल सवैया	रामकरण	हिन्दी	२००	१८३४
नेमि निर्वाण महाकाव्य	कवि वाग्भट्ट	संस्कृत	५६	५७३२
नेमीश्वर पद	धर्मचंद नेमिचंद	हिन्दी	२००	१८३५
नेषधकाव्य	हर्षकीर्ति	संस्कृत	५६,७६	५८१,७५६
		(प)		
पथ्यापथ्य संग्रह	—	संस्कृत	३०	३१०
पद संहिता	—	संस्कृत और हिन्दी	१७२	१५८५
पद्मनंदि पर्चविंशति	पद्मनंदि	संस्कृत	४३,१६०,१६१	४२५, १७४६ १७५४
पद्मप्रभू चित्र	—	—	६५	८६१
पद्म पुराण	भ० सकलकीर्ति	,,	१२५	११५५
पद्मपुराण भाषा	प० लक्ष्मीदास	हिन्दी	१२५	११५६
पद्म पुराण	रविषेणाचार्य	संस्कृत	१२५	११५७
पद्मावती कथा	महीचन्द सूरि	,,	४३	४२४
पद्मावती छन्द	कल्याण	हिन्दी	१४४	११२३
पद्मावती देवी व पार्श्व-नाथ का चित्र	—	,,	६५	८६३
पद्मावती देवी यन्त्र	—	संस्कृत	१६५	१५२८
पद्मावती पूजन	गोविन्द स्वामी	,,	१४४	१३२४
पद्मावती पूजा	—	संस्कृत और हिन्दी	१४४	१३२५
पद्मावती स्तोत्र	—	संस्कृत	१४४	१३२६
पद्मावती सहस्त्रनाम	प्रमृतवत्स	संस्कृत	१४४	१३३१
पद्मावत्याष्टक सटीक	पार्श्वदेवगणि	,,	१४४	१३३२
पण्डानो गीत	—	हिन्दी	५६	५८३
परमहंस चौपई	ब्रह्म रायमल्ल	,,	४३	२४७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
परमात्म छत्तीसी	पं० भगवतीदास	हिन्दी	१८	१८३
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१८	१८४
परमात्म प्रकाश टीका	ब्रह्मदेव	,,	१८	१८५
परमेष्ठी मन्त्र	–	संस्कृत	१६५	१५२६
पल्य विचार	वसन्तराज	,,	१०८	१००६
पल्य विधान पूजा	भ० शुभचन्द्राचार्य	,,	१४४	१३३३
पल्य विधान पूजा	अनन्तकीर्ति	,,	१४५	१३३५
पल्य विधान पूजा	रत्ननन्दि	,,	१४५	१३३४
पहजरण महाराज चरित्र	पं० दामोदर	अपभ्रंश	७६	७५७
प्रक्रिया कौमुदी	रामचन्द्राश्रम	संस्कृत	१७२	१५८६
प्रतापसार काव्य	जीवन्धर	हिन्दी	५६	५८५
प्रतिक्रमण	–	प्राकृत	१४६	१३५२
प्रतिक्रमण सार्थ	–	प्राकृत, हिन्दी	१६	१६३
प्रतिक्रमण सार्थ	–	प्राकृत, संस्कृत	१४६	१३५३
प्रतिमा बहोत्तरी	द्यानतराय	हिन्दी	१६	१६४
प्रतिमा भग शान्ति विधि विधान	–	,,	१८१	१६८२
प्रथम बखाण	–	,,	१६	१६५
प्रद्युम्न कथा	ब्रह्म वेणीदास	,,	४४	४३५
प्रद्युम्न चरित्र	पं० रयधू	अपभ्रंश	७६	७६३
प्रद्युम्न चरित्र	महासेनाचार्य	संस्कृत	७६, २००	७६४, १८३८
प्रद्युम्न चरित्र	श्री सिंह	अपभ्रंश	७६	७६५
प्रद्युम्न चरित्र	सोमकीर्ति	संस्कृत	८०	७६८
प्रबोधसार	यश. कीर्ति	,,	१६१	१७५५
प्रभजन चरित्र	–	,,	८०	७६६
प्रमेयरत्नमाला वचनिका	–	संस्कृत, हिन्दी	१६	१६६
प्रमयरत्नमाला	पं० माणिक्यनन्दि	संस्कृत	११८	१११८
प्रलय प्रमाण	–	,,	१६	१६७
प्रवचनसार वृत्ति	–	प्राकृत, संस्कृत	१६	१६८
प्रवचनसार वृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	,,	१६	१६६
प्रवचनसार सटीक	–	प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी	१६	२०२
प्रस्तारवर्णन	हर्षकीर्ति सूरि	संस्कृत	१००	६२८
प्रश्नसार	हयग्रीव	,,	१०८	१००७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
प्रश्नसार संग्रह	—	संस्कृत, हिन्दी	१०८	१००८
प्रश्नावली	जिनवल्लभ सूरि	संस्कृत	१०८	१००९
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	भ० सकलकीर्ति	,,	२०, १९१	२०३, १८५६
प्रश्नोत्तर रत्नमाला	विमल	,,	४९	४८६
प्रश्नोत्तर रत्नमाला	राजा अमोघहर्ष	,,	२०	२०४
प्राकृत लक्षण विधान	कवि चण्ड	प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश पैशाची, मागधी आदि	१७२	२०४
पाकार्णव	—	संस्कृत	३०	३११
पाणिनीयसूत्र	व्याडि	,,	१७२	१५८६
प्रायश्चित	अकलंक स्वामी	,,	१९२	१७६९
प्रायश्चित बोल	—	हिन्दी	६०	५८७
पार्श्वनाथ चित्र	—	—	९५, ९६	८९४, ८९५
पार्श्वनाथ और पद्मावती चित्र	—	—	९६	८९२
पार्श्वनाथजी के देशान्तरी छन्द	—	हिन्दी	९९	९२४
पार्श्वनाथ पुराण	पद्मकीर्ति	अपभ्रंश	१२५	११५८
पार्श्वनाथ पुराण	प० रयधू	,,	१२५	११५९
पार्श्वनाथ पुराण	भूधरदास	हिन्दी	१२५	११६०
पार्श्वनाथ विनती	जिनसमुद्रसूरि	अपभ्रंश	२००	१८३६
पार्श्वनाथ स्तवन	—	संस्कृत	१४५	१३३६
पार्श्वनाथ स्तवन सटीक	पद्मप्रभसूरि	,,	१४५	१३४३
पार्श्वनाथ स्तोत्र	शिवसुन्दर	,,	१४५	१३३९
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	,,	१४६	१३४६
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	संस्कृत, हिन्दी	१४५	१३४२
पाशा केवली	—	संस्कृत	१४६	१३४८
पिंगल छन्द शास्त्र	पहुपसहाय	अपभ्रंश	९९	९२५
पिंगल रूप दीपक	जयकिशन	हिन्दी	१००	९२७
पिण्ड विशुद्धावचूरि	जिनवल्लभ सूरि	संस्कृत, प्राकृत	२००	१८३७
प्रियमेलक कथा	ब्रह्म वेणीदास	हिन्दी	४३	४२९
प्रीतिकर मुनि चरित्र भाषा	जोधराज गोदीका	,,	८०	७७५
पुण्य बत्तीसी	समय सुन्दर	,,	१८	१८६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
पुण्याश्रव कथाकोश	रामचन्द्र	संस्कृत	४३,	४३०,
			७१	७०६
पुण्याश्रव कथाकोश सार्थ	–	,,	४३	४३१
पुराणसार संग्रह	भ० सकलकीर्ति	,,	१२६	११६३
पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	अमृतचन्द्राचार्य	,,	१८	१८७
पुष्पदन्त चित्र	–	–	६६	६००
पुष्पांजली पूजा	–	संस्कृत	१४६	१३४६
पुष्पांजली व्रतोद्यापन	पं० गंगादास	हिन्दी	६०	५८८
पूजासार समुच्चय	संग्रहीत	संस्कृत	१४६	१३५०
पूजा संग्रह	–	अपभ्रंश	१४६	१३५१
पंचकल्याण	–	प्राकृत	२००	१८३६
पंच कल्याणक पूजा	–	संस्कृत, प्राकृत	१४७	१३६०
पंचतन्त्र	विष्णु शर्मा	संस्कृत	१२२	११३८
पंच परमेष्ठी यन्त्र	–	,,	१६५	१५२७
पंच परमेष्ठी स्तोत्र	जिनप्रभसूरि	,,	१४७	१३६१
पंच प्रकाशसार	–	प्राकृत, संस्कृत	१८	१८६
पंच मास चतुर्दशी व्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१८१	१६८३
पंचमी सप्ताय	कीर्तिविजय	हिन्दी	६०	५८६
पंच संग्रह	–	प्राकृत	१८	१८८
पंच सन्धि शब्द	–	संस्कृत	१७२	१५८८
पंचमीव्रत पूजा विधान	हर्षकीर्ति	,,	१८१	१६८४
पंचाशत क्रिया व्रतोद्यापन	–	,,	१८१	१६८५
पांच बोल		,,	५६	५८४
(ब)				
बडा स्तवन	अश्वसेन	हिन्दी		
बंध स्वामित्व (बंधतत्व)	देवेन्द्र सूरि	प्राकृत और हिन्दी	२०	२०६
बंधोदयउदीरण सत्ता विचार	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२०	२०८
बंधोदयउदीरणसत्ता स्वामित्व सार्थ	–	प्राकृत, संस्कृत	२०	२१०
ब्रह्म प्रदीप	पं० काशीनाथ	संस्कृत	१०८	१०१०
बारह व्रत कथा	–	,,	४४	४३६
बारह व्रत टिप्पणी	–	हिन्दी	१८१	१६८६
बाला त्रिपुरा पद्धति	श्रीराम	संस्कृत		
बावन दोहा बुद्धि रसायन	पं० महिराज	अपभ्रंश, हिन्दी	६०	५६०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
बाहुबली चरित्र	धनपाल	अपभ्रंश	८०	७७६
बाहुबली पाथड़ी	–	अपभ्रंश, संस्कृत	४४	४३७
बाहुबली पाथडी	अभयवली	प्राकृत	८१	७७७
बुद्ध वर्णन	कविराज सिद्धराज	संस्कृत	४४	४३६
बुद्धिसागर दृष्टान्त	बुद्धिसागर	,,	२००	१८४०
बंकचूल कथा	ब्रह्म जिनदास	,,	४४	४३६
(भ)				
भक्तामर री ढाल	–	हिन्दी	६०	५६१
भक्तामर स्तोत्र	मानतुगाचार्य	सस्कृत	१४८	१३६९
भक्तामर भाषा	नथमल और लालचन्द	सस्कृत-हिन्दी	१४९	१३७८
भक्तामर भाषा	प० हेमराज	हिन्दी	१४९	१३७९
भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	रत्नचन्द मुनि	सस्कृत	१४९	१३८०
भक्तामर सटीक	–	,,	१४९	१३८२
भक्तामर तथा सिद्धप्रिय स्तोत्र	–	,,	१४९	१३८६
भगवती आराधना सटीक	–	प्राकृत-सस्कृत	२०	२११
भजन व आरती सग्रह	–	हिन्दी	२०१	१८४१
भद्रबाहु चरित्र	आ० रत्ननन्दि	सस्कृत	८१	७७८
भरत बाहुबली वर्णन	शीशराज	हिन्दी	४५	४४१
भरत क्षेत्र विस्तार चित्र	–	सस्कृत	९६	९०१
भव्य मार्गरणा	–	हिन्दी	२०	२१२
भविष्यदत्त चरित्र	प० श्रीधर	सस्कृत	८१	७७७
भविष्यदत्त चरित्र	पं० धनपाल	अपभ्रंश	८२, २०१	७८८, १८४२
भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	८२	७९१
भविष्यपुराण	–	सस्कृत	१२६	११६४
भाडली पुराण	भाडली ऋषि	हिन्दी	१०८	१०११
भामिनी विलास	प० जगन्नाथ	सस्कृत	६०	५९२
भारती स्तोत्र	शंकराचार्य	,,	१५०	१३८७
भावनासार सग्रह	महाराजा चामुण्डराय	,,	२१	२१५
भाव सग्रह	देवसेन	प्राकृत	२१	२१६
भाव सग्रह	श्रुतमुनि	,,	२१	२१८
भाव सग्रह	पं० वामदेव	सस्कृत	२२	२२१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
भाव सग्रह सटीक	–	हिन्दी	२२	२२२
भाव त्रिभगी सटीक	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत, सस्कृत	२०१	१८४४
भावी कुलकरो की नामावली	–	,,	२०१	१८४४
भाषाभूषरण	महाराजा जसवन्तसिंह	हिन्दी	१००	६२६
भुवन दीपक	पद्मप्रभ सूरि	सस्कृत, हिन्दी	१०८	१०१३
भुवनेश्वरी स्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	सस्कृत	२०१	१८४५
भूपाल चतुर्विशति स्तोत्र	प० आशाधर	,	१५०	१३८६
भूषरण बावनी	भूषरण स्वामी	हिन्दी	३४	३४०
भैरव चित्र	–	–	६६	६०२
भैरव पताका यन्त्र	–	सस्कृत, हिन्दी	१६५	१५२८
भैरव पद्मावती कल्प	मल्लिषेरण सूरि	सस्कृत	१६५	१५२६
भोज प्रबन्ध	कवि बल्लाल	,,	६०	५६३
(म)				
मदन पराजय	जिनदेव	सस्कृत	६०,	५६४,
			१२०	११२२
मदन पराजय	हरिदेव	अपभ्रंश	६०	५६७
मदन युद्ध	बूचराज	हिन्दी	४५	४४२
मयुराष्टक	कवि मयुर	सस्कृत	६१	५६८
मलय सुन्दरी चरित्र	अखयराम लुहाडिया	हिन्दी	८२	७६२
मल्लिनाथ चरित्र	भ० सकलकीर्ति	सस्कृत	८२	७६३
महर्षि स्तोत्र	प० आशाधर	,,	१५०	१३६३
महालक्ष्मी कवच	–	,,	१५०	१३६४
महालक्ष्मी पद्धति	प० महादेव	,,	७१	७०७
महालक्ष्मी स्तोत्र	–	,,	१५०	१३६५
महावीर जिन नय विचार	यश विजय	प्राकृत, हिन्दी	२२	२२४
महावीर स्वामी चित्र	–	–	६६	६०४
महिपाल चरित्र भाषा	प० नथमल	हिन्दी	८२	७६४
महिम्न स्तोत्र सटीक	अमोघ पुष्पदन्त	सस्कृत	१५०,	१३६६
			१५१	१३६७
मृगी सवाद चौपई	–	हिन्दी	४५	४४३
मृत्यु महोत्सव वचनिका	प० सदासुख	सस्कृत, हिन्दी	२२	२२६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
मार्कण्डेय पुराण सटीक	मार्कण्डेय	संस्कृत	१२६	११६५
माधवानल कथा	कुंवर हरिराज	हिन्दी	४५	४४४
माधवानल काम कन्दला चौपई	देव कुमार	,,	४५	४४६
मानमजरी नाममाला	नन्ददास	सस्कृत	७१	७०८
मास लग्न फल	—	,,	१०६	१०१४
मिथ्यात्व खण्डन	कवि अनुप	हिन्दी	१२०	११२३
मिथ्यात्व खण्डन नाटक	साह कन्निराम	,,	१२०	११२४
मुक्तावली कथा	—	सस्कृत	४५	४४७
मुक्तावली पूजा	—	,,	१५१	१३६८
मुद्राविधि	—	,,	२०१	१८४७
मुहूर्त चिन्तामणी सटीक	देवकी राम	,,	१०६	१०१५
मुहूर्त चिन्तामणी	नारायण	,,	१०६	१०१६
मुहर्त मुक्तावली	—	सस्कृत, हिन्दी	१०६	१०१८
मूर्तिपूजा मण्डन	प० मिहिर चन्द्रदास जैनी	हिन्दी	२०१	१८४६
मूल संग्राहणी	रत्नकीर्ति	सस्कृत	४५	४४८
मूलाचार प्रदीपिका	भ० सकलकीर्ति	,,	१९३	१७७०
मेघकुमार ढाल	मुनि यश नाम	हिन्दी	६१	५९९
मेघदूत काव्य	कालिदास	सस्कृत	६१	६००
मेघदूत काव्य सटीक	लक्ष्मी निवास	,,	६१	६०५
मेघदूत काव्य सटीक	वल्लभ देव	,,	६१	६०६
मेघदूत काव्य टीका	वत्स	,,	६१	६०७
मेघमाला व्रत कथा	मुनि वल्लभ	,,	४५	४४९
मेघवर्षा	—	सस्कृत, हिन्दी	१०६	१०२०
मेदनीपुर का लग्न पत्र	—	हिन्दी	१०६	१०२१
मोक्ष मार्ग प्रकाशक वचनिका	प० टोडरमल	हिन्दी, राजस्थानी	२२	२२५
मगल कलश चौपई	लक्ष्मी हर्ष	हिन्दी	६२	६१३
मगल पाठ	—	,,	१५०	१३६२

(य)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
यमक स्तोत्र	चिरन्तन आचार्य	संस्कृत	६२	६१४
यमाष्टक स्तोत्र सटीक	—	,,	१५१	१३६९
यशोधर चरित्र	मुमुक्षु विद्यानन्द	,,	८३	७९५
यशोधर चरित्र	सोमकीर्ति	,,	८३	७९६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
यशोधर चरित्र	सोमदेव सूरि	,,	८४	७६७
यशोधर चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	८४	७६८
यशोधर चरित्र	पद्मनाभ कायस्थ	संस्कृत	८४	८०६
यशोधर चरित्र	भ० सकलकीर्ति	,,	८६	८११
यशोधर चरित्र	पूर्णदेव	,,	८६	८१५
यशोधर चरित्र	वासवसेन	,,	८७	८१७
यशोधर चरित्र (पीठिका बंध)	—	,,	८७	८१८
यशोधर चरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	,,	८७	८१९
यशदत्त कथा	—	,,	४५	४५१
योग चिन्तामणि	—	संस्कृत, हिन्दी	३१	३१३
योग शतक	विदग्ध वैद्य पूर्णसेन	संस्कृत	३१	३१४
योग शतक	—	,,	३१	३१५
योग शतक टिप्पण	—	संस्कृत, हिन्दी	३१	३१६
योग शतक सटीक	—	संस्कृत	३१	३१७
योग शतक	धन्वन्तरि	संस्कृत, हिन्दी	३१	३१८
योग शतक सार्थ	—	,,	३१	३१९
योग शास्त्र	हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	१६७	१५४२
योग साधन विधि (सटीक)	गोरखनाथ	हिन्दी	१६७	१५४४
योगसार गूहफल	—	संस्कृत	१०६	१०२२
योगसार संग्रह	—	,,	१६७	१५४३
योग ज्ञान	—	,,	१६७	१५४५

(र)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
रघुवंश महाकाव्य	कालिदास	संस्कृत	६२	६१५
रघुवंश राजाओं की नामावली	—	,,	२०१	१८४८
रघुवंश	कालिदास	,,	६२	६१८
रघुवंश टीका	आनंददेव	,,	६२	६१९
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	समन्तभद्र	,,	१९३	१७७१
रत्नकरण्ड श्रावकाचार सटीक	प्रभाचंद्राचार्य	,,	१९३	१७७२
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	श्रीचन्द	अपभ्रंश	१९३	१७७३
रत्नकोष	—	संस्कृत	२०१	१८४९
रत्न चूड़रास	यशः कीर्ति	हिन्दी	८७	८२०
रत्नमाला	शिवकोट्याचार्य	संस्कृत	१९३	१७७५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
रत्नसार	पं० जीवन्धर	,,	१६३	१७७६
रात्रि भोजन दोष विचार	धर्मसमुद्रवाचक	हिन्दी	१६३	१७७७
रत्नत्रय विधान कथा	प० रत्नकीर्ति	सस्कृत	४६	४५३
रत्नत्रय व्रत कथा	श्रुतसागर	,,	४६	४५२
रत्नत्रय पूजा	—	,,	१५१	१४००
रत्न परीक्षा (रत्न दीपिका)	चण्डेश्वर सेठ	,,	२०२	१८५१
रत्न परीक्षा	—	हिन्दी	२०१	१८५०
रत्नावली व्रत कथा	—	सस्कृत	४६	४५४
रमल शकुनावली	—	हिन्दी	१०६	१०२३
रमल शास्त्र	पं० चिन्तामणी	,,	११०	१०२५
रस मंजरी	—	संस्कृत	३१	३२०
रस रत्नाकर (धातु रत्नमाला)	—	,,	३१	३२१
रसेन्द्र मगल	नागार्जुन	,,	३१	३२२
रक्षा बन्धन कथा	—	हिन्दी	४६	४५५
राजनीति शास्त्र	चम्पा	,,	१२२	११३६
राई प्रकरण विधि	—	,,	१८२	१६८७
राजवार्तिक	अकलकदेव	सस्कृत	२२	२२७
राम आज्ञा	तुलसीदास	हिन्दी	६२	६२०
रामपुराण	भट्टारक सोमसेन	सस्कृत	१२६	११६६
रामायण शास्त्र	चिरन्तन महामुनि	,,	१२८	११६८
रामचन्द्र स्तवन	सनतकुमार	,,	१५१	१४०२
राम विष्णु स्थापना	—	हिन्दी	१८२	१६८८
राम विनोद	रामचन्द्र	,,	३२	३२३
राशि नक्षत्र फल	महादेव	सस्कृत	११०	१०२७
राशिफल	—	मस्कृत, हिन्दी	११०	१०२८
राशि लाभ व्यय चक्र	—	हिन्दी	११०	१०२६
राशि सक्रान्ति	—	,,	११०	१०३०
रात्रि भोजन दोष चौपई	मेघराज का पुत्र	,,	४६	४५६
रात्रि भोजन त्याग कथा	भ० सिंहनंदि	सस्कृत	४६	४५६
रात्रि भोजन त्याग कथा	—	हिन्दी	४६	४६०
रूक्मणी व्रत विधान कथा	विशाल कीर्ति	मराठी	१८२	१६८६
रोटतीज कथा	गुणनंदि	संस्कृत	४६	४६१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
		(ल)		
लग्न चक्र	–	संस्कृत	११०	१०३१
लग्न चन्द्रिका	काशीनाथ	,,	११०	१०३२
लग्न प्रमाण	–	संस्कृत, हिन्दी	११०	१०३३
लग्नादि वर्णन	–	संस्कृत	११०	१०३४
लग्नाक्षत फल	–	,,	११०	१०३५
लघु जातक (सटीक)	भट्टोत्पल	,,	१११	१०३६
लघु जातक भाषा	कृपाराम	हिन्दी	१११	१०३७
लघु तत्वार्थ सूत्र	–	प्राकृत, संस्कृत	२२	२२८
लघुनाम माला	हर्ष कीर्ति सूरि	संस्कृत	७१	७०६
लघु प्रतिक्रमण	–	संस्कृत, प्राकृत	१५१	१४०३
लघु शान्ति पाठ	–	संस्कृत	१५१	१४०४
लघु सहस्त्र नाम स्तोत्र	–	,,	१५१	१४०५
लघु स्तवन (सटीक)	सोमनाथ	,,	१५१	१४०६
लघु स्तवराज काव्य सटीक	लघु पण्डित	,,	६३	६२१
लघु स्तवन टीका	मुनि नन्दगुण क्षोणी	,,	१५१	१४०६
लघु स्वयंभू स्तोत्र	देवनंदि	,,	१५२	१४०७
लघु स्वयंभू स्तोत्र (सटीक)	देवनंदि	संस्कृत, हिन्दी	१५२	१४१२
लघु सारस्वत	कल्याण सरस्वती	संस्कृत	१७३	१५६४
लघु सिद्धान्त कौमुदी	पाणिनी ऋषिराज	,,	१७३	१५६५
लब्धि विधान पूजा	ब्र० हर्षकीर्ति	,,	१५२	१४१५
लब्धि विधान व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	४६	४६२
लक्ष्मी सरस्वती संवाद	श्री भूषण	संस्कृत	६३	६२२
लंघन पथ्य निर्णय	वाचक दीपचन्द	,,	३२	३२५
लिंगानुशासन	अमरसिंह	,,	७१	७१०
लीलावती भाषा	लालचन्द	हिन्दी	१११	१०४१
लीलावती सटीक	भास्कराचार्य	संस्कृत	१११	१०४२
लीलावती भाषा	लालचंद	हिन्दी	१११	१०४१
		(व)		
वर्द्धमान काव्य	जयमित्र हल	अपभ्रंश	६३	६२४
वर्द्धमान काव्य	प० नरसेन	,,	८७	८२१
वर्द्धमान चरित्र	कवि असग	संस्कृत	८७	८२२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
वर्द्धमान चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	८७	८२५
वर्द्धमान जिन स्तवन	—	संस्कृत	१५२	१४१६
वर्द्धमान जिन स्तवन सटीक	पं० कनककुशल गरिण	,,	१५२	१४१७
वर्द्धमान पुराण	नवलदास शाह	हिन्दी	१२८	११६६
वन्देतान की जयमाल	माघनन्दि	संस्कृत	१५३	१४१८
वनस्पति सत्तरी सार्थ	मुनिचन्द्र सूरि	प्राकृत, संस्कृत	३२	३२६
व्युच्छति त्रिभगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२३	२३०
वरांग चरित्र	पं० तेजपाल	अपभ्रंश	८८	८२६
वराग चरित्र	भट्टारक वर्द्धमान	संस्कृत	८८	८२७
वर्ष कुण्डली विचार	—	,,	१११	१०४३
वर्ष फलाफल चक्र	—	,,	१११	१०४४
वसुधारा धारिणी नाम महाविद्या	नदन	,,	६३	६२५
वसुधारा धारिणी नाम महाशास्त्र	—	,,	१८२	१६६५
व्रत कथा कोश	श्रुतसागर	,,	४६	४६३
व्रतसार	—	,,	१८२	१६६४
व्रतसार श्रावकाचार	—	,,	१९३	१७७९
विजय पताका मत्र	—	,,	१६५	१५३३
विजय पताका मत्र	—	,,	१६५	१५३२
वृत रत्नाकर	केदारनाथ भट्ट	,,	१००	९३०
वृत रत्नाकर सटीक	पं० केदार का पुत्र राम	,,	१००	९३५
वृत रत्नाकर सटीक	केदारनाथ भट्ट	,,	१००, १०१	९३६, ९३७
वृत रत्नाकर टीका	समय सुन्दर उपाध्याय	,,	१००	९३६
वृत रत्नाकर टीका	कवि सुल्हण	,,	१०१	९३८
वृन्दावन काव्य	कवि माना	,,	६३	६२६
वृहद् कलिकुण्ड चित्र	—	—	९६	९०५
वृहद् जातक (सटीक	वराहमिहिराचार्य	,,	१११	१०४५
वृहद् जातक टीका	भट्टोत्पल	,,	१११	१०४५
वृहद् चाणक्य राजनीति शास्त्र	चाणक्य	,,	१२३	११४०
वृहद् द्रव्य संग्रह सटीक	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२३	२२९
वृहद् प्रतिक्रमण सार्थ	—	प्राकृत, संस्कृत	१५३	१४२०
वृहद प्रतिक्रमण	—	,,	१५३	१४२५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
वृहत् स्वयभू स्तोत्र (सटीक)	समन्तभद्राचार्य	सस्कृत	१५३	१४२३
वृहत् स्वयभू टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	,,	१५३	१४२३
वृहत् षोडष कारण पूजा	—	,,	१५३	१४२४
वृहत्षोडष कारण यन्त्र	—	,,	१६५	१५३०
वृहद् सिद्धचक्र यन्त्र	—	,,	१६५	१५३१
वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	दामोदर	,,	१७३	१५६६
वाक्य प्रकाशभिधस्य टीका	—	,,	१७३	१५६७
वाद पच्चीसी	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	२३	२३१
वासपूज्य चित्र	—	—	९६	९०६
विक्रमसेन चौपई	—	हिन्दी	६३	६२७
विक्रमसेन चौपई	मानसागर	,,	८८	८२८
विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक	भगवती	सस्कृत	४७	४६४
विचार षट् त्रिशक (चौबीसदण्डक सार्थ)	गजसार	प्राकृत, हिन्दी	२३	२३२
विचिन्तमणी ग्रन्थ	—	हिन्दी	११२	१०४६
विजय पताका यन्त्र	—	सस्कृत	१६५	१५३३
विदग्ध मुख मण्डन	धर्मदास बौद्धाचार्य	,,	६३, १०१	६२८,, ९४१
विद्वद्भूषण	बालकृष्ण भट्ट	,,	६३	६३१
विद्वद् भूषण टीका	मधुसूदन भट्ट	,,	६३	६३१
विधान व कथा सग्रह	—	,,	४७	४६५
विधान व कथा सग्रह	—	प्राकृत व अपभ्र श	१५३	१४२७
विधि सामान्य	—	सस्कृत	११८	११९६
विनती सग्रह	प० भूधरदास	हिन्दी	१५४	१४२८
विपरीत ग्रहण प्रकरण	—	सस्कृत	११२	१०४७
विमलनाथ स्तवन	विनीत सागर	हिन्दी	१५४	१४२९
विवाह पटल भाषा	प० रूपचन्द	सस्कृत, हिन्दी	११२	१०५०
विवाह पटल	श्रीराम मुनि	सस्कृत	११२	१०४९
विवाह पटल सार्थ	—	सस्कृत, हिन्दी	११२	१०५१
विवेक विलास	जिनदत्त सूरि	सस्कृत	१९३	१७७८
विषापहार स्तोत्र	धनजय	,,	१५४	१४३०
विषापहार स्तोत्रादि टीका	नागचन्द्र सूरि	,,	१५४	१४३५
विषापहार विलाप स्तवन	वादिचन्द्र सूरि	,,	१५५	१४३७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
विशेष सत्ता त्रिभंगी	नयनन्दि	प्राकृत	२३	२३३
विशेष महाकाव्य सटीक (ऋतु सहार)	कालिदास	संस्कृत	६४	६३२
विशेष महाकाव्य टीका	अमर कीर्ति	,,	६४	६३२
वेद क्रान्ति	—	,,	२३	२३५
वैताल पच्चीसी कथानक	शिवदास	,,	४७	४६६
वैद्यकसार	नयन सुख	हिन्दी	३२	३२७
वैद्य जीवन	प० लोलिमराज कवि	संस्कृत	३२	३२८
वैद्य जीवन टीका	रूद्र भट्ट	,,	३२	३३०
वैद्य मनोत्सव	प० नयनसुख	हिन्दी	३२	३३१
वैद्य रत्नमाला	सि० च० नेमिचन्द्र	,,	३३	३३३
वैद्य विनोद	शकर भट्ट	संस्कृत	३३	३३४
वैराग्य माला	सहल	,,	६४	६३३
वैराग्य शतक	भर्तृहरि	,,	६४	६३४
वैराग्य शतक सटीक	—	प्राकृत, हिन्दी	६४	६३६
वैराग्य शतक सार्थ	—	,,	६४	६३८
शकुन रत्नावली	—	हिन्दी	११२	१०५३
शकुन शास्त्र	भगवद् भाषित	संस्कृत	११२	१०५४
शकुनावली	—	हिन्दी	११२	१०५५
शत श्लोक	वैद्यराज त्रिमल्ल भट्ट	संस्कृत	३३	३५५
शनिश्चर कथा	जीवणदास	हिन्दी	४७	४६८
शनि, गोतम और पार्श्वनाथ स्तवन सग्रह		हिन्दी, संस्कृत	१५५	१४३८
शनिश्चर स्तोत्र	हरि	हिन्दी	१५५	१४३९
शब्द बोध	—	संस्कृत	१७३	१५९८
शब्द भेद प्रकाश	महेश्वर कवि	,,	१७३	१५९९
शब्द रूपावली	—	,,	१७३,	१६००,
	,,	,,	१७४	१६०४
शब्द समुच्चय	अमरचन्द	,,	१७४	१६०५
शब्द साधन	—	,,	१७४	१६०६
शब्दानुशासन वृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	,,	१७४	१६०७
शत्रुंजय तीर्थद्वार	नयसुन्दर	हिन्दी	६४	६३९
शान्ति चक्र मण्डल	—	संस्कृत	१६६	१५३४
शान्तिनाथ चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	,,	८८	८१९

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
शान्तिनाथ पुराण (सटीक)	भ० सकलकीर्ति	सस्कृत, हिन्दी	१२८	११७०
शालिभद्र महामुनि चरित्र	जिनसिंह सूरि (जिनराज)	हिन्दी	८८	८३१
शिव पच्चीसी एवं ध्यान बत्तीसी	बनारसीदास	"	१५५	१४४१
शिव पुराण	वेद व्यास	सस्कृत	१२८	११७१
शिव स्तोत्र	—	"	१५५	१४४२
शिवार्चन चन्द्रिका	श्रीनिवास भट्ट	"	१६६	१५३५
शिशुपालवध सटीक	—	"	६४	६४२
शिशुपालवध सटीक	महाकवि माघ	"	६४	६४०
शिशुपालवध टीका	आनन्द देव	"	६४	६४३
शीघ्रबोध टीका	तिलक	"	११३	१०५७
शीघ्रबोध सार्थ	—	सस्कृत, हिन्दी	११३	१०६३
शीतलनाथ चित्र	—	—	९७	९०७
शीतलाष्टक	—	सस्कृत	१५५	१४४३
शीलरथ गाथा	—	प्राकृत	६५	६४४
शील विनती	कुमुदचन्द्र	हिन्दी, गुजराती	६५	६४५
शिलोपारी चिलासन पद्मावती कथानक	—	सस्कृत	६५	६४६
शीलश्री चरित्र	—	"	२०२	१८५२
शोभन स्तोत्र	केशरलाल	"	१५६	१४४४
शोभन श्रुति	प० धनपाल	"	२३	२३६
शोभन श्रुति टीका	क्षेमसिंह	"	२३	२३६
(स)				
सगीतसार	प० दामोदर	सस्कृत	१२१	११२९
सज्जन चित्तवल्लभ	मल्लिषेण	"	६५, २०२	६४७, १८५६
सत्ता त्रिभगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१५	६६१
सध्या वन्दन	—	सस्कृत	१५६	१४४८
सन्धि अर्थ	प० योगक	सस्कृत, हिन्दी	१७४	१६१०
सन्मति जिन चरित्र	रयधू	अपभ्रंश	८८	८३२
सन्निपात कलिका लक्षण	धन्वन्तरि वैद्य	सस्कृत, हिन्दी	३३	३३७
सप्त पदार्थ सत्रावचूरि	—	सस्कृत	११९	११२०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सप्त व्यसन कथा	आचार्य सोमकीर्ति	,,	४७	४७०
सप्त व्यसन समुच्चय	पं० भीमसेन	,,	६५	६५१
सप्त सूत्र	—	,,	१७४	१६११
समगत बोल	—	हिन्दी	६५	६५२
समन्तभद्र स्तोत्र	—	संस्कृत	१५६	१४४६
समयसार नाटक सटीक	अमृतचन्द्र सूरि	,,	२४, २५	५२०, २५१
समयसार नाटक भाषा	पं० बनारसीदास	हिन्दी	२५	२५७
समयसार भाषा	पं० हेमराज	,,	२५	२५६
समवशरण स्तोत्र	विष्णु शोभन	संस्कृत	१५६	१४५०
समवशरण स्तोत्र	धनदेव	,,	१५६	१४५१
सम्भवनाथ चरित्र	पं० तजपाल	अपभ्रंश	८८	८३३
सम्यक्त्व कौमुदी	जयशेखर सूरि	संस्कृत	४८	४७३
सम्यक्त्व कौमुदी	पं० खेता	,,	४६	४७६
सम्यक्त्व कौमुदी	कवि यश सेन	,,	४६	४८०
सम्यक्त्व कौमुदी	जोधराज गोदीका	हिन्दी	४६	४८२
सम्यक्त्व कौमुदी सार्थ	—	संस्कृत	४६	४८४
सम्यक्त्व कौमुदी पुराण	महीचन्द	संस्कृत, हिन्दी	१२६	११७२
सम्यक्त्व रास	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	६६	६५३
सम्यक चरित्र यन्त्र	—	संस्कृत	१६६	१५३७
सम्यक दर्शन यन्त्र	—	,,	१६६	१५३८
सम्मेदशिखरजी पूजा	मतदेव	हिन्दी	१५६	१४५३
सम्मेदशिखर महात्म्य	धर्मदास क्षुल्लक	,,	१५७	१४५५
सम्मेदशिखर विधान	हीरालाल	,,	१५७	१४५६
समाधि शतक	पूज्यपाद स्वामी	संस्कृत	२५, १५६	२६०
समास चक्र	—	,,	१७४	१६१२
समास प्रयोग पटल	पं० वररूचि	,,	१७४	१६१३
सरस्वती चित्र	—	—	६७	६१०
सरस्वती स्तुति सार्थ	—	संस्कृत	१५७	१४५८
सरस्वती स्तुति	नागचन्द्र मुनि	,,	१५८	१४६८
सरस्वती स्तोत्र	पं० बनारसीदास	हिन्दी	१५७	१४५६
सरस्वती स्तोत्र	बृहस्पति	संस्कृत	१५७	१४६०
सरस्वती स्तोत्र	श्री ब्रह्मा	,,	१५७	१४६२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सरस्वती स्तोत्र	विष्णु	,,	१५८	१४६७
सर्वतीर्थमाल स्तोत्र	—	,,	१५८	१४६९
स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	—	,,	२६	२६३
स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्तिकेय	प्राकृत	१६५	१७६६
स्वर सन्धि	प० योगक	संस्कृत, हिन्दी	२०२	१८५५
सर्वधातु रूपावली	—	सस्कृत	१७५	१६१५
सवैया बत्तीसी	कवि जगन पोहकरण	हिन्दी	२०२	१८५७
सहस्त्रनाम स्तोत्र	प० आशाधर	सस्कृत	१५८	१४७०
सहस्त्रनाम स्तवन	जिनसेनाचार्य	,,	१५८	१४७१
स्तवन पार्श्वनाथ	नयचन्द्र सूरि	,,	१५८	१४७२
स्तोत्र सग्रह	—	,,	१५८	१४७३
स्थूलभद्र मुनि गीत	नथमल	हिन्दी	६७	६६४
स्याद्वाद रत्नाकर	देवाचार्य	सस्कृत	२६	२६२
स्वर्णाकर्षण भैरव	—	,,	१५८,१६६	१५४४
स्वप्न विचार	—	हिन्दी	११४	१०७९
स्वप्नाध्याय	—	संस्कृत	११५	१०८०
स्वरोदय	—	,,	११४	१०७५
स्त्री के सोलह लक्षण	—	सस्कृत, हिन्दी	२०२	१८५४
सागारधर्मामृत	पं० आशाधर	सस्कृत	१६६	१८०१
साठी सवत्सरी	—	,,	११५	१०८२
साधारण जिन स्तवन सटीक	जयनन्द सूरि	,,	१५९	१४७९
साधारण जिन स्तवन	प० कनककुशल गणि	,,	१६०	१४७९
साधु वन्दना	बनारसीदास	हिन्दी	१५८	१४७५
साधु वन्दना	पार्श्वचन्द्र	सस्कृत	१५९	१४७६
साधु वन्दना	समय सुन्दर गणि	हिन्दी	१५९	१४७८
सामायिक पाठ	—	प्राकृत, सस्कृत	१५९	१४८०
सामायिक पाठ सटीक	—	सस्कृत, हिन्दी	१६०	१४८७
सामायिक पाठ सटीक	पाण्डे जयवन्त	,,	२६	२६६
सामायिक पाठ तथा तीन चौबीसी नाम	—	प्राकृत, सस्कृत, हिन्दी	१६०	१४९१
सामुद्रिक शास्त्र	—	सस्कृत	११५	१०८४
सामुद्रिक विचार चित्र	—	—	६७	६११

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सारणी	—	हिन्दी	११५	१०६१
सार समुच्चय	कुलभद्र	संस्कृत	१६६	१८०४
सारस्वत दीपिका	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	,,	१७५	१६१६
सारस्वत दीपिका	मेघरत्न	,,	१७५	१६१६
सारस्वत प्रक्रिया पाठ	परमहंस परिव्राजक अनुभूतिस्वरूपाचार्य	,,	१७५	१६२०
सारस्वत ऋजू प्रक्रिया	—	संस्कृत, हिन्दी	१७७	१६४४
सारस्वत व्याकरण सटीक	अ० स्वरूपाचार्य	संस्कृत	१७८	१६८८
सारस्वत व्याकरण टीका	धर्मदेव	,,	१७८	१६४८
सारस्वत शब्दाधिकार	—	,,	१७८	१६४६
सिद्ध चक्र पूजा	शुभचन्द्र	,,	१६०	१४६२
सिद्ध चक्र पूजा	श्रुतसागर सूरि	,,	१६०	१४६३
सिद्ध चक्र पूजा	पं० आशाधर	,,	१६०	१४६४
सिद्ध दण्डिका	देवेन्द्र सूरि	प्राकृत, संस्कृत	२६	२६७
सिन्दुर प्रकरण	सोमप्रभाचार्य	संस्कृत	३४, ६६	३४१, ६५४
सिन्दुर प्रकरण सार्थ	—	,,	६६	६५७
सिद्धप्रिय स्तोत्र	—	,,	१६०	१४६६
सिद्धप्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	,,	१६०	१४६६
सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका	सहस्त्र कीर्ति	,,	१६०	१४६७
सिद्ध सारस्वत मन्त्र गर्भित स्तोत्र	अनुभूति स्वरूपाचार्य	,,	१६१	१४६८
सिद्धान्त कौमुदी	—	,,	१७८	१६५०
सिद्धान्त चन्द्रिका	—	,,	१७८	१६५१
सिद्धान्त चन्द्रिका मूल	उद्भट	,,	१७८	१६५२
सिद्धान्त चन्द्रिका मूल	रामचन्द्राश्रम	,,	१७८	१६५३
सिद्धान्त चन्द्रिका	रामचन्द्राश्रमाचार्य	,,	१७६	१६६१
,, ,, वृत्तिका	सदानन्द	,,	१७६	१६६१
सिद्धान्त चन्द्रिका	रामचन्द्राचार्य	,,	१७८	१६५६
सिद्धान्त चन्द्रोदय टीका	श्री कृष्ण धूर्जरि	,,	११६	११२१
सिद्धान्त चन्द्रोदय	अनन्त भट्ट	,,	११६	११२१
सिद्धान्त बिन्दु स्तोत्र	शंकराचार्य	,,	१६१	१४६६
सिद्धान्त सार	जिनचन्द्र देव	प्राकृत	२६	२६८

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सिंहल सुत चतुष्पदी	समय सुन्दर	हिन्दी	४६	४८५
सिंहासन बत्तीसी	सिद्धसेन	,,	४६	४८६
सीता पच्चीसी	वृद्धिचन्द	,,	६६	६५८
सुकुमाल महामुनि चौपई	शान्ति हर्ष	,,	८८	८३४
सकुमाल स्वामी चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	संस्कृत	८८	८३५
सुखबोधार्थ माला	प० देवसेन	,,	२७	२७६
सुगन्ध दशमी कथा भाषा	खुशालचन्द	हिन्दी	५०	४८६
सुगन्ध दशमी कथा	सुशील देव	अपभ्रंश	५०	४९०
सुगन्ध दशमी कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	५०	४९१
सुगन्ध दशमी कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	,,	५०	४९२
सुगन्ध दशमी व पुष्पाजली कथा	—	संस्कृत	५०	४९३
सुदर्शन चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	,,	८६	८३८
सुदर्शन चरित्र	मुमुक्षु श्री विद्यानन्दि	,,	८६	८३६
सुदर्शन चरित्र	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	८६	८४२
सुदर्शन चरित्र	मुनि नयनन्दि	अपभ्रंश	८९	८४३
सुप्प दोहड़ा	—	,,	३५	३५०
सुभद्रानो चोढालियो	कवि मानसागर	हिन्दी	२६	२७०
सुभाषित काव्य	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	३५	३५१
सुभाषित कोश	हरि	,,	२६	२७१
सुभाषित रत्न संदोह	अमितगति	,,	३५, ६६	३५२, ६६०
सुभाषित रत्नावली	भ० सकलकीर्ति	,,	३५	३५३
सुभाषितार्णव	—	प्राकृत, संस्कृत	३५	३५५
सुभाषितावली	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	३६	३६०
सुमतारी ढाल	शिब्बूराम	हिन्दी	६६	६६१
सुरपति कुमार चतुष्पदी	पं० भावसागर गणि	,,	८६	८४४
सूक्ति मुक्तावली शास्त्र	सोमप्रभाचार्य	संस्कृत	३४	३४३
सूक्ति मुक्तावली सटीक	—	,,	३५	३४६
सूर्य ग्रह घात	प० सूर्य	हिन्दी	११५	१०९२
सूर्योदय स्तोत्र	प० कृष्ण ऋषि	संस्कृत	१६१	१५००
सोनागीरी पच्चीसी	कवि भागीरथ	हिन्दी	६६	६६२
सोली गे ढाल	—	,,	६६	६६२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सग्रह ग्रन्थ	भिन्न-भिन्न कर्त्ता हैं	सस्कृत	२०२	१८५८
सदीप्त वेदान्त शास्त्र	परमहंस परिव्राजकाचार्य	,,	२०२	१८५९
सम्बोध पचासिका सार्थ	—	प्राकृत, संस्कृत	१९७	१८०९
सम्बोध पंचासिका	कवि दास	,,	२७	२७३
सम्बोध सत्तरी	जयशेखर सूरि	,,	२७	२७४
सम्बोध सत्तरी	—	प्राकृत, हिन्दी	२७	२७५
सस्कृत मंजरी	--	सस्कृत	१७९	१६६८
सयम वर्णन	—	अपभ्रंश, हिन्दी	२०२	१८६०
सवत्सर फल	—	सस्कृत	११६	१०९३

(ष)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
षट् कर्मोपदेशे माला	अमर कीर्ति	अपभ्र श	१९४	१७८०
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	भट्टारक लक्ष्मणसेन	सस्कृत	१९४	१७८२
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	अमरकीर्ति	अपभ्रंश	२३	२३७
षट् कारक प्रक्रिया	—	सम्कृत	१७४	१६०९
षट्कोण यन्त्र	—	,,	१६६	१५३६
षट् दर्शन विचार	—	,,	२३	२३९
षट् दर्शन समुच्चय टीका	हरिभद्र सूरि	,,	२३	२४०
षट द्रव्यसग्रह टिप्पण	प्रभाचन्द्र देव	प्राकृत, सस्कृत	२४	२४२
षट् द्रव्य विवरण	—	हिन्दी	२४	२४३
षट् पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	२४	२४४
षट् पाहुड सटीक	,,	प्राकृत, सस्कृत	२४	२४४
षट् पाहुड	,,	,,	२४	२४५
षट् पाहुड सटीक	श्रुत सागर	,,	२४	२४६
षट् पचासिका	भट्टोत्पल	सस्कृत	११३	१०६५
षट् पचासिका सटीक	—	,,	११४	१०७२
षट् पचासिका सटीक	बराहमिहिराचार्य	,,	११४	१०७३
षट् त्रिशति गाथा सार्थ	मुनिराज ढाढसी	प्राकृत, सस्कृत	२४	२४९
षोडष कारण कथा	—	हिन्दी, सस्कृत	५०	४९४
षोडष कारण जयमाल	—	अपभ्र श, संस्कृत	१५६	१४४५
षोडष कारण पूजा	—	प्राकृत, सस्कृत	१५६, २०२	१४४६, १८५३
षोडष योग,	—	संस्कृत	११४	१०७४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
		(श)		
श्रावचूर्णी	—	संस्कृत	१६४	१७८३
श्रावक चूल कथा	—	,,	५०	४६५
श्रावक धर्म कथन	—	,,	१६४	१७८४
श्रावक प्रतिक्रमण	—	प्राकृत, संस्कृत	१६१	१५०२
श्रावक व्रत भण्डा प्रकरण सार्थ	—	,,	१६४	१७८६
श्रावकाचार	पद्मनन्दि	प्राकृत	१६४	१७८७
श्रावकाचार	प० आशाधर	संस्कृत	१६५	१७६२
श्रावकाचार	—	प्राकृत	१६५	१७६४
श्रावकाचार	भट्टारक सकलकीर्ति	संस्कृत	१६५	१७६५
श्रावकाचार	पूज्यपाद स्वामी	,,	१६५	१७६६
श्रावकाराधन	समय सुन्दर	,,	१६५	१७६८
श्री कृष्ण का चित्र	—	—	६७	६०८
श्रीपाल कथा	प० खेमल	संस्कृत	५०	४६६
श्रीपाल चरित्र	प० रयधू	अपभ्रंश	६०	८४६
श्रीपाल चरित्र	—	संस्कृत, हिन्दी	६०	८५०
श्रीपाल रास	यश विजय गणि	हिन्दी	६०	८५१
श्रीमान कुतूहल	विजय देवी	अपभ्रंश	६७	६६६
श्रुतबोध	कालिदास	संस्कृत	१०१	६४२
श्रुतबोध सटीक	गुजर	,,	१०१	६४७
श्रुत स्कन्ध	ब्रह्मचारी हेमचन्द्र	संस्कृत, हिन्दी	१६१	१५०४
श्रुत स्कन्ध भाषाकार	प. बिरधीचन्द	संस्कृत, हिन्दी	१६१	१५०४
श्रुतस्कन्ध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	२७	२७७
श्रुतस्तपन विधि	—	संस्कृत	१८३	१६६६
श्रुतज्ञान कथा	—	,,	५०	४६७
श्रेणिक गौतम संवाद	—	प्राकृत	२७	२८१
श्रेणिक चरित्र	शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	६०	८५३
श्रेणिक चरित्र	—	—	६१	८५५
श्रेणिक महाराज चरित्र	अभयकुमार	हिन्दी	६१	८५६
शृंखला बद्धश्री जिन-चतुर्विंशति स्तोत्र	—	संस्कृत	१६१	१५०१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
(ह)				
हट प्रदीपिका	आत्माराम योगीन्द्र	संस्कृत	१६७	१५४७
हणवन्त चौपई	ब्रह्मरायमल	हिन्दी	५०	४६६
हनुमान चरित्र	ब्रह्मजित	संस्कृत	६१	८५७
हनुमान टीका	प. दामोदर मिश्र	,,	१२०	११२५
हनुमान कथा	ब्रह्म. रायमल्ल	हिन्दी	५०	४६८
हनुमान चित्र	–	–	६६	६१२
हमर वजू यन्त्र	–	संस्कृत	१६६	१५४१
हरिवंशपुराण	ब्रह्म. जिनदास	,,	१२६	११७३
हरिवंशपुराण	मुनि यश कीर्ति	अपभ्रंश	१२६, २०३	११७६, १८६१
हरिश्चन्द्र चौपाई	ब्रह्म वेणीदास	हिन्दी	५१	५००
हेमकथा	रक्षामणि	संस्कृत, हिन्दी	५१	५०२
होरा चक्र	–	संस्कृत	११६	१०६५
होली कथा	छीत्तर ठोलिया	हिन्दी	५१	५०३
होली पर्व कथा	–	संस्कृत	५१	५०५
होली पर्व कथा सार्थ	–	,,	५१	५०७
होली रेणुका चित्र	प० जिनदास	,,	६२	८६२
हंसराज बच्छराज चौपाई	भावहर्ष सूरि	हिन्दी	५१	५०८
हंस वत्स कथा	–	,,	५१	५०६
हंसराज वैद्यराज चौपाई	जिनोदय सूरि	अपभ्रंश	६२	८६३
(क्ष)				
क्षपणासार	माधवचन्द्र त्रैविद्य	प्राकृत, संस्कृत	२७	२८२
क्षत्र चूडामणि	वादिभसिंह सूरि	संस्कृत	५१	५१०
क्षुल्लक कुमार	सुन्दर	हिन्दी	५१	५११
क्षेम कुतूहल	क्षेम कवि	संस्कृत	६७	६६७
क्षेत्रपाल पूजा	शान्तिदास	,,	१६१	१५०५
(त्र)				
त्राताष्टक	–	संस्कृत	१६१	१५०६
त्रिपताचक्र	–	हिन्दी	११६	१०६६
त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२७	२८३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
त्रिभंगी टिप्पण	—	प्राकृत, संस्कृत	२७	२८४
त्रिभंगी भाषा	—	प्राकृत, हिन्दी	२८	२८७
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१८४	१६६८
त्रिलोक स्थिति	—	संस्कृत	१८४	१६६९
त्रिलोकसार	सिद्धान्त च०, नेमिचन्द्र	प्राकृत	१८४	१७००
त्रिलोकसार टीका	सहस्त्र कीर्ति	संस्कृत	१८४	१७०३
त्रिलोकसार टीका	ब्रह्मश्रुताचार्य	संस्कृत, प्राकृत	१८४	१७०५
त्रिलोकसार भाषा	सुमतिकीर्ति	हिन्दी	२८५	१७०७
त्रिलोकसार भाषा	दत्तनाथ योगी	,,	१८५	१७०९
त्रिलोचन चन्द्रिका	प्रगल्भ तर्कसिंह	संस्कृत	२०३	१८६२
त्रिवर्णाचार	जिनसेनाचार्य	,,	१६७	१८११
त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र स्थविरावली चरित्र	हेमचन्द्राचार्य	,,	९२	८९४
त्रिषष्ठि लक्षण महापुराण	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१२९	११७९
त्रिषष्ठि लक्षण महापुराण	गुणभद्राचार्य	संस्कृत	१२९	११८२
त्रिषष्ठि स्मृति	प० आशाधर	संस्कृत	१२९	११७७
त्रेषठ शलाका पुरुष चौपई	प० जिनमति	हिन्दी	५२	५१२
	(ज्ञ)			
ज्ञान चौपड	—	हिन्दी	९८	९१५
ज्ञान तरंगिणी	मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूषण	संस्कृत	१६७	१५४८
ज्ञान पच्चीसी	प० बनारसीदास	हिन्दी	२८	२८८
ज्ञान प्रकाशित दीपार्णव	—	संस्कृत	११६	१०९७
ज्ञान हिमची	कवि जगरूप	हिन्दी	६७	६६८
ज्ञानसूर्योदय नाटक	वादिचन्द्र	संस्कृत	१२०	११२६
ज्ञानांकुश स्तोत्र	—	संस्कृत, हिन्दी	१६२	१५०७
ज्ञानांकुश	—	संस्कृत	१६९	१५६०
ज्ञानार्णव	शुभचन्द्रदेव	,,	१६७	१५५१
ज्ञानार्णव गद्य टीका	श्रुतसागर	,,	१६८	१५५५
ज्ञानार्णव तत्व प्रकरण	—	हिन्दी, संस्कृत	१६८	१५५६
ज्ञानार्णव वचनिका	प० जयचन्द	संस्कृत	१६८	१५५८
ज्ञानार्णव वचनिका	शुभचन्द्राचार्य	हिन्दी	१६८	१५५९
ज्ञानार्णव वचनिका टीका	प० जयचन्द छाबड़ा	,,	१६८	१५५९

ग्रन्थकार एवं ग्रन्थ

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
अकलंक	प्रायश्चित शास्त्र	१७६६	सस्कृत
	राजवार्तिक	२२७	,,
अखयराम लुहाड़िया	मलय सुन्दर चरित्र	७६२	हिन्दी
अग्निवेश	अजन निदान सटीक	२६०	सस्कृत और हिन्दी
अनन्तकीर्ति	पल्य विधान पूजा	१३३५	सस्कृत
अनन्त भट्ट	तर्क सग्रह	१११४	,,
	सिद्धान्त चन्द्रोय	११२१	,,
अनुप कवि	मिथ्यात्व खण्डन	११२३	हिन्दी
अनुभूति स्वरूपाचार्य	सारस्वत दीपिका	१६१६	सस्कृत
	सारस्वत प्रक्रिया पाठ	१६२०	,,
अभयकुमार	श्रेणिक चरित्र	८५६	हिन्दी
अभयदेव सूरि	जयतिहुण स्तोत्र	१२७७	प्राकृत और हिन्दी
	नवतत्व वर्णन	१७६	,,
अभयवली	बाहुबली पाथडी	७७७	प्राकृत
अभिनव गुप्ताचार्य	ईश्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र	११०८	सस्कृत
अभिनव धर्मभूषणाचार्य	न्यायदीपिका	१११७	,,
अमरकीर्ति	जिनपूजा पुरन्दर अमर विधान	१२८०	अपभ्रंश
	विशेष महाकाव्य टीका (ऋतुसंहार)	६३२	संस्कृत
	षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	२३७, १७८०	अपभ्रंश
अमरचन्द	शब्द समुच्चय	१६०५	सस्कृत
अमरसिंह	अमरकोश	६७७	,,
	लिंगानुशासन	७१०	,,
अमोघपुष्प दन्त	महिम्न स्तोत्र सटीक	१३९६, १३९७	,,
अमोघ हर्ष	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	२०४	,,
अमृतचन्द्र सूरि	प्रवचनसार वृत्ति	१९९	प्राकृत और संस्कृत
	समयसार सटीक	२५१, ५२०	,,

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
अमृतचन्द्राचार्य	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	१८७	संस्कृत
अमृतचन्द	पद्मावती सहस्त्रनाम	१३३१	,,
अमितगति सूरि	धर्म परीक्षा	५६१, १७३०	,,
	सुभाषित रत्न संदोह	३५२, ६६०	,,
असग कवि	बर्द्धमान चरित्र	८१२	,,
अश्वसेन	बडा स्तवन	१३६४	हिन्दी
अश्विनीकुमार	अश्विनी कुमार संहिता	२८६	संस्कृत
आत्माराम योगीन्द्र	हट प्रदीपिका	१५४७	,,
आनन्द	कोकसार	१८१६	हिन्दी
आनन्ददेव	रघुवश टीका	६१६	संस्कृत
	शिशुपालवध टीका	६४३	,,
पं० आशाधर—	इष्टोपदेश टीका	३२	,,
	ग्रहशान्ति विधान	६६३	,,
	जिनकल्याणमाला	१७२८	,,
	जिन यज्ञकल्प	११८२, १६७७	,,
	धर्मामृत सूक्ति	१७३३	,,
	भूपाल चतुर्विशति स्तोत्र	१३८६	,,
	महर्षि स्तोत्र	१३६३	,,
	सहस्त्रनाम स्तोत्र	१४७०	,,
	सागारधर्मामृत	१८०१	,,
	सिद्धचक्रपूजा	१४६४	,,
	श्रावकाचार	१७६२	,,
	त्रिषष्टि स्मृति	११७७	,,
उदभट्ट	सिद्धान्त चन्द्रिका	१६५२	,,
उदय रत्न	नेमजी का पद	१८३	हिन्दी
उमास्वामी	तत्वार्थसूत्र	१३३	संस्कृत
एकनाथभट्ट	किरातार्जुनीय सटीक	५३३	,,
ऋषि देवीचन्द	गजसिंह कुमार चौपई	१८१८	हिन्दी
कनककीर्ति	तत्वार्थसूत्र भाषा	१३८	संस्कृत और हिन्दी
पं० कनककुशलगणि	वर्द्धमान जिनस्तवन सटीक	१४१७, १४७६	संस्कृत

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
कनकामर	करकण्डु चरित्र	७१७	अपभ्रंश
कन्निराम शाह	मिथ्यात्व खण्डन नाटक	११२४	हिन्दी
कल्याण	पद्मावती छन्द	११२३	,,
कल्याण सरस्वती	लघु सारस्वत	१५६४	संस्कृत
कार्तिकेय	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	६७, १७६६	प्राकृत
पं० कामपाल	चौबीस कथा	३६४	हिन्दी
कालिदास	कुमारसम्भव	५३४	संस्कृत
	मेघदूत	६००	,,
	रघुवंश महाकाव्य	६१५, ६१८	,,
	श्रुतबोध	६४२	,,
	ऋतुसंहार	६३२	,,
काहना छाबडा	गुणस्थान कथा	७२	हिन्दी
प० काशीनाथ	ब्रह्म प्रदीप	१०१०	संस्कृत
	लग्न चन्द्रिका	१०३२	,,
किशनसिंह	क्रिया कोश	७१, ६६०	हिन्दी
	नागश्री चरित्र	७५४	,,
कीर्तिवाचक	एक गीत	५२४	,,
कीर्तिविजय	पञ्चमी सप्ताय	५८६	,,
कुन्दकुन्दाचार्य	दोहा पाहुड	१५८	प्राकृत
	षट् पाहुड	२४४	,,
कुमुदचन्द्राचार्य	कल्यण मन्दिर स्तोत्र	१२२५	संस्कृत
	शील विनती	६४५	हिन्दी
कुलभद्र	सार समुच्चय	१८०४	संस्कृत
कुंवर भूवानीदास	भूदीप भाषा	६१७	हिन्दी
कृपाराम	ज्योतिषसार भाषा	६३७	,,
	लघु जातक भाषा	१०३७	,,
पं० कृष्ण ऋषि	सूर्योदय स्तोत्र	१५००	संस्कृत
पं० केदारनाथ भट्ट	वृत्त रत्नाकर सटीक	३६६	,,
केशरलाल	शोभन स्तोत्र	१४४४	,,
केशवदास	केशव बावनी	५३७	हिन्दी
केशव मिश्र	तर्क परिभाषा	१२१, १११४	संस्कृत

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
केशवाचार्य	जीव तत्व प्रदीप	११२	प्राकृत और सस्कृत
खुशालचन्द	सुगन्धदशमी कथा भाषा	४८६	हिन्दी
प० खेता	सम्यक्त्व कौमुदी	४७६	सस्कृत
पं० खेमल	श्रीपाल कथा	४६६	,,
गंगादास	छन्दोमजरी	६२२	प्राकृत और सस्कृत
	पुष्पाजली व्रतोद्यापन	५८८	हिन्दी
गजसार	चौबीस दण्डक	१०८	प्राकृत
	दण्डक सूत्र	१४२	,,
	विचार षट्त्रिंशक	२३२	प्राकृत और हिन्दी
गोरखनाथ	योगसाधन विधि	१५४४	हिन्दी
गोविन्द स्वामी	अपामार्ग स्तोत्र	११६२	सस्कृत
	पद्मावती पूजन	१३२४	,,
गौतमस्वामी	इष्टोपदेश	२७	,,
	ऋषिमण्डलस्तोत्र सार्थ	१२२३	,,
गुर्जर	श्रुतबोध सटीक	६४७	,,
गुणनन्दि	ऋषि मण्डल पूजा	१२१७	,,
	गोटतीज कथा	४६१	,,
गुणभद्राचार्य	आत्मानुशासन	१४	,,
	जिनदत्त कथा	३६६	,,
	त्रिषष्टि लक्षण महापुराण	११७६	,,
गुणरत्नभूषण	जीव प्ररूपण	११३	प्राकृत
गुलाबचन्द	एक पद	३७७	हिन्दी
गुलाल	वाद पच्चीसी	२३१	,,
प० घनश्याम	चतुर्विंशति तीर्थ कर स्तुति	१२६०	सस्कृत
चण्ड कवि	प्राकृत लक्षण विधान	३३१	प्राकृत, सस्कृत, अपभ्रंश इत्यादि
चण्डेश्वर सेठ	रत्न परीक्षा	१८५१	सस्कृत
चन्द्रकीर्ति	तत्वधर्मामृत	१२२	,,
चम्पा	राजनीतिशास्त्र	११३६	हिन्दी
चाणक्य	चाणक्यनीति	११३०	सस्कृत
	वृहद् चाणक्य राजनीतिशास्त्र	११४०	,,

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
चामुण्डराय	चारित्रसार टिप्पण	७३०	,,
	भावनासार संग्रह	२१५	,,
चिन्तामणि	रमलशास्त्र	१०२५	हिन्दी
चिरन्तन आचार्य	यमक स्तोत्र	६१४	संस्कृत
	रामायणशास्त्र	११६८	,,
चौर कवि	चौर पचासिका	५४६	,,
छीतर ठोलिया	होली कथा	५०३	हिन्दी
जगनपोहकरण	सवैया बत्तीसी	१८५७	,,
पं० जगन्नाथ	भामिनी विलास	५६२	संस्कृत
पं० जगरूप	जिनमूर्ति उत्थापक चौपई	१८२६	हिन्दी
	ज्ञान हीमची	६६८	,,
जयकिशन	पिंगलरूपदीपक	६२७	,,
जयकीर्ति	जिन पंचकल्याणक पूजा	१२८१	संस्कृत
जयचन्द छाबड़ा	आत्म मीमांसा वचनिका	५	संस्कृत और हिन्दी
	तत्वार्थसूत्र वचनिका	१३६	,,
	ज्ञानार्णव वचनिका	१५५८	,,
जयदेव	गीतगोविन्द	५४०	,,
जयमित्र हल	वर्द्धमान काव्य	६२४	अपभ्रंश
पं० जयरत्न	ज्वर पराजय	३००	संस्कृत
पाण्डे जयवन्त	सामायिकपाठ सटीक	२६६	संस्कृत और हिन्दी
जयशेखर सूरि	सम्यक्त्व कौमुदी	४७३	संस्कृत
	सम्बोध सत्तरी	२७४	प्राकृत और संस्कृत
पं० जयसर	कुल ध्वज चौपई	७१८	हिन्दी
जयानन्द सूरि	जिनस्तवन सार्थ	१२८७, १४७६	संस्कृत
जसवन्तसिंह	भाषा भूषण	६२६	हिन्दी
जिनचन्द्र सूरि	चौबोली चतुष्पदी	५४८	,,
जिनदत्त सूरि	विवेक विलास	१७७८	संस्कृत
पाण्डे जिनदास	जम्बू स्वामी कथा	३६५	हिन्दी
	होली रेणुका चित्र	८६२	संस्कृत
ब्रह्म जिनदास	अनन्तव्रतकथा	३६८	हिन्दी
	आकाशपंचमीव्रतकथा	३७२	,,

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	बकचूल कथा	४३६	,,
	लब्धि विधान व्रत कथा	४६२	,,
	सम्यक्त्व रास	६५३	,,
	सुगन्धदशमी कथा	४६१	,,
	हरिवंश पुराण	११७३	संस्कृत
जिनदेव	मदन पराजय	५६४	,,
जिनदास श्रावक	नवकार रास	१५२४	हिन्दी
जिनप्रभसूरि	गौतम स्तोत्र	१२५२	संस्कृत
	चतुर्विंशति जिन स्तवन	१२६४	,,
	पंच परमेष्ठी स्तोत्र	१३६१	,,
पं० जिनमति	त्रेषठ शलाकापुरुष चौपई	५१२	हिन्दी
जिनवल्लभ सूरि	प्रश्नावली	१००६	संस्कृत
	पिण्डविशुद्धावकूरि	१८३७	संस्कृत और प्राकृत
जिनसमुद्रसूरि	पार्श्वनाथ विनती	१८३६	अपभ्रंश
जिनसेनाचार्य	चक्रधर पुराण	११४७	संस्कृत
	सहस्रनाम स्तोत्र	१४७१	,,
	त्रिवर्णाचार	१८११	,,
जिनहर्ष सूरि	चन्दनराजमलयगिरि चौपई	३६३	हिन्दी
	शालीभद्र महामुनि चरित्र	८३१	,,
जिनोदय सूरि	हसराज वैद्यराज चौपई	८६३	अपभ्रंश
जीवन्धर	प्रतापसार काव्य	५८५	हिन्दी
	रत्नसार	१७७६	संस्कृत
जीवणदास	शनिश्चर कथा	४६८	हिन्दी
जोधराज गोदीका	प्रीतिकर मुनि चरित्र भाषा	७७५	,,
	सम्यक्त्व कौमुदी	४८२	,,
जौहरीलाल	आलोचना पाठ	२५	,,
पं० टोडरमल	गोम्मटसार भाषा	७७	राजस्थानी
	मोक्षमार्ग प्रकाशक वचनिका	२२५	,,
डालूराम	अढाई द्वीप पूजन भाषा	११८८	हिन्दी
मुनि ढाढसी	ढुण्ढिया मत खण्डन	१८२७	प्राकृत और संस्कृत
	ढाढसी मुनि गाथा	१२०	,,

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
—	षट् त्रिंशति गाथा	२४६	,,
तर्कसिंह	त्रिलोचन चन्द्रिका	१८६२	संस्कृत
पं० ताराचन्द श्रावक	चतुर्दशीव्रतोद्यापन	१२५३	,,
तिलक	शीघ्रबोध टीका	१०५७	,,
तुलसीदास	रामाज्ञा	६२०	हिन्दी
पं० तेजपाल	वराग चरित्र	८२६	अपभ्रंश
	सम्भवनाथ चरित्र	८३३	,,
दण्डिराज दैवज्ञ	जातक	६७५	संस्कृत
दत्तनाथ योगी	त्रिलोकसार भाषा	१७०६	हिन्दी
पं० दामोदर	गुण रत्नमाला	२६७	संस्कृत
	चन्द्रप्रभ चरित्र	७२४	,,
	पजहण महाराज चरित्र	७५७	अपभ्रंश
	वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	१५६६	संस्कृत
	संगीतसार	११२६	,,
दामोदर मिश्र	हनुमान टीका	११२५	,,
दास कवि	सम्बोध पचासिका	२७३	प्राकृत और संस्कृत
दीपचन्द वाचक	लघनपथ्य निर्णय	३२५	संस्कृत
देवकीराम	मुहूर्तचिन्तामणि सटीक	१०१५	,,
देवकुमार	माधवानल कामकन्दला चौपई	४४६	हिन्दी
देवनन्दि	अक गर्भ खण्डार चक्र	४२	संस्कृत
	जिनगुण सम्प्रति व्रतोद्यापन	१२७६	,,
	लघु स्वयंभू स्तोत्र	१४०७	,,
	सिद्धप्रिय स्तोत्र	१४६६	,,
देवसेन	आराधनासार	२२	प्राकृत
	आलाप पद्धति	११०३	संस्कृत
	दर्शनसार	१४६	,,
	नयचक्र	११०३	संस्कृत और प्राकृत
	भाव संग्रह	२१६	प्राकृत
	सुखबोधार्थ माला	२७६	संस्कृत
देवाचार्य	स्याद्वादरत्नाकर	२६२	,,
देवेन्द्रसूरि	बन्धस्वामित्व	२०६	प्राकृत और हिन्दी

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	सिद्ध दण्डिका	२६७	प्राकृत और संस्कृत
दौलतराम	जीव चौपई	१११२	हिन्दी
	दण्डक चौपई	१४१	,,
धनंजय	धनजयनाममाला	६६४	संस्कृत
	नाममाला	७०५	,,
धनदेव	समवशरण स्तोत्र	१४५१	,,
धन्वन्तरि	योग शतक	३१८	संस्कृत और हिन्दी
	सन्निपातकलिका लक्षण	३३७	,,
पं० धनपाल	बाहुबली चरित्र	७७६	अपभ्रंश
	भविष्यदत्त चरित्र	७८८, १८४२	,,
	शोभन श्रुति	२३६	संस्कृत
धरणेन्द्र	चिन्तामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	१२७०	,,
धर्मचन्द्र मण्डलाचार्य	गौतमस्वामी चरित्र	७२०	,,
धर्मदास गणि	उपदेशमाला	१७१४	अपभ्रंश
धर्मदेव	सारस्वत व्याकरण टीका	१६४८	संस्कृत
पं० धर्मधर	नागकुमार चरित्र	७५२	,,
धर्मनन्दाचार्य	चतुःषष्ठी महायोगिनी महास्तवन	१२६७	हिन्दी
धर्मदास क्षुल्लक	सम्मेदशिखर महात्म्य	१४५५	,,
धर्म समुद्रवाचक	रात्रि भोजन दोष विचार	१७७७	,,
द्यानतराय	दशलक्षण पूजा	१३०४	,,
	प्रतिमा बहोत्तरी	१६४	,,
नथमल	महिपाल चरित्र भाषा	७६४	,,
	स्थूलभद्र मुनि गीत	६६४	,,
नन्दगुणश्रोणी	लघु स्तवन सटीक	१४०६	संस्कृत
नन्ददास	अनेकार्थ मजरी	६६९	हिन्दी
	मान मजरी नाममाला	७०८	संस्कृत
नन्दन	आर्य वसुधाराधारिणी-नाम महाविद्या	५२१, ६२५, १६६५	,,
नन्दसेन	नन्द बत्तीसी	११३१	संस्कृत और हिन्दी
नयचन्द्र सूरि	पार्श्वनाथ स्तवन	१४७२	संस्कृत
नयनन्दि	विशेष सत्ता त्रिभंगी	२३३	प्राकृत

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची क्रमांक	भाषा
	सुदर्शन चरित्र	७४३	अपभ्रंश
नयनसुख	वैद्यकसार	३२७	हिन्दी
	वैद्यमनोत्सव	३३१	,,
नयसुन्दर	शत्रुंजय तीर्थद्धार	३३६	,,
पं० नरसेन	वर्द्धमान काव्य	८२१	अपभ्रंश
नवलदास शाह	वर्द्धमान पुराण	११६६	हिन्दी
नागचन्द्र मुनि	सरस्वती स्तुति	१४६८	संस्कृत
नागचन्द्र सूरि	एकीभाव स्तोत्र सटीक	१२१२	,,
	विषापहार स्तोत्रादि टीका	१४३५	,,
नागार्जुन	ग्मेन्द्रमंगल	३२२	,,
नारचन्द्र	ज्योतिषसार	६८०	,,
नारायण	मुहूर्तचिन्तामणि	१०१६	,,
नारायणदास	छन्दसार	६२१	हिन्दी
नीलकण्ठ	ताजिक नीलकण्ठी	६६१	संस्कृत
सि०च० नेमिचन्द्राचार्य	उदय उदीरण त्रिभंगी	३६	प्राकृत
	कर्म प्रकृति	५०	,,
	गोम्मटसार	७७	,,
	चतुर्दशगुणस्थान चर्चा	८७, ८८	हिन्दी
	चौबीस ठाणा चौपई	१०६	संस्कृत
	जिन सुप्रभात स्तोत्र	१२८६	,,
	द्रव्य संग्रह	१८७	प्राकृत
	द्विसन्धानकाव्य	५५६	संस्कृत
	बन्धोदय उदीरण सत्ता विचार	२०८	प्राकृत
	भाव त्रिभंगी सटीक	१८४४	प्राकृत और संस्कृत
	व्युच्छति त्रिभंगी	२३०	प्राकृत
	वृहद् द्रव्य संग्रह सटीक	२२६	,,
	वैद्य रत्नमाला	३३३	हिन्दी
	सत्ता त्रिभंगी	२८३, ६६१	प्राकृत
	त्रिलोक प्रज्ञप्ति	१६६८	,,
	त्रिलोकसार	१७००	,,

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
पद्मकीर्ति	पार्श्वनाथ पुराण	११५८	अपभ्रंश
पद्मनन्दि	अनन्तव्रतकथा	३६६	संस्कृत
	चतुस्त्रिंशद भावना	६०	,,
	धर्म रसायण	१६५	प्राकृत
	धर्मोपदेशामृत	१७४५	संस्कृत
	पद्मनन्दि पर्चविंशति	४२५, १७४६, १७५४	संस्कृत
	श्रावकाचार	१७८७	प्राकृत
पद्मनाभ कायस्थ	यशोधर चरित्र	८०६	संस्कृत
पद्मप्रभसूरि	पार्श्वनाथ स्तवन सटीक	१३४३	,,
	भुवन दीपक	१०१३	संस्कृत और हिन्दी
पन्नालाल	तेरहपथखण्डन	१४०	हिन्दी
परमानन्द	निघण्टुनाम रत्नाकर	३०७	संस्कृत
पर्वतधर्मार्थी	द्रव्यसंग्रह सटीक	१५२	प्राकृत और संस्कृत
पहुप सहाय	पिंगलछन्दशास्त्र	६२५	अपभ्रंश
पाणिनी	लघु सिद्धान्त कौमुदी	१५६५	संस्कृत
पार्श्वचंद्र	साधु वन्दना	१४७६	,,
पार्श्वदेवगणि	पद्मावत्याष्टक सटीक	१३३२	,,
पार्श्वनाग	आत्मानुशासन	१६	,,
पुष्पदन्त	उत्तरपुराण	११४२	अपभ्रंश
	नागकुमार चरित्र	७५०	,,
	यशोधर चरित्र	७६८	,,
	वर्द्धमान चरित्र	८२५	,,
	त्रिषष्ठि लक्षण महापुराण	११७९	,,
पूज्यपाद	इष्टोपदेश	२९	संस्कृत
	उपासकाचार	१७१७	,,
	समाधिशतक	२६०	,,
	श्रावकाचार	१७९६	,,
पूर्णदेव	यशोधर चरित्र	८१५	,,
पूर्णसेन	योगशतक	३१४	,,
पृथ्वीधराचार्य	भुवनेश्वरी स्तोत्र	१८४५	,,

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
प्रभाचन्द्राचार्य	आत्मानुशासन सटीक	१८	,,
	उत्तरपुराण सटीक	११४५	,,
	कथा प्रबन्ध	३८३	,,
	क्रिया कलाप सटीक	१७२४	,,
	तत्त्वार्थ रत्न प्रभाकर	१३०	,,
	द्रव्यसंग्रह सटीक	१५१, १५७, २४२	प्राकृत और संस्कृत
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार सटीक	१७७२	संस्कृत
	वृहद् स्वयंभू टीका	१४२३	,,
प्राकसूरि	एकाक्षरीनाममाला	६८६	,,
फकीरचन्द	ढाल क्षमाकी	५५४	हिन्दी
मधुसुदन भट्ट	विद्वद्भूषण सटीक	६३१	संस्कृत
मधुसुदन मैथिली	अन्यापदेश शतक	५१३	,,
मयुर कवि	मयुराष्टक	५९८	,,
मल्लिषेण सूरि	नागकुमार चरित्र	७५३	,,
	नागपचमी कथा	४१९	,,
	भैरव पद्मावती कल्प	१५२९	,,
पं० महादेव	काल ज्ञान	६५४	,,
	महालक्ष्मी पद्धति	७०७	,,
	रात्रि नक्षत्र फल	१०२७	,,
मुनि महानन्द	अवन्ति सुकुमार महामुनि वर्णन	७१३	हिन्दी
महासेनाचार्य	प्रद्युम्न चरित्र	७६४, १८३८	संस्कृत
महिराज	बावन दोहा बुद्धि रसायन	५९०	अपभ्रंश और हिन्दी
महीचन्द्र सूरि	पद्मावती कथा	४२४	संस्कृत
	सम्यक्त्व कौमुदी पुराण	११७२	संस्कृत और हिन्दी
महेश्वर कवि	शब्द भेद प्रकाश	१५९९	संस्कृत
मार्कण्डेय	मार्कण्डेय पुराण सटीक	११६५	,,
माघ (महाकवि)	शिशुपालवध	६४२	,,
माघनंदि	वन्देतान की जयमाल	१४१८	,,
पं० माणिक्यनंदि	प्रमेयरत्नमाला	१११८	संस्कृत
माधवचन्द्रगणि	क्षपणसार	२८२	प्राकृत और संस्कृत
मानतुंगाचार्य	भक्तामर स्तोत्र	१३६९	संस्कृत

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
मानसागर	विक्रमसेन चौपई	८२८	हिन्दी
	सुभद्रानो चौढालियो	२७०	,,
माना कवि	वृन्दावन काव्य	६२६	संस्कृत
मिथिलेश्वर सूरि	न्यायसूत्र	११९६	,,
मिहिरचंद्रदास जैनी	मूर्तिपूजा मण्डन	१५८६	हिन्दी
मित्र सागर	आराधनासार	२०	,,
मुनिचन्द्र सूरि	वनस्पति सत्तरी सार्थ	३२६	प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी
मेघरत्न	सारस्वत दीपिका	१६१६	संस्कृत
पं० मेधावी	धर्म संग्रह	१०३७	,,
मंगलदेव	सम्मेदशिखरजी पूजा	१४५३	हिन्दी
मृगेन्द्र	नन्दीश्वर काव्य	५६५	संस्कृत
यश कीर्ति	चन्द्रप्रभ चरित्र	७२६	अपभ्रंश
	चेतन चरित्र	७३२	हिन्दी
	प्रबोधसार	१०५५	संस्कृत
	रत्न चूडराम	८२०	हिन्दी
	हरिवंशपुराण	११५६, १८६१	अपभ्रंश
यश'नाम	मेघकुमार ढाल	५६६	हिन्दी
यश. विजय	महावीर जिन नय विचार	२२४	प्राकृत और हिन्दी
	श्रीपालरास	८५१	हिन्दी
यशःसेन	सम्यक्त्व कौमुदी	८८०	संस्कृत
प० योगक	सन्धि ग्रर्थ	१६१०	संस्कृत और हिन्दी
	स्वर सन्धि	१८५५	,,
योगीन्द्रदेव	परमात्म प्रकाश	१८४	अपभ्रंश
रत्नकीर्ति	मूलसघ्रागरिण	४४८	संस्कृत
	रत्नत्रय विधान कथा	४५३	,,
मुनि रतनचन्द	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	१३८०	,,
रत्ननन्दि	पल्य विधान पूजा	१३३८	,,
	भद्रबाहु चरित्र	७७८	,,
रत्न शेखर सूरि	गुण स्थान चर्चा सार्थ	७५	,,
	गुणस्थान स्वरूप	१११०	,,
रयधू	आत्म सम्बोधकाव्य	६	अपभ्रंश

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	४१२	,,
पं० लालू	कुमार सम्भव सटीक	५३६	संस्कृत
मुनि लिंगयसूरि भट्टोपाध्याय	अमरकोशवृत्ति	६८२	,,
पं० लोकसेन	दशलक्षण कथा	४०६	,,
लोलिमराज कवि	वैद्य जीवन	३३०	,,
पं० लोहर	चौबीस ठाणा चौपई	१०३	प्राकृत और हिन्दी
वत्स	मेघदूत सटीक	६०७	संस्कृत
प० वरदराज	तार्किकसार संग्रह	१११५	,,
भ० वर्द्धमान	पराग चरित्र	८२७	,,
वररुचि	एकाक्षर नाममाला	६८४	,,
	समास प्रयोग पटल	१६३३	,,
वराहमिहिराचार्य	वृहद् जातक सटीक	१०४५	,,
	षट् पंचासिका सटीक	१०७३	,,
वसन्तराज	पल्य विचार	१००६	,,
वसुनन्दि	उपासकाध्ययन	१७१८	,,
वाग्भट्ट	नेमि निर्वाण महाकाव्य	१७३२	,,
वादिचन्द्र	ज्ञान सुर्योदय नाटक	११२६	प्राकृत और संस्कृत
वादिभसिंह	क्षत्र चूडामणि	५१०	संस्कृत
वादिराजसूरि	एकीभाव स्तोत्र	१२०४	,,
	विषापहार विलाप स्तवन	१४३७	,,
वामदेव	भाव संग्रह	२२१	,,
वासवसेन	यशोधर चरित्र	८१७	,,
विक्रमदेव	नेमिदूत काव्य	५७४	,,
विजयदेवी	श्रीमान् कुतुहल	६६६	अपभ्रंश
विजयराज	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	४१२	हिन्दी
विजयानन्द	क्रियाकलाप	१५८०	संस्कृत
मुमुक्षु विद्यानन्द	यशोधर चरित्र	७६५	,,
	सुदर्शन चरित्र	८३६	,,
विद्यानन्दि	अष्टसहस्त्रि	१०६६	,,
	द्विजपाल पूजादि विधान	१२०८	,,
विनीतसागर	विमलनाथ स्तवन	१४२६	हिन्दी

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
बिमल	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	५८६	संस्कृत
भ० विश्वभूषण	इन्द्रध्वज पूजन	११६८	,,
विशाल कीर्ति	रूकमणी व्रत विधान कथा	१६८६	मराठी
विष्णु	आलाप पद्धति	२४	संस्कृत
	पचतत्र	११३८	,,
	सरस्वती स्तोत्र	१४६७	,,
विष्णुशोभन	समवशरण स्तोत्र	१४५०	,,
वीरनन्दि	आचारसार	१७१०	,,
वृन्दावनदास	चौबीस तीर्थ करो की पूजा	१२७५	सस्कृत और हिन्दी
वेणिराम	जिन रस वर्णन	१२८४	हिन्दी
वेद व्यास	गरुडपुराण	११४६	सस्कृत
	शिवपुराण	११७१	,,
शान्तिदास	क्षेत्रपाल पूजा	१५०५	,,
शान्ति हर्ष	सुकुमाल महामुनि चौपई	८३४	हिन्दी
शिब्बूराम	सुमतारी ढाल	६६१	,,
शिवजीलाल	दर्शनसार सटीक	१४४	प्राकृत और सस्कृत
शिवदास	वैताल पच्चीसी कथानक	४६६	सस्कृत
शिववर्मा	कातन्त्ररूपमाला	१५७४	,,
	नन्दीश्वर पक्ति विधान	१३१२	,,
शिव सुन्दर	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१३३६	,,
पं० शिवा	द्वि घटिक विचार	९९६	,,
शीशराज	भरत बाहुबली वर्णन	४४१	हिन्दी
शुभचन्द्र सूरि	आशाधराष्टक	११९६	सस्कृत
शुभचन्द्राचार्य	अष्टक सटीक	१६७१	प्राकृत और सस्कृत
	चतुर्विशति तीर्थंकर पूजा	१२६२	सस्कृत
	पल्यविधान पूजा	१३३३	,,
	सिद्धचक्र पूजा	१४९२	,,
	श्रेणिक चरित्र	८५३	,,
	ज्ञानार्णव	१५५९	,,
शंकर भट्ट	वैद्य विनोद	३३४	,,
शंकराचार्य	अन्नपूर्णा स्तोत्र	११९०	,,

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	भारती स्तोत्र	१३८७	,,
	सिद्धान्त बिन्दु स्तोत्र	१४६६	,,
सकलकीर्ति	ऋषभनाथ चरित्र	७१५	,,
	जम्बू स्वामी चरित्र	७३३	,,
	धन्यकुमार चरित्र	७४२	,,
	धर्म प्रश्नोत्तर श्रावकाचार	१६४, १७३१	,,
	पद्मपुराण	११५५	,,
	प्रश्नोत्तरपासकाचार	२०३, १७५६	,,
	पुराणसार सग्रह	११६३	,,
	मल्लिनाथ चरित्र	७६३	,,
	मूलाचार प्रदीपिका	१७७०	,,
	यशोधर चरित्र	८११	,,
	शान्तिनाथ चरित्र	८१६	,,
	सुकुमाल चरित्र	८३५	,,
	सुदर्शन चरित्र	८३८	,,
	सुभाषित काव्य	२५१	,,
	सुभाषित रत्नावली	३५३, ३६०	,,
	श्रावकाचार	१७६५	,,
सकल भूषण	उपदेशरत्नमाला	१७१५	,,
सनतकुमार	रामचन्द्र स्तवन	१४०२	,,
सदानन्द	नयचक्रबालावबोध	१७२	हिन्दी
सदासुख	तत्वार्थ सूत्र टीका	१३७	संस्कृत और हिन्दी
समन्तभद्र	आत्ममीमांसा	५	संस्कृत
	आप्त मीमांसा	११०१	,,
	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	१२५६	,,
	देवागम स्तोत्र	१३१०	,,
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार	१७७१	,,
	वृहद् स्वयंभू स्तोत्र	१४२३	,,
समय सुन्दर उपाध्याय	वृत रत्नाकर सटीक	६३६	,,
समय सुन्दर गणि	साधू वन्दना	१४७८	हिन्दी
	अर्जुन चौपई	७१२	,,

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	जिनधर्मपद	१८२५	,,
	दानशील तप सवाद	३३८	,,
	पुण्य बत्तीसी	१८६	,,
	सिहल सूत चतुष्पदी	८८५	,,
	श्रावकाराधन	१७६८	,,
समय सुन्दर सूरि	नलदमयन्ती चौपई	५६६	हिन्दी
सहल	वैराग्यमाला	६३३	सस्कृत
सहस्त्रकीर्ति	सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका	१४६७	,,
	त्रिलोकसार टीका	१७०३	,,
साहल सुबलकरण	अगण्वनरत्न प्रदीप	१६६६	अपभ्रंश
सिद्धसेन सूरि	एक विंशति स्थानक	१८१४	प्राकृत और हिन्दी
	सिंहासन बत्तीसी	४८६	हिन्दी
सिद्धस्वरूप	गौतम पुच्छरी	५४२	,,
सिद्धसेन दिवाकर	जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र	१२८६	सस्कृत
सिद्धसेनाचार्य	कल्याणमन्दिर स्तोत्र सार्थ	१२४७	,,
सिंहनन्दि	आराधना कथाकोश	६५३	,,
	रात्रिभोजन त्याग कथा	४५६	,,
सुन्दर	क्षुल्लककुमार	५११	हिन्दी
सुमतिकीर्ति सूरि	धर्म परीक्षा रास	१६३	,,
सुमतिकीर्ति	त्रिलोकसार भाषा	१७०७	,,
सुमतिसागर	तीर्थजयमाल	४०५	सस्कृत
	दशलक्षण पूजा	१३०५	,,
सुल्हण	वृत्त रत्नाकर टीका	६३८	,,
सुरेन्द्रकीर्ति	पचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन	१६८३	,,
सुशीलदेव	सुगन्ध दशमी कथा	४६०	अपभ्रंश
सूद	अनेकार्थ ध्वनि मजरी	७२	सस्कृत
	दान निर्णय शतक	५५८	,,
पं० सूर्य	सूर्य ग्रह घात	१०६२	हिन्दी
सोमकीर्ति	प्रद्युम्नचरित्र	७६८	संस्कृत

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	यशोधर चरित्र	७६६	,,
	सप्त व्यसन कथा	४७०	,,
सोमदेव शर्मा	अध्यात्म तरंगिणी	६४६	,,
सोमदेव सूरि	नीतिवाक्यामृत	११३३	,,
सोमनाथ	लघुस्तवन	१४०६	,,
सोमसेन	रामपुराण	११६६	,,
सोमश्री	निघण्टु	३०८	,,
सोमप्रभाचार्य	सिन्दुर प्रकरण	३४१, ६५४	,
	सुक्ति मुक्तावली शास्त्र	३४३	,,
स्थानपाल द्विज	चमत्कार चिन्तामणि	६६७	,,
सावला	जातक प्रदीप	६७६	गुजराती और हिन्दी
हरजीमल	चरचा शतक टीका	६५	हिन्दी
हयग्रीव	प्रश्नसार	१००७	संस्कृत
हरि	शनिश्चर स्तोत्र	१४३६	
	सुभाषित कोश	२७१	
हरिदत्त	गणितनाम माला	६६१ ६५७	,
	चिन्तामणि नाममाला	६६१	,
हरिदेव	मदनपराजय	५६७	अपभ्रंश
हरिभद्र सूरि	जम्बूद्वीप संग्रहणी	१८२४	प्राकृत
	षट् दर्शन समुच्चय टीका	२४०	संस्कृत
हरिराज कुंवर	माधवानल कथा	४४४	हिन्दी
हरिराम	छन्द रत्नावली	६१८	,,
भ० हर्षकीर्ति	कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका	१२४१	संस्कृत
	नैषध काव्य	५८१, ७५६	,,
	पंचमी पूजा व्रत विधान	१६८४	,
हर्षकीर्ति सूरि	छन्दशतक	६१६	अपभ्रंश
	धातु पाठ	१५८१	संस्कृत
	प्रस्तार वर्ण	६२८	,

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची कर्मांक	भाषा
	लघुनाम माला	७०६	,,
हरिश्चन्द्र कायस्थ	धर्मशर्माभ्युदय	५६४	,,
प० हरिषेण	धर्म परीक्षा	५६३	अपभ्रंश
हस्तिसूरि	अवन्ति सुकुमाल कथा	३६६	हिन्दी
हरिहर ब्रह्म	गरुडोपनिषद	११०६	संस्कृत
हीरालाल	सम्मेद शिखर विधान	१४५६	हिन्दी
हुकमचन्द	कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	१२४८	संस्कृत
ब्रह्म. हेमचन्द्र	श्रुत स्कन्ध पूजन भाषा	२७७,१५०४	प्राकृत
हेमचन्द्र सूरि	निघण्टु	३०६	संस्कृत
हेमचन्द्राचार्य	अनेकार्थनाम माला	६७४	,,
	नाममाला	७०४	,,
	योग शास्त्र	१५४२	,,
	शब्दानुशासन वृत्ति	१६०७	,
हेमप्रभ सूरि	ज्योतिष चक्र	६७७	,,
प० हेमराज	कर्मकाण्ड सटीक	४७	हिन्दी
	नयचक्र भाषा	१७४	,,
	भक्तामर स्तोत्र भाषा	१३७६	,,
	समयसार भाषा	२५६	,,
हेमसिंह खण्डेलवाल	धातुपाठ	१५८२	संस्कृत
क्षेमकवि	क्षेम कुतूहल	६६७	,,
क्षेमसिंह	शोभन श्रुत टीका	२३६	,,
त्रिमल्लभट्ट	शतश्लोक	३५५	,,
ज्ञानचन्द्र	चतुर्विशतिजिन स्तवन	१२६५	,,
भ० ज्ञानभूषण	तत्वज्ञान तरंगिणि	१२८	,,
	ज्ञान तरंगिणि	१५४८	,,
श्रीकृष्ण गूर्जर	सिद्धान्त चन्द्रोदय टीका	११२१	,,
श्रीचंद	रत्नकरण्ड श्रावकाचार	१७७३	अपभ्रंश
प० श्रीधर	भविष्यदत्त चरित्र	७७७	संस्कृत

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
श्रीनिवास भट्ट	शिवार्चन चन्द्रिका	१५३५	,,
श्रीपति	ज्योतिषरत्नमाला	६७७	,,
श्रीवृह्मा	सरस्वती स्तोत्र	१४६२	,,
श्रीभूषण	लक्ष्मी सरस्वती संवाद	६२२	,,
श्रीमल्पाव	नवकार कथा	४१८	,,
श्रीराम	बालात्रिपुरा पद्धति	१३६५	,,
	विवाह पटल	१०४६	,,
श्रीसिंह	प्रद्युम्न चरित्र	७६५	अपभ्रंश
श्रुतमुनि	भाव सग्रह	२१८	प्राकृत
ब्र० श्रुतसागर	तत्वत्रय प्रकाशिनी	१२७	सस्कृत
	तत्वार्थ सूत्र टीका	१३५	सस्कृत और हिन्दी
	द्वादश भावना	१६०	सस्कृत
	रत्नत्रयव्रत कथा	४५२	,,
	व्रत कथा कोश	४६३	,,
श्रुतसागर सूरि	सिद्ध चक्र पूजा	१४६३	,,
	षट् पाहुड सटीक	२४६	,,